प्राक्कथन

जैनोंका प्राचीन इतिहास अस्तव्यस्त बिखरा हुआ है। ताम्रपत्र और शिलालेखोंके अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत और लोकभाषाके काव्योंमें भी प्रचुर इतिहाससामग्री उपलब्ध होती है, उन सबका संग्रहकर प्रकाशित करना नितान्त आवश्यक है। भारतीयसंस्कृतिमें गुरुका पद बहुत ऊँचा माना गया है उनकी भक्तिका माहात्म्य अति विशाल है। धर्माचार्योंका प्रतिवृत्ति या जीवनचरित्र उनके भक्त शिष्यगुणानुवादरूप काव्योंमें लिखा करते हैं, ऐसे काव्य जैन साहित्यमें हजारोंकी संख्यामें हैं परन्तु खेद है कि लोगोंके अभावसे अधिकांश (अमुद्रित काव्य) प्राचीन ज्ञानभण्डारोंमें पड़े-पड़े नष्ट हो रहे हैं और अद्यावधि जैसा चाहिए वैसा इस दिशामें प्रयत्न हुआ ज्ञात नहीं होता।

अद्यावधि प्रकाशित ऐ० काव्यसंग्रह

ऐतिहासिक भाषा काव्योंके संग्रहरूपसे अद्यावधि प्रकाशित ग्रन्थ हमारे समक्ष केवल ७ ही हैं। जिनमें "ऐतिहासिक रासमंग्रह" नामक ४ भाग और "ऐतिहासिक सज्झायमाला भा० १" श्रीविजयधर्मसूरिजी और उनके शिष्य श्री विद्याविजयजी सम्पादित एवं श्री जिनविजयजी सम्पादित "जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य संचय" और मोहनलाल दलीचंद देसाई B. A. L. L. B. संशोधित "जैन ऐतिहासिक रासमाला" नामसे प्रकाशित हुए हैं।

इनके अतिरिक्त कई ऐतिहासिक काव्य स्वतन्त्र-ग्रन्थ १ रूपमें २ मासिकपत्रोंमें और कतिपय ३रास-संग्रहोंमें भी प्रकाशित हुए हैं।

ऐसे रास अभी तक बहुत अधिक प्रमाणमें अप्रकाशित हैं उन्हें शीघ्र प्रकाशित करना आवश्यक है जिससे ऐतिहासिक क्षेत्रमें नया प्रकाश पड़े। आचार्यों एवं विद्वानोंके अतिरिक्त कतिपय सुश्रावकोंके ए काव्य भी उपरोक्त संग्रहोंमें प्रकाशित हुए हैं। तीर्थोंके सम्बन्धमें भी ऐसे अनेकों काव्य उपलब्ध हैं जिनका संग्रह श्री मुनिराज श्रीविद्याविजयजी सम्पादित 'प्राचीन तीर्थमाला" और "पाटणचैत्य परिपाटी आदि पुस्तकोंमें छपा है एवं "जैनयुग" के अंकोंमें भी कई स्थानोंकी चैत्यपरिपाटियाँ और तीर्थमालाएं प्रकाशित हुई हैं। हमारे संग्रहमें भी ऐसे अप्रकाशित अनेकों ऐतिहासिक काव्य हैं जिन्हें यथावकाश प्रकाशित किया जायगा।

आवश्यकीय स्पष्टीकरण

प्रस्तुत संग्रहमें अधिकांश काव्य खरतरगच्छीय ही हैं इससे कोई यह समझनेकी भूल न कर बैठे कि सम्पादकोंको अन्यगच्छीय काव्य प्रकाशित करना इष्ट नहीं था। हमने तपागच्छीय खोज शोधप्रेमी विद्वान् मुनिवर्योंको तपागच्छीय अप्रकाशित काव्य भेजनेकी विज्ञप्ति भी की थी पर खेद है कि किसीकी ओरसे कोई सामग्री नहीं मिली। तब यथोपलब्ध सामग्रीको ही प्रकाशित करना पड़ा।

---

१ यशोविजयगणि कल्याणसागरसूरिरास ऐतिहासिकरास। २ जैनयुगके अङ्कोंमें। ३ प्राचीन गूर्जरकाव्यसंग्रहमें रास संग्रहमें।

राजपूताना प्रान्त बीकानेरमें विशेषकर खरतरगच्छका ही प्रचार और प्रभाव रहा है। अतएव हमें अधिकांश काव्य इसी गच्छके प्राप्त हुए हैं। तपागच्छीय काव्य एकमात्र "श्रीविजय सिंह सूरि विजयप्रकाश रास" उपलब्ध हुआ था वह और तत्पश्चात् उपाध्यायजी श्रीसुखसागरजी महाराजने पालीतानेसे "शिवचूला गणिनी विज्ञप्तिगीत" भेजा था उन दोनोंको भी प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित कर दिया है। हमारे संग्रहमें कतिपय पार्श्वचंद्रगच्छीय ऐ० काव्य हैं जिन्हें प्रकाशनार्थ मुनिवर्य्य जगच्चंद्रजी कनकचंद्रजीने नकल करली हैं अतः हमने इस संग्रहमें देना अनावश्यक समझा।

प्रस्तुत ग्रन्थमें अधिकांश खरतरगच्छीय भिन्न भिन्न शाखाओंके काव्योंका संग्रह है, एकही ग्रन्थमें एक विषयकी प्रचुर सामग्री मिलनेसे इतिहास लेखकको सामग्री जुटानेमें समय और परिश्रमकी बड़ी भारी बचत होती है। इस विशेषताकी ओर लक्ष्य देकर हमने अद्यावधि उपलब्ध सार खरतरगच्छीय ऐ० काव्य प्रस्तुत संग्रहमें प्रकाशित कर दिये हैं, जिससे प्रस्तुत विषयमें यह ग्रन्थ पूर्ण सहायक हो गया है। मूल पुस्तक छप जानेके पश्चात् श्रीजिनकुशलसूरि कृत श्रीजिनचन्द्रसूरि चतुःसप्ततिका और श्रीसूरचन्द्रगणि कृत श्रीजिन सिंहसूरिरास उपलब्ध हुए हैं, ग्रन्थके बड़े हो जानेके कारण उनको मूल प्रकाशित न करके ऐतिहासिकसार यथास्थान दे दिया है। संग्रहकी दृष्टिसे और शुद्ध प्रतियें मिल जानेसे पाठान्तर भेद सहित कतिपय अन्यत्र प्रकाशित काव्य भी इस ग्रन्थमें प्रकाशित किये हैं।

* देखें कवि-परिचय।

इन महत्वपूर्ण त्रुटक और अपूर्ण कृतियें १ भी जो हमें उपलब्ध हुईं प्रकाशित कर दी गई हैं, यदि किसी सज्जनको इनकी पूर्ण प्रतियां मिलें तो हमें अवश्य सूचित करें।

ऐ० काव्योंकी प्रचुरता

जैसलमेर भण्डारकी सूची २ से ज्ञात होता है कि वहां भी एक त्रु० प्रति ३ में श्रीजिनपतिसूरि, जिनकुशलसूरिके अपभ्रंश गाथामें वर्णन, जिनप्रबोध मुनिवर्णन जिनकुशलसूरि वर्णन (प्रति नं० ५७२ में) शेष श्रीजिनपतिसूरि स्तूपकलश (नं० ३५८ के अन्तमें) और श्रीजिनलब्धिसूरि गुरुगीत (पत्र २ नं० १५८६ में) विद्यमान हैं, परन्तु अद्यावधि हम ये उपलब्ध नहीं हुए, सम्भव है कि कुछ कृतिए वैसी हों जो इस ग्रन्थमें प्रकाशित हैं*।

खरतरगच्छका काव्य—साहित्य बहुत विशाल है। अपनी अपनी शाखाका साहित्य उनके श्रीपूज्यों के पास है भावहर्षीय

---

१ श्रीजिनराजसूरिरास आदिकी गा० ९ (पृ० १९) श्रीजिनदत्त-सूरि छप्पय आदि अन्त विहीन (पृ० १०३) श्रीकीर्तिरत्नसूरिरास आदिकी गा० २० (पृ० ४१) श्रीजिनचन्द्रसूरिगीत अपूर्ण (पृ० ११) जिनपतिसूरिगीत आदि त्रुटक (पृ० ११४)।

२ जैसलमेरके भण्डारोंकी सूचीपत्रो प्रेषित।

३ खरतरगच्छके आचार्योंके ऐतिहासिक—गुरु वर्णनात्मक काव्योंकी अन्य एक महत्वपूर्ण प्रति बीकानेरके भंडारमें थी पर खेद है कि बहुत खोजनेपर भी वह उपलब्ध नहीं हुई।

* देखें— 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास' पृ० ४१० से ४२१।

(पाली), लघु भाषार्य, माबड़ुमी और लखनऊ वालोंके पास खर तरगच्छका बहुतसा ऐतिहासिक साहित्य प्राप्त होनेकी सम्भावना है।

हमारे संग्रहमें इधरसे और भी कई ऐतिहासिक काव्य उपलब्ध हुए हैं जो यथावकाश प्रकट किये जायेंगे।

प्रस्तुत ग्रन्थकी उपयोगिता

यह ग्रन्थ दृष्टिकोणद्वयसे विशेष उपयोगी है। एक तो ऐतिहासिक और दूसरा भाषासाहित्य। कतिपय साधारण काव्योंके अतिरिक्त प्रायः सभी काव्य ऐतिहासिक दृष्टिसे संग्रह किये हैं, गुण वर्णनात्मक अनेक गीत, गहूँलियें अष्टक प्रभृति हमारे संग्रहमें हैं, परन्तु उनमेंसे ऐतिहासिक काव्योंको ही चुन चुनकर प्रस्तुत संग्रहमें स्थान दिया गया है। यद्यपि प्रकाशित संग्रहोंसे भाषा साहित्य-की दृष्टिसे यह संग्रह सर्वाधिक उपयोगी है क्योंकि इसमें बारहवीं शताब्दीसे लेकर बीसवीं शताब्दी तक लगभग ८०० वर्षोंके, प्रत्येक शताब्दीके थोड़े बहुत काव्य अवश्य संग्रहीत हैं।* जिनसे भाषा-विज्ञानके अभ्यासियोंको शताब्दीवार भाषाओंके अतिरिक्त कई प्रान्तीय भाषाओंका भी अच्छा ज्ञान हो सकता है। कतिपय काव्य हिन्दी व राजस्थानी और कुछ गुजराती प्रभृति हैं। अपभ्रंश भाषाके लिये तो यह संग्रह विशेष महत्वका ही है किन्तु नमूनेके तौरपर कुछ संस्कृत और प्राकृतके काव्य भी दे दिये गये हैं।

काव्यकी दृष्टिसे जिनेश्वरसूरि, जिनोदयसूरि जिनकुशलसूरि जिनपतिसूरि जिनराजसूरि, विजयसिंहसूरि आदिके रास विवाहलु

---

* शताब्दीवार काव्योंका संक्षिप्त वर्गीकरण अन्य स्थानमें सूचित है।

बड़े सुन्दर और अलङ्कारिक भाषामें है। जिनको पढ़नेसे प्राचीन काव्योंके सृजन, सौष्ठव, सुन्दर शब्द विन्यास और फबती हुई उपमाओंके साथ साथ अनेक भावोंका अनुभव होता है।

इस संग्रहमें प्रकाशित प्रायः सभी काव्य समसामयिक लिपिबद्ध प्रतियोंसे ही सम्पादित किये गये हैं। इसका विशेष स्पष्टीकरण प्रति-परिचयमें कर दिया गया है।

शृङ्खलामें अव्यवस्थाका कारण

लगभग २।। वर्ष पूर्व जब इस ग्रन्थको छपाना प्रारम्भ किया था तब जितने काव्य हमारे पास थे सबको रचनाकालकी शृङ्खलानुसार ही प्रकाशित करना प्रारम्भ किया था परन्तु उसके पश्चात् ज्यों ज्यों नवीन सामग्री मिलती गई त्यों-त्यों इसमें शामिल करते गये। अतः जैसा चाहिये काव्योंका अनुक्रम ठीक न रह सका। फिर भी हमने पीछेसे ग्रन्थको चार विभागोंमें विभक्त कर चतुर्थ विभाग में अवशेष प्राचीन काव्योंको दे दिया है। रचना समयकी अपेक्षासे काव्य जिस शृङ्खलासे सम्पादन होने चाहिये उनकी स्वतन्त्र तालिका दे दी है ताकि पाठकोंको शताब्दीवार भाषाओंका अभ्यास करनेमें सुगमता और अनुकूलता मिले। ऐतिहासिक सार-संकलन (शताब्दी वार) क्रमिक पद्धतिसे ही हुआ है।

प्रस्तुत ग्रन्थको सर्वाङ्ग सुन्दर और विशेष उपयोगी बनानेका भरसक प्रयत्न किया गया है। जो लोग प्राचीन राजस्थानी और अपभ्रंश भाषासे अनभिज्ञ हों उनके लिये "कठिन शब्दकोश" और शृङ्खलाबद्ध ऐतिहासिकसार दे दिया है। इसके अतिरिक्त स्थान

स्थानपर प्राचीन सुन्दर चित्र, विशेष नाम सूची, अनेक आवश्यक बातोंका स्पष्टीकरण (प्रति परिचय, कवि परिचय चित्र परिचय आदि) कर दिया गया है ।

अशुद्धियोंका आधिक्य

काव्योंको यथाशक्ति संशोधन पूर्वक प्रकाशित करनेपर भी इस ग्रन्थमें अशुद्धियोंका आधिक्य है । इसका प्रधान कारण अधिकांश काव्योंकी एक-एक प्रतिका ही उपलब्ध होना है । जिनकी एकसे अधिक प्रतियें प्राप्त हुई हैं व पाठान्तर अंकोंके साथ-साथ प्रायः शुद्ध ही छपे हैं । खेद है कि कतिपय अशुद्धियां प्रेस दोष और दृष्टि दोषसे भी रह गयी हैं । शुद्धिपत्र पीछे दे दिया गया है, पाठकोंसे अनुरोध है कि उससे सुधारकर पढ़ें । अधिकांश शुद्धिपत्र जालोरसे पुरातत्त्व-वेत्ता मुनिराज श्री कल्याणविजयजीने बनाकर भेजा था । अतएव हम पूज्यश्रीके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं ।

रास-सार

काव्योंका ऐतिहासिक सार अति संक्षिप्त और सारगर्भित लिखा गया है । पहले हमारा यह विचार था कि काव्योंके अतिरिक्त इतर सामग्रीका सम्पूर्ण उपयोग कर सार परिचय विस्तृत लिखा जाय परन्तु ग्रन्थ बहुत बड़ा हो जानेके कारण ऐसा न करके संक्षेपसे ही लिखना पड़ा ।

अयोग्यता

यह ग्रन्थ किसी विद्वानके सम्पादकत्वमें प्रकट होता तो विशेष

काव्यरचनाकालका संक्षिप्त शताब्दी अनुक्रम*

१२ वीं का शेषार्द्ध।

कवि पाल्ह कृत खरतर पट्टावली (पृष्ठ ३६५ स ३६८)।

१३ वीं का शेषार्द्ध।

जिनवल्लभसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६६ स ३७०),

जिनपतिसूरिधवल गीतादि (पृष्ठ ६ से १०)।

१४ वीं का पूर्वार्द्ध।

जिनेश्वरसूरिरास (पृष्ठ ३७० स ३८२), गुरुगुणषट्पद (पृष्ठ १ स ३)।

शेषार्द्ध —

जिनकुशलसूरिरास (पृष्ठ १५ स १८), जिनपद्मसूरिरास (पृष्ठ २० से २३), जिनप्रभसूरि—जिनदत्तसूरिगीत (पृष्ठ ११ स १४)।

१५ वीं का पूर्वार्द्ध।

जिनोदयसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६ से ४०) जिनोदयसूरि रासद्वय (पृ ३८४ स ३८६), जिनप्रभसूरि गुर्वावली (पृ ४१ ४२)।

शेषार्द्ध —

खरतरगुरुगुणछप्पय (पृ० २४ स ३८) खरतरगच्छगुर्वावली (पृ० ४३ स ४८) कीर्तिरत्नसूरि फाग (पृ० ४०१-२), भाव

---

* कृतियोंका रचनाकाल अनुमानित है।

प्रमसूरिगीत (पृ० ४६-५०), शिवचूला विज्ञप्ति (पृ० ३३६), पगाडपट्टावली (पृ० ३१२) ।

१६ वीं का पूर्वार्द्ध ।

क्षमराजगीत (पृ० १३४) ।

१६ वीं का शेषार्द्ध —

जिनदत्त स्तुति (पृ० ४), जिनचंद्र अष्टक (पृ० ५), कीर्ति रत्नसूरि चौ० (पृ० ५१) जिनहंससूरि गीत (पृ० ५३), क्षेमहंस कृत गुर्वावली (पृ० २१५ से २१७)

१७ वीं का पूर्वार्द्ध —

दयातिलकोपाध्याय चौ० (पृ० ५५), भावहर्ष गीत (पृ० १३१), पुण्यसागर गीत (पृ० ६७) पुण्यप्रधान गीतादि (पृ० ८६, ६४ ११० से ११७) जयतपद्वलि आदि साधु कीर्ति गीत (पृ० ३७ से ४५), खरतर गुर्वावलि (पृ २१८ से ७), कीर्तिरत्न सूरि गीत (पृ० ४०३), दयातिलक (पृ० ४१६), पगाडुसार, करमसी गीतादि (पृ० १४६, २०४), आदि ।

शेषार्द्ध —

जिनचंद्रसूरि जिनसिंह, जिनराज जिनसागर सूरि गीत रासादि (पृ० ५८ से १३२ १५० से २३० ३३४ ४१७) खरतर गुर्वावलि (पृ० २२८) वि० खर० पट्टावली (पृ ३१६) गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध (पृ० ४२३), विजयसिंह सूरि रास (पृ ३४१) पद्मराज (पृ० ४२) समयसुन्दर गीत (पृ० १४६) छप्पय (पृ० ३०३ आदि ।

सुन्दर होता, क्योंकि हमारेमें एतद् विषयक ज्ञान और अनुभवका अभाव है, परन्तु अनुभवी विद्वानका सहयोग प्राप्त न होनेपर हमने अपनी अत्यधिक साहित्यरुचि और अदम्य उत्साहसे प्रेरित हो यथासाध्य सम्पादन किया है। इस कार्यमें हमें कहां तक सफलता मिली है, यह निर्णय विद्वान पाठकों पर ही निर्भर है। हम विद्वान नहीं हैं, अभ्यासी हैं अतः भूलोंका होना अनिवार्य है। अतएव अनुभवी विद्वानोंसे योग्य सूचना चाहते हुए क्षमा प्रार्थना करते हैं।

प्रकाशनमें विलम्ब

प्रस्तुत ग्रंथका "युगप्रधान जिनचंद्रसूरि" ग्रंथके साथ ही मुद्रण प्रारम्भ हुआ था परन्तु हमारे व्यापारिक कार्योंमें व्यस्त रहने व अन्यान्य असुविधाओंके कारण प्रकाशनमें विलम्ब हुआ है। अपने व्यवसायिक कार्यों में समय कम मिलनेसे हम इसका सम्पादन मनोज्ञ और सुचारु नहीं कर सके। यदि इसकी द्वितीयावृत्तिका अवसर मिला तो ग्रंथकी सुसम्पादित व्यवस्थित आवृत्ति की जायगी।

आभार प्रदर्शन

इसकी प्रस्तावना श्रीयुक्त हीरालालजी जैन M.A.L.L.B (प्रोफेसर एडवर्ड कालेज अमरावती) महोदयने लिख भजनेकी कृपा की है अतएव हम आपके विशेष आभारी हैं।

हम ग्रन्थके "कठिन शब्द कोष" का निर्माण करनेमें माननीय ठाकुर साहब रामसिंहजी M. A. विशारद और स्वामी नरोत्तमदासजी M A विशारदसे पूर्ण सहायता मिली है। सोलहवीं शताब्दी के पहलेके काव्योंका अन्तिम प्रूफ संशोधन श्रीमान् पं. हरगोविन्द

दामजी सेठ "न्याय व्याकरणतीर्थ" ने कर उनकी कृपा की है। श्रीयुक्त मिश्रीलालजी पालरेचा महोदयसे भी हमें संशोधनमें पूर्ण सहायता मिली है। श्रीयुक्त मोहनलाल दलीचन्द देसाई B.A.L.L.B (वकील हाईकोर्ट, बम्बई) ने भी समय समयपर सत्परामर्श द्वारा सहायता पहुंचाई है। इसी प्रकार कतिपय काव्य उ० सुखसागरजी, मुनिवर्य रत्नमुनिजी, लब्धिमुनिजी एवं जैसलमेरवाले यतिवर्य लक्ष्मीचन्द्रजीने और कतिपय चित्र-ब्लाक विजयसिंहजी नाहर, ताराभाई नवाब, मुनि पुण्यविजयजी आदिकी कृपासे प्राप्त हुए हैं एतदर्थ उन सभी, जिनके द्वारा यत्किञ्चित भी सहायता मिली हो, सहायक पूज्यों व मित्रोंके चिर कृतज्ञ हैं।

निवेदक—
अगरचन्द नाहटा,
भंवरलाल नाहटा।

काव्यरचनाकालका संक्षिप्त शताब्दी अनुक्रम*

१२ वींका शेषार्द्ध ।

कवि पाल्ह कृत खरतर पट्टावली (पृष्ठ ३६५ से ३६८) ।

१३ वींका शेषार्द्ध ।

जिनकमलसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६६ से ३७०),

जिनपतिसूरिधवल गीतादि (पृष्ठ ६ से १०) ।

१४ वींका पूर्वार्द्ध ।

जिनेश्वरसूरिरास (पृष्ठ ३७० से ३८१), गुरुगुणषट्पद (पृष्ठ १ से ३) ।

उत्तरार्द्ध —

जिनकुशलसूरिरास (पृष्ठ १५ से १८), जिनपद्मसूरिरास (पृष्ठ २० से २३), जिनप्रभसूरि—जिनदेवसूरिगीत (पृष्ठ ११ से १४) ।

१५ वींका पूर्वार्द्ध ।

जिनोदयसूरिगुणवर्णन (पृष्ठ ३६ से ४०), जिनोदयसूरि रासद्वय (पृ ३८४ से ३८६), जिनप्रभसूरि गुर्वावली (पृ ४१ ४२) ।

शेषार्द्ध —

गणधरगुरुगुणछप्पय (पृ० ३४ से ३८), खरतरगच्छगुर्वावली (पृ० ४३ से ४८), कीर्तिरत्नसूरि फाग (पृ ४०१ ?), भाव

---

* इन कृतियोंका रचनाकाल अनुमानित है ।

प्रमसूरिगीत (पृ० ४६ ५०), शिवचूला विज्ञप्ति (पृ० ३३६),
चेगड़पट्टावली (पृ० ३१२)।

१६ वीं का पूर्वार्द्ध ।
क्षेमराजगीत (पृ० १३८)।

१६ वीं का शेषार्द्ध —
जिनवल्लभ स्तुति (पृ० ८) जिनचंद्र अष्टक (पृ० ५), कीर्ति
रत्नसूरि चौ० (पृ ५१), जिनहंससूरि गीत (पृ ५३),
क्षेमहंस कृत गुर्वावली (पृ० २१५ से २१७)

१७ वीं का पूर्वार्द्ध —
दयातिलकोपाध्याय चौ० (पृ० ५५), मालदेव गीत (पृ०
१३५) पुण्यसागर गीत (पृ० ६७) पुण्यप्रधान गीतादि
(पृ० ८६, ६४ ११० से ११७) जयतपद्मपति आदि साधु
कीर्ति गीत (पृ० ३७ से ४५), खरतर गुर्वावलि (पृ० २१८ से
२०) कीर्तिरत्न सूरि गीत (पृ० ४०३) दयातिलक (पृ०
४१६) पत्तनुरास, करमसी गीतादि (पृ० १४६, २०४), आदि ।

शेषार्द्ध —
जिनचंद्रसूरि जिनसिंह, जिनराज जिनसागर सूरि गीत
रासादि (पृ० ५८ से १३२, १५० से २३०, ३३४, ४१७),
खरतर गुर्वावलि (पृ० २२८), पि० खर० पट्टावली (पृ०
३१६) गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध (पृ० ४२१) जिनसिंह सूरि
रास (पृ० १४१), पद्मप्रभ (पृ० ४२) समयसुन्दर गीत
(पृ० १४६) छप्पय (पृ १७३ आदि ।

१८ वीं का पूर्वार्द्ध —

जिनरंग (पृ० २३१), जिनरत्नसूरि (२३४ स २४४, ४१८), जिनचंद्रसूरि गीत (पृ० २४५) जिनेश्वर सूरि (पृ० ३१४), कीर्तिरत्न सूरि छन्द (पृ० ४ ७), जिनचंद्र (पृ० ४३), जिनधम (पृ० ३३५), माधप्रमोद (पृ २५८), सुखसागर (पृ २५३), समयसुन्दर गीत (पृ० १८८) आदि।

शेषार्द्ध —

जिनसुख जिनहर्षसूरि (पृ० २६१ स २६३), जिनचंद्रसूरि रास (पृ ३२१) जिनचंद्र (पृ ३३७) कीर्तिरत्न सूरि (पृ ४१३) आदि।

१६ वीं का पूर्वार्द्ध —

दवविलास (पृ० २६४ स २६२) जिनलाभ जिनचन्द्र (पृ० २६३ से २६६ तथा ४१४ से ४१६) जयमाणिक्य छंद (पृ० ३१०) आदि।

शेषार्द्ध —

जिनहर्ष जिनसौभाग्य जिनमहेन्द्रसूरि गीत (पृ ३०० स ३०४) मानसार (पृ० ४३३) आदि।

श्रीमान फतेलालजी सौभाग्यमलजी गोलेछा
जयपुर वालों की ओर से भेंट॥

ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह

—की—

प्रस्तावना

जैन धर्म भारतवर्षका एक प्राचीनतम धर्म है। इस धर्मके अनुयायियोंने देशके ज्ञान विज्ञान, समाज, कला-कौशल आदि वैशिष्ट्य के विकासमें बड़ा भाग लिया है। मनुष्यमात्र, नहीं-नहीं प्राणीमात्र में परमात्मत्वकी योग्यता रखनेवाला जीव विद्यमान है। और प्रत्येक प्राणी निरत उठते उसी परमात्मत्वकी ओर अग्रसर हो रहा है। इस प्रकार सिद्धान्तपर इस धर्मका विश्वप्रेम और विश्व-बन्धुत्व स्थिर है। भिन्न भिन्न धर्मोंके विरोधी मतों और सिद्धांतों के बीच यह धर्म अपने स्याद्वाद नयके द्वारा सामञ्जस्य उपस्थित कर देता है। यह लौकिक और आध्यात्मिक उन्नतिमें सब जीवोंके समान अधिकारका पक्षपाती है तथा सांसारिक लाभके लिये कलह और विद्वेषका शमन पारलौकिक सुखकी भावना द्वारा मिटानेका प्रयत्न किया है।

जैन-धर्मकी यह विशेषता केवल सिद्धान्तोंमें ही सीमित नहीं रहा। जैन आचार्योंने ऊँच-नीच, जाति-पातका भेद न करके अपना उदार उपदेश सब मनुष्योंको सुनाया और 'अहिंसा परमो

धर्म' के मन्त्र द्वारा उन्हें इतर प्राणियोंकी भी रक्षाके लिये तत्पर बना दिया। स्याद्वाद नयकी उदारता द्वारा जैनियोंने सभीकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। अनेक राजाओं और सम्राटोंने इस धर्म को स्वीकार किया और उसकी उदार नीतिको व्यवहारमें उतारकर चरितार्थ कर दिखाया। इन्हीं कारणोंसे अनेक संकट आनेपर भी यह धर्म आज भी प्रतिष्ठित है।

किन्तु दुखकी बात है कि धार्मिक विचारोंमें उदारता और धर्म प्रचारमें तत्परताके लिये जैनी कभी इतने प्रसिद्ध थे, वे ही आज इन बातोंमें सबसे अधिक पिछड़े हुए हैं। विश्वभरमें बन्धुत्व और प्रेम स्थापित करनेका दावा रखनेवाले जैनी आज अपने ही समाजके भीतर प्रेम और मेल नहीं रख सकते। मनुष्यमात्रको अपनेमें मिलाकर मोक्षका मार्ग दिखानेवाले जैनी आज जात पांत की तंग कोठरियोंमें अलग-अलग बैठ गये हैं, एक दूसरेको अप माना पाप समझते हैं। अन्य धर्मों के विरोधोंको भी दूर कर उनमें सामञ्जस्य उपस्थित करनेवाले आज एक ही सिद्धान्तको मानते हुए भी छोटी-छोटी-सी बातोंमें परस्पर लड़-भिड़कर अपनी अपरि मित हानि करा रहे हैं।

ऐसी परिस्थितिमें यह स्वाभाविक है कि जैन-धर्मकी कुछ अनुपम निधियां भी दृष्टिसे ओझल हो जावें और उनपर किसीका ध्यान न जावे। जैनियोंका प्राचीन साहित्य बहुत विशाल, अनेकांग पूर्ण और उत्तम है। दर्शन और सदाचारके अतिरिक्त, इतिहासकी दृष्टिसे भी जैन-साहित्य कम महत्वका नहीं है। भारतके न जाने

जिसने अन्धकारपूर्ण ऐतिहासिक कालोंपर जैन-कथा साहित्य, पट्टावलियों आदि द्वारा प्रकाश पड़ता है। लोक-प्रचारकी दृष्टिसे जैन-साहित्य कभी किसी एक ही भाषामें सीमित नहीं रहा। भिन्न भिन्न समयकी, भिन्न भिन्न प्रान्तकी भिन्न भिन्न भाषाओं में यह साहित्य खूब प्रचुर प्रमाणमें मिलता है। अर्धमागधी और सैनी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत भाषाओंका जैसा सजीव और विशाल रूप जैन-साहित्यमें मिलता है वैसा अन्यत्र नहीं। किन्तु आज स्वयं जैनी भी इस बातको अच्छी तरह नहीं जानते कि उन का साहित्य कितना महत्त्वपूर्ण है। उसका पठन-पाठन व परिशीलन उतना नहीं हो रहा है, जितना होना चाहिये। इस अज्ञान और उपेक्षाके फलस्वरूप उसका अधिकांश भाग अभीतक प्रकाशमें ही नहीं आया।

वर्तमान संग्रह जैन-गीति काव्यका है। इसमें सैकड़ों गीत संग्रह हैं, जो किसी समय कहीं-कहीं अवश्य लोकप्रिय रहे हैं और शायद घर-घरमें या तीर्थ-यात्राओंके समय गाए जाते रहे हैं। विशेषता यह है कि इन गीतोंका विषय-शृङ्गार नहीं, भक्ति है प्रिय प्रेयसी चिन्तन नहीं, महापुरुष-कीर्ति-स्मरण है और इसलिये पाप बन्धका कारण नहीं, पुण्य निबन्ध हेतु है। ये गीत भिन्न भिन्न सरस मनोहर राग-रागणियोंके रसास्वादक भाव-भाव परमार्थ और सदाचारमें मनकी गतिका ले जानेवाले हैं। इस संग्रहको सम्पादकोंने 'ऐतिहासिक जैन-काव्य संग्रह' नाम दिया है, जो सर्वथा सार्थक है, क्योंकि इन गीतोंमें जिन सत्पुरुषोंका स्मरण किया गया

है, वे सब ऐतिहासिक हैं। जो घटनाएं वर्णन की गयी हैं, वे सत्य हैं और हमारी ऐतिहासिक दृष्टिसे भीतरकी हैं। जैन गुरुओं और मुनियोंने समय-समयपर जो धर्म प्रभावना की, राजाओं-महाराजाओं और सम्राटोंपर अपने धर्मकी उत्तमताकी धाक बैठायी और समाजके लिये अनेक धार्मिक अधिकार प्राप्त किये उनके उल्लेख इन गीतोंमें पद पदपर मिलते हैं। विशेष ध्यान देने योग्य वे उल्लेख हैं जिनमें मुसलमानी बादशाहोंपर प्रभाव पड़नेकी बात कही गयी है। उदाहरणार्थ—

जिनप्रभसूरिके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने अश्वपति (असपति) कुतुबुदीनके चित्तको प्रसन्न किया था। कुतुबुदीनने उनसे जैन-शासनके विषयमें अनेक प्रश्न किये थे और फिर सन्तुष्ट होकर सुल्तानने गांव और हाथियोंकी भेंट देकर उनका सम्मान करना चाहा था पर सूरिजीने इन्हे स्वीकार नहीं किया। (पृष्ट १२, पद्य ४, ५)।

इन्हीं सूरीश्वरसे संवत् १३८५ (ईस्वी सन् १३२८) की पौष सुदी ८ शनिवारको दिल्लीमें अश्वपति मुहम्मद शाहसे भेंट की थी। सुल्तानने इन्हे अपने समीप आसन दिया और नमस्कार किया। इन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा सुल्तानका मन मोह लिया। सुल्तानने भी ग्राम हाथी घोड़े व धन तथा यथेच्छ वस्तु देकर सूरीश्वरका सम्मान करना चाहा पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। सुल्तानने उनको बड़ी भक्ति की फरमान निकलवा और जलूस निकलवा तथा 'बसति' निर्माण कराई। (पृ० १३, पद्य २६) ऐसे ही उल्लेख पृ १४ पद्य २, व पृ० १६ पद्य ६ ७ में भी हैं।

उपर्युक्त दोनों बादशाह खिलजी वंशका कुतुबुद्दीन मुबारिकशाह और तुगलक वंशका मुहम्मद तुगलक होना चाहिये। ये क्रमशः सन् १३१६ और १३२ ईस्वीमें गद्दीपर बैठे थे। इसी समयके बीच खिलजी वंशका पतन और तुगलक वंशका उत्थान हुआ था। सूरीश्वरके प्रभावसे दोनों राजवंशोंमें जैन धर्मकी प्रभावना रही।

एक दूसरे गीतमें उल्लेख है कि जिनदत्तसूरिने बादशाह सिकन्दरशाहको अपनी करामात दिखाई और ५०० बन्दियोंको मुक्त कराया (पृ० ५४ पद्य ११ आदि)। ये सम्भवतः बहलोल लोधीके उत्तराधिकारी पुत्र सिकन्दरशाह लोधी थे, जो सन् १४८९ ईस्वीमें दिल्लीके तख्तपर बैठे और जिन्होंने पहले-पहल आगराको राजधानी बनाया।

श्री जिनचंद्रसूरिके दर्शनकी सुप्रसिद्ध मुगल-सम्राट् अकबरको बड़ी अभिलाषा हुई। उन्होंने सूरीश्वरको गुजरातसे बड़े आग्रह और सम्मानसे बुलवाया। सूरिजीने आकर उन्हें उपदेश दिया और सम्राट्ने उनकी बड़ी आवभगत की। (पृ० ५८) यह रास संवत् १६४८ में अहमदाबादमें लिखा गया।

बादशाह सलेमशाह इरमणिया दीवानपर बहुत कुपित हो गये थे, तब फिर इन्हीं सूरीश्वरने गुजरातसे आकर बादशाह का क्रोध शान्त कराया और धर्मकी महिमा बढ़ाई। (पृ० ८१–) ये सूरीश्वर मुलतान भी गये और वहाँके खान समिकने इनका बड़ा सत्कार किया (पृ० ६६ पद्य ४)

इस प्रकारके अनेक उल्लेख इन गीतोंमें पाये जाते हैं, जो इतिहासके लिये बहुत ही उपयोगी हैं।

पर इससे भी अधिक महत्व इस संग्रहका भाषाकी दृष्टिसे है। इन कविताओंसे हिन्दीकी उत्पत्ति और क्रमविकासके इतिहासमें बहुत बड़ी सहायता मिल सकती है। इसमें बारहवीं-तेरहवीं शताब्दिसे लगाकर उन्नीसवीं सदीतक अर्थात् सात-आठ सौ वर्ष की रचनायें हैं, जो भिन्न भिन्न समयके व्याकरणके रूपोंपर प्रकाश डालती हैं। प्राचीन हिन्दी साहित्य अभीतक बहुत कम प्रकाशित हुआ है। हिन्दीकी उत्पत्ति अपभ्रंश भाषासे मानी जाती है। इस अपभ्रंश भाषाका अबसे बीस वर्ष पूर्व कोई साहित्य ही उपलब्ध नहीं था। जब सन् १९१४ में जर्मनीके सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हमन याकोबी इस देशमें आये, तब उन्होंने इस भाषाके ग्रंथ प्राप्त करनेका बहुत प्रयत्न किया। सुदैवसे उन्हें एक पूर्ण स्वतन्त्र ग्रन्थ मिल गया। वह था 'भविसत्तकहा' (भविष्यदत्त कथा) जिसको उन्होंने बड़े परिश्रमसे सम्पादित करके १९१८ में जर्मनीमें ही छपाया। इसके पठन-पाठनसे हिन्दी और गुजराती आदि प्रचलित भाषाओंके पूर्व इतिहासपर बहुत कुछ प्रकाश पड़ा। यही एक स्वतंत्र और पूर्ण ग्रन्थ इस भाषाके प्रचारमें आ सका था। सन् १९२४ में मुझे मध्यप्रान्तीय संस्कृत प्राकृत और हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची तैयार करनेके सम्बन्धमें बरार प्रांतान्तर्गत कारंजाके दिगम्बर जैनशास्त्र भण्डारोंको देखनेका अवसर मिला। वहां मुझे अपभ्रंश भाषाके लगभग एक दर्जन ग्रंथ बड़े और छोटे देखने

को मिले, जिनका सविस्तर वर्णन अवतरणों सहित मैंने उस सूची में दिया जो Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS. in C. P. & Berar के नाम से सन् १९२६ में मध्य प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित हुई। उस परिचय से विद्वत् संसार की दृष्टि इस साहित्य की ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुई। इससे प्रोत्साहित होकर मैंने इस साहित्यको प्रकाशित करने तथा और साहित्यकी खोज लगानेका खूब प्रयत्न किया। इसका हर्ष है कि उस प्रयत्नके फलस्वरूप कारंजा जैन सीरीज द्वारा इस साहित्यके अब तक पांच ग्रंथ दशवीं ग्यारहवीं शताब्दिके बने हुए उत्तम रीतिसे प्रकाशित हो चुके हैं। तथा जयपुर, दिल्ली आगरा, जसवंतनगर आदि स्थानोंके शास्त्र भण्डारोंसे इसी अपभ्रंश भाषाके कोई ४०-५० अन्य ग्रंथोंका पता चल गया है। यह साहित्य उसकी धार्मिक व ऐतिहासिक सामग्रीके अतिरिक्त भाषाकी दृष्टिसे बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह भाषा प्राचीन मागधी अर्धमागधी, शौरसेनी आदि प्राकृतों तथा आधुनिक हिन्दी गुजराती मराठी बंगाली आदि प्रांतीय भाषाओंके बीचकी कड़ी है। यह साहित्य जैनियोंके शास्त्र भण्डारोंमें बहुत संगृहीत है। यथार्थमें यह जैनियोंकी एक अनुपम निधि है, क्योंकि जैन साहित्यके अतिरिक्त अन्यत्र इस भाषाके ग्रंथ बहुत ही कम पाये जाते हैं। भाषा विज्ञानके अध्येताओंको इन ग्रन्थोंका अवलोकन अनिवार्य है। पर जैनियोंका इस ओर अभी तक भी दुर्लक्ष्य है। यह साहित्य गुजरात राज

पूताना और मालवामें विशेप रूपसे पाया जाता है। इसमें हिन्दी और गुजराती दोनों भाषाओंका पूर्वरूप गुँथा हुआ है। इस भाषाके अध्ययनसे पता चल जाता है कि ये दोनों भाषायें तो मूलत एक ही हैं।

प्रस्तुत संग्रहमें अपभ्रंशका और भी विकसित रूप पाया जाता है और उसका सिलसिला प्राय वर्तमान कालकी भाषासे आ जुड़ता है। ये उदाहरण हिंगल भाषाके विकास पर बहुत प्रकाश डालते हैं। भाषाकी दृष्टिसे इन अवतरणोंका संशोधन और भी अधिक सावधानीसे हो सकता तो अच्छा था। किन्तु अधिकांश संग्रह शायद एक-एक ही मूल प्रति परसे किये गये हैं। अब इस ग्रंथकी ऐतिहासिक व भाषा सम्बन्धी सामग्रीका विशेप रूपसे अध्ययन किये जानेकी आवश्यकता है। आशा है नाहटाजीका यह संग्रह एक नये पथ-प्रदर्शकका काम देगा। एसे ऐसे अनेक संग्रह अब प्रकाशमें आवेंगे और उनके द्वारा देशके इतिहास और भाषा विज्ञानका भुख उज्ज्वल होगा। यह प्रयत्न अत्यन्त स्तुत्य है।

किंग एडवर्ड कालेज
अमरावती।
२१ ८-३७

हीरालाल जैन
एम० ए, एल० एल० बी०,
प्रोफेसर आफ संस्कृत।

प्रति परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित काव्योंकी मूल प्रतियां कहांकी लिखी हुई और कहांपर हैं? इसका उल्लेख सर्व कृतियोंके अन्तमें यथा स्थान मुद्रित हो चुका है। अवशेष काव्योंके प्रतियोंका परिचय इस प्रकार है —

(अ) १ गुरुगुण षट्पद, २ जिनपति सूरि धवलगीत, ३ जिनपति सूरि स्तूप कलश, ४ जिनकुशलसूरि पट्टाभिषेकरास ५ जिन पद्मसूरिपट्टाभिषेकरास, ६ खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय, ७ जिनेश्वरसूरि विवाहलो, ८ जिनोदयसूरि विवाहलो, ९ जिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रास १० जिनोदयसूरि गुण वर्णन छप्पय, ये कृतियां हमारे संग्रहकी नं० १४६३ लि शिव कुंवरके स्वाध्याय पुस्तक* (पत्र ९२१) की प्रतिसे नकल की गयी है।

(आ) १ जिनपति सूरिणाम गीतम्, २ भावप्रभसूरि गीत, ये दो कृतियें हमारे संग्रहकी १६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्धकी लिखित प्रतिसे नकल की गयी हैं।

(इ) जिनप्रभसूरि गीत नं० १ २ ३, जिनदेवसूरि गीत और

---

*॥ संवत् १४ ९ वर्षे वैशाख मास प्रथम पक्षे ८ दिन सोम श्री बृहत् खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि गुरौ विजयमान श्रीकीर्तिरत्नसूरीणां शिष्यस [illegible] [illegible] मुनिना [illegible] पुण्यार्थं स्वाध्याय पुस्तिका लिखिता चिरं नन्दतात् ॥ श्री [illegible] ॥ श्री ॥

जिनप्रभसूरि परम्परा गुर्वावलीकी मूल प्रति बीकानेर वृहत् ज्ञानभण्डारमें (१५ वीं शताब्दीके पूर्वार्धकी लि०) है।

(२) खरतर-गुरु-गुण-वर्णन-छप्पयकी द्वितीय प्रति, १७ वीं शताब्दी लि० हमारे संग्रहमें है।

(३) पृ० ४१ में मुद्रित खरतरगच्छ पट्टावलीकी मूल प्रति तत्कालीन लि०, पत्र १ हमारे संग्रहमें है। यह पत्र कहीं कहीं छेद सहित है, अतः कहीं कहीं पाठ त्रुटक था, उसे जिनकृपाचन्द्र-सूरि ज्ञानभण्डारस्थ गुटकाकार प्रतिसे पूर्ण किया गया है। हमारे संग्रहका पत्र, सुन्दर और शुद्ध लिखा हुआ है।

(४) देवतिलकोपाध्याय चौ०, क्षेमराजगीत राजसोम, अमृत धर्म क्षमाकल्याण अष्टक-स्तव जिनरंगसूरि युगप्रधान पद प्राप्ति गीतकी प्रतियें तत्कालीन लि० बीकानेर वृहत् ज्ञानभण्डारमें विद्यमान है।

(५) अकबर प्रतिबोध रासकी प्रति जयचन्द्रजीके भण्डारमें सुरक्षित है।

(६) कीर्तिरत्नसूरि गीत नं० २ से ६ कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डारस्थ गुटकाकार प्रतिसे नकल किये गये हैं।

(आ) अन्य प्राचीन प्रतियोंकी नकलें —

(a) गुणप्रभसूरि प्रबन्ध जिनचन्द्रसूरि जिनसमुद्रसूरि गीत (४०१ से ४१०) जैसलमेरके भण्डारसे नकल कर यतिवर्य लक्ष्मीचन्द्रजीने भेजी है।

(b) जिनहंससूरिगीत समयसुन्दर कृत ३६ रागिणी गर्भित

जिनचन्द्रसूरिगीत, जिनमहेन्द्रसूरि और गणिनी शिव-चूला विज्ञप्तिगीतकी नकल पालीतानेसे उ० सुखसागर जीने भेजी थी।

(c) जिनकुशलसूरि गुणवर्णनकी नकल रत्नमुनिजी, जिनचन्द्र सूरिरासकी प्रति लब्धि मुनिजी (यह प्रति अभी हमारे संग्रहमें है) रत्ननिधान कृत जिनचन्द्र सूरि गीतकी नकल (पृ १०२), सूरत भण्डारसे पं० कल्याण मुनिजीने भेजी है।

(d) जिनहृदय गीतद्वय पाटणसे साहित्य प्रेमी मुनि यश विजयजीसे प्राप्त हुए हैं।

(औ) नीचे लिखी हुई कृतियोंके सम्पादनमें मुद्रित ग्रन्थोंकी सहायता ली गयी है।

(a) देवविलास तो अध्यात्म ज्ञानप्रसारक मण्डलकी ओर से प्रकाशित ग्रन्थसे ही सम्पादन किया गया है।

(b) पल्ह कृत जिनदत्तसूरि स्तुति अपभ्रंश काव्यत्रयी और गणधर सार्द्धशतक भाषान्तर ग्रन्थ द्वयसे पाठान्तर नोंधकर प्रकाशित की गई है।

(c) वगड़ गुर्वावली आदि (पृ ३१७ से ३१८) को जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स हेरल्डसे नकल की गई है।

(d) पिप्पलक खरतर पट्टावली जै० गु० क० भा० २ और देवकुल पाटक दोनों ग्रन्थोंसे मिलान कर प्रकाशित की गई है।

"प्रस्तुत चित्रस बीजा जिनेश्वरसूरिके जेओ श्री जिनपति सूरिना शिष्य हता, तेओनो होय एम लागे छे। श्रीजिनेश्वरसूरि सिंहासन उपर बेठेलछे तेओना जमणा हाथ मां मुहपत्ति छे अने डाबो हाथ अभय मुद्राए छे। जमणी बाजुनो तथा डाबीनो खभो खुल्लो छे। ऊपरना छतनां भागमां चंदरवो बांधेलो छे सिंहासन नी पाछल एक शिष्य ऊभो छे अने तेओनी सन्मुख एक शिष्य बाचना लतो बेठो छे। चित्रनी जमणीबाजूए एक मस्त श्रावक बे हाथनी अंजलि जोडीने गुरुमहाराजनो उपदेश सांभलतो होय एम लागे छे।

६—योगविधि पत्र १३ की प्रति (सं० १५११ लि०)के अन्तिम पत्रसे ब्लाक बनाया गया है। प्रशस्ति इस प्रकार है'— । सम्वत् १५११ वर्ष आषाढ़ बदी १४ चतुर्दश्यां बुधे श्री खरतर गच्छेश श्री श्री जिनभद्र सूरिभिर्लिखितमिदं ॥१॥ वा साधुतिलक गणि भ्यो वाचनाय प्रसादी कृतयं प्रति।

७ जिनचन्द्रसूरि मूर्ति—बीकानेरके बरप्म जिनालयमें युगप्रधान आचार्यश्रीकी सं १६८६ जिनराजसूरि प्रतिष्ठित मूर्ति है उसीका यह ब्लोक है, लेख नकल देखें—युग प्रधान जिन चन्द्रसूरि पृ० १५७-५८।

८—जिनचंदसूरि हस्तलिपि —स्व बाबू पूरणचन्द्रजी नाहरके संग्रह (गुलाब कुमारी आबजे़री) की म ११८ कर्मस्तवसूचिका प्रतिसे ब्लाक बनवाया गया है, पुस्तिका लेख इस प्रकार है —

संवत् १६११ वर्षे श्री जेसलमेरु महादुर्गे। राउल श्री

मासेद्वैर्ये विजयिनि । श्री बृहत् खरतर गच्छे । श्रीजिनमाणिक्य सूरि पुरंदराणां विनेय सुमतिधीरण* लिखि स्ववाचनाय ॥ आश्विन सुदि त्रयोदश्यां । शनिवार ॥श्रीस्तात्॥ ॥कल्याणमस्तु॥ छ० ॥

९—जिनराज सूरि-जिनरंग सूरि—यतिवर्य श्री नेमचन्द्रजीके संग्रह (कलकत्ते)में शालिभद्र चौपाइ पत्र २४ की सचित्र प्रतिके अन्तिम पत्रमें यह चित्र है । लिपि लेखककी प्रशस्ति इस प्रकार है—

सं० १८५७ मि० फाल्गुण कृष्ण १२ रविवार श्री बृहत्खरतर गच्छे उपाध्यायजी श्री विद्याधीरजी गणि शिष्य मुख्य वा० मति कुमार ग० । शिष्य लि । पं० कस्तूरचन्द मु ।

प्रति यद्यपि समकालीन नहीं है तोभी इसकी मूल आधार मूल प्रतिका समकालीन होना विशेष संभव है ।

१०—जिनहर्ष हस्तलिपि—पाटण भंडारमें कविवरके रचित एवं स्वयं लि० स्तवनादिकी पत्र ८० की प्रतिके फोटू मुनिवर्य पुण्यविजयजीने भेजे थे उनमेंसे ब्लाक बनवाकर मुद्रित किया गया है । मुनिश्रीने हमें उक्त प्रतिकी नकल करा भेजनेकी भी कृपा की है ।

११—ज्ञानसार हस्तलिपि—हमारे संग्रहके एक पत्रका ब्लाक बनवाकर दिया गया है ।

खरतर गच्छके आचार्यों एवं विद्वानोंके और भी बहुत चित्र उपलब्ध हैं, जिन्हें हो सका तो खरतरगच्छ इतिहासमें प्रकट करनेकी इच्छा है ।

---

* आचार्य पद प्राप्तिके पूर्व मुनि अवस्थाका नाम । खर. यु. जिन चंद्रसूरि पृ. २१ ।

(अं) "श्रीजिनोदयसूरि वीवाहलउ" की ४ प्रतिया प्राप्त हुई हैं। जिनके समस्त पाठान्तर नीचे लिखे संकेतोंसे लिखे गये हैं।

(a) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य संचय (पृ० २२३)

(b) प्रति—प्राचीन प्रति (सं० १४६३ लि० लिखकुशल स्वाध्याय पुस्तकात्) हमारे संग्रहमें।

(c) प्रति—बीकानेर स्टेट लायब्रेरी नं० ४६—७ पत्र ३, प्राचीन प्रति

(d) प्रति—ऐतिहासिक रास संग्रह भा ३ + (पृ० ७६)

(e) प्रति—के अन्तमें निम्नोक्त श्लोक लिखा है —

वर्षे वाप मुनि त्रिचन्द्र गणिते यैर्पा प्रभूर्ता जनि',
पक्षाब्दे प्रमिते व्रतं गुरुपदं वर्षैक वेदैकक
स्वर्गं श्री चरणं१ च नेत्र शिवदक् संख्ये बभूवात्ततुर्ग।
ते श्री सूरि जिनोदया सुगुरव कुर्वंतु मे महत्सम् ॥१॥

श्रीजिनोदयसूरि पट्टाभिषेक रासकी २ प्रतियां—

(a) प्रति—उपरोक्त (सं० १४६३ लि०)

(b) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य संचय (पृ० २२८)

श्रीजिनेश्वरसूरि वीवाहलउ की ३ प्रति—

(a) प्रति—उपरोक्त (सं० १४६३ लि०)

(b) प्रति—प्राचीन प्रति (हमारे संग्रहमें)

(c) प्रति—जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्य संचय (पृ० २२४)

(अः) इनके अतिरिक्त और सभी काव्योंकी प्रतियां जिनके अन्तमें अन्य स्थानका उल्लेख नहीं है, वे सब प्रतियां हमारे संग्रहमें (तत्कालीन लिखित) हैं।

—

"प्रस्तुत चित्रस बीजा जिनेश्वरसूरिके जेओ श्री जिनपति सूरिना शिष्य हता, तेमोनो होय एम लागे छे। श्रीजिनेश्वरसूरि सिंहासन उपर बेठेलछे तेमोना जमणा हाथ मां मुहपति छे अने डाबो हाथ अभय मुद्राए छे। जमणी बाजुनो तथा बीनो लमा मुखो छे। उपरना भागनां भागमां चंद्रवो बांधेलो छे सिंहासन नी पाछल एक शिष्य उभो छे अने तेओनी सन्मुख एक शिष्य बाचमा बेठा बेठो छे। चित्रनी जमणीबाजूए एक मत्त श्रावक बे हाथनी अंजलि जोडीने गुरुमहाराजनो उपदेश सांभलतो होय एम लागे छे।

६—योगविधि पत्र १३ की प्रति (सं० १५११ लि)के अन्तिम पत्रसे ब्लाक बनाया गया है। प्रशस्ति इस प्रकार है— ॥ सं० १५११ वर्षे भाद्र वदी १४ चतुर्दश्यां बुधे श्री खरतर गच्छेश श्री श्री जिनभद्र सूरिभिर्लिखितमिदं ॥१॥ वा० साधुतिलक गणि श्यो वाचनाय प्रसादी कृतेयं प्रति।

७ जिनचन्द्रसूरि मूर्ति—बीकानेरके बरसम जिनालयमें युगप्रधान आचार्यश्रीकी सं० १६८६ जिनराजसूरि प्रतिष्ठित मूर्ति है उसीका यह ब्लोक है, इस लका देखें—युग प्रधान जिन चन्द्रसूरि पृ० १५७-५८।

८—जिनचंद्रसूरि हस्तलिपि—स्व बाबू पूरणचन्द्रजी नाहरके संग्रह (गुलाब कुमारी लाइब्रेरी) की सं० ११८ कर्मस्तववृत्तिकी प्रतिसे ब्लाक बनवाया गया है, पुस्तिका लेख इस प्रकार है—

संवत् १६११ वर्षे श्री जेसलमेरु महादुर्गे। राउल श्री

मालवेदे विजयिनि । श्री बृहत्खरतर गच्छ। श्रीजिनमाणिक्य सूरि पुरंदराणां विनेय सुमतिधीरगणः सुक्ति स्ववाचनाय ।। श्रावण सुदि त्रयोदश्यां । शनिवारे ।।श्रीरस्तु।। ।।कल्याणमस्तु ।। छ० ।।

६—जिनराज सूरि जिनरंग सूरि—यतिवर्य्य श्री सूर्य्यमल्लजीके संग्रह (कलकत्ते)में शालिभद्र चौपई पत्र २४ की सचित्र प्रतिके अन्तिम पत्रमें यह चित्र है। लिपि लेखककी प्रशस्ति इस प्रकार है—

सं० १८५२ मि० फाल्गुण कृष्ण १२ रविवार श्री बृहत्खर तर गच्छे उपाध्यायजी श्री विद्याधीरजी गणि शिष्य मुख्य वा० मति कुमार ग० । शिष्य लि । पं० किस्तूरचन्द मु ।

प्रति यद्यपि समकालीन नहीं है तोभी इसकी मूल आधार मूल प्रतिका समकालीन होना विशेष संभव है।

१०—जिनहर्ष हस्तलिपि—पाटण भंडारमें कविवरके रचित एवं स्वयं लि० स्तवनादिकी पत्र ८० की प्रतिके फोटू मुनिवर्य पुण्य विजयजीने भेजे थे उसीसे ब्लाक बनवाकर मुद्रित की गई है। मुनिश्रीजीने हमें इस प्रतिकी नकल करा भेजनेकी भी कृपा की है।

११—ज्ञानसार हस्तलिपि—हमारे संग्रहके एक पत्रका ब्लाक बन वाकर दिया गया है।

खरतर गच्छके आचार्यों एवं विद्वानोंके और भी बहुत चित्र उपलब्ध हैं जिन्हें हो सका तो खरतरगच्छ इतिहासमें प्रकट करनेकी इच्छा है।

आचार्य पद प्राप्ति एवं मुनि अवस्थाका नाम । देख यु जिन चंद्रसूरि पृ ११।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

रास सार सूची ।

चित्र सूची।

मूल काव्य-अनुक्रमणिका।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (द्वितीय विभाग)

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह (तृतीय विभाग)

एतिहासिक जैन काव्य संग्रह (चतुर्थ विभाग)

परिशिष्ट

सिंहगिरि	२३ मानतुंग	नागार्जुन		३३	रविप्रभ
वयर स्वामी	२४ वीर सूरि	गोविन्दवाचक		३४	यशोभद्र
आर्य रक्षित	२५ जयदेव सूरि	संभूतिदिन्न		३५	जिनभद्र
दुर्बलिकापुष्य	२६ देवानन्द	लोकहित		३६	हरिभद्र
आर्य नंदि	२७ विक्रमसूरि	दूष्यगणि		३७	देवचन्द्र
नागहस्ति	२८ नरसिंह सूरि	उमास्वाति		३८	नेमिचंद्र
रेवंत	२९ समुद्र सूरि	जिनभद्र		३९	उद्योतन
ब्रह्मदीपी	३० मानदेव	हरिभद्र			
संडिल्ल	३१ विबुधप्रभ	देवाचार्य *			
हेमवंत	३२ जयानन्द	नेमिचन्द्र			
		उद्योतन ×			

* स्वातिका क्रम भिन्न २ पट्टावलियोंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे पाया जाता है। पर इसके पश्चात्का क्रम सभी खरतर गच्छकी पट्टावलियोंमें एक समान है। नं १ की पट्टावलीका (संशोधित) क्रम नंदीसूत्र कल्पसूत्र स्थविरावली आदि प्राचीन प्रमाणोंसे प्रमाणित है, पीछेके क्रमको ऐतिहासिक दृष्टिसे परीक्षा करना परमावश्यक है पुरातत्त्वविद् विद्वानोंका हम इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

× यहाँ इनके आचार्योंका गुर्वावलियोंमें नाममात्र ही उल्लेख है। ऐतिहासिक परिचय नहीं। फिर भी इनके नामोंके साथ जो ऐ विशेषण दिये गये हैं, वे ये हैं—जम्बू—९९ कोटि द्रव्य त्याग, संयम ग्रहण। स्थूलिभद्र—कोशा प्रतिबोधक, महागिरि — जिन कल्प तुलना कारक, सुहस्ति—संप्रति नृपके गुरु, श्यामाचार्य—पन्नवणा कर्त्ता वज्रसेन —११ अंगोंका मत ग्रहण, दुर्बल— पुष्यमित्र विशेषा माथुर —शान्ति स्तव कर्त्ता मानतुंग—भक्तामर भयहर स्तोत्रकर्त्ता वयर स्वामी:—१ पूर्वधर उमास्वाति—५ प्रकरणकर्त्ता।

खरतरगच्छ पट्टावली

(जैसलमेर भाण्डागारीय सं० ११०१ कि ताड़पत्रीय प्रतिका द्वितीय पृष्ठ)

काव्योंका ऐतिहासिक सार

प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रकाशित (पृ० १ - स २२६ स) खरतर गच्छ गुर्वावलियोंमें भगवान महावीरसे पट्ट—परम्परा इस प्रकार दी गयी है —

गुर्वावलि नं० २	गुर्वावलि नं० ५	गुर्वावलि नं० २	गुर्वावलि नं० ५
—	१ वर्द्धमान १	आर्यशान्ति	११ सुस्थित
गौतम	२ गौतम	हरिभद्र	१२ इंद्र दिन्न
सुधर्मा	३ सुधर्मा	श्यामाचार्य	१३ दिन्न सूरि
जम्बू	४ जम्बू	आर्य संडिल्ल	१४ सिंहगिरि
प्रभव	५ प्रभव	रेवती मित्र	१५ वयर स्वामी
शय्यम्भव	६ शय्यम्भव	आर्य धर्म	१६ वज्रसेन
यशोभद्र	७ यशोभद्र	आर्य गुप्त	१७ चंद्र सूरि
संभूति विजय	८ संभूतिविजय	आर्य समुद्र	१८ समंतभद्रसूरि
भद्रबाहु	+	आर्यमंगु	१९ वृद्धदेव सूरि
स्थूलिभद्र	९ स्थूलिभद्र	आर्य सोहम	२० प्रद्योतन सूरि
आर्यमहागिरि	—	हरिबल	२१ मानदेवसूरि
आर्यसुहस्ति *	१० आर्यसुहस्ति	भद्रगुप्त	२२ देवेन्द्र सूरि

* यद्यपि दोनों गुर्वावलियोंके नामोंमें साम्य है। नं १में भद्रबाहु और आर्यमहागिरिके नाम अधिक हैं इसका कारण नं २ युगप्रधान परम्परा और नं १ गुरु शिष्य परम्पराकी दृष्टिसे रचित है। इसमें नामोंका क्रम दोनोंमें भिन्न है इसका कारण सम्भवतः नं २ के प्राचीन अव्यवस्थित पट्टावलियोंका अनुकरण, और नं १ के संशोधित होनेका है।

सिंहगिरि	२३	मानतुंग	नागार्जुन	३३	रविप्रभ
वयर स्वामी	२४	वीर सुरि	गोविन्दवाचक	३४	यशोभद्र
आर्य रक्षित	२५	जयदेव सुरि	संभूतिदिन्न	३५	जिनभद्र
दुर्बलिकापुष्प	२६	देवानन्द	लोकहित	३६	हरिभद्र
आर्य नंदि	२७	विक्रमसुरि	दूष्यगणि	३७	देवचन्द
नागहस्ति	२८	नरसिंह सुरि	उमास्वाति	३८	नेमिचंद्र
रेवत	२९	समुद्र सुरि	जिनभद्र	३९	उद्योतन
ब्रह्मदीपी	३०	मानदेव	हरिभद्र		
संडिल	३१	विबुधप्रभ	देवाचार्य *		
हेमवंत	३२	जयानन्द	नेमिचन्द्र		
			उद्योतन ×		

* उद्योतनका क्रम भिन्न २ पट्टावलियोंमें भिन्न भिन्न प्रकारसे पाया जाता है। पर इसके पश्चात्का क्रम सभी खरतर गच्छकी पट्टावलियोंमें एक समान है। नं. १ की पट्टावलीका (संशोधित) क्रम वसुदेव तकका नंदिसूत्र स्थिरावली आदि प्राचीन प्रमाणोंसे प्रमाणित है, पीछेके क्रमको ऐतिहासिक दृष्टिसे परीक्षा करना परमावश्यक है पुरातत्त्व-वित् विद्वानोंका हम इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

× यहां उनके आचार्योंका गुर्वावलियोंमें नाममात्र ही उल्लेख है। ऐतिहासिक परिचय नहीं। फिर भी इनके नामोंके साथ जो ये विशेषण दिये गये हैं, व ये हैं—जम्बू—९९ कोटि द्रव्य त्याग, संयम ग्रहण। स्थूलिभद्र—कोश्या प्रतिबोधक, महागिरि — जिन कल्प तुलना कारक, सुहस्ति—संप्रति नृपके गुरु, श्यामाचार्य—पन्नवणा कर्त्ता वसुदेव —११वस्तु मत ग्रहण, इन्द्रदिन्न— कुमारपाल विजेता मानदेव—शान्ति स्तव कर्त्ता मानतुंग—भक्तामर, भयहर स्तोत्रकर्त्ता वयर स्वामी—१ पूर्वधर उमास्वाति—५ प्रकरणकर्त्ता।

वर्द्धमान सूरि

(पृ ४४)

उपरोक्त उद्योतन सूरिजीके आप मुख्य शिष्य थे। आपने आबू गिरिपर छः महीनेतक तपस्या करके सूरि मन्त्रकी आराधना (शुद्धि) की, पाताळवासी धरणेन्द्रदेव प्रसन्न हुआ उसके सूचनानुसार वहाँ आदि जिनकी वज्रमय प्रतिमा प्रगट हुई। इससे मंत्रीश्वर विमल दण्ड नायकको *अतिशय आनन्द हुआ और गुरुश्रीके उपदेशसे उन्होंने वहाँ नंदीश्वर* प्रासादके समान चिरस्मरणीय यशःपुञ्ज स्वरूप 'विमल वसही' बनाई। पूज्य श्रीके अतिशय प्रभावसे मिथ्यात्वियोंको आदि इत्यप्रभाव हुए और जैन शासनका जयवाद फैला, आपका विशेष परिचय गणधर सार्द्धशतक वृहद् वृत्ति पट्टावलियों और युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ० ६) में देखना चाहिये।

जिनेश्वर सूरि

(पृ० ४४)

श्री वर्द्धमान सूरिजीके आप सुशिष्य थे। आपने गुजरातके अणहिल्लपत्तनके भूपति दुर्लभराजकी सभामें ८४ मठपति (चैत्यवासी) आचार्योंको जो कि मन्दिरोंमें रहा करते थे पराजित कर चैत्य वासका उत्थापन और वसतिवास-सुविहित मुनिमार्ग का स्थापन किया था। नृपति दुर्लभराज आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर कहने लगे कि—इस कलिकालमें कठिन और खरे चारित्रपालक साधु आप ही हैं। नृपतिके वचनानुसार तभीसे खरतर विरुद्की प्रसिद्धि हुई।

विशेष चरित्र सामग्री और अन्य निमित्तकी सूचि देखें —युग प्रधान जिनचन्द्र सूरि पृ १०

अभय देवसूरि

(पृ० ८५)

आप भी जिनेश्वर सूरिजीके शिष्य थे। आपने ६ अंग-सूत्रों पर वृत्ति बनाई और जयतिहुअण स्तोत्रकी रचना कर स्तंभन पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा प्रकट की। सीमंधर स्वामीने आपके गुणोंकी प्रशंसा की और धरणेन्द्र, पद्मावती आपकी सेवा करते थे। विशेष देखें यु जिनचन्द्रसूरि पृ० १२

जिनवल्लभसूरि

पृ० १,४६

आप अभयदेवसूरिजीके पट्टधर थे। पिन्डविशुद्धि प्रकरणकी आपने रचना की थी एवं बागड़ देशमें धर्म प्रचार कर १० हजार (नये) जैनश्रावक बनाये थे। चित्तौड़मे चामुंडा देवीको आपने प्रतिबोध दिया था। सं ११६७ के आषाढ़ शुक्ला षष्ठीको चित्तौड़के महावीर चैत्यमें आपको देवभद्र सूरिजीने आचार्य पद प्रदान कर श्रीजिन अभयदेव सूरिके पट्टपर स्थापित किया।

विशेष चरित्रके लिये गण धर सा वृत्ति और कृतियोंके लिये युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि पृष्ट १२ देखना चाहिये।

जिनदत्त सूरि

(पृ १४ ४६ ३७३)

वाछिग मन्त्री (हुम्बुड़ा वास्तव्य) की धमपत्नी बाहड़ देवीकी कुक्षीमें सं ११३२ में आपका जन्म हुआ। सं० ११४१ में दीक्षा ग्रहण की। सं ११६९ के व ६ चित्तौड़के वीर जिनालयमें

जिनवल्लभ सूरिजीके पदपर देवभद्राचार्यने (पद) स्थापना की। ... पर अम्बिका देवीने संवड़ (नाग देव) श्रावकके आराधन करनेपर उनके हाथमें स्वर्णाक्षर लिख दिये और कहा कि जो इन्हें पढ़ सकेगा उन्हींको युगप्रधान मानना। संवड़ सर्वत्र घूमा पर उन अक्षरोंको कोई भी आचार्य न पढ़ सके। आखिर पाटणमें जिनदत्त सूरिजीने संवड़के हाथपर वासक्षेपका प्रक्षेपन कर उन अक्षरोंको शिष्य द्वारा पढ़ सुनाये तभीसे आप युगप्रधान विरुदसे प्रसिद्ध हुए।

आपने चौसठ योगिनी और बावन वीरा (क्षेत्रपाल) को जीता था और भूत प्रेत आदि तो आपके नामस्मरण मात्रसे पास नहीं आ सकते। सूरि मन्त्रके प्रभावसे धरणेन्द्रको साधन किया था और एक लाख श्रावक श्राविकाओंको प्रतिबोध दिया था। विक्रमपुरमें सब संघको मारि रोग निवारण कर अभय दान दिया और प्रथम जिनालयकी प्रतिष्ठा की। त्रिभुवन गिरिके नृपति कुमारपालको प्रतिबोध दिया। ५०० साध्वियोंको व ७०० मुनियोंको दीक्षा दी। उज्जैनीमें योगिनी (६४) चक्रको ध्यानबलसे प्रतिबोधा। आज भी आपके चमत्कार प्रत्यक्ष हैं और स्मरण मात्रसे मन-वाञ्छित फल प्रदान करते हैं। सांभर (अजमेर) नगर (अर्णोराज) को जैन धर्मका प्रतिबोध दिया था। आपके हस्त दीक्षित साधुओंकी संख्या १५०० थी (पृ ४)। इस प्रकार आप अपने महान व्यक्तित्व एवं जीवन द्वारा चिरस्मरणीय होकर सं० १२११ के आषाढ़ शुक्ल ११ को अजमेर नगरमें स्वर्ग सिधारे।

पृ० ३७२ से ३५६में प्रकाशित अवदात उपर्योक्त अपूर्ण× (आदि अंत त्रु०) होनेके कारण वर्णित विषयका स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। अतः अन्य साधनोंके आधारसे इस विषयमें जो कुछ जाना गया है, उसका अति संक्षिप्त सार यहां दिया जाता है—

कन्नौजमें सीहोजी+ नामक नृपति राजा राज्य करते थे, एक बार उन्होंने यात्रार्थ द्वारिका जानेका विचार कर राज्यभार अपने छोटे भाईको देकर कुमार आसथान (जो कि उनके पटुरानी राणीके पुत्र थे) एवं २०० सैनिकोंके साथ प्रस्थान किया। सिहाजी जब मारवाड़ पधारे तो राणीने एक स्वप्न देखा। × × ×

इधर मारवाड़ प्रान्तके पाली शहरमें ब्राह्मण यशोधर राज्य करते थे। उस समय खेड़ नगरके गुहिलवंशी राजा मोहलने पालीपर चढ़ाई कर दी इससे भयभ्रान्त हो यशोधर नगर रक्षणका उपाय सोचने लगे कि किसी सिद्ध पुरुषकी शरण ली जाय। परामर्श करनेपर ज्ञात हुआ कि खरतर गच्छ नायक श्री जिनदत्त सूरिजीका यहीं चतुर्मास है और वे बड़े ही चमत्कारी हैं। उनके मुख्य कार्य कलाप ये हैं —

×इन पत्रोंकी पूर्ण प्रति किसी सज्जनको कहीं प्राप्त हो तो हमें सूचनाकी कृपा करें। इन पत्रोंको आदि अन्तकी संख्या सम्बन्ध व प्रतिके पत्रसंख्याके हिसाबसे यह वर्णन बहुत बड़ा होना सम्भव है।

+आधुनिक इतिहासकारोंके मतसे सीहोजीका जन्म सं० १२५१ कन्नौजसे आना १२६८ और स्वर्ग सं० १३३ है। अतः जिनदत्तसूरिका इनके साथ सम्बन्ध होना कहांतक ठीक है नहीं कहा जा सकता।

१ —मुलतानमें पांच नदीके पांचों पीर आपके सेवक बने। माणिभद्र यक्ष एवं बावन वीर भी आपकी सभामें हाजिर रहा करते थे।

२ —मुलतानमें प्रवेशोत्सव समय (भीड़में कुचलकर) मृगलसुत मर गया था, उसे आपने पुन जीवित कर सबको आश्चर्या न्वित कर दिया।

३ —चोसठ योगनियोंके स्त्री रूप धारण कर व्याख्यानमें छलनेको आने पर उन्हें मन्त्रित पाटों पर बैठाकर कीलित कर दिया। आखिर वे गुरुजीसे प्रार्थना कर मुक्त हो, जाते समय ७ वरदान दे गई, जो इस प्रकार हैं —

(१) प्रत्येक ग्राम और नगरमें एक श्रावक बुद्धिवंत होगा।

(२) आपके नाम लेनेवालेपर बिजली नहीं गिरेगी।

(३) सिन्धु देशमें आपके श्रावकोंको विशेष लाभ होगा।

(४) आपके नाम स्मरणसे भूत-प्रेत एवं चौरादिका भय, ज्वरादि रोग दूर होंगे। एवं शाकिनी नहीं छल सकेगी।

(५) खरतर श्रावक प्राय निर्धन न होगा और कुमरणसे नहीं मरेगा।

(६) आपके स्मरणसे जलसे पार उतर जायगा पानीमें नहीं डूबेगा।

(७) ब्रह्मचारिणी साध्वीको ऋतुधर्म नहीं आयगा।

४ —उज्जैनीके स्तम्भमेंसे ध्यानबलसे विद्यामन्त्रकी पुस्तक ग्रहण की उसमसे सर्षपसिद्धि आदि विद्यायें ग्रहण कर चित्तौड़के भंडारमें स्थापित की। उस पुस्तकको हेमचन्द्राचार्यके कथनसे कुमारपाल नृपतिने मंगाई, पर उसे खोलनेका (मस्तक ऊपर) निषेध लिखा हुआ होनेपर भी हेमचन्द्राचार्यकी बहिन-साध्वीके पुस्तकके बन्धनको खोलनेपर वे नेत्रहीन हो गयीं और पुस्तक उड़कर जेसलमेरके भण्डारमें जा गिरी। वहां चोसठ योगनियां उनकी रक्षा करती हैं।

५ —प्रतिक्रमणके समय पड़ती हुई बिजलीको रोक दी।

६ —विक्रमपुरमें मरीके उपद्रव होनेपर 'तंमयउ' स्तोत्र रचकर शांति की। वहां महेश्वरी डागा लुणिया आदि १५०० श्रावकोंको प्रतिबोध दिया।

इस प्रकार गुरुजीकी महिमा सुनकर उनसे सहोदरने राज्य रक्षण की प्रार्थना की। गुरुजीने उपरोक्त सिंहोजीको पाताल राज्य दिलवाकर उस राज्यकी रक्षा की उसीसे राठौड़ परंपर आचार्यों को अपना गुरु मानने लगे।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ ५)

सं० ११९७ भाद्र शुक्ला ८ को रासलकी पत्नी देल्हणदेकी कुक्षिमें आप जन्मे थे। सं १२०३ फाल्गुन शुक्ला ६ को ६ वर्षकी लघुवयमें ही जिनदत्त सूरिके समीप दीक्षा ग्रहण की। सं० १२०५ वैशाख शुक्ल षष्ठीको विक्रमपुरमें श्री जिनदत्त सूरजीने अपने पट्टे

पर स्थापित किया था। कहा जाता है कि आपके मस्तकपर मणि थी। अतः नरमणिमण्डित (भाल स्थल) नाम (संज्ञा) से आपकी सर्वत्र प्रसिद्धि है।

सं० १२२३ भाद्र कृष्ण चतुर्दशीको दिल्लीमें आपका स्वर्गवास हुआ।

जिनपति सूरि

(पृ० ६ से १०)

मरुस्थलके विक्रमपुर निवासी मालू यशोवर्द्धनकी भार्या सूहवदेवीकी कुक्षिसे सं० १२१० चैत्र कृष्ण अष्टमीके दिन आपका जन्म हुआ था। आपका जन्मका शुभ नाम 'नरपति' रखा गया। सं० १२१८ फाल्गुन कृष्ण १० को जिनचन्द्र सूरिजीके पास भीम पल्लीमें आपने दीक्षा ग्रहण कर सर्व सिद्धान्तोंका अध्ययन किया।

सं० १२२३ कार्तिक शुक्ला १३ बब्बेरकपुरमें जयदेवाचार्यने श्री जिनचन्द्र सूरिके पदपर स्थापन कर आपका नाम जिनपति सूरि रखा। इसके पश्चात आपने अपनी अद्वितीय मेधा व प्रतिभासे २६ वादोंमें अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज एवं जयसिंह आदिके राज्य सभामें विजय प्राप्त की। वादी रूपी हस्तियोंके विदीर्णार्थ आप सिंहके समान थे। आपने बहुतसे शिष्योंको दीक्षा दी। अनेकों जिन बिम्बों आदिकी प्रतिष्ठायें की। शासन देवी आपके पादपद्मोंकी सेवा करती थी और आशम्बरा देवीको आपने रक्षित किया था। खरतर गच्छकी मर्यादा (विधि) आपने ही सुव्यवस्थित की थी।

मरुकोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रजी (षष्टि शतकके कर्ता) सद्गुरुकी शोधमें १२ वर्ष तक पर्यटन करते हुए पाल्हण पधारे और आपके सद्गुणोंसे प्रतिबोधको प्राप्त हुए। इतना ही नहीं भण्डारीजीके पुत्रने आपके पास दीक्षा ग्रहण की थी। वास्तवमें आप युग-प्रधान आचार्य थे।

इस प्रकार स्वपर कल्याण करते हुए सं० १२७७ आषाढ़ शुक्ला १ को पाल्हणपुरमें स्वर्ग सिधारे। वहाँ संघने स्तूप बनवाया।

जिनेश्वर सूरि
(पृ ३७७)

मरुस्थलके शिरोमणि मरोट कोट निवासी भण्डारी नेमचन्द्रकी भार्या लक्ष्मणीकी कुक्षिसे सं १२४५ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ को आपका जन्म हुआ था। अम्बिका देवीके स्वप्नानुसार आपका जन्म नाम अम्बड़ रखा गया।

श्री जिनपति सूरिजीके सदुपदेशसे वैराग्य वासित होकर आपने अपने माता पितासे प्रव्रज्या ग्रहण करनेकी आज्ञा मागी माताजीने संयमकी दुष्करता बतलाई पर उत्कट वैराग्यवानको यह असार ज्ञात हुआ क्योंकि आपका ज्ञान-गर्भित वैराग्य संसारके दुखोंसे भिन्न होनेके लिये ही हुआ था।

सं १२५८ चैत्र कृष्णा २ खेड़ नगरके शान्ति जिनालयमें श्री जिनपति सूरजीने दीक्षित कर आपका नाम वीरप्रभ रखा आप सकलसिद्धान्तोंका अवगाहन कर श्री जिनपति सूरिके पदपर सुशो भित हुए। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात आप जिनेश्वर सूरि नामसे

प्रसिद्ध हुए। आपने अनेक देशोंमें विहार कर बहुतसे भव्यात्माओं को प्रतिबोध दिया। इस प्रकार धर्म प्रचार करते हुए आप जालोर पधारे और अपना आयुष्यका अन्त निकट जानकर अपने सुशिष्य वाचनाचार्य प्रबोध मूर्तिको अपने पदपर स्थापित कर जिनप्रबोध सूरि नाम स्थापना की और वहीं अनशन आराधना कर सं० १३३१ के आश्विन कृष्णा ६ को स्वर्ग सिधारे।

जिन प्रबोध सूरि उल्लेख —गुर्वावलियोंमें

जिनचन्द्र सूरि " "

श्री जिन कुशलसूरिजी विरचित 'जिनचन्द्र सूरि चतुःसप्ततिका' प्राप्त हुई है। ग्रन्थ विस्तार भयसे उसे प्रकाट नहीं की गयी मात्र उसका सार नीचे दिया जाता है।

मारवाड़ प्रान्तमें समीयाणा (सम्माणपणि) नगरके मन्त्री देवराजकी पत्नी कोमल देवीकी रत्नगर्भा कुक्षिसे सं० १३२४ मार्ग शीर्ष शुक्ला ४ को आपका जन्म हुआ था। आपका जन्म नाम खंभराय रखा गया। खंभराय क्रमश वयक साथ-साथ गुणोंसे भी बढ़ने हुए जब ६ वर्षके हुए तब श्री जिनप्रबोध सूरिकी देसना श्रवणका सुअवसर मिला। उनके उपदेशसे प्रतिबोध कर सं० १३३२ के जेठ शुक्ला ३ को गुरुश्रीके समीप प्रव्रज्या ग्रहण की। पूज्य श्रीने आपका नाम "क्षेमकीर्त्ति" रखा। दीक्षाके अनन्तर आपने व्याकरण छंद, नाटक, सिद्धान्त आदिका अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

विक्रमपुर स्थित महावीर प्रतिमाके ध्यान बलसे अपना आयुष्यका अन्त निकट जानकर श्री जिनप्रबोधसूरिजी जालोरपुर पधारे और वहां क्षेमकीर्तिजीको स्वहस्त कमलसे सं० १३४१ वै० शु० ३ अक्षय तृतीयाको वीर चैत्यमें बड़े महोत्सवपूर्वक आचार्य पद प्रदान कर गच्छभार सौंपकर जिनप्रबोधसूरिजी स्वर्ग सिधारे। आचार्य पदके अनन्तर आपका शुभ नाम जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध किया गया। आपके रूप लावण्य और गुण सचमुच सराहनीय थे। श्रीकर्णदेव जैत्रसिंह, और समरसिंहजी भूपति त्रय आपकी सेवा करनेमें अपना अहोभाग्य समझते थे। आपने बिम्ब प्रतिष्ठा, दीक्षा एवं पद प्रदानादि कर अनेकानेक धर्मप्रभावनाकी। शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थोंकी यात्रा की। एवं गुजरात, सिन्ध, मारवाड़, सवालक्षदेश, बागड़ दिल्ली आदि देशोंमें विहार कर धर्म प्रचार किया। सं १३७६ के आषाढ़ शुक्ल ६ को राजेन्द्रचन्द्र सूरिजीको अपने पट्टपर कुशल कीर्त्तिको स्थापन करने की शिक्षा देकर अनशन आराधना पूर्वक स्वर्ग सिधारे।

जिनकुशल सूरि

(पृ० १५ से १६)

अणहिल्ल पत्तनाधीश दुर्लभराज (की सभामें चैत्यवासियोंको परास्त कर) के समय वसतिमार्गप्रकाशक जिनेश्वर सूरि (प्रथम) के पट्टपर संवेगरंगशालाके कर्त्ता जिनचन्द्र सूरि, नवांगीवृत्तिकर्त्ता अभयदेव सूरि कि जिन्होंने (स्तम्भन) पार्श्वनाथके प्रसादसे धरणेन्द्र पद्मावती आदि देवोंको साधित किये उनके पट्टपर संवेगीशिरोमणि

सूरि नाम स्थापना की उस समय अनेक देशोंके संघ आये थे, वाजित्रोंके नादसे आकाशमण्डल व्याप्त हो गया था। महतीयाण विजय सिंहने खूब गुरुभक्ति की, वस्त्र-विभूषा विन्यास सामकर्मी वीरदेवने स्वधर्मीवात्सल्य किया। उस समय ७०० साधु, २४०० साध्वीयोंको तेजपाल, रुद्रपालने अपने घर आमंत्रित कर वस्त्र परिधापन किया। अजहिल पाटणकी शोभा उस समय बड़ी वर्णनीय और चित्ताकर्षक थी। महोत्सव करनेवाले तेजपालको सभी लोग बड़ी उत्सुकतासे देख रहे थे। इस प्रकार युगप्रधान पद महोत्सव कर सचमुच तेजपालने बड़ी ख्याति प्राप्त की।

आपका विशेष परिचय खरतरगच्छ गुर्वावली और पट्टावलियोंमें पाया जाता है। उक्त गुर्वावली यथावसर हमारी ओरसे सानुवाद प्रकाशित होगी। आपकी रचित 'चैत्यवंदन कुलक वृत्ति' प्रकाशित हो चुकी है।

जिनपद्मसूरि

(पृ० २ स २३)

उपरोक्त श्री जिनकुशल सूरिजी मरिर्मडलमें विचरते हुए देराउर पधारे। वहां व्रत ग्रहण मालारोपण पदस्थापन आदि अनेक धर्मकृत्य हुए। सूरिजीने अपना आयुष्यका अन्त निकट जानकर (तरुणप्रभ) आचार्यको अपने पद (स्थापन) आदि की समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। इसी समय सिन्धु देशके रायु नगर वास्तव्य रीहड श्रावक पुनचन्दके पुत्र हरिपाल देराउर पधारे और युगप्रधान पद-महोत्सव करनेकी आज्ञाके लिये तरुणप्रभाचार्यसे विनीत प्रार्थना की और आज्ञा प्राप्त

कर दशोंदिशाओंके संघोंको कुंकुम पत्रीया द्वारा आमंत्रित किये, संघ आये।

प्रसिद्ध श्रीमाल कुलके लक्ष्मीधरके पुत्र आंबासाहकी पत्नीकी कुक्षि सरोवरसे उत्पन्न राजहंसके सदृश पद्मसूरिजी को सं० १३८६ ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी सोमवारको ध्वजा पताका, तोरण वंदनमालादिसे अलंकृत आदीश्वर जिनालयमें नान्दिस्थापन विधिसह श्री सरस्वती कंठाभरण तरुणप्रभाचार्य (षडावश्यक बालावबोधकर्त्ता) ने जिन कुशल सूरिजीके पदपर स्थापित कर जिनपद्म सूरि नाम प्रसिद्ध किया। इस समय चारों ओर जयजय शब्द हो रहा था। रमणियां हर्षसे नृत्य कर रही थीं। लोगोंके हृदयमें हर्षका पार न था। शाह हरिपालने संघभक्ति (स्वामिवात्सल्यादि) एवं गुरुभक्ति (वस्त्रदानादि) के साथ युगप्रधान पद महोत्सव बड़े समारोहके साथ किया।

पाटण संघने आपको (बालधवल) कूर्चाल सरस्वती विरुद दिया। (पृ० ४४)

जिनचन्द्र सूरि (उ० गुर्वावलिमें)

जिनोदय सूरि (पृ० ३८४से ३६४)

चन्द्रगच्छ और खरतरगच्छमें श्री अभयदेवसूरिजी हुए उनके पट्टानुक्रममें सरस्वती कण्ठाभरण जिनवल्लभ सूरि त्रिभुवन प्रकाशक जिनदत्तसूरि कामदेव सदृश रूपवान जिनचन्द्रसूरि वादिगज केसरी जिनपति सूरि मनवांछित कल्पवृक्ष जिनेश्वर सूरि, सकलकला सम्पन्न जिनप्रबोध सूरि भवाब्धिपोत जिनचन्द्र सूरि सिन्धुदेशमें विदित

विहार कर जिनधर्म प्रचारक जिनकुशल सूरि, सुरगुरु अवतार जिनपद्म सूरि शासन शृङ्गार जिनलब्धि सूरिके पट्ट प्रभाकर तेजस्वी जिनचन्द्रसूरि ज्ञाननीर बरसाते हुए खंभात पधारे और (आयुष्यका अन्त जान, तरुण प्रभ) आचार्य को गच्छ और पद स्थापनादिकी समस्त शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे।

इसी समय दिल्ली वास्तव्य श्रीमाल रुद्रपाल, नींबा मंत्रीके पुत्र संघवी रतना पूनिग सद्गुरुवर्यको वन्दनार्थ खंभात आये और उन्होंने श्रीतरुणप्रभाचार्यको वन्दनकर पद महोत्सवकी आज्ञा ले ली। सं १४१५ के आषाढ़ कृष्ण १३ को हजारों लोगोंके समक्ष अजित-जिनालयमें आचार्यश्रीने वाचनाचार्य सोमप्रभको गच्छनायक पद देकर जिनोदय सूरि नाम स्थापना की। संघवी रतना, पूनाने उस समय बड़ा भारी उत्सव किया। लोगोंके जयजयारवसे गगन मण्डल व्याप्त हो गया। वादित्र बजने लगे, याचक लोग कलरव (शोर) करने लगे कहीं सुन्दर रास (खेल) हो रहे थे कहीं मृदुभाषिणी कुलाङ्गनायें मङ्गल गीत गा रही थीं। इस प्रकार वह उत्सव अतिशय नयनाभिराम था। संघवी रतना पूना और शाह वस्तपालने याचकोंको वांछित दान दिया चतुर्विध संघकी बड़ी भक्ति और जिनभक्त पूजाकी साधर्मी वात्सल्यादि सत्कार्योंमें अपनी चपल लक्ष्मीको मुक्त हाथ व्ययकर जीवनको सार्थक बनाया, उस समय साल्हिग और गुणराजने भी याचकोंको बहुत दान दिये। उपरोक्त वर्णन ज्ञानकलश कृत रासके अनुसार किया गया है।

मेरुसदन कृत विज्ञप्तिलेख अनुसार श्रीजिनोदयसूरिका विशेष परिचय इस प्रकार है—

गूर्जरधरा रूपी सुन्दरीके हृदयपर रत्नोंके हारके भांति पाल्हणपुर नगर है। उसमें व्यापारी मुख्य माल्हू शाखाके (शाह रतनसिंह कुल मण्डन) रुद्रपाल श्रेष्ठि निवास करते थे। सं० १३७५ में उनकी भार्या धारल देवीके कुक्षि सरोवरसे राजहंसके सदृश पुत्र उत्पन्न हुआ। माता पिताने उसका शुभ नाम समरा रखा। चन्द्रकलाके भांति समरा कुमर दिनोंदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगा।

इधर पाल्हणपुरमें किसी समय श्री जिनकुशलसूरिजी का शुभागमन हुआ। धर्म प्रेमी रुद्रपालने सपरिवार गुरुश्रीको वन्दन कर धर्म श्रवण किया। सूरिजीने समरा कुमरके शुभ लक्षणोंको देख (आनन्दान्वित होकर) रुद्रपालको इसे दीक्षित करनेका उपदेश देकर आप भीमपल्ली पधारे। इधर माताके गोदमें बैठे कुमरने सूरिजीके पास दीक्षा कुमारीसे विवाह करानेकी प्रार्थना की। माताने संयम पालनकी दुष्करता उसकी लघु अवस्था आदि बतला-कर बहुत समझाया पर वैरागी समराने अपना दृढ़ निश्चय प्रगट किया। अत इच्छा नहीं होते हुए भी पुत्रके अत्याग्रहसे रुद्रपालने सपरिवार भीमपल्ली जाकर वीर जिनालयमें नांदिस्थापन कर जिन कुशलसूरिके हस्तकमलसे समरा कुमरको सं० १३८२ में दीक्षा दिलवाई। कालिकाचार्यके साथ सरस्वती बहनने दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार समराकुमरके साथ उसकी बहिन कील्हूने दीक्षा ग्रहण की। गुरुने समरकुमरका नाम 'सोमप्रभ रखा। सोमप्रभ मुनि अब बड़े

मनोयोगसे विद्याध्ययन करने लगे और समस्त शास्त्रोंके पारंगत बने। सोमप्रभकी योग्यतासे प्रसन्न हो गुरुश्रीने सं० १४०६ में जेसलमेरमें वाचनाचार्य पद प्रदान किया। वाचनाचार्यजी सुविहित विहार करते हुए धर्म प्रचार करने लगे।

इस प्रकार धर्मोन्नति करते हुए सोमप्रभजीको सं० १४१५ आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशीका संभातमें श्री तरुणप्रभाचार्यने जिन चंद्र सूरिके पदपर स्थापित किये। पदस्थापनका विशेष वर्णन ऊपर आ ही चुका है।

आचार्यपद प्राप्तिके अनन्तर श्री जिनोदय सूरिजीने सिंध, गुजरात, मेवाड़ आदि देशोंमें विहार कर सुविहित मार्गका प्रचार किया। पांच स्थानोंमें बड़ी प्रतिष्ठायें की २४ शिष्यों १४ शिष्यणियोंको दीक्षित किये अनेकोंको संघवी आचार्य, उपाध्याय वाचनाचार्य महत्तरा आदि पदसे अलंकृत किये। इस प्रकार धर्म प्रभावना करते हुए सं० १४३२ के भाद्र कृष्णा एकादशीका पाटणमें लोकहिताचार्यको शिक्षा देकर स्वर्ग सिधारे। सघने आपके अन्तक्रिया स्थलपर सुन्दर स्तूप बनाकर भक्ति प्रदर्शित की।

जिनराज सूरि व गुर्वावलियोंमें

जिनभद्र सूरि ”

जिनचन्द्र सूरि पृ ४८

साह धनराजके बच्छराजकी भार्या स्याजीके कुक्षिसे आप जन्मे थे।

जिन समुद्रसूरि व गुर्वावलियोंमें

खरतर गुरुगुण छप्पय और गुरुगुण षट्पदका सार

प० ४ स ३ पर्व २४ स ४०

नाम पदस्थापनासंवत मिती स्थान जिनालय पददाता

जिनवल्लभ—सं० ११६७ आषाढ शुक्ला ६ चित्तौड़, महावीर, अभयदेवसूरि

जिनदत्त—सं ११६_ वैशाख कृष्णा ६ ,, ,,

जिनचन्द्र—सं १२०५ वैशाख शुक्ला ६ विक्रमपुर, , जिनदत्तसूरि

जिनपति—सं १२२३ कार्तिक शुक्ला १३ वनगपुर जयदेवसूरि

जिनेश्वर—सं १२७८ माह शुक्ला ६ जालोर , सर्वदेवसूरि

जिनप्रबोध—सं १३३१ आश्विन (कृष्णा) ५ ,,

जिनचन्द्र—सं १३४१ वैशाख शुक्ला ३

जिनकुशल—सं० १३७७ ज्येष्ठ कृष्णा ११ पाटण

जिनपद्मसूरि—सं० १३९० ज्येष्ठ शु ६ दराबर,

जिनलब्धि—सं० १४ ० आषाढ कृष्णा १

जिनचन्द्र—स १४०६ माह शुक्ला १० जैसलमेर

जिनोदय—सं १४१५ आषाढ कृष्णा १३ खंभात अजित

जिनराज—१४३३ फाल्गुण कृष्णा ६ पाटण शांति लोकहिताचार्य

जिनभद्र—सं० १४६१ माह (शु १५)भाणशलि,

अजित सागरचन्द्राचार्य

अन्य महत्वके उल्लेख—(गा १) सं १ ८ वादमें दुर्लभ सभा चैत्यवासी विजय जिनेश्वर सूरिको खरतर विरुद प्राप्ति (गा २१) गणधरके १९ वादसोंका प्रतिबोध (ि गा २२)अम्बिकादेवीका युगप्रधानको पद्य वन करना (गा २३)में जिनदत्त सूरिका युगप्रधानपद,(गा ३)में दशारणभद्रका

जिनहंससूरि

पृ० ५१

जिनहंस सूरिजीका सूरिपद महोत्सव करमसिंहने एक लक्ष पीरोजी खरचकर बड़े समारोहसे किया। आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर अनेक देशोंमें विहार करते हुए आप आगरे पधारे। श्रीमाल डुंगरसी और उनके भ्राता पासदत्तने अतिशय हर्षोत्साहसे प्रवेशोत्सव बड़े धूमधामसे किया। सजावट बड़ी दर्शनीय की गई, लोगोंकी भीड़से मार्ग संकीर्ण हो गये। पातशाह स्वयं हाथीपर और उमराव खान वजीर इत्यादि राज्यके अमलदारोंके साथ सामने आये वाजित्र बज रहे थे। श्राविकायें मंगलकलश मस्तकपर धारण कर गुरुश्रीको मोतियोंसे बधा रही थीं। रजत मुद्रा (रुपये) के साथ पान (ताम्बूल) दिये गये इससे बड़ा यश फैला और दिल्लीपति सिकन्दर पातशाहको यह जान बड़ा आश्चर्य उत्पन्न हुआ। उन्होंने सूरिजीको राजसभा (दीवानखाना) में आमंत्रित कर करामात दिखाने को कहा क्योंकि सम्राट्‌ने खरतर जिनप्रभसूरिजीके करामात (चमत्कार) की बातें पहिले लोगोंसे सुनी हुई थी। पूज्यश्रीने तपस्यापूर्वक ध्यान करना प्रारम्भ किया यथासमय जिनप्रभसूरिजीके प्रसाद एवं ६४ योगिनियोंके सानिध्यसे किसी चमत्कार विशेषसे सिकन्दर

वीरवंश (गा० ११) पीरोजी १ गाथामें सं० १५११ का व १४ [illegible] [illegible] रचनाका नाम है (दि० गा० ११) में जिनकवि सूरिका [illegible] लोकोंके वर्णनिरत भावी सेनापतिके कुशिम [illegible] [illegible] और [illegible] लिखा है।

(१) जिनसिंह सूरिजीके पिताका निवास स्थान 'खेतासर' लिखा है ।

(२) पाटणमें धर्मसागर कृत ग्रन्थको अप्रमाणित सिद्ध किया । संघवी सोमजीके संघ सह शत्रुंजय यात्रा की ।

(३) इनके पदमहोत्सवपर श्रीमाल्ह-टांक गोत्रीय राजपालने १८० घोड़े दान किये थे ।

(४) अकबर सभामें ब्राह्मणोंको गंगा नदीके जलकी पवित्रता एवं सूर्यकी मान्यतापर प्रत्युत्तर देकर विजय किया था ।

जिनराज सूरि

(पृ १५ से १७० ४१७)

राजस्थानमें बीकानेर एक सुसमृद्ध नगर है वहां राजा रायसिंह जी राज्य करते थे उनके मन्त्री करमचन्दजी बच्छावत थे । जिन्होंने सं १६३५ के दुष्काल्म सत्रूकार (दानशाला) स्थापित कर डोलती हुई पृथ्वीको (दान देकर) स्थिर कर दी थी एवं सम्प्रेरसे जिनचन्द्र सूरिजीके युग प्रधान पद एवं जिनसिंह सूरिजीके आचार्य पदके महोत्सवपर क्रोड़ रुप्य और नव ग्राम नव हाथी आदिका महान दान किया था ।

उस समय बीकानेरमें बोथरा कुलोत्पन्न धर्मसी शाह निवास करते थे उनकी धर्मपत्नीका शुभ नाम धारलदेवी था । सांसारिक भोगोको भोगते हुए दम्पति सुखसे काल निर्गमन करते थे ।

हमारे संग्रहके प्रवन्धमें आपके ७ भाइयोंके नाम इस प्रकार हैं :—
१ राम २ गेहा ३ मानसी ४ भरव ५ खेतसर ६ कपूर ७ सातर

इस प्रकार विषय भोगोंको भोगते हुए धारलदेवीकी कुक्षिमें सिंह स्वप्न सूचित एक पुण्यवान जीव अवतरित हुआ।

ज्योतिषियोंको स्वप्न फल पूछनेपर उन्होंने सौभाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होनेकी सूचना दी। यथा समय (गर्भ वृद्धि होनेके साथ साथ अच्छे अच्छे दोहद उत्पन्न होने लगे अनुक्रमसे गर्भ स्थिति परिपूर्ण होनेसे) सं० १६४७ वैसाख सुदी ७ बुधवार, छत्र योग श्रवण नक्षत्रमें धारलदेवीने पुत्र जन्मा।

वधूठण उत्सवके अनन्तर वर्धमान शिशुका नाम रतनसी रखा गया, बुद्धिमान होते हुए रतनसी * कलाभ्यास करने लगा अनुक्रमसे ६ भाषा १८ लिपि १४ विद्या ७२ कला ३६ राग और चाणक्यादि शास्त्रोंका अध्ययन कर प्रवीण हो गया। इसी समय अकबर बादशाह प्रतिबोधक जिन सिंह सूरिजी बीकानेर पधारे। लोक बड़े हर्षित हुए और सूरिजीका धर्मोपदेश श्रवणार्थ सभा लोग आने लगे (अपने पिताके साथ) रतनसी कुमार भी व्याख्यानमें पधारे। और धर्म श्रवणकर वैराग्यवासित होकर घर आकर अपनी माताजीसे दीक्षा की अनुमति मांगी। पर पुत्रका स्नेह सहसा कैसे छूट सकता था। माताने अनेक प्रकारसे समझाया पर रतनसी कुमार अपने दृढ़ निश्चयसे विचलित नहीं हुए और सं० १६५६ मार्गशीर्ष शुक्ला १३ को जिनसिंह सूरिजीके समीप दीक्षा ग्रहण की। इस समय आपका शास्त्रे दीक्षाका पद? उसके दिया नव [illegible] मुनि सब गुरुजी के प्रमुख शास्त्रनिहक नामसे परिचित होने लगे।

* एक रासमें लिखा है कि आपके लघु भ्राता [illegible] भी आपके साथ दीक्षा ली।

दीक्षाके अनन्तर सूरिजी शीघ्र ही अन्यत्र विहारकर गये। राज सिंहके मण्डलवप वदन कर कुरुनके सम्बाद पाकर श्री जिनचन्द्र सूरिजीने उन्हें बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय) दी और नाम राजसमुद्र प्रसिद्ध किया।

राजसमुद्र थोड़े ही समयमें कुशाग्र बुद्धिबलसे सूत्रोंको पढ़कर गीतार्थ हो गये। श्री जिन सिंह सूरिजी स्वयं आपको शिक्षा देते थे श्री जिनचन्द्र सूरजीने आपको वाचनाचार्य * पदसे अलंकृत किया। आपके प्रबल पुन्योदयसे अम्बिकादेवी प्रत्यक्ष हुई। जिसके प्रत्यक्ष फलस्वरूप पंचाणीक (प्राचीन) लिपीको आपने पढ़ डाली। जसलमेरमें राउल भीमके समक्ष आपने तपागच्छीयों को परास्त किये थे।

इधर सम्राट जहांगीरने मान सिंह (जिन सिंह सूरि) से प्रेम होनसे उन्हें निमन्त्रणार्थ अपने वजीरोंको फरमान-पत्रके साथ बीकानेर भेजा। वे बीकानेर आये और फरमान पत्र सूरिजीकी सेवामें रखा। सहुन पढ़ा तो सूरिजीको सम्राट्ने आमन्त्रित किया जानकर सभी प्रसन्न हुए।

सम्राट्के आमन्त्रणसे सूरिजीने विहार कर मेड़ते पधारे। वहां एक महीनेकी अवस्थिति की फिर वहांसे एक प्रयाण किया पर आयुष्य अन्त निकट ही आ चुका था अतः मेड़ते पधार और वहीं

* हमारे संग्रहके प्रशस्ति में उल्लेख कर रहे हैं कि आपकी आगम शुद्ध और दीक्षा सं. १६५७ मोगसर वदी १ बीकानेर किया है। जनारसरल सं. १६६८ आसाढ़वदमें किया है।

स्वयं मंघारा उच्चारण कर सं० १६७४ पौष शुक्ल १३ को प्रथम देवलोक सिधार।

संघने एकत्र हो पट्टधरके योग्य कौन है इसका विचारकर राज समुद्रजीको योग्य विदित कर उन्हें गच्छनायक और सूरिजीके अन्य शिष्य सिद्धसेन मुनिको आचार्य पदसे विभूषित किये। ये दोनो जिनराज सूरि और जिनसागर सूरिजीके नामसे प्रसिद्ध हुए। पदमहोत्सवपर संघवी आसकरण चोपड़ेने बहुत द्रव्य व्यय किया। १६७४ फाल्गुन शुक्ल ७ को पदस्थापना बड़े समारोहसे हुई।

गच्छनायक पद प्राप्तिके अनन्तर आपने अनेक जगह विहारकर अनेकानेक धर्म प्रभावनायें की, जिनमेंसे कुछ ये हैं —(सं० १६७ मिगसर सुदी १२ को) जसलमेर (लोद्रव) गढ़में (भणसाली थाहरू कारित) सहस्रफणपार्श्वनाथकी प्रतिष्ठा की। (सं० १६७५ वै० सु० १३ को) शत्रुंजय पर (सोमजी पुत्र रूपजीकारित) अष्टोत्तरशत ८०० प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठा की। मारवाड़में घाघणा थापजी कारित अमीझरा पार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठाकी मेड़तामें चोपड़ा आसकरण कारित शान्ति जिनालयकी (सं० १६७७ ज्ये० कृ० ५) प्रतिष्ठाकी। अम्बिका देवी एवं ५२ वीर आपके प्रत्यक्ष थे सिन्धमें विहारकर (पांच नदीके) पाँच पीरोंको आपने साधित किये। ठाणांग सूत्रकी विषम पदार्थ वृत्ति बनाई।

प्रबन्धमें कंसारबाव सोमविजयका नाम भी है।

+ प्रबन्धमें द्विगोत्रा लिखा है। सूरिमन्त्र गुरुजीसे हेमाचार्यने दिया लिखा है।

इस प्रकार शासनका उद्योत करनेवाले गच्छ नायकके गुण-कीर्तन रूप यह रास श्रीसार कविने सं० १६८१ आषाढ़ कृष्ण १३ को सञ्चावमें रचा। क्षेमशाखाके रत्नहर्षके शिष्य हर्षकीर्तिने यह प्रबन्ध बनवाया। गच्छ नायकके गुणगान करते समय (वर्षा) भी अच्छी हुई। उपरोक्त रास रचनाके पश्चात् (सं० १६८६ मार्गशीर्ष कृष्णा ४ रविवारको आगरेमें सम्राट शाहजहाँसे आप मिले थे और वहाँ ब्राह्मणोंको वादमें परास्त किये एवं दर्शनी लोगोंके विहारका यहां कहीं प्रतिबन्ध था वह खुला करवा कर शासनोन्नति की। राजा गजसिंहजी सूरसिंहजी अमरचन्दान, मारूमलीखान आदिने आपकी बड़ी प्रशंसा की।

यह सवैये (पृ १७३) से स्पष्ट है। गीत नं० ५ में लिखा है कि मुकरबखान ने आपके भुट और कठिन आचाराचारकी बड़ी प्रशंसा की।

आपके रचित १ शालिभद्र चौ० २ गजसुकुमाल चौ० ३ चौबीसी ४ बीसी प्रश्नोत्तर-रत्नमालाकी बीसी ६ कर्म छतीसी ७ शील छत्तीसी बारहवतजोड़ ८ गुणस्थानस्तव और अनेक पद उपलब्ध हैं। नैषध काव्य पर भी आपके १६ हजारी वृत्ति बनानेका उल्लेख है। टकन कारणसंग इसकी दो प्रतियां विद्यमान हैं।—

—* हमारे संग्रहके जिनराज सूरि प्रबंधमें विशेष बातें यह हैं।—

साधन ६ मुनियोंको उपाध्याय २१ को वाचक पद और १ साध्वीजी को प्रवर्तिनी पद दिया ८ बार शत्रुञ्जयकी यात्रा की पाटणके संघके साथ गौड़ीपार्श्वनाथ, गिरनार आबू, राणकपुरकी यात्रा की जवानपुरके

पारूपसे विहार कर जिनरतन सूरिजी पालणपुर पधारे यहाँ संघने हर्षित हो उत्सव किया। वहांसे स्वर्णगिरिके संघके आग्रहसे वहां पधारे। मेरुगिरीपर प्रवेशोत्सव किया, वहांसे मरुस्थलमें विहार करते संघके आग्रहसे बीकानेर पधारे, नथमल वैदने बहुत-सा द्रव्य व्यय कर (प्रवेश) उत्सव किया वहांसे उग्र विहार विचरते बीरम पुरमें (सं १७०१) में संघाग्रहसे चतुर्मास किया।

चतुर्मास समाप्त होते ही वाहड़मेर (सं० १७०२) में आये, संघके आग्रहसे चतुर्मास वहीं किया। वहांसे विहार कर कोटड़ेमें(सं०१७०३) चौमासा किया। चौमासा समाप्त होनेपर वहांसे जेसलमेरके श्रावकोंके आग्रहसे जैसलमेर पधारे, शाह गोपाल प्रवेशोत्सव किया एवं याचकों को दान दे अपनी चंचल लक्ष्मीको सार्थक की। जेसलमेरके संघका धर्मानुराग और आग्रह अधिक देख आचार्य श्रीने चार चतुर्मास (सं १७ ४ से १७०७ तक) वहीं किये। इसके पश्चात् आगरे संघके अत्याग्रहसे वहां पधारे। संघ बड़ा हर्षित हुआ मानसिंहने बादशाहकी आज्ञा प्राप्त कर प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया। अब सम्यक्त्वादि धर्मध्यान अधिकाधिक होने लगा। तीन चौमासा (सं १७०८ से १७१) करनेके पश्चात् चौथे चतुर्मासको (सं १७११) भी संघने आग्रह कर वहीं रखे। वहां अशुभ कर्मोदयसे असमाधि उत्पन्न हुई। आषाढ़ शुक्ला १ से तो वेदना क्रमशः वृद्धि होनेसे औषधोपचार कराया गया, पर निष्फल देख आपने अपने आयुष्यका अन्त ज्ञात कर अपने मुखसे अनशनोच्चार एवं ८४ लाख जीवयो नियोंसे क्षमत क्षमणा कर समाधिपूर्वक श्रावण वदी ७ सोमवारको

इसलामको पदस्थापन कर स्वर्गवासी हुए। संघमें शोक छा गया, पर भावीपर जोर भी नहीं चल सकता। आखिर अन्त्येष्टि क्रिया बड़ी धूमसे कर दाहस्थलपर सुन्दर स्तूप निर्माण कर श्रावक समूहने गुरुभक्तिका आदर्श परिचय दिया भक्ति स्मृतिको चोरंभीकर की (जिनराज सूरि शि०) मानविजयके शिष्य कमलहर्षने भी सं० १७११ श्रावण सुदी ११ शनिवारको आगरमें यह निर्वाण रास रचकर गुरुभक्ति द्वारा कवित्व सफल किया।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २८५ से २४८)

बीकानेर निवासी गणधर चोपड़ा गोत्रीय सहसमल (सहसकरण) की पत्नी राजल दे (सुपीयार दे) के आप पुत्ररत्न थे। आपने १२ वर्षकी लघुवयमें वैराग्यवासित होकर जिनरत्न सूरिके हाथसे जेसलमेरमें दीक्षा ग्रहण की। श्रीसंघने उत्सव किया १८ वर्षकी वयमें (सं० १७११) जिनरत्न सूरिजी आगरमें थे और आप राजनगरमें थे वहां) जिनरत्न सूरिके वचनानुसार पद प्राप्त हुआ और नाहटा जयमल, तेजसी (जिनरत्नपद महोत्सवकर्त्ता) की माता कस्तूरांने पदोत्सव किया। (गीत नं० २)

नं० ५ कवित्तसे ज्ञात होता है कि आपने पंचनदी साधन की थी। आपके रचित कई स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं। सं० १७२५ भादवा सुदी ८ राणपुरमें आपने ८० व्यक्तिके नव करना प्रारम्भ किया था। तत्कालीन गच्छके यतियोंमें प्रविष्ट शिथि

स्तावा निर्वाणार्थ सं० १७१८ माघ सुदी १० सोमवार बीकानेरमें (४ घाड़ाकी) व्यवस्था की थी प्रस्तुत व्यवस्थापत्र हमारे संग्रहमें है ।

जिनसुख सूरि

(पृ० ८६ स १)

बाहरा गोत्रीय (पोषानगर) रूपचन्द शाहकी भार्या रतनादे (सरूप दे) की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने लघुवयमें दीक्षा ग्रहण की थी। सं० १७६२ आषाढ़ शुक्ला ११ को सूरतमें जिनचन्द्र सूरिने आपको स्वहस्तसे श्री संघ समक्ष गच्छनायक पद प्रदान किया था। उस समय पारख सामीदास सूरदासने पद महोत्सव बड़े धूमसे किया था। रात्रिजागरण श्रावकस्वामीवात्सल्य यति वस्त्र परिधापनादिमें बन्होंने बहुत-सा द्रव्य व्ययकर भक्ति प्रदर्शित की।

सं० १७८० के ज्येष्ठ कृष्णा को अनशन आराधन कर रिणीमें जिनभक्ति सूरजीको अपने हाथसे गच्छनायक पद प्रदानकर स्वर्ग सिधारे। श्री संघने अन्त्येष्टि क्रियाके स्थानपर स्तूप बनाया और उसकी माघ शुक्ल पञ्चमीको जिनभक्तिसूरिजीने प्रतिष्ठा की थी। आपके रचित जेसलमेर-चैत्यपरिपाटी स्तवनादि एवं गद्य (भाषा) में (सं० १७६७ में पाटणमें रचित) जेसलमेर श्रावकोंके प्रश्नोंके उत्तरमय सिद्धान्तीय विचार (पत्र ३५ जय मे) नामक ग्रन्थ उपलब्ध है।

जिनभक्तिसूरि

(पृ० २ २)

सठिया हरचन्दकी पत्नी हरसुखदे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। आपने छोटी उम्र ही चारित्र लेकर सद्गुरुको प्रसन्न किया था। जिनसुख सूरिजीने आपको सं १७७६ ज्येष्ठ कृष्णा तृतीयाको रिणीमें स्वहस्तसे गच्छनायक पद प्रदान किया था। उस समय रिणी सघने पद महोत्सव किया। आपके रचित कई स्तव नादि प्राप्त हैं।

जिनलाभसूरि

(पृ ८३ से २६६ तक ४१४ से ४१६)

विक्रमपुरनिवासी बोथरा पंचाननकी धर्मपत्नी पदमा देने आप का जन्म दिया। आपने उस समय जिनभक्ति सूरिजीके पास दीक्षा ग्रहण की। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सूरिजीने मान्डवी बंदरमें आपको अपने पदपर स्थापन किया था।

सं० १८ ४ भुज चढ़कर गुढ़ा होकर १८ में जैसलमेर पधारे यहा १८०८।१ तक रहे। उसके बाद बीकानेरमें (१८१० से १८१४ तक) ५ वर्ष रहकर सं० १८१५ का चौमासा विहारकर गारबदेसर शहरमें (१८१५) चौमासा किया। वहां ८ महीने विराजकर पश्चात् (मि० वि० ३) विहारकर धरी प्रेमेरा पधारते हुए जैसलमेरमें प्रवेश किया। वहां (१८१६ से १८ १६) ४ वर्ष अवस्थितीकर सोनेके साथमें संघसहित पार्श्वनाथजीकी यात्रा की। उसके पश्चिमकी ओर विहारकर गौडीपार्श्वनाथजीकी यात्रा कर

गुढे (सं १८२०) में चौमासा किया। चतुर्मासके अनन्तर शीघ्र विहारकर महुवा मण्डपको पवित्र कर महवेमें नाकोडे पार्श्वनाथकी यात्रा की, वहांसे विहारकर मलोसरमें (सं १८२१) में चतुर्मास किया। वहांसे लेजडल, सारिया रह कर रोहीठ, मंडोवर, जोधपुर, तिमरी होकर मेड़ता (१८२३) पधारे। वहां ४ महीने रहकर जैपुर शहर पधारे, यह शहर क्या था मानो स्वर्ग ही पृथ्वीपर उतर आया हो, वहां वर्ष दिनकी भांति और दिन घड़ीकी भांति व्यतीत होते थे। जैपुरके संघका अत्याग्रह होनेपर भी पूज्यश्री वहां नहीं ठहरे और मेवाड़की ओर विहारकर यश प्राप्त किया। जयपुरसे १८ कोसपर स्थित धूलेवामें ऋषभदेवकी यात्राकर जयपुर (१८२४) पधारे और विजय विनतीसे पालीवाले (१८२५) पाट बिराजे नागौर (का संघ) बीचमें अवश्य आयगा यह जानते हुए भी मारवाड़ (अपने मनकी तीव्र इच्छासे (१८२६) पधारे। इस समय सूरतके धनाढ्योंने योग्य अवसर जानकर विनती पत्र भेजा और पूज्यश्री भी उस ओर विहार करनेसे अधिक लाभ जान (१८२७) सूरत पधारे।

वहांके श्रावकोंको प्रसन्न कर आप पैदल विचरते हुए (१८२६) राजनगर पधारे। वहां शालेवरने बहुत उत्सव किये और २ वर्ष तक रात दिन सेवा की। वहांसे श्रावक संघके साथ शत्रुंजय गिरनारकी यात्रा कर (१८३) वैशाखके संघको बंदाया। वहांसे मांडवी (१८३१) पधारे। वहां अनेकों कोट्याधीश और लक्षाधिपति व्यापारी निवास करते थे। समुद्रसे उनका व्यापार चलता

मार्गशीर्ष महिनेमें आबूगिरिकी यात्रा कर चतुर्मास बीकानेरे (१८२१) रहे।

था। उन्होंने १ वर्ष तक सूत्र ग्रन्थ किया। वहांसे कच्छके मारुतमें विहार कर भुज (१८३२) आये। वहांके संघने भी श्रेष्ट भक्ति की। इस प्रकार १८ वर्ष नवीन नवीन देशोंमें विचर। कवि कहता है कि अब तो बीकानेर शीघ्र पधारिये। अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है, कि भुजसे विहार कर १८३३ का चौमासा मनरा-मन्दर कर सं० १८३४ का चौमासा गुढ़ा किया और वहीं स्वर्ग सिधार (गीत नं० ४)।

गहुंली नं० १ में पूज्यश्रीके पधारनेपर बीकानेरमें उत्सव हुआ, उसका वर्णन है।

गहुंली नं० २ में कवि कहता है कि कच्छसे आप यहां पधारते थे, पर जैसलमेरी संघने बीचमें ही रोक लिया। वहांके लोग बड़े शुद्ध मीठे होते हैं, अत पूज्यश्रीको लुभा लिया। पर बीकानेर अब शीघ्र आवें।

आत्म-प्रबोध ग्रन्थ आपका रचित कहा जाता है। आपके रचित कई स्तवनादि हमारे संग्रहमें हैं, और दो चोवीसीयें प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

जिनचन्द्र सूरि

(पृ० २६७ से २६६)

रूपचन्दकी माता केशरदेके आप पुत्र थ। आपने मरूस्थलमें लघु वयमें ही दीक्षा ली थी और गुरुने जिनलाभ सूरिजीने स्वहस्तसे आपको गच्छनायक पद प्रदान किया था, उस समय श्रीसंघने उत्सव किया था।

गहुंली नं १ सिन्धु देश—हालां नगर स्थित कनकधर्मने सं० १८३४ माघव मासमें बनाई है।

गहुंली नं० २ चारित्रनन्दनने सं० १८५० वैशाख वदी ८ गुरुवारको बीकानेरमें बनाई है। उस समय पूज्यश्री अजीमगंजमें थे, गहुंलीमें उसके पूर्व उनके सम्मेतशिखर, पावापुरीकी यात्रा करनेका उल्लेख कियागया है, एवं बीकानेर पधारनेके लिये विज्ञप्ति की गयी है।

जिनहर्ष सूरि

(पृ ३००)

बोहरा गोत्रीय श्रेष्टि तिलोकचन्दकी भार्या तारादेके कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था। कवि महिमाहंसने आपके बीकानेर पधारनेके समयके उत्सव वर्णनात्मक यह गहुंली रची है। गहुंलीमें बीकानेरके प्रसिद्ध देवालय चिन्तामणि और आदीश्वरजीके दर्शन करनेको कहा गया है।

जिनसौभाग्य सूरि

(पृ० ३०१)

आप कोठारी कर्मचन्दकी पत्नी करणदेवीकी कुक्षिसे उत्पन्न हुए थे। सं० १८९२ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ गुरुवारको जिनहर्षसूरिजीके पद पर नृपवर्य रतनसिंहजी आत्मिक प्रमकसे विराजमान हुए थे। उस समय खजानची अमरचन्दने पद स्थापनाका उत्सव किया था, और याचकोंको दान दिया था।

हमारे संग्रहके एक पत्रमें लिखा है कि जिनहर्षसूरिजीके स्वर्ग सिधारनेके पश्चात् पद किसको दिया जाय इसपर विवाद हुआ। जिन-सौभाग्य सूरिजी उनके दीक्षित शिष्य थे और

महेन्द्र सूरिजी अन्य यतीके शिष्य थे, पर जिनहर्षसूरिजीने उन्हें अपने पास रख लिया था। अत: अन्तमें यह निर्णय किया गया कि दोनोंके नामकी चिट्ठियां डाल दी जाँय, जिसके नामसे चिट्ठी उठे उसे ही पद दिया जाय। यह बात निश्चित होने पर सौभाग्य सूरिजी वयोवृद्ध और गच्छके मुख्य यतियोंको लानेके लिये बीकानेर आये। पीछेसे चिट्ठी डालनेके निश्चित दिनके पूर्व ही कुछ यतीयों और श्रावकोंके पक्षपातसे जिनमहेन्द्र सूरिजीको पद दे दिया गया। इधर आप मुख्य यतियोंके साथ मंडोवर पहुंचे और वहांका वृतान्त ज्ञात कर बीकानेर वापिस पधारे। यहांके यतियों श्रावकों और राजा रत्नसिंहजीका पहलेसे ही इन्हें पद देनेका पक्ष था, अत दे दिया गया। इन्हीं बातोंके संकेत इस गहुंलीमें पाये जाते हैं।

इनके पश्चात् पट्टधरोंका क्रम इस प्रकार है —

जिनहंससूरि—जिनचंद्रसूरि—जिनकीर्तिसूरि, इनके पट्टधर जिनचारित्रसूरिजी अभी विद्यमान हैं।

भूल सुधार

जिनेश्वरसूरि (प्रथम) के शि० जिनचंद्रसूरिजीका नाम छूट गया है। उनका रचित 'संवेग-रंगशाला' ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है।

मंडलाचार्य और विद्वद् मुनि मंडल

भावप्रभसूरि

(पृ० ४६)

माल्हू शाखाके सुगिग कुलमें सम्म शाहकी भार्या राजलदेके आप पुत्र रत्न थे। श्री जिनराज सूरि (प्रथम) के आप (दीक्षित) सुशिष्य तथा सागरचन्द्रसूरिजीके पट्टधर थे, आप साध्वाचारका प्रशंसनीय पालन करते थे और अनेक सद्गुणोंके निवासस्थान थे।

कीर्त्तिरत्न सूरि

(पृ० ५१-५२, पृ० ४०१ ४११)

ओसवंशके संखवाल गोत्रमें शाह कोचर बड़े प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं, उनके सन्तानीय (वंशज) आपमल्ल और देपा हुए। इनमें देपाके देवलदे नामक धर्मपत्नी थी जिसकी कुक्षिसे लखमा माला, कल्हा देल्हा ये चार पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें देल्हा कुंवरका जन्म सं० १४४६ में हुआ था, १४ वर्षकी लघु वयमें (सं० १४६३ आषाढ़ वदी ११) में आपने दीक्षा ग्रहण की थी। श्री जिनवर्द्धन सूरिजीने आपका शुभ नाम 'कीर्तिराज' रखा और शास्त्रोंका अध्ययन भी स्वयं आचार्यश्रीने कराया। विद्वान होनेके पश्चात् सं० १४७० में वाचनाचार्य पद (जिनवर्द्धन सूरिजीने) और सं० १४८० में उपाध्याय पद महेवेमें जिनभद्र सूरिजीने प्रदान किया अतः माता देवलदेका बड़ा हर्ष हुआ। सिन्धु और पूर्व देशोंकी तरफ विहार करते

हुए आप जैसलमेर पधारें। वहां गच्छनायक जिनभद्र सूरिजीने योग्य जानकर सं० १४९७ माघ शुक्ला १० को आचार्य पद प्रदान किया और "कीर्त्तिरत्न सूरि" क नामसे प्रसिद्धि की। उस समय आपके भ्राता लक्खा और केल्हाने विस्तारसे पद महोत्सव किया।

सं० १५२५ वैशाख वदी ५ को २५ दिनकी अनशन आराधना कर समाधि पूर्वक वीरमपुरमें आप स्वर्ग सिधार। जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ, आपके अतिशयसे वहांके वीर जिनालयमें देवोंने दीपक किये और मन्दिरके दरवाजे बन्द हो गये। वहा पूर्व दिशामें संघने स्तूप बनवाया जो अब भी विद्यमान है। वीरमपुर, महेवके अतिरिक्त जोधपुर, आबू आदि स्थानोंमें भी आपकी चरणपादुकाएं स्थापित की गयीं। जयकीर्त्ति और धर्मविलास कृत गीत नं० ७-८ से ज्ञात होता है कि सं० १८७९ वैशाख (आषाढ़) कृष्णा १० को गड़ाल (नाल-बीकानेरसे ४ कोस) में आपका प्रासाद बनवाया गया था।

गीत नं० ५ (सुमतिरंग कृत छंद) और नं० ८ में कुछ नवीन घटनाके भाव विस्तारसे वर्णन हैं जिनका सार यह है—

मारवाड़ देशके संखवाली नगरीमें कोचर शाह निवास करते थे, उनके दो भार्याये थीं जिनमें लघु पत्नीके रोलू नामक पुत्र हुआ, एक एक दिन वह रात्रिके समय सर्पने डंक मारा। विषसे अचेतन होनसे कुटुम्बीजन उसे दहनार्थ, स्मशान ले गये, इसी समय खरतर गच्छनायक जिनेश्वरसूरिजी वहीं थे उन्होंने अपने आत्मबलसे उसे निर्विष कर दिया। रोलू सचेत हो

पर आया कुम्भमें आनन्द छा गया और कोचर शाह तमीसे (सं० १३१३) खरतर गच्छानुयायी* श्रावक हो गये और उन्होंने जिनेश्वरसूरिजीके हस्तकमलसे जिनालयकी प्रतिष्ठा करवाई। इसके बाद कोचर शाह कोरटेमें आ बसे वहां उनके कुलगुरु (पूर्वके गुरू, अन्य गच्छीय) के पुनः अपने गच्छमें आनेके लिये बहुत अनुरोध करनेपर भी आप विचलित न हुए।

वहां सत्क्षेत्र-दानादि शुभ कृत्य करते हुए आनन्दपूर्वक रहने लगे। रोलूक आपमल और देपमल नामक दो पुत्र हुए। इनमें देपमलकी भार्या देवलदेकी कुक्षिसे १ छक्खा, २ माडा ३ कम्हो, ४ वैल्हा ये ४ पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें छक्खोको लक्ष्मीने प्रसन्न हो ७ पीढ़ियोंतक रहनेका वरदान दिया और वे बीसलपुरमें रहने लगे माडा जैसलमेर, बेल्हा मडेवा रहने लगा और चौथे लघु पुत्र वल्हेका वृत्तांत यह है— सं० १४४६ में आपका जन्म हुआ, ११ वर्षकी अवस्थामें विवाह करनेके लिये आप बरात लेकर राणपुर जाने लगे। मार्गमें सोमजयलके समीप जान (बरात) ठहरी वहां एक खजड़ीका वृक्ष था उस देखकर एक राजपूतने कहा कि इस वृक्षके ऊपरसे जो बरछी निकाल देगा मैं उससे अपनी पुत्रीका पाणिग्रहण कर दूंगा। वेल्ह कुमारके इशारेसे उनके सेवक (नर्म) ने राजपूतके कथनानुसार कर दिखाया पर इस कामको करनेमें अधिक परिश्रम लगनेसे उसका प्राणान्त हो गया इस घटनासे

*अन्य प्रमाणोंमें इसका कारण और ही पाया जाता है पर उन सबका विचार स्वतंत्र निबंधमें करेंगे।

देल्ह-कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया और (खरतर) श्री क्षेम कीर्तिजीको बतलाकर (अपने) दीक्षा ग्रहण करनेके भाव प्रकट किये। एवं उनके कथनानुसार जिनवर्द्धन सूरिजीके पास सं० १४६३ में दीक्षा ग्रहण की, दीक्षा ग्रहण करनेके अनन्तर आपने शास्त्रोंका अध्ययन कर गीतार्थता प्राप्त की। सं० १४७० में आपकी योग्यता देखकर जिनवर्द्धनसूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया।

इधर जैसलमेरके जिनालयसे क्षेत्रपालके स्थानान्तर करनेके कारण जिनवर्द्धनसूरिजीसे गच्छभेद हुआ और उनकी शाखा पीपलिया नामसे प्रसिद्ध हुई, नाल्हेने जिनभद्र सूरिजीको स्थापित किया जिनवर्द्धन सूरिजीने कीर्तिराजजी (देल्हकुमार) को अपने पास बुलाया, पर आपको मध्यरात्रिके समय वीर (देवता) ने कहा कि उनका आयुष्य तो मात्र ६ महीनेका ही है और जिनभद्र सूरिजीकी भावी उन्नति होने वाली है। इससे आपने जिनवर्द्धन सूरिजीके पास न जाकर चार चातुर्मास मेवाड़में ही किये। इसके पश्चात् जिनभद्र सूरिजीके बुलानेपर आप उनके पास पधारे। उन्होंने सं० १४८० में आपको पाठक पद प्रदान किया। शाह लखमा और केल्हा महवस जैसल-मेर आये और गच्छनायकको आमन्त्रित कर उन्होंने सं० १४९७ में कीर्तिराजजीको सूरि पद दिलवाया। लखमा और रूपाने प्रचुर द्रव्य व्यय कर, महोत्सव किया। उसके उन्होंने शंखेश्वर, गिरनार, गौड़ी पार्श्वनाथ और सोरठ (शत्रुंजय आदि) के चैत्यालयोंकी यात्रा की, सर्वत्र प्रदक्षिण की एवं आचार्य श्रीको चातुर्मास कराया। कीर्ति

रत्न सूरिजीके ५१ शिष्य थे, सं० १५२५ वै० सु० ५ को आपका स्वर्गावास हुआ। आपने अपने कुटुम्बियोंको ७ शिक्षायें दी जो इस प्रकार हैं—१ मालवा, पट्टा, सिंध और संवलाली नगरी न जाना, २ गच्छभेदमें शामिल न होना, ३ पाटसत्क होना, ४ दीक्षा न लेना, ५ कोरटे और जैसलमेरमें घर बनवाना, ६ जहाँ बसो, नगरके चौराहेसे दाहिनी ओर बसना ७ ।

आपके रचित 'नेमिनाथ काव्य' प्रकाशित है एवं और भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं। आपकी शाखामें अभी जिनकृपाचन्द्र सूरिजी एवं कई यतिगण विद्यमान हैं।

३० जयसागर

(पृ० ४०)

वैभारगिरि शिखर पर नरपाल संघपतिने 'लक्ष्मी तिलक' नामक विहार बनाना प्रारम्भ किया, तब अम्बा देवी श्री देवी आपके प्रत्यक्ष हुई और सरसा पार्श्व जिनालयमें श्रीदेवि, पद्मावती सह प्रत्यक्ष हुआ था। मेदपाट-देशवर्ती नागद्रहके नवखण्डा-पार्श्वचैत्यालय में भी सरस्वती देवी आप पर प्रसन्न हुई थी। श्री जिनकुशल सूरि जी आदि देवता भी आप पर प्रसन्न थे आपने पूर्वमें राजगृह नगर (सर्वत्र) बिहारादि उत्तरमें नगरकोट्टादि पश्चिममें नागद्रह आदि की राज सभाओंमें वादिवृन्दोंको परास्त कर विजय प्राप्त की थी आपने संदेहदोलावलि वृत्ति पृथ्वीचन्द्र चरित्र पर्वरत्नावली, ऋषभ स्तव, भावारिवारण वृत्ति एवं संस्कृत प्राकृतके हजारों

स्तवनादि बनाये। अनेकों श्रावकोंको संघपति बनाये और अनेक शिष्योंको पढ़ाकर विद्वान बनाये।

वि० आपके शिक्षागुरु श्री जिनराज सूरिजी और विद्यागुरु जिनवर्द्धन सूरिजी थे। सं० १४७५ के लगभग जिनभद्र सूरजीने आपको उपाध्याय पद दिया था। आपने अनेकों देशोंमें विहार किया और अनेकों कृतियाँ रची थीं, जिनमें मुख्य ये हैं —

(१) पवरत्नाकसे कथा (१४७८ पाटण, गा० ३२१) (२) विज्ञप्ति त्रिवेणी (सं० १४८४ सिन्धु देश मल्लिकवाहणपुरसे पाटण सूरिजीको प्रेषित), (३) पृथ्वीचन्द्र चरित्र (सं० १५ ३ प्रल्हादनपुर शि० सत्यरुचिकी प्रार्थनासे रचित) (४) संदेहदोलावली लघुवृत्ति सं० १४६५, (५ ६-७) गुरुपारतन्त्र वृत्ति उपसर्गहर, साधारिवारणवृत्ति (८) भाषामें—वयरस्वामी रास (गा ३६ सं १४६) (९) कुशल सूरि चौ० (१४८१ मल्लिकवाहणपुर) और संस्कृत भाषाके स्तवनादि (सं० १५०३ सि० पत्र १२ भय० सं०) भी अनेकों उपलब्ध हैं। आपके शिष्य परम्परादिके लिये देखें —विज्ञप्ति त्रिवेणी जैनसाहित्यनोसंक्षिप्तइतिहास और युगप्रधान—जिनचन्द्र सूरि (पृ० २०३) जैनस्तोत्रसन्दोह भा० २। प्रस्तुत ग्रन्थके पृ० ३ में मुद्रित खरतर पट्टावली भी आपकी आद्यन्त रचित है।

क्षेमराजोपाध्याय

(पृ० ११४)

उसवंश गोत्रीय शाह लीलाकी पत्नी लीलादेवीके आप पुत्र थे।

सं० १५१६ में गच्छ नायक जिनचन्द्र सूरिजीने आपको दिक्षा दी थी। वा० सोमध्वजके आप सुशिष्य थे और उन्होंने ही आपको विद्याध्ययन कराया था। आपके रचित साहित्यकी संक्षिप्त सूची इस प्रकार है —

(१) उपदेश सप्ततिका (सं० १५४७ हिसारकोट वास्तव्य श्रीमाळी पद्द पर्वत श्रेष्ठीके आग्रहसे रचित, जैनधर्म प्रसारक सभासे प्रकाशित)।

(२) इषुकार चौ० गा० ५० (६५) हमारे संग्रहमें नं० ७५

(३) श्रावक विधि चौ० गा० ७० (सं० १५४६) हमारे संग्रह नं० ७६४।

(४) पार्श्वनाथ रास (गा० २५) ५ श्रीमंधरस्तवन, गौरा बादलस्त, पार्श्व १०८ नाम स्तोत्र, वरकाणास्त० ज्ञानपंचमीस्त०, वीरस्त०, समवसरण स्तवन उत्तराध्ययन सज्झायादि उपलब्ध हैं।

सं० १५६६ आश्विन सु० २ को इनके पास कोटड़ा वास्तव्य मं० छोला श्रावकने व्रत ग्रहण किये थे, जिसकी नोंध १ गुटकेमें है। अन्य साधनोंसे आपकी परम्परा इस प्रकार ज्ञात होती है —

(१) जिनकुशल सूरि (२) विनयप्रभ (३) विजय तिलक (४) क्षेमकीर्ति (इन्होंने शीराबला पार्श्वनाथके प्रसाद ११० शिष्य किये) इनके नामसे क्षेम शाखा प्रसिद्ध हुई, (५) क्षेमहंस (६) सोमध्वजशिष्य (७) आप शिष्य थे। आपके मुख्य ३ शिष्य थे, जिनमेंसे प्रमोदमाणिक्य शि जयसोम और उनके शि० गुणविनयके शिष्य देखें युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि (पृ १९७)

देवतिलकोपाध्याय

[पृ० ५५]

मरुक्षेत्रके अयोध्या-बाहड़ गिरि नामक प्रसिद्ध स्थानमें ओशवाल वंशीय भणशाली गोत्रके शाह करमचन्द निवास करते थे और उनकी सुहागदे नामक पत्नीसे आपका जन्म हुआ था। ज्योतिषीने आपका जन्म नाम देदो रखा। वह कुमर अनुक्रमसे बड़े होने लगे और ८ वर्ष की वयमें सं० १५४१ में दीक्षा ग्रहण की एवं सिद्धान्तोंका अध्ययन कर सं० १५६? में उपाध्याय पदसे विभूषित हुए।

सं० १६ ? मार्गशीर्ष शुक्ला ५ को जैसलमेरमें अनशन आराधनापूर्वक आपकी सद्गति हुई। अग्नि-संस्कारके स्थलपर आपका स्तूप बनाया गया, जो कि बड़ा प्रभावशाली और रोगादि दुःखोंको विनाश करनेवाला है।

सं० १५८१-८५ में आपने दो शिलालेख-प्रशस्तियें रची थी देखें जै० ले० सं० नं० २१५४।५५

आपके लिखित एवं संशोधित अनेकों प्रतियां बीकानेरके बड़े भण्डारोंमें विद्यमान हैं। आपके हस्ताक्षर बड़े सुन्दर और सुवाच्य थे।

आपके सुशिष्य हर्षप्रभ लि० हीरकलशादि कृतियांके लिये देखें यु० जिनचन्द्र सूरि चरित्र पृ० २०६ एवं आपके लि० विजयराज लि० पद्ममन्दिरगणि प्रवचनसारोद्धार बालावबोध (सं० १६५१) भी पूज्यजीके संग्रहमें उपलब्ध है।

श्री दयातिलकोपाध्यायजीकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी। सागर चन्द्र सूरि (१५ वीं) शि० महिमराज शि० दयासागरजी कशि० ज्ञान मन्दिरजीके आप सुशिष्य थे। महिमराजके शि० सोमसुन्दरकी परम्परामें सुखनिधान हुए, जिनका परिचय आगे लिखा जायगा।

दयातिलकजी

[पृ० ४१६]

आप उपरोक्त क्षेमराजोपाध्यायजीके शिष्य थे। आपके पिताका नाम वच्छराज और माताका वाल्हादेवी था। आप नव विध परिग्रहके त्यागी और निर्मल पंचमहाव्रतोंके पालनेमें शूरवीर थे।

महोपाध्याय पुण्यसागर

[पृ० ५७]

उदयसिंहजीकी भार्या उत्तम दे ने आपको जन्म दिया था। श्रीजिनहंस सूरिजीने स्वहस्तकमलसे आपको दीक्षा दी थी।

आप समर्थ विद्वान और गीतार्थ थे। आपके एवं आपके शिष्य पदमराज हंस प्रभृतियों आदि का परिचय युगप्रधान जिनचंद्र सूरि ग्रन्थके पृष्ठ १८६ में दिया गया है।

उपाध्याय साधुकीर्त्तिजी

[पृ० १३७]

ओसवाल वंशीय सचिंती गोत्रक साह वस्तिगकी पत्नी खेमलदेके आप पुत्र थे। दयाकलशजीके शिष्य अमरमाणिक्यजीके आप

सुशिष्य थे। आप बड़े विद्वान थे। सं० १६२५ मि० म० १२ आगरमें अकबर सभामें तपागच्छवालोंको पोषहकी चर्चामें निरुत्तर किया था और विद्वानोंने आपकी बड़ी प्रशंसा की थी, संस्कृतमें आपका भाषण बड़ा मनोहर होता था।

सं० १६३२ माघव (वैशाख) शुक्ला १५ को जिनचन्द्र सूरिजीने आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था और अनेक स्थानोंमें विहार कर अनेक भव्यात्माओंको आपने सन्मार्गगामी बनाया था।

सं० १६४६ में आपका शुभागमन लाहोर हुआ, वहां माह कृष्ण पक्षमें आयुष्यकी अल्पताको ज्ञातकर अनशन उच्चारण पूर्वक आराधना की और चतुर्दशीको स्वर्ग सिधारे। आपके पुनीत गुणों-की स्मृतिमें वहां स्तूप निर्माण कराया गया उस अनेकानेक जन समुदाय वन्दन करता है।

सं० १६२५ के शास्त्रार्थ विजयका विशद वृतान्त आपके सतीर्थ कनक सोम कृत जयतपदवेलिमें विस्तारसे है। सरल और विरोधी होनेसे इसका सार यहां नहीं दिया गया, जिज्ञासुओंको मूल वेलि पढ़ लेनी चाहिये।

आपके एवं आपके शिष्य प्रशिष्योंके कृतियोंकी सूची यु० जिनचन्द्र सूरि मन्थके पृ० १६२ में दी गयी है। आपकी परम्पराम कविवर धर्मवर्धन अच्छे कवि हो गये हैं, जिनका परिचय "राजस्थान" पत्र (वर्ष २ अंक २) में विस्तारसे दिया गया है।

महोपाध्याय समयसुन्दर

(पृ० १४६ से १४८)

पोरवाड़ ज्ञातीय रूपसी शाहकी भार्या लीलादेकी कुक्षिम

मारवाड़में आपका जन्म हुआ था। नवयौवनावस्थामें युo जिन चन्द्र सूरिजीके हस्तकमलसे आप दीक्षित हुए थ। श्री सकलचन्द्र जीके आप शिष्य थ और तर्क व्याकरण एवं जैनागमोंका अप्रतम अभ्यास कर (गीतार्थता)पांडित्य प्राप्त किया था। सम्राट अकबरके एक पद (राजा नो ददते सौख्यम्) चमत्कार ८ लाख अर्थ करआकर के (रचित) किया था। विद्वद् समाज और श्री संघमें आपकी असाधारण ख्याति थी। लाहोरमें जिनचन्द्र सूरिजीने आपको वाचक पद प्रदान किया था। आपके महत्वपूर्ण कार्यकलाप ये हैं —

(१) जैसलमेरके रावल भीमको प्रसन्न कर मयणों द्वारा मारे जानेवाले सांढा-जीवोंको छुड़ाया था।

(२) शीतपुर (सिद्धपुर) में मखनूम महमद शेखको प्रतिबोध देकर पाच नदीके (जलचर) जीवों—विशेषतया गायोंकी रक्षाका पटह बजवानेका प्रशंसनीय कार्य किया था।

(३) मंडोवराधिपतिको रंजित कर मंडलेमें बाज बजवाने द्वारा शासन प्रभावना की थी।

(४) परोपकारार्थ अनेकों ग्रन्थों—भाषा काव्योंकी (वृत्तियें, गीत, छन्द) प्रचुर प्रमाणमें रचना की थी।

(५) गच्छके सभी मुनियोंको (गच्छ) पहिरामणी की थी।

(६) सं १६६१ में क्रिया-उद्धारकर कठिन साध्वाचार पालनका आदर्श उपस्थित किया था।

(७) आपका शिष्य-परिवार बड़ा विशाल और विद्वान् था। वादी हर्ष नन्दन जैसे आपके उत्कट विद्वान् शिष्य थ। श्री जिनसिंह

सूरिजीने अवसरमें आपको उपाध्याय पद प्रदान किया था। सं० १७०२ के चैत्र सुद्धा त्रयोदशीको अहमदाबादमें अनशन आराधना पूर्वक आप स्वर्ग सिधारे। आपके विस्तृत कृति-कलापकी संक्षिप्त सूची यु० जिनचन्द्र सूरि ग्रन्थके पृ० १६८ में दी गयी है।

यश कुशल

(पृ० १४६)

श्री कनकसोमजीके आप शिष्य थे। हमारे संग्रहके (अन्य) गीत द्वयसे ज्ञात होता है कि हाजीखानडेरे (सिंध) में आपका स्वर्गवास हुआ था। वहां आपका स्मृति मंदिर है आपके शिष्य भुवनसोम शि० राजसागरके गीतानुसार आप बड़े चमत्कारी थे और आपके परचे (चमत्कार) प्रत्यक्ष और प्रसिद्ध हैं। राजसागरने सं० १७०६ फाल्गुन सुद्धा ११ को वहांकी यात्रा की। आपके गुरु कनकसोम-जीका परिचय देखें—युग० जिनचन्द्र सूरि पृ० १६४।

करमसी

(पृ० ० ४)

आपकी जन्मभूमि जैसलमेर है। आपके पिताका नाम चांपा साह, माताका चांपल दे और गोत्र चापड़ा था। आप बड़े तपस्वी थे। ५० बेल (छट्ठ भक्त याने २ उपवास) और निवी आम्बिल आदि ता अनेकों किये थे। वैशाख सुद्धा ७ को आपने संथारा किया था और आपका गच्छ खरतर था।

सुखनिधान

(पृ० २३६)

आप डूंगड़ गोत्रीय और श्री समयकलशजीके सुशिष्य थे। आपके लिखित अनेकों प्रतियां हमारे संग्रहमें हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि-सन्तानीय थे। आपकी परम्पराके नाम ये हैं—(१) सागरचन्द्रसूरि, (२) वा० महिमराज, (३) वा० सोमसुन्दर, (४) वा० साधुलाभ, (५) वा० चारुधर्म, (६) वा० समयकलशजीके आप शिष्य थे। आपके शिष्य गुणसेनजीके रचित भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं और उनके शिष्य यशोलाभजी तो अच्छे कवि हो गये हैं। उनके लिखित और रचित अनेकों कृतियां हमारे संग्रहमें हैं। विशेष परिचय यथावकाश स्वतन्त्र लेखमें दिया जायगा।

वाचनाचार्य पद्महेम

(पृ० ४२०)

आप गोलछा गोत्रीय चोखासाहकी पत्नी चांगादेकी कुक्षिसे अवतरित हुए थे। आपको लघुवयमें युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीने अपने कर-कमलोंसे दीक्षित कर श्री तिलककमलजीके शिष्य बनाए। ३७ वर्ष पर्य्यन्त निर्मल चारित्र-रत्नका पालन करते हुए सं० १६६१ में जालमीगर पधार, चातुर्मास वहींपर किया। ज्ञानबलसे अपना अन्त समय निकट जानकर विशेष रूपसे आराधना और पञ्च परमेष्ठिका ध्यान करते हुए छः प्रहरका अनशन व्रत पालनकर मिती भाद्रव कृष्णा १५ को मध्याह्न समय स्वर्गलोकको प्रयाण कर गए।

लब्धिकल्लोल

(पृ० ८६)

श्रीकीर्तिरत्नसूरि शाखाके विमलरंगजीके आप शिष्य थे। आप श्रीमाली लखणशाहकी पत्नी लखिमदेके पुत्र थे। सं० १६८१ में गच्छपतिके आदेशसे आप मुल्तान पधारे। वहाँ कार्तिक कृष्णा षष्टीको अनशन आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ। शाह पीथा-हाथी रामसिंह मांडण आदि मुल्तान नगरके मल्हिआन श्रावकोंके उद्यमसे पूर्व दिशाकी ओर आपकी चरणपादुकाएं मार्गशीर्ष कृष्णा ७ को स्थापित की गयी।

आपका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६में दिया गया है।

विमलकीर्ति

(पृ० २०८)

हुम्बड़ गोत्रीय श्रीचन्द्रशाहकी पत्नी गवरादेवी आपकी जन्म दातृ थी। आपने सं० १६५४ माह शुक्ला ७ को साधुसुन्दरोपाध्यायके पास दीक्षा ग्रहण की। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको वाचक पदसे अलंकृत किया था।

सं० १६९२ में (मुल्तान चतुर्मास आये) किरहोर सिन्धमें आप स्वर्ग सिधारे।

आपकी कृतियोंकी सूची युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १९३ में दी गई है। सं० १६७१ मि० सु० ६ जिनराजसूरिजीके उपदेशसे वा० विमलकीर्तिजीके पास आविका पेमाने १२ व्रत ग्रहण किये।

सुखनिधान

(पृ० २३६)

आप हुंबड़ गोत्रीय और श्री समयकलशजीके सुशिष्य थे। आपके लिखित अनेकों प्रतियां हमारे संग्रहमें हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि-सन्तानीय थे। आपकी परम्पराके नाम ये हैं—(१) सागरचन्द्रसूरि, (२) वा० महिमराज, (३) वा० सोमसुन्दर, (४) वा० साधुप्रभ, (५) वा० चारुप्रभ, (६) वा० समयकलशजीके आप शिष्य थे। आपके शिष्य गुणसेनजीके रचित भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं और उनके शिष्य यशोलाभजी तो अच्छे कवि हो गये हैं। उनके लिखित और रचित अनेकों कृतियां हमारे संग्रहमें हैं। विशेष परिचय यथावकाश स्वतन्त्र लेखमें दिया जायगा।

वाचनाचार्य पद्महेम

(पृ० ४२०)

आप गोलछा गोत्रीय चोलगदासकी पत्नी चांगादेकी कुक्षिसे अवतरित हुए थे। आपको लघुवयमें युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीने अपने कर-कमलोंसे दीक्षित कर श्री० तिलककमलजीके शिष्य बनाए। १७ वर्ष पर्य्यन्त निर्मल चारित्र-रत्नका पालन करते हुए सं० १६६१ में जालमीमेर पधार चातुर्मास वहींपर किया। ज्ञानबलसे अपना अन्त समय निकट जानकर विशेष रूपसे आराधना और पञ्च परमेष्ठिका ध्यान करते हुए ७ प्रहरका अनशन प्रण पालनकर मिती भाद्रव कृष्णा १५ को मध्याह्न समय स्वर्गलोकको प्रयाण कर गए।

लब्धिकल्लोल

(पृ० ८६)

श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखाके विमलरंगजीके आप शिष्य थे। आप श्रीमाली लक्ष्मणशाहकी पत्नी लखिमदेके पुत्र थे। सं० १६८१ में गच्छपतिके आदेशसे आप मुल्तान पधारे। वहां कार्त्तिक कृष्णा षष्ठीको अनशन आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ। शाह पीमा-हाथी रामसिंह मांडण आदि मुल्तान नगरके मुख्य-मुख्य श्रावकोंके उद्यमसे पूर्व दिशाकी ओर आपकी चरणपादुकाएं मार्गशीर्ष कृष्णा ७ को स्थापित की गयी।

आपका विशेष परिचय यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६में दिया गया है।

विमलकीर्त्ति

(पृ० ९०)

हुंबड़ गोत्रीय श्रीचन्द्रशाहकी पत्नी गवरादेवी आपकी जन्मदातृ थी। आपने सं० १६५४ माह शुक्ला ७ को साधुसुन्दरोपाध्यायके पास दीक्षा ग्रहण की। श्रीजिनराजसूरिजीने आपको वाचक पदसे अलंकृत किया था।

सं० १६९२ में (मुल्तानसे चतुर्मास आये) किरहोर सिन्धमें आप स्वर्ग सिधारे।

आपकी कृतियोंकी सूची युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १९३ में दी गई है। सं० १६७१ मि० सु० ६ जिनराजसूरिजीके उपदेशसे वा० विमलकीर्त्तिजीके पास श्राविका पेमाने १२ व्रत ग्रहण किये।

सुखनिधान

(पृ० २३६)

आप ढुंबड़ गोत्रीय और श्री समयकलशजीके सुशिष्य थे। आपके लिखित अनेकों प्रतियां हमारे संग्रहमें हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि-सन्तानीय थे। आपकी परम्पराके नाम ये हैं—(१) सागरचन्द्रसूरि, (२) वा० महिमराज, (३) वा० सोमसुन्दर, (४) वा० साधुलाभ, (५) वा० चारुधर्म, (६) वा० समयकलशजीके आप शिष्य थे। आपके शिष्य गुणसेनजीके रचित भी कई स्तवनादि उपलब्ध हैं और उनके शिष्य यशोलाभजी तो अच्छे कवि हो गये हैं। उनके लिखित और रचित अनेकों कृतियां हमारे संग्रहमें हैं। विशेष परिचय यथावकाश स्वतन्त्र लेखमें दिया जायगा।

वाचनाचार्य पद्महेम

(पृ० ४२०)

आप गोलछा गोत्रीय चोखराशाहकी पत्नी चांगादेकी कुक्षिसे अवतरित हुए थे। आपको लघुवयमें युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीने अपने कर-कमलोंसे दीक्षित कर श्री तिलककमलजीके शिष्य बनाए। ३७ वर्ष पर्य्यन्त निर्मल चारित्र-रत्नका पालन करते हुए सं० १६६१ में बाड़मेर पधारे, चातुर्मास वहींपर किया। ज्ञानबलसे अपना अन्त समय निकट जानकर विशेष रूपसे आराधना और पञ्च परमेष्ठिका ध्यान करते हुए ८ प्रहरका अनशन व्रत पालनकर मिती माघव कृष्णा १५ को मध्याह्न समय स्वर्गलोकको प्रयाण कर गए।

आपकी परम्परादिके विषयमें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ (पृ० १७३) देखना चाहिये।

उ० भावप्रमोद

(पृ० २५८)

श्रीजिनराजसूरि (द्वितीय) के शि० भावविजयके शिष्य भाव विनयजीके आप सुशिष्य थे। बाल्यावस्थामें ही आपने चारित्रम ग्रहण किया था। श्रीजिनरत्नसूरिजीने आपके विमलमतिकी प्रशंसा की थी और उनके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिजी तो आपको (विद्वतादि गुणोंके कारण) अपने साथ ही रखते थे। आप बड़े प्रभावशाली और उपाध्याय पदसे अलंकृत थे। सं० १७४४ माघ कृष्णा ५ गुरुवारके पिछले प्रहर, अनशन (मत्थएण-पच्चक्खाण) द्वारा समाधिपूर्वक आप स्वर्ग सिधारे।

आपके शि० भावसागर रचित सप्तपदार्थी वृत्ति (१७३० मा० सु० धनासर पत्र ३७) कृपाचन्द्र सूरि सं० (बं० नं० ४६ नं० ६११) में उपलब्ध है।

चन्द्रकीर्ति

(पृ० ४७१)

सं० १७०७ पौष कृष्ण १ को बिलाड़ेमें आपका अनशन आराधन सह स्वर्गवास हुआ। यह कवित्त आपके शि० सुमतिरंगने रचा है जो कि अच्छे कवि थे। देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २ ६ २१५

कविवर जिनहर्ष

(पृ० ६१)

खरतर गच्छीय शान्तिहर्षजीके शिष्य कविवर जिनहर्ष बड़े

वाचनाचार्य सुखसागर

(पृ० २५३)

वाचनाचार्यजी साध्वाचारकी कठिन क्रियाओंको पालन करनेमें बड़ा यत्न करते थे। सं १७२५ में गच्छनायकके आदेशसे और स्तम्भ तीर्थकी यात्राके लिये खम्भातमें चतुर्मास किया। चतुर्मास सानन्द पूर्ण हुआ। सब नर-नारी आपके वचनकलासे प्रसन्न थे। चतुर्मासके अनन्तर ज्ञानबलसे अपना आयुष्य अल्प ज्ञातकर अनशन आराधना पूर्वक मार्गशीर्ष कृष्णा १४ सोमवारको स्वर्ग सिधारे। उस समय आप मासखेतीरु साथ उत्तराध्ययन सूत्रका श्रवण कर रहे थे, श्रावक समुदाय आपके सन्मुख बैठा था। स्वर्गप्राप्तिके पश्चात् वहां आपकी पादुकाऐं स्थापित की गई।

वा० हीरकीर्ति

(पृ २५६)

युग० श्रीजिनचन्द्रसूरिके शिष्य वा तिलककमल शि०पद्महेमके शिष्य दानराज, निलयसुन्दर, हर्षराजादि थे। इनमें दानराजजीके शिष्य हीरकीर्ति गोलछा गोत्रीय थे। सं० १७२६में जोधपुरमें आपका चतुर्मास था। वहीं श्रावण शुक्ला १४ को ८४ लक्ष जीवायोनियोंसे क्षमतक्षामणाकी दो प्रहरके अपराण आराधनापूर्वक आपका स्वर्गवास हुआ।

आपकी स्मृतिमें इसी संवतमें माघ कृष्णा १२ सोमवारको (१) पद्महेम (२) दानराज, (३) निलयसुन्दर (४) हर्षराजकी पादुकाओंके साथ आपकी पादुकाएं भी स्थापित की गई।

रहवीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध कवि थे । आपने मद-युद्धियाक आमाय शत्रुंजय-महात्म्य जैसे अनेकों विषयोंकी भाषा चौपाइ रचकर बहुत उपकार किया । आप साध्वाचार पालनेमें सदा उद्यम करते रहते थे, और आपके व्रत नियम अन्तिम अवस्था तक अखंडित थे । आपके अनेकानेक सद्गुणोंमें १ गच्छममत्वका त्याग (जिसके उदाहरण स्वरूप सत्यविजय पन्यास रास प्रकाशित ही है) २ जन समुदाय अनुवृत्तिका त्याग ३ मधुरता ४ राग द्वेषका उपशम आदि मुख्य है । आप रास चौपाई आदि भाषा काव्योंके निर्माण करनेमें अप्रमत्त रह ज्ञानका बड़ा विस्तार करते रहते थे ।

आपके गच्छममत्व परित्यागके सद्गुणसे तपागच्छीय वृद्धि विजयजीने आपके व्याधि उत्पन्न होनेके समयसे बड़ी सेवा-भक्ति और वैयावच्चकी थी और अन्तिम आराधना भी उन्होंने ही कराइ थी । पाटणमें आप बहुत वर्षों तक रहे थे आपका स्वर्गवास भी वहीं हुआ श्रावकोंने अंत क्रिया (मांडवी रचनादि) बड़ी भक्तिसे की । आपके विशाल कृतियों नोंध जै॰ गु॰ क॰ भा॰ २ में देखनी चाहिये । उनके अतिरिक्त और भी कई रास आदि हमें उपलब्ध हैं, उनमें मुख्य ये हैं —१ मृगापुत्रचौ॰ (१७२५ मा॰ व॰ १० सत्यपुर) (२) कुसुम श्री रास (१७१७ सि॰ १३) (३) यशोधर रास (१७४० वै॰ सु॰ ✓ पाटण) (४) कनकावली रास (अपूर्ण) ५ भीमसेनरास (१७६१ मा॰ सु॰ १ पाटण ढाल १४, रामलालजी यतिका संग्रह) और स्तवन सज्झायादि अनेक उपलब्ध है ।

रहकी प्रशाल्यीक सुप्रसिद्ध कवि थे। आपने मद-बुद्धियोंके समार्थ शत्रुंजय महात्म्य जैसे ग्रन्थको विशाल मेधाकी भाषा चौपाई रचकर बहुत उपकार किया। आप माच्याचार पालनमें सदा उद्यम करते रहते थे, और आपके प्रत नियम अन्तिम अवस्था तक ●स्खलित थे। आपके अनेकानेक सद्‌गुणोंमें १ गच्छममत्वका त्याग (जिसके उदाहरण स्वरूप सत्यविजय पन्यास रास प्रकाशित हो है) २ अन्य समुदाय मनुवृत्तिके त्याग ३ अस्तुना ४ राग द्वेषका उपशम आदि मुख्य है। आप रास चौपाई आदि भाषा काव्योंके निर्माण करनेमें अप्रमत्त रह, ज्ञानका बड़ा विस्तार करते रहते थे।

आपके गच्छममत्व परित्यागके सद्‌गुणसे तपागच्छीय वृद्धि विजयजीने आपके व्याधि उत्पन्न होनेके समयसे बड़ी सेवा-भक्ति और वैयावच्चकी थी और अन्तिम आराधना भी उन्होंने ही कराई थी। पाटणमें आप बहुत वर्षों तक रहे थे आपका स्वर्गवास भी वहीं हुआ श्रावकोंने अंत क्रिया (मांडवी रचनादि) बड़ी भक्तिसे की। आपके विशाल कृतियों नोंध जै● गु० क● भा २ में देखनी चाहिये। उनके अतिरिक्त और भी कई रास आदि हमें उपलब्ध हैं, उनमें मुख्य ये हैं—१ मृगापुत्रचौ०(१७१५ मा०व १०सत्यपुर) (२) कुसम श्री रास (१७१७ मि १३) (३) यशोधर रास (१७४७ वै सु ८ पाटण) (४) कनकावती रास (अपूर्ण) ५ भीमसेनरास (१७६१ मा सु १ पाटण, ढाल १४ रासमालाजी भक्तिका संग्रह) और स्तवन सज्झायादि अनेक उपलब्ध है।

श्री अमर विजयजीके शि० लक्ष्मीचन्द्र कृत सुशोभिनादेयकादि मन्थ उपलब्ध है और द्वि० शि० उ० ज्ञानवर्द्धन सि० कुशलकल्याण शि दयामेरुकृत प्रश्नसन चो (सं० १८८० जेठ सु १ सु भावनगर) उपलब्ध है। आपकी परम्परामें यतिवय जयचंदजी अभी विद्यमान हैं।

सुगुरुवंशावली

(पृ० २७)

जिनभद्र-जिनचन्द्र, जिनसमुद्र जिनहंससूरिजीके पट्टधर जिन माणिक्यसूरिजी थे। इनके पारसगोत्रीय वा० कल्याणधीर नामक शिष्य थे। उनके भणशाली गोत्रीय वा० कल्याण क्षम और कल्याणक्षमके उ० कुशललाभ नामक विद्वान शिष्य थे। इनका विशेष परिचय यु जिनचन्द्रसूरि पृ १६४ में देखना चाहिये।

श्रीमद् देवचन्द्रजी

(पृ २६४)

बीकानेर नगरके समीपवर्ती एक रमणीय ग्राम था, वहां लूणिया शाह तुलसीदासजी निवास करते थे उनके धनवाई नामक शीलवती पत्नी थी। एक समय खरतर वा राजसागरजी वहां पधारे। दम्पतिने भावसे उन्हें वंदना की और धनवाईने जो कि उस समय गर्भवती थी कहा कि यदि मेरे पुत्र होगा तो आपको बहराऊंगी। गर्भ दिनों दिन बढ़ने लगा उत्तम गर्भके प्रभावसे असाधारण उत्तम और उत्तम दोहद उत्पन्न होने लगे। इसी समय वहां जिनचन्द्र सूरिजी का शुभागमन हुआ इस समय धन वाईके एक पुत्र तो विद्यमान

वा और गर्भवती थी। उन्होंने गुरुजीने उनके फिर भी पुत्र होने का निश्चय किया और "इस द्वितीय पुत्रको हमें देना" कहा, पर धनबाई वाचकजीको इससे पूर्व ही वचन दे चुकी थी।

सं० १७४६ में पुत्र उत्पन्न हुआ, गर्भके समय स्वप्नमें इन्द्र आदि देवों द्वारा मेरु पर्वतपर प्रभुका स्नात्र महोत्सव किये जानेका दृश्य देखा था। उसीके स्मृति सूचक नवजात बालकका शुभ नाम "देवचन्द्र" रखा। क्रमानुसार वृद्धि पाते हुए जब वह बालक ८ वर्षका हुआ उस समय वा० राजसागरजीका फिर वहीं शुभागमन हुआ दम्पति (धनबाई) ने अपने वचनानुसार अपने होनहार बालकको गुरु श्रीके समर्पण कर दिया। गुरु श्रीने शुभ मुहूर्त देख सं० १७५६ में लघु दीक्षा दी। यथासमय जिनचन्द्र सूरिजीके पास बड़ी दीक्षा दिलाई गई, सूरिजीने नव दीक्षित मुनिका नाम 'राजविमल' रखा। राजसागरजीने प्रसन्न होकर आपको सरस्वती मन्त्र प्रदान किया, श्रीदेवचन्द्रजीने बनासट (बिलाड़ा) नामक भूमिगृहमें रहकर उस का साधन किया तभी सरस्वती आपपर प्रसन्न हुई जिसके फल स्वरूप थोड़े ही समयमें आप गीतार्थ हो गये।

गुरुश्रीने स्वपरमतके सभी आवश्यक और उपयोगी शास्त्र पढ़ाकर आपकी प्रतिभामें अभिवृद्धि की। उन शास्त्रोंमें उल्लेखनीय ये हैं—षडावश्यकादि जैन आगम व्याकरण पञ्चकाव्य नैषध, नाटक, ज्योतिष १८ कोष कौमुदीमहाभाष्य, मनोरमा पिङ्गल, स्वरोदय, तत्वार्थ आवश्यक बृहद्वृत्ति हेमचन्द्रसूरि हरिभद्रसूरि और यशोविजयजी कृत ग्रन्थ समूह ६ कर्म ग्रन्थ कर्म प्रकृति इत्यादि।

श्री अमर विजयजीके शि॰ लक्ष्मीचन्द कृत सुबाधिनीभैषजादि ग्रन्थ उपलब्ध है और शि॰ शि॰ उ॰ ज्ञानवर्द्धन शि॰ कुशलकल्याण शि॰ दयामेरुकृत प्रश्नोत्तर चौ॰ (सं॰ १८५० मेरु सु॰ १५ भावनगर) उपलब्ध है। आपकी परम्परामें यतिवर्य जयचंदजी अभी विद्यमान है।

सुगुरुवंशावली

(पृ॰ २७)

जिनभद्र जिनचन्द्र, जिनसमुद्र जिनहंससूरिजीके पट्टधर जिन माणिक्यसूरिजी थे। इनके पारसवंशीय वा॰ कल्याणधीर नामक शिष्य थे। उनके भणसाली गोत्रीय वा॰ कल्याण लाभ और कल्याणलाभके उ॰ कुशललाभ नामक विद्वान शिष्य थे। इनका विशेष परिचय यु॰ जिनचन्द्रसूरि पृ॰ १६४ में देखना चाहिये।

श्रीमद् देवचन्द्रजी

(पृ॰ २६४)

बीकानेर नगरके समीपवर्ती एक रमणीय ग्राम था जहां लूणिया गोत्र तुलसीदासजी निवास करते थे उनके धनबाई नामक शीलवती पत्नी थी। एक समय खरतर वा॰ राजसागरजी वहां पधारे। दम्पतिने भावसे उन्हें वंदना की और धनबाईने जो कि उस समय गर्भवती थी कहा कि यदि मेरे पुत्र होगा तो आपको बहरा दूंगी। गर्भ दिनों दिन बढ़ने लगा उत्तम गर्भके प्रभावसे असाधारण स्वप्न और उत्तम दोहद उत्पन्न होने लगे। इसी समय वहां जिनचन्द्र सूरिजी का शुभागमन हुआ इस समय धन बाईके एक पुत्र तो विद्यमान

था और गर्भवती थी। उन्होंने गुरुजीने उनके फिर भी पुत्र होने का निश्चय किया और "इस द्वितीय पुत्रको हमें देना" कहा, पर धनबाई श्राविकाजीको इससे पूर्व ही वचन दे चुकी थी।

सं० १७०६ में पुत्र उत्पन्न हुआ गर्भके समय स्वप्नमें इन्द्र आदि देवों द्वारा मेरु पर्वतपर प्रभुका स्नात्र महोत्सव किये जानेका दृश्य देखा था। उसीके स्मृति सूचक नवजात बालकका शुभ नाम देवचन्द्र रखा। अनुक्रमसे वृद्धि पाते हुए जब वह बालक ८ वर्षका हुआ उस समय वा० राजसागरजीका फिर वहीं शुभागमन हुआ दम्पति (धनबाई) ने अपने वचनानुसार अपने होनहार बालकको गुरु श्रीके समर्पण कर दिया। गुरु श्रीने शुभ मुहूर्त देख सं० १७५६ में लघु दीक्षा दी। यथासमय जिनचन्द्र सूरिजीके पास बड़ी दीक्षा दिलाई गई सूरिजीने नव दीक्षित मुनिका नाम 'राजविमल' रखा। राजसागरजीने प्रसन्न होकर आपको सरस्वती मन्त्र प्रदान किया श्रीदेवचन्द्रजीने बनातट (पिलाड़ा) ग्रामके भूमिगृहमें रहकर उस का साधन किया, देवी सरस्वती आपपर प्रसन्न हुई जिसके फल स्वरूप थोड़े ही समयमें आप गीतार्थ हो गये।

गुरुश्रीने स्वपरमतके सभी आवश्यक और उपयोगी शास्त्र पढ़ाकर आपके प्रतिभामें अभिवृद्धि की। उन शास्त्रोंमें उल्लेखनीय ये हैं—षडावश्यकादि जैन आगम व्याकरण पञ्चकाव्य नैषध, नाटक, ज्योतिष १८ कोष कौमुदीमहाभाष्य मनोरमा पिङ्गल, स्वरोदय, तत्त्वार्थ, आवश्यक बृहद्वृत्ति हेमचन्द्रसूरि, हरिभद्रसूरि और यशोविजयजी इन सबके समूह ६ कर्म ग्रन्थ कर्म प्रकृति इत्यादि।

सं० १७७४ में श्रावक राजसागर और १७७५ में उपाध्याय ज्ञानधर्मजी स्वर्ग सिधारे। मरोटमें देवचन्द्रजीने विमलदासजी की पुत्री माइजी, अमाइजीके लिये 'आगमसार' ग्रन्थ बनाया।

सं० १७७७ में आप गुजरात-पाटण पधार, वहां तत्त्वज्ञानमय स्याद्वाद युक्त आपके व्याख्यान श्रवणार्थ अनेकों लोग आने लगे। इसी समय श्रीमाली ज्ञातीय नगरसेठ तेजसी दोसीने जो कि पूर्णिमा गच्छीय श्रावक थे अपने गुरु भावप्रभसूरि (जिनके पास विशाल ग्रन्थ भण्डार था, और अनेकों शिष्य पढ़ते थे) के उपदेशसे सहस्त्रकूट जिनालय निर्माण कराया था। एक बार देवचन्द्र जी उक्त नगरसेठ जीके घर पधारे और उनसे सहस्त्रकूटके १०००-- जिनोंके नाम आपने अपने गुरुओंसे श्रवण किये होंगे? पूछा। श्रेष्ठिने चमत्कृत होकर प्रत्युत्तर दिया कि भगवन्! नहीं सुने। इसी अवसरपर ज्ञानविमल सूरिजी पधारे। श्रेष्ठिने उन्हें वन्दन कर सहस्त्रकूटके १० नाम पूछे। उन्होंने नाम व उल्लेख-स्थान फिर कभी बतलानेका कहकर श्रेष्ठिकी जिज्ञासा शान्ति की। अन्यदा पाटण-भाद्रीपोलके चौमुख वाड़ी पार्श्वनाथजीके मन्दिरमें सत्तरह भेदी पूजा पढ़ाइ गइ उसमें श्रीदेवचन्द्रजी और ज्ञानविमल सूरिजी भी सम्मिलित हुए। इसी समय सेठ भी दर्शनार्थ वहां पधारे और सूरिजीको देख फिर पूर्व जिज्ञासा जागृत हुइ, अतः सूरिजीसे सहस्त्र कूट जिन के नामोंकी पृच्छा की उन्होंने उत्तरमें 'प्रायः सहस्त्रकूट जिन नामोंकी नास्ति (विच्छेद) ज्ञात होती है, सम्भव है कोई शास्त्रमें हो कहा। इन वचनोंको श्रवण कर देवचन्द्रजीने उनसे कहा

कि आप तो श्रेष्ठ विद्वान कहलाते हैं फिर ऐसे अयथार्थ कैसे कहते हैं, और ऐसे वचनोंमे भावकोको प्रतीति भी कैसे हो सकती है।

यह सुनकर ज्ञानविमलसूरिजी कुछ तड़ककर बोले:—तुम मरुस्थलके वासी हो, शास्त्रके रहस्यको क्या जानो। जिसने शास्त्रोंका अभ्यास किया है, वही जान सकता है। इसी समय सेठिने कहा, सूरिजी मुझे इस बातका निर्णय करना है। तब सूरिजीने देवचन्द्रजीसे कहा कि तुम्हें व्ययका विवाद पसन्द मालूम होता है। (मारवाड़ी कहावत 'बेंकी लड़ाइ मोल लव") अन्यथा यदि तुम्हें सहस्रकूटके नाम ज्ञात हो तो बतलाओ। देवचन्द्रजीने शिष्यकी ओर देखा, तब विनयी शिष्य मनरूपजीने रजोहरणसे सहस्रकूटके नामोंका पत्र निकालकर गुरुजीके हाथमें दिया। ज्ञानविमलसूरिजीने उसे पढ़कर आश्चर्यान्वित हो देवचन्द्रजीसे पूछा कि आपके गुरुजीका नाम तुम नाम क्या है? उत्तर—उपाध्याय—राजसागरजी। तब सूरिजीने कहा आपकी परम्परा (घराना) तो विद्वद् परम्परा है, तब भला आप विद्वान कैसे नहीं होंगे इत्यादि मृदुवाक्यों द्वारा बहुमान किया। सेठि ताराजीका मनोरथ पूर्ण हुआ सहस्रकूट नामोंकी देवचन्द्रजीने प्रसिद्धि की। प्रतिष्ठादि अनेक उत्सव हुए।

इसके बाद देवचन्द्रजीने परिग्रहका सर्वथा परित्याग कर क्रिया उद्धार किया। सं० १७७७ में आप अहमदाबाद पधारे नागौरी सरायमें अवस्थिति की। आपकी अध्यात्म रसमय देशना श्रवण कर मानाभाको अपूर्व आस्वाद उत्पन्न हुआ। श्रीमद् देवचन्द्रजी

सं० १७७४ में वाचक रामसागर और १७७५ में उपाध्याय ज्ञानधर्मजी स्वर्ग सिधारे। मरोटमें देवचन्द्रजीने विमलदासजी की पुत्री माइजी, अमाइजीके लिये 'आगमसार' ग्रन्थ बनाया।

सं० १७७७ में आप गुजरात-पाटण पधारे, वहां तत्त्वज्ञानमय स्याद्वाद युक्त आपके व्याख्यान श्रवणार्थ अनेकों लोग आने लगे। इसी समय श्रीमाली ज्ञातीय नगरसेठ तेजसी दोसीने जो कि पूर्णिमा गच्छीय श्रावक थे अपने गुरु भावप्रभसूरि (जिनके पास विशाल ग्रन्थ भण्डार था और अनेकों शिष्य पढ़ते थे) के उपदेशसे सहस्त्रकूट जिनालय निर्माण कराया था। एक बार देवचन्द्र जी उक्त नगरसेठ जीके घर पधारे और उनसे सहस्त्रकूटके १ ०— जिनोंके नाम आपने अपने गुरुओंसे श्रवण किये होंगे ? पूछा। श्रेष्टिने चमत्कृत होकर प्रत्युत्तर दिया कि भगवन ! नहीं सुने। इसी अवसरपर ज्ञानविमल सूरिजी पधारे। श्रेष्टिने उन्हें वन्दन कर सहस्त्रकूटके १० ० नाम पूछे। उन्होंने नाम व उल्लेख-स्थान फिर कभी बतलानेका कहकर श्रेष्टिकी जिज्ञासा शान्ति की। अन्यदा पाटण-साहीपोलके चौमुख वाड़ी पार्श्वनाथजीके मन्दिरमें सतरह भेदी पूजा पढ़ाइ गइ उसमें श्रीदेवचन्द्रजी और ज्ञानविमल सूरिजी भी सम्मिलित हुए। इसी समय सेठ भी दर्शनार्थ वहां पधारे और सूरिजीको देख फिर पूर्व जिज्ञासा जागृत हुइ अतः सूरिजीको सहस्त्र कूट जिन के नामोंकी पृच्छा की, उन्होंने उत्तरमें 'प्राय' सहस्त्रकूट जिन नामोंकी नास्ति (विच्छेद) ज्ञात होती है, सम्भव है कोई शास्त्रमें हो कहा। इन वचनोंको श्रवण कर देवचन्द्रजीने उनसे कहा

कि आप तो श्रेष्ठ विद्वान कहलाते हैं फिर ऐसे अपशब्द कैसे कहते हैं, और ऐसे वचनोंसे श्रावकोंको प्रतीति भी कैसे हो सकती है।

यह सुनकर ज्ञानविमलसूरिजी कुछ तड़ककर बोले—तुम मस्तक स्वामी हो, शास्त्रके रहस्यको क्या जानो! जिसने शास्त्रोंका अभ्यास किया है, वही जान सकता है। इसी समय सेठियोंने कहा सूरिजी मुझे इस बातका निर्णय करना है। तब सूरिजीने देवचन्द्रजीसे कहा कि तुम्हें व्यर्थका विवाद पसन्द मालूम होता है। (मारवाड़ी कहावत "बैठनी लड़ाई मोल लेय") अन्यथा यदि तुम्हें महत्त्वपूर्ण नाम ज्ञात हो तो बतलाओ। देवचन्द्रजीने शिष्यकी ओर देखा तब विनयी शिष्य मनरूपजीने रजोहरणसे महत्त्वपूर्ण नामोंका पत्र निकालकर गुरुजीके हाथमें दिया। ज्ञानविमलसूरिजीने उसे पढ़कर आश्चर्यान्वित हो देवचन्द्रजीसे पूछा कि आपके गुरुओंका नाम शुभ नाम क्या है? उत्तर—उपाध्याय—राजसागरजी। तब सूरिजीने कहा आपकी परम्परा (घराना) तो विद्वान परम्परा है तब भला आप विद्वान कैसे नहीं होंगे इत्यादि मधुरवचनों द्वारा बहुमान किया। अन्तमें सभाका मनोरथ पूर्ण हुआ शास्त्रार्थ नामांकी देवचन्द्रजीकी प्रसिद्धि की। प्रतिष्ठादि अनेक उत्सव हुए।

इसके बाद देवचन्द्रजीने परिग्रहका सर्वथा परित्याग कर क्रिया उद्धार किया। सं० १७७७ में आप अहमदाबाद पधारे नागौरी सरायमें स्थिति की। आपका अध्यात्म रससे देशना श्रवण कर श्रावकोंको बहुत आल्हाद उत्पन्न हुआ। श्रीमद् देवचन्द्रजी

भगवती सूत्रके गम्भीर रहस्योंको उद्घाटन करने लगा। आपके उपदेशसे माणिकसागरजी ढूंढियेने मूर्ति पूजा स्वीकार की इतना ही नहीं उन्होंने नवीन चैत्य कराके गुरुश्रीके हाथसे प्रतिष्ठा भी करवाई। श्रीमद्‌ने शान्तिनाथ पोलके भूमिगृहमें सहस्त्रफणादि अनेकों बिम्बों की प्रतिष्ठा की इन प्रतिष्ठादि कार्योंमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया गया और जैन धर्मकी महती महिमा हुई।

सं० १७७६ में आपने खम्भातमें चौमासा कर अनेक भव्योंको प्रतिबोध दिया। व्याख्यानमें आपने शत्रुंजय तीर्थकी महिमा का वर्णन, इससे श्रावकोंने शत्रुंजयपर कारखाना स्थापित कर नवीन चैत्य और जीर्णोद्धार करवाना आरम्भ किया। सं० १७८१-८२-८३ में कारीगरोंने वहां चित्रकारी आदिका बड़ा ही सुन्दर काम किया। (वहांसे विहार कर) राजनगर आये चातुर्मासके लिये सूरतकी विशेष आग्रहपूर्वक विनती होनेसे आप सूरत पधारे। सं० १७८५ ८६-८७ में पालीताने एवं शत्रुंजयमें वधुशाह कारित चैत्योंकी वक्तचन्द्रजीने प्रतिष्ठा की और पुनः राजनगर आकर सं० १७८८ का चतुर्मास वहां किया। इस समय वाचक दीपचंदजीके व्याधि उत्पन्न हुई और आषाढ़ शुक्ला २ को वे स्वर्ग सिधारे। तपागच्छीय विनयी विवेकविजयजीको आप विद्याध्ययन कराने लगे और उन्होंने भी आपकी वैयावच्च-सेवा भक्ति कर गुरु-कृपा प्राप्त की।

अहमदाबादमें शाह आनन्दरामजी जो कि रतन भंडारीके अधिकारी थे गुरुश्रीसे नित्य धर्म-चर्चा किया करते थे और गुरुश्रीके ज्ञानकी गरिमासे चमत्कृत हो उन्होंने रतन भंडारीके आगे आप

की प्रशंसा की, कि मरुस्थलीके ज्ञानी साधु पधारे हैं। उनके वचनामृत रत्नसिंह भी आपको वंदनार्थ पधारे और गुरुमुखसे ज्ञान सुधाका सेवन कर बड़े प्रसन्न हुए। देवचन्द्रजीके उपदेशसे रत्न भंडारी नित्य जिन पूजनादि करने लगे एवं वहां बिम्ब प्रतिष्ठा १७ भेदी पूजा आदि अनेकानेक धर्मकृत्य हुआ करते, उनमें भी भंडारीजी सम्मिलित होने लगे।

एक बार राजनगरमें मृगीका उपद्रव हुआ तब भंडारीजीने उस निवारणार्थ गुरुश्रीसे विनयपूर्वक विज्ञप्ति की। आपने शासन प्रभावनादि लाभ जानकर जैन मंत्राम्नायसे उसे निवारण कर मनुष्योंका कष्ट दूर किया। इससे जिन शासन और देवचन्द्रजीकी सर्वत्र अतिशय प्रशंसा होने लगी।

इसी समय रणकोजी बहुत सेना लेकर रत्नभंडारीसे युद्ध करने आये। भंडारीजी तत्काल गुरुश्रीके पास आये क्योंकि उन्हें गुरुश्रीका पूरा विश्वास था, वे अपने सहायक और सर्वस्व एक मात्र आपको ही मानते थे। अतः गुरुश्रीसे निवेदन किया कि सैन्य बहुत आया है युद्धमें विजय अब आपके हाथ है। गुरुश्रीने आश्वासन देकर जैनमंत्राम्नायका प्रयोग किया अतः युद्धमें रणकोजी हारे और भंडारीजीकी विजय हुई।

भावसार कल्याण भक्ति अपने पुत्रसहित मार्गीका गुरुश्रीके पास सत्संगमें गमन कराया। गुरुश्रीने मार्गीके मिथ्यात्व छुड़वाकर निर्मल ज्ञान देकर जैनधर्मानुरागी बनाया। सं० १७९५ पालीताने और १७९६ में नवानगरमें चतुर्मास किया। वहां अत्यन्त दूढ़क

टोलोंको विजय कर भावनगरके चैत्योंकी पूजा, जिस ढुंढकोंने बन्द करा दी थी पुनः सम्स्थापित की। परघरी ग्रामके ठाकुरको आपने प्रतिबोध दिया और व गुरु आज्ञाम चलने लगे। फिर पाली ताना और पुनः नवानगर चतुर्मास कर १८०२ ई में राणावासमें पधारे। वहांके अधिपतिके भगंदर रोगको नष्ट किया, अतः वह भी आपका भक्त हो गया।

सं० १८०४ में भावनगर पधारे, यहां मेहता ठाकुरसी कट्टर ढुंढकानुयायी थे, उन्हें प्रतिबोध दिया एवं यहांके ठाकुरको भी जैन मतानुरागी बनाया। सं० १८०४ में पालीतानेके मृगी उपद्रवको भी आपने नष्ट किया। सं० १८०५ में लींबड़ी पधारे और वहांके श्रावक हासो वोहरा साह पारसी शाह जयचन्द, जेठा, रायक-पासी आदिको विद्याध्ययन कराया। लींबड़ी भागंला, चूड़ा इन तीन गावोंमें ३ प्रतिष्ठायें की। भागंलामें प्रतिष्ठाके समय सुदानन्दजी आपसे मिले थे।

आपके उपदेशसे सं० १८ ८ में गुजरातसे शत्रुंजय संघ निकला। गिरिराजपर बड़े उत्सव हुए। बहुतसे उद्यापन सद्व्यय हुआ। सं १८ ८-६ का चतुर्मास गुजरातमें किया।

१८१ में कचराशाहने शत्रुंजयका संघ निकाला श्रीदेवचन्द्रजी भी उसके साथ पधारे थे। शाह मोतीया और लालचन्द जैन धर्म में प्रवीण और दानेश्वरी थे। शत्रुञ्जयपर गुरुश्रीने प्रतिष्ठायें की। शाह कचरा कीकाने ६ हजार रुपये व्यय किये।

सं १८११ में लींबड़ीमें प्रतिष्ठा की। अहमदाबादके ढुंढक श्रावकों

को प्रतिबोध देकर मूर्तिपूजक बनायें। उन्होंने सुन्दर चैत्य निर्माण कराये और उनमें अनेकानेक पूजायें होने लगीं।

श्री देवचन्द्रजीके पास विचक्षण शिष्य मनरूपजी वादी विजेता विजयचन्द्रजी (एवं अन्य गच्छीय साधु भी आपके पास विद्याध्ययन करते थे) एवं मनरूपजीके वस्तुजी और रायचंदजी नामक शिष्यद्वय रहते थे एवं गुरु आज्ञामें रहकर गुरुजीकी सनामक्ति किया करते थे।

सं० १८१२ मे श्रीमद् देवचन्द्रजी राजनगर पधारे, वहां गच्छनायक श्रीपूज्यजीको आमन्त्रित कर उनके द्वारा भावक समुदायने बड़े उत्सवसे आपको वाचक पदसे अलंकृत किया।

वा० श्री देवचन्द्रजीकी देशना अमृतके समान थी। आप हरिभद्रसूरि, यशोविजयजीके एवं दिगम्बर गोमट्टसारादि तत्त्व ज्ञानके ग्रन्थोंका उपदेश देते थे श्रोताओंकी उपस्थिति दिनोंदिन बढ़ने लगी। श्रीमद्ने मुलताण, बीकानेर आदि स्थानोंमें चतुर्मास किये एवं अनेकों नये ग्रन्थोंकी रचना की, जिनमें देशनासार नयचक्र, ज्ञानसार अष्टक-टीका कर्मग्रन्थ टीका आदि मुख्य हैं।

इस प्रकार शासन उद्योत करते हुए राजनगरके दोसी वाड़ेमें आप विराज रहे थे उस समय अकस्मात् वायु कोपसे वमनादिकी व्याधि उत्पन्न हुई। श्रीमद्ने अपना आयुष्य निकट जानकर विनयी शिष्य मनरूपजी और उनके विद्यमान सुशिष्य श्री रायचन्द्रजी (रूपचन्दजी) एवं द्वितीय शिष्य वादी विजयचन्दजी उनके शिष्य द्वय सभाचंद और विवेकचंद्रको योग्य शिक्षा देके उत्तराध्ययन, दशवै

टोळोंको विजय कर नवानगरके चैत्योंकी पूजा, जिसे ढूंढकोंने बन्द करा दी थी पुन चालित की। पदधरी गामके ठाकुरको आपने प्रतिबोध दिया और वे गुरु आज्ञामें चलने लगे। फिर पाली ताना और पुन नवानगर चतुमास कर १८०३ में राणावावमें पधारे। वहांके अधिपतिके भगंदर रोगको नष्ट किया अत वह भी आपका भक्त हो गया।

सं० १८०४ में भावनगर पधारे वहां मेहता ठाकुरसी कट्टर ढूंढकानुयायी थे, उन्हें प्रतिबोध दिया एवं वहांके ठाकुरको भी जैन मतानुरागी बनाया। सं० १८०४ में पालीतानेके मृगी उपद्रवका भी आपने नष्ट किया। सं० १८०५ में सीवड़ी पधारे और वहांके श्रावक कोमो बोहरा शाह धारसी, शाह जयचन्द, सेठ, धीकपाली आदिको विद्याध्ययन कराया। सीवड़ी प्रागंधा, चूड़ा इन तीन गांवोंमें ३ प्रतिष्ठायें की। प्रागंधामें प्रतिष्ठाके समय सुखानन्दजी आपस मिले थे।

आपके उपदेशसे सं १८०८ में गुजरातसे शत्रुंजय संघ निकला। गिरिराजपर बड़े उत्सव हुए। बहुतसे ध्यका सद्व्यय हुआ। सं १८०८ ६ का चतुमास गुजरातमें किया।

१८१ में कपराशाहने शत्रुंजयका संघ निकाला, मीठचन्दजी भी उसके साथ पधारे थे। शाह मोतीया और खुशालचन्द जैन धर्म में प्रवीण और धुरन्धरी थे। शत्रुञ्जयपर गुरु श्रीने प्रतिष्ठायें की। शाह कपरा श्रीकाने ६० हजार रुपये व्यय किये।

सं १८११ में सीवड़ीमें प्रतिष्ठा की। वढवाणके ढूंढक श्रावक

महोपाध्याय राजसोम

(पृ० ३०५)

१६ वीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध विद्वान समयसुन्दरजीके आप विद्यागुरु थे, अतः उन्होंने आपका गुण-गर्भित यह अष्टक बनाया है। प्रस्तुत अष्टकमें गुणोंकी प्रशंसाके अतिरिक्त इतिवृत्त कुछ भी नहीं है।

अन्य साधनोंके आधारसे आपका ज्ञातव्य परिचय इस प्रकार है—आपके रचित (१) ज्ञान पंचमी पूजा सं० (२) सिद्धाचलस्तवन सं० १५६७ फा० व० ७ (३) नवकारवाली १०८ गुणस्तवन आदि उपलब्ध हैं, और आपके लि० कई प्रतियें भी प्राप्त हैं।

आप क्षेमकीर्त्ति शाखाके विद्वान थे परम्पराका नामानुक्रम इस प्रकार है —

(१) जिन कुशल सूरि (२) विनय प्रभ (३) उ० विजय तिलक (४) उ० क्षमकीर्ति (५) तपोरत्न (६) तेजराज (७) वा० भुवनकीर्त्ति (८) हर्ष कुंजर (६) वा० लब्धिमंडन (१०) उ० लक्ष्मीकीर्त्ति ११ सोमहर्ष (गुरु भ्राता प्रसिद्ध विद्वान लक्ष्मीवल्लभ) १२ वा० लक्ष्मी समुद्र (१३) कपूर प्रियजीके १४ शि० आप थे। आपकी परम्परामें (१५) वा० तत्व वल्लभ (१६) प्रीतिविलास (१७) पं० धर्म सुन्दर (१८) वा० लाभ समुद्र (१६) मुनिनिधि (२०) अमृत रंग (अबीरचन्द) हुए, जोकि सं० १६७१ में स्वर्ग सिधारे।

वा० अमृत धर्म

(पृ० ३०७)

उपाध्याय समयसुन्दरजीके आप गुरुवय थे, अतः पाठकजीने

कायोत्सर्गादि सूत्र श्रवण करते हुए आत्माराधना कर सं १८१२ माघ कृष्ण अमावस्याको एक प्रहर रात्रि जानेपर स्वर्गवासी हुए। सभी गच्छके श्रावकोंने मिलकर बड़े उत्सवके साथ आपके पवित्र देहका अग्नि-संस्कार किया, गुरुभक्तिमें बहुत द्रव्य व्यय किया गया। श्रीमद्‌के कार्य और आत्म-जागृतिको देखकर कवि कहता है कि आपको मोक्ष सन्निकट है। ७-८ भवोंके पश्चात् तो अवश्य ही सिद्धिगतिको प्राप्त करेंगे। आपके स्वर्गगमनके समाचारों से देश विदेशमें शोक छा गया। कविके कथनानुसार आपके मस्तक में मणि थी, वह दहन समय उछल कर पृथ्वीमें समा गई। किसी के हाथ नहीं आई। श्रावक संघने स्तूप बनाकर आपकी पादुकाओंकी स्थापना की।

आपके शिष्य मनरूपजी भी गुरु विरहसे आकुल हो थोड़े ही दिनोंमें आपसे स्वर्गमें जा मिले। अभी (रासरचनाके समयमें) भी रायचन्द्रजी योग्यतानुसार व्याख्यानादि देकर धर्म प्रचार करते हैं। उन्होंने अपने गुरुकी प्रशंसा स्वयं करनेसे अतिशयोक्ति आदिका सम्भव देख प्रस्तुत रास रचनेके लिये कविसे कहा और कवि ने सं० १८२५ के आश्विन शुक्ला ८ रविवारको यह 'देवविलास रास' बनाया।

आपकी कृतियाँ श्रीमद् देवचन्द्र भा १-२ में प्रकाशित हैं। इनके अतिरिक्तके लिये देखें यु जिनचन्द्रसूरि पृ १८६ और ३११।

महोपाध्याय राजसोम

(पृ० ३०५)

१६ वीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध विद्वान क्षमाकल्याणजीके आप विद्यागुरु थे अतः उन्होंने आपके गुण-गर्भित यह अष्टक बनाया है। प्रस्तुत अष्टकमें गुणोंकी प्रशंसाके अतिरिक्त इतिवृत्त कुछ भी नहीं है।

अन्य साधनोंके आधारसे आपका ज्ञातव्य परिचय इस प्रकार है—आपके रचित (१) ज्ञान पंचमी पूजा सं० (२) सिद्धाचलस्तवन सं० १७६७ फा० व० ७ (३) नवकरवाली १०८ गुणस्तवन आदि उपलब्ध हैं, और आपके लि० कुछ प्रतियें भी प्राप्त हैं।

आप क्षेमकीर्ति शाखाके विद्वान थे परम्पराका नामानुक्रम इस प्रकार है :—

(१) जिन कुशल सूरि (२) विनय प्रभ (३) उ विजय तिलक (४) उ० क्षमकीर्ति (५) तपोरत्न (६) तेजराज (७) वा० भुवनकीर्ति (८) हर्ष कुंजर (९) वा लब्धिमंडण (१०) उ० लक्ष्मीकीर्ति ११ सोमहर्ष (गुरु भ्राता प्रसिद्ध विद्वान लक्ष्मीवल्लभ) १२ वा० लक्ष्मी समुद्र (१३) कपूर प्रियजीके १४ हि आप थे। आपकी परम्परामें (१५) वा० तत्त्व वल्लभ (१६) प्रीतिविलास (१७) पं धर्म सुन्दर (१८) वा लाभ समुद्र (१९) मुनिसिंह (२०) अमृत रंग (मतीरचन्द) हुए जोकि सं० १९७१ में स्वर्ग सिधारें।

वा० अमृत धर्म

(पृ ३ ७)

उपाध्याय क्षमाकल्याणजीके आप गुरुवर्य थे, अतः पाठकजीने

अपने गुरूजीकी भक्ति सूचक इस अष्टककी रचना की है। इसका ऐतिहासिक सार इस प्रकार है —

कच्छ देशमें उपकेश वंशकी वृद्ध शाखामें आपका जन्म हुआ था, श्री जिनभक्तिसूरिजीके शिष्य प्रीतसागरजी (जिनलाभ सूरिके सतीर्थ-गुरु भ्राता) के आप शिष्य थे। आपने शत्रुंजयादितीर्थोंकी यात्रा की एवं सिद्धान्तका योगाद्वहन किया था। संवेगरंगसे आपकी आत्मा ओतप्रोत थी (इसीसे आपने परिग्रहका त्याग कर दिया था)। पूर्व देशमें आपके उपदेशसे स्वर्णदंडध्वज कलशवाले जिनालय निर्माण हुए थे। अनेक भव्यात्माओंको प्रतिबोध देते हुए आप जैसलमेर पधारे और वहीं सं० १८५१ माघ शुक्ला ८ को समाधिसे आपकी मृत्यु हुई। स्थानांग सूत्रके अनुसार आपकी आत्मा मुखसे निर्गत होनेके कारण आप देवगतिको प्राप्त हुए ज्ञात होते हैं। आप आप वाचनाचार्य पदसे विभूषित थे। विशेष परिचय व क्षमा कल्याणजीके स्वतंत्र चरित्रमें दिया जायगा।

स० क्षमाकल्याण

(पृ० ३०८)

गुरुभक्त शिष्यने आपके परलोकगामी होनेपर विरहात्मक और गुणवर्णनात्मक इस अष्टक और स्तवको रचा है। स्तवका ऐतिहासिक सार यही है, कि सं १८७३ पोष कृष्णा १४ को बीकानेरमें आप स्वर्ग सिधारे थे।

१६ वीं शताब्दीके धुरंधर विद्वानोंमें आप अग्रगण्य थे। आपका पू चरित्र हम स्वतंत्र पुस्तकाकार प्रकाशित करनेवाले हैं, अतः यहां विशेष नहीं लिखा गया।

ध० जयमाणिक्य
(पृ० ११)

यति हरखचन्दजीके शिष्य जीवणदासजीके आप सुशिष्य थे। १६ वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें आपकी अच्छी ख्याति थी। सेवक अनुपचन्दने छंदमें सं० १८७५ वैसाखके शुक्ल ६ को आपने (!) जिनचैत्यकी प्रतिष्ठा करवाई, उसका उल्लेख किया है। आपके सुन्दरदास, वस्तपाल, दीपचन्द भरजुनादि कई शिष्य थे, आपका बाल्यावस्थाका नाम 'धमड़ा' था। आप कीर्तिरत्न सूरि शाखाके थे।

हमारे संग्रहमें आपके (सं० १८५५ मिगसर वदी ३ बीकानेरमें) जीवराशि क्षमापनाकी टीप है। अतः यथा संभव इसके कुछ दिनों बाद ही बीकानेरमें आपका स्वर्गवास हुआ होगा। आपको दिये हुए आदेशपत्र और अन्य यतियोंके दिये हुए अनेकों पत्र हमारे संग्रहमें हैं।

श्रीमद् ज्ञानसार जी
(पृ ४३१)

जंगलवास वास्तव्य सांड ज्ञातीय उदैचन्दजीकी पत्नी जीवणदेने सं० १८०१ में आपको जन्म दिया था, सं० १८१२ बीकानेरमें श्री जिनलाभ सूरिजीके शिष्य रायचन्द (रत्नराज) जीके आप शिष्य हुए। बीकानेर नरेश सूरतसिंहजी आपके परम भक्त थे। राजा रत्नसिंहजी भी आपको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। आपके सदा सुखजी नामक सुशिष्य थे।

आप मस्तयोगी उत्तमकवि और राजमान्य महापुरुष थे। आपके रचित समस्त ग्रन्थोंकी हमने नकलें कर ली हैं जिसे विस्तृत ऐतिहासिक जीवन चरित्रके साथ यथावकाश प्रकाशित करेंगे।

आपने गुरुजीकी भक्ति सूचक इस अष्टककी रचना की है। इसका ऐतिहासिक सार इस प्रकार है —

कच्छ देशमें उपकस वंसकी वृद्ध शाखामें आपका जन्म हुआ था श्री जिनभक्तिसूरिजीके शिष्य प्रीतसागरजी (जिनलाभ सूरिके सतीर्थ-गुरु भ्राता) के आप शिष्य थे। आपने शत्रुंजयादितीर्थोंकी यात्रा की एवं सिद्धतोंका योगोद्वहन किया था। संवेगरगसे आपकी आत्मा ओतप्रोत थी (इसीसे आपने परिग्रहका त्याग कर दिया था)। पूर्व देशमें आपके उपदेशसे स्वर्णदंडध्वज कलशवाले जिनालय निर्माण हुए थे। अनेक भव्यात्माओंको प्रतिबोध देते हुए आप जैसलमेर पधारे और वहीं सं १८५१ माघ शुक्ला ८ को समाधिसे आपकी मृत्यु हुई। स्थानांग सूत्रके अनुसार आपकी आत्मा मुखसे निर्गम होनेके कारण आप देवगतिको प्राप्त हुए ज्ञात होते हैं। आप महा वाचनाचार्य पदसे विभूषित थे। विशेष परिचय उ क्षमा कल्याणजीके स्वतंत्र चरित्रमें दिया जायगा।

उ० क्षमाकल्याण

(पृ० ३०८)

गुणभक्त शिष्यने आपके परलोकवासी होनेपर विरहात्मक और गुणवर्णनात्मक इस अष्टक और स्तवको रचा है। स्तवका ऐतिहासिक सार यही है, कि सं० १८७३ पोष कृष्णा १४ को बीकानेरमें आप स्वर्ग सिधार थे।

१६ वीं शताब्दीके खरतर विद्वानोंमें आप अग्रगण्य थ। आपका च परिचय हम स्वतंत्र पुस्तकाकार प्रकाशित करनेवाले हैं, अतः यहां विशेष नहीं लिखा गया।

८० जयमाणिक्य
(पृ० ३१)

यति हरखचन्द्रजीके शिष्य जीवणदासजीके आप सुशिष्य थे। १९ वीं शताब्दीके पूर्वार्धमें आपकी अच्छी ख्याति थी। सेवक मलूकचन्दने छन्दमें सं० १८७५ बैसाखके शुक्ला ६ को आपने (!) जिनचैत्यकी प्रतिष्ठा करवाई, उसका उल्लेख किया है। आपके सुन्दरदास, मस्तपाल, दीपचन्द अरजुनादि कई शिष्य थे, आपका बाल्यावस्थाका नाम 'धमड़ा' था। आप कीर्त्तिरत्न सूरि शाखाके थे।

हमारे संग्रहमें आपके (सं० १८५५ मिगसर वदी ३ बीकानेरमें) जीवराशि क्षमापनाकी टीप है। अतः यथा संभव इसके कुछ दिनों बाद ही बीकानेरमें आपका स्वर्गवास हुआ होगा। आपको लिखे हुए आदेशपत्र और अन्य यतियोंके लिखे हुए अनेकों पत्र हमारे संग्रहमें हैं।

श्रीमद् ज्ञानसार जी
(पृ० ४२३)

जंगलवास वास्तव्य साह जातीय उदयचन्दजीकी पत्नी जीवणदेने सं० १८०१ में आपको जन्म दिया था सं० १८१२ बीकानेरमें श्री जिनलाभ सूरिजीके शिष्य रायचन्द (रत्नराज) जीके आप शिष्य हुए। बीकानेर नरेश सूरतसिंहजी आपके परम भक्त थे। राजा रत्नसिंहजी भी आपको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। आपके सदासुखजी नामक सुशिष्य थे।

आप अध्यात्मयोगी उत्तमकवि और राजमान्य महापुरुष थे। आपके रचित समस्त ग्रन्थोंकी हमने नकलें कर ली हैं जिसे विस्तृत ऐतिहासिक जीवन चरित्रके साथ यथावकाश प्रकाशित करेंगे।

खरतरगच्छ आर्यामण्डल

लावण्य सिद्धी

(पृ० २१०)

बीकराज शाहकी पत्नी गुजरदेकी आप पुत्री थीं। पद्मलक्ष्मी रत्न सिद्धिकी आप पट्टधर थीं, साध्वाचारको सुचारुरूपसे पालन करती हुई यु० जिनचन्द्रसूरिजीके आदेशसे आप बीकानेर पधारी और वहीं अनशन आराधना कर सं० १६६२ में स्वर्ग सिधारी। वहां आपके स्मृतिमें थुंभ (स्तूप) बनाया गया। हेमसिद्धि साध्वीने यह गुणगर्भित गीत बनाया है।

सोमसिद्धि

(पृ० २१२)

नाहर गोत्रीय नरपालकी पत्नी सिंघादेकी आप पुत्री थी आपका जन्म नाम 'संगारी' था, यौवनावस्था आनेपर पिताजीने बोथरा जेठमलके पुत्र रामसीसे आपका पाणिग्रहण कर दिया। १८ वर्षकी अवस्थामें धर्म-उपदेशके श्रवण करते हुए आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ और सास-श्वसुरसे अनुमति ले दीक्षा ग्रहण की। दीक्षित होनेपर आपका नाम 'सोमसिद्धि' रखा गया आपने आर्या लावण्यसिद्धिके समीप सूत्र सिद्धान्तोंका अध्ययन किया था और उनने आपको अपने पट्टपर स्थापित की थी। शत्रुंजय आदि तीर्थों की आपने यात्रा की थी। श्रावण कृष्णा १४ बृहस्पतिवारको अनशनकर आप स्वर्ग

सिधारी। पट्टधर्मी (संभवत: आपकी पट्टस्य) हंससिद्धिने आपकी स्मृतिमें यह गीत बनाया।

गुरुणी विमलसिद्धि

(पृ० ४२२)

आप मुलतान निवासी मालू गोत्रीय शाह जमतसीकी पत्नी जुगतादे की पुत्री-रत्न थीं। लघुवयमें ब्रह्मचर्य व्रतके धारक अपने पितृव्य गोपालादिक प्रयत्नसे प्रतिबोध पाकर आपने साध्वी श्री लावण्यसिद्धिके समीप प्रव्रज्या स्वीकार की थी। निर्मल चारित्रको पालन कर अनशन करते हुए बीकानेरमें स्वर्ग सिधारी। उपाध्याय श्रीललितकीर्त्तिजीने स्तूपके अन्दर आपके सुन्दर चरणोंकी स्थापना कर प्रतिष्ठा की। साध्वी विवेकसिद्धिने यह गीत रचा।

गुरुणी गीत

(पृ० २१४)

आद्रिकी १॥ गाथा नहीं मिलनेसे आर्याजीका नाम अज्ञात है। माउंसुखा गोत्रीय कमधन्दकी य पुत्री थीं। श्री जिनसिंह सूरिजीने आपको पट्टवणी पद दिया था और सं० १६६६ माद्रकृष्ण ५ को विमलसिद्धि साध्वीने यह गुरुणीगीत बनाया है।

खरतर गच्छ शाखायें

जिनप्रभसूरि परम्परा

(पृ ११, १२ १४, ४१, ४७,)

वीर—सुधर्म-जम्बू-प्रभव-शय्यंभव यशोभद्र-आर्यसंभूति भद्रबाहु स्थूलिभद्र-आर्यमहागिरि-आर्यसुहस्ती शांतिसूरि हरिभद्रसूरि संडिल्लसूरि-आर्यसमुद्र,-आर्यमंगू-आर्यधर्म-भद्रगुप्त-वज्रस्वामी-आर्यरक्षित-आर्यनन्दि-आर्यनागहस्ति-रेवंत-खण्डिल-हिमवन्त नागार्जुन-गोविन्द भूतदिन्न लोहित्य-दुष्यसूरि उमास्वातिवाचक-जिनभद्रसूरि-हरिभद्रसूरि-देवसूरि-नेमिचन्द्रसूरि—उद्योतनसूरि-वर्द्धमानसूरि जिनेश्वरसूरि जिनचन्द्रसूरि-अभयदेवसूरि जिनवल्लभसूरि-जिनदत्तसूरि जिनचन्द्रसूरि-जिनपतिसूरि जिनेश्वरसूरि-यहां तक तो अनुक्रम मालूम ही है।

इसके पश्चात् जिनेश्वरसूरिके पट्टपर जिनसिंहसूरि जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरि जिनमेरुसूरि (पृ ११) अनुक्रमसे इनके पट्टपर जिनहितसूरि तकका नाम आता है (पृ० ४७) इनमें जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरिका विशेष परिचय गीतोंमें इस प्रकार है —

जिनप्रभसूरि

जिनप्रभसूरिजीने महम्मद पतिशाहको दिल्लीमें अपने गुण अमृतसे रंजित किया।

अष्टमी अष्टमी चतुर्दशीका सम्राट इन्हें सभामें आमन्त्रित करते थे कुतुबुद्दीन भी आपके दर्शनसे बड़े प्रसन्न हुए थे।

पतिशाह महम्मद शाह आपसे दिल्लीमें सं० १३८५ पौष शुक्ल ८

दानिवारको मिले थे, सुलतानने आदरसहित नमनकर आपको अपने पास बिठाया, और उनके मृदु भाषणोंसे प्रसन्न होकर हाथी घोड़े, राज्य, धन, दस ग्रामादि जो कुछ इच्छा हो, लेनेके लिये विनती करने लगा। पर साध्वाचारके विपरीत होनेसे आपने किसी भी वस्तुके लेनेसे इनकार कर दिया।

आपकी निरीहताकी सुलतानने बड़ी प्रशंसाकी और वस्त्रादिसे पूजा की। अपने हाथकी निशानी (मोहर छाप) वाला फरमान देकर नवीन वसति-उपाश्रय बनवा दिया और अपने पट्टहस्ति (जिसपर बादशाह स्वयं बैठता है) पर आरोहन कराके और बाजिंत्रोंसे साथ पोषध शाला बड़े उत्सवके साथ पहुंचाया। बाजित्र बाजते और युवतियोंके नृत्य करते हुए बड़े उत्सवसे पूज्यश्री वसतीमें पधारे। पश्चात्श्री देवीके सानिध्यसे आपकी धवल कीर्ति दशोदिश व्याप्त हो गई।

आप बड़े चमत्कारी और प्रभावक आचार्य थे। आपके चमत्कारों में १ आकाशसे कुल्ह (टोपी धड़ा) को ओघा (रजोहरण) के द्वारा नीचे लाना २ महिष (भैंस) के मुखसे वाद करना ३ पतिशाहके साथ बड़ (वट) वृक्षको चलाना ४ शत्रुमर्दन रायण वृक्षसे दुग्ध बरसाना ५ रात्रि मुद्रिका प्राप्त करना ६ जिन प्रतिमासे वचन बुलवाने आदि मुख्य हैं।

आपके विषयमें स्वतन्त्र निबन्ध (डा० म० गांधी लिखित) प्रकाशित होनेवाला है उसे और जैनस्तोत्र सन्दोह भा० २ प्रस्तावना पृ० ४४ से ५२ एवं ही० रसिक० सम्पादित ग्रन्थ देखना चाहिये।

जिनदेवसूरि

(पृ० १४)

जिनप्रभसूरिजीके पट्टपर आप सूर्यके समान तेजस्वी थे। मेरु मंडल-दिल्लीमें आपके वचनामृतसे महम्मद शाहने कन्नाणपुर (कन्यानयनीय) मंडण वीर प्रभुको सुलतानसरायमें स्थापित किया था। ज्ञान विज्ञान कला कौशलके आप भण्डार थे एवं लक्षण, छन्द नाटक आदिके आप वेत्ता थे।

कुलधर (शाह) के कुलमें वीरणी नामक नारि-रत्नके कुक्षिसे आपका जन्म हुवा था जिनसिंहसूरिजीके पास आपने दीक्षा ग्रहण की थी। आपके पीछेके आचार्योंकी नामावलीका पता (१६ वीं शताब्दीके पूर्वार्द्ध तकका) हमारे संग्रहके एक पत्र एवं ग्रन्थ प्रशस्तियों से लगा है। जिसका विवरण इस प्रकार है —

जिनप्रभसूरि—जिनदेवसूरि—पट्टधरद्वय १ जिनमेरुसूरि २ जिनचन्द्रसूरि इनमें जिनमेरुसूरिके पट्टधर—जिनहितसूरि—जिन-सर्वसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनसमुद्रसूरि—जिनतिलकसूरि (सं० १५११)—जिनराजसूरि—जिनचंद्रसूरि (सं० १५८५)—पट्टधर द्वय १ जिनमेरुसूरि और २ जिनभद्रसूरि—(सं० १६ ०)—जिनभानुसूरि (सं० १६४१)

बेगड़ खरतरशाखा
(पृ० ३१२ से ३१८)

गुर्वावलीमें जिनलब्धिसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि तक क्रम एक समान ही है, जिनचन्द्रसूरिके पट्टपर भट्टारक शाखाकी ओर जिन राजसूरि पट्टधर हुए। ये मालू गोत्रीय थे, इसीसे बेगड़ गच्छवाले इनकी परम्पराको मालूशाखा कहते हैं। सपर द्वितीय पट्टधर जिनेश्वरसूरि हुए जो इस शाखाके आदि पुरुष हैं। जिनेश्वरसूरिजी आदिका विशेष परिचय गीतोंमें इस प्रकार है —

जिनेश्वरसूरिजी

छाजहड़ गोत्रीय झांझणके आप पुत्र थे आपकी माताका नाम रयणू था और बेगड़ बिरुदसे आपकी प्रसिद्धि थी। माल्हू गोत्रीय गुरु भ्राताके मानको चूर्ण कर अपने गुरु श्री जिनचन्द्र सूरिका पद आपने लिया। आपने बारांकी त्रिरायको आराधना किया था और धरणेन्द्र भी आपके प्रत्यक्ष था अणहिलवाड़े (पाटण) में रानका परचा पूरा कर महाजन बन्द (बन्दियों) को छुड़ाया था। राजनगरमें विहार कर महम्मद बादशाहको प्रतिबोध दिया था और उसने आपका पदस्थापना महोत्सव किया था। आपके भ्राताने ५०० घोड़ोंका (आपके वचनपर) दान किया और १ करोड़ द्रव्य व्यय किया था इससे महम्मद शाहने हर्षित हो "बेगड़ा" बिरुद प्रदान किया था (या उसने कहा आपके श्रावक भी बेगड़ और आप भी बेगड़ हैं)। एक बार आप सांचोर पधारे, बेगड़ और सूराणा दोनों गोत्र परस्पर मिले, (वहां) राउलदेस अलसमीसिंह मन्त्रीने मह मन्दिर आकर गुरु श्री को बन्दन किया।

खमीसिंहने भरम मामक अपने पुत्रको गुरुश्रीका बहराया और चार चौमास यहीं रक्खे। सं० १४२ में संथारा कर शान्तिपुर (जोधपुर) में आप स्वर्ग पधारें और वहाँ आपका स्तूप (थुम्भ) बनाया गया, वह बड़ा चमत्कारी है, हजारों मनुष्य वहाँ दर्शनार्थ जाते हैं। स्वर्गागमन पश्चात भी आपने तिलोकमी श्राद्धको ६ पुत्रियोंके ऊपर (पश्चात्) १ पुत्र देकर उसके वंशकी वृद्धि की। पौष शुक्ल १२ को जिनसमुद्रसूरिने स्तूपकी यात्राकर यह गीत बनाया।

गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

(पृ० ४२३)

गुणप्रभसूरि प्रबन्ध और हमारे संग्रहकी पट्टावलीके अनुसार श्री जिनेश्वरसूरिजीका पट्टानुक्रम इस प्रकार है —

१—श्री जिनशेखरसूरि २—श्री जिनधर्मसूरि ३—श्री जिन चन्द्रसूरि ४—श्री जिनमेरुसूरि ५—श्री गुणप्रभसूरि हुए। इनका विशेष परिचय इस प्रकार है —

सं १५७२ में श्री जिनमेरुसूरिजीका स्वर्गवास हो जानेपर गच्छनायक श्री धर्मसिंहसूरिने भट्टारक पदपर स्थापित करनेके लिए छाजहड़ गोत्रीय व्यक्तिकी गवेषणा की। अन्तमें जूठिल शाखा के मंत्री मोल्हके बुद्धिशाली पुत्र नगराज श्रावककी गृहिणी गण पति शाहकी पुत्री नागिलदेके पुत्र वच्छराजको भमका साम जानकर अपने पुत्र भोजाको समर्पण किया। उनका जन्म सं १५६५ (शाके १४३१) मिगसर शुक्ल ४ गुरुवारके रात्रिमें उत्तराषाढ़ा नक्षत्र अतियोग कर लग्न गण वर्गमें हुआ, सं० १५७५में सूरिजीने

दीक्षा दी। दीक्षित होनेके अनन्तर सोजकुमार गुरुश्रीसे विद्याभ्यास करते हुए संयम मार्गमें विशेष रूपसे प्रवृत्त हुए।

इधर जोधपुरमें राठौर राजा गंगराज राज्य करते थे, वहां छाजहड़ गोत्रीय गांगाजत राजसिंह, सत्ता, पत्ता, नेतागर आदि निवास करते थे। सत्ताके पुत्र दुल्हण और महजपाल थे, महजपाल के पुत्र मानसिंह, पृथ्वीराज, सुरताण थे। जिनकी माताका नाम कस्तूरदे था। सुरताणकी भार्या लीलादेकी कुक्षिसे जेठ प्रताप और चांपसिंह तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे। उपरोक्त कुटुम्बने विचारकर गंग नरेशसे (नेतागरने) प्रार्थना की, कि हम लोगोंको गुरु महाराजके महोत्सव करनेके लिए आज्ञा प्रदान करें। नृपवर्य्यका आदेश पाकर देश विदेशमें चारों तरफ आमन्त्रण पत्रिका भेजी गई, बहुत अगाहका संघ एकत्र हुआ और खूब उत्सवपूर्वक सं० १५८२ फाल्गुन सु० ४ श्रीजिनमेरुसूरिके पट्टपर श्री जिनगुणप्रभ सूरिजीको स्थापित किया गया। इन्हें बड़ गच्छीय श्रीपुण्यप्रभ सूरिने सूरि मंत्र दिया संघने गंगरायको सम्मानित किया और राजाने भी संघ और पूज्यश्रीको बहुमान दिया।

सं० १५८५ में सूरिजीने संघके साथ तीर्थाधिराज सिद्धाचल जीकी यात्रा की। जोधपुरमें बहुतसे भव्योंको प्रतिबोध दिया। इस प्रकार क्रमशः १० चतुर्मास होनेके पश्चात् जेसलमेरके श्रावक देव पाल, मंडारीग भीमा वस्ता रायमल, श्रीरंग एटा भोजा आदि संघने एकत्र होकर गुरु दर्शनकी उत्कंठासे पांच प्रधान पुरुषोंके साथ वीनति-पत्र भेजा। उनके विशेष आग्रहसे सूरिजी विहारकर जेसलमेर

छत्रसिंहने मरम नामक अपने पुत्रको गुरुश्रीको बहराया और चार चौमास यहीं रक्खे। सं० १४३ में संथारा कर सशिपुर (सोमपुर) में आप स्वर्ग पधारें और वहाँ आपका स्तूप (थुम्भ) बनाया गया, वह बड़ा चमत्कारी है, हजारों मनुष्य वहां दर्शनार्थ आते हैं। स्वर्गगमन पश्चात भी आपने तिलोकसी साहको ६ पुत्रियोंके ऊपर (पश्चात्) १ पुत्र देकर उसके वंशकी वृद्धि की। पौष शुक्ल १३ को जिनसमुद्रसूरिने स्तूपकी यात्राकर यह गीत बनाया।

गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

(पृ० ४२३)

गुणप्रभसूरि प्रबन्ध और हमारे संग्रहकी पट्टावलीके अनुसार श्री जिनेश्वरसूरिजीका पट्टानुक्रम इस प्रकार है —

१—श्री जिनशेखरसूरि २—श्री जिनधर्मसूरि ३—श्री जिन चन्द्रसूरि ४—श्री जिनमेरसूरि ५—श्री गुणप्रभसूरि हुए। इनका विशेष परिचय इस प्रकार है —

सं १५४२ में श्री जिनमेरसूरिजीका स्वर्गवास हो जानेपर मण्डलाचार्य श्री जयसिंहसूरिने भट्टारक पदपर स्थापित करनेके लिए छाजहड़ गोत्रीय व्यक्तिकी गवेषणा की। अन्तमें जूठिल शाखा के मंत्री मोढ़ाके बुद्धिशाली पुत्र नगराज श्रावककी गृहिणी गण पति शाहकी पुत्री मागिणदेके पुत्र वच्छराजने धमका स्नम जानकर अपने पुत्र भाजको समर्पण किया। इनका जन्म सं० १५१९ (शाके १४११) मिगसर शुक्ल ४ गुरुवारके रात्रिमें उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ऋषियोग कर लग्न गज वर्गमें हुआ सं १५५५में सूरिजीने

बीकानेर निवासी बाफणा गोत्रीय रूपसी शाहकी भार्या रूपादे की कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, आपका जन्म नाम बीरजी था, लघु वयमें समता रसमें लयलीन हमकर जैसलमेरमें श्री जिनेश्वर सूरि जीने आपको दीक्षितकर, वीर विजय अभिधान दिया। आपपढ़ लिख खूब विद्वान् और प्रतापी हुए, आपको श्रीजिनेश्वर सूरिजीने स्वयं अपने पट्टपर स्थापित किये। जैन शासनकी प्रभावनाकारक सं० १७१२ पोष मासकी ११ गुरुवारको अनशन पूर्वक आप स्वर्ग सिधार। महिमा समुद्रजीने आपके दो गीत रचे अन्य एक गीतमें समुद्रसूरिजीने आपके साचोर पधारनेपर उत्सव हुआ उसका संक्षिप्त वर्णन किया है।

जिनसमुद्रसूरि

(पृ० ३१७ ४३२)

आप श्रीश्रीमाल हरराजकी भार्या लखमादेवीके पुत्र थे श्री जिनचन्द्रसूरिजीके पट्टपर स्थापित होनेके पश्चात आप सूरत और मांम नगरमें पधार जिनका वर्णन माइदास और महिमाहर्षके गीतमें है। सूरतमें छत्रराज साहने महोत्सव आदि किया था।

जिनसमुद्रसूरिके पश्चात पट्टधरोंके नाम ये हैं —जिनसुन्दर सूरि—जिनउदयसूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिनेश्वरसूरि (सं० १८६१) इनके पट्टपरका नाम नहीं मिलता। अन्तिम आचार्य जिनक्षेमचंद्र सूरि सं० १९ ? में स्वर्ग सिधारे।

पिप्पलक शाखा

(पृ० ३१६)

गुर्वावली * में जिनराजसूरि (प्रथम) के तो कम पद-सा ही

---

* गुर्वावलीमें नवीन ज्ञातव्य यह है कि—जिन वर्धमान सूरिजीने श्री-

आये, सं० १५८० आषाढ़ वदी ११ को समारोहके साथ पुर प्रवेश कर पौषधशालामें पधारे। व्याख्यानादि धर्म कृत्य होने लगे। सं० १५६४ में राउल श्री लूणकर्णने जलके अभावमें अपनी प्रजाको महान कष्ट पाते देखकर दुष्कालकी सम्भावनासे गच्छनायकको वर्षा होनेके उपाय करनेकी नम्र विज्ञप्ति की। राउलजीकी प्रार्थना से सूरिजीने उपाश्रयमें अष्टम तप पूर्वक मंत्र साधना प्रारम्भ की, उसके प्रभावसे मेघमाली देवने घनघोर वर्षा वर्षाई, जिससे भादवा सुदि १ को प्रथम प्रहरमें सारे तालाब-जलाशय भर गए। सुकाल हो जानेसे लोगोंके चित्तमें परमानंद छा गया सूरि महाराजकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई राउलजीने गुरु महाराजके उपदेशसे वणिक बन्दियोंको मुक्त कर दिया और पंच शब्द वाजित्र आदिके बजवाते हुए बड़े समारोह पूर्वक उपाश्रयमें पहुंचाये।

इस प्रकार सूरिजीने शासनकी बड़ी प्रभावनाकी थी, सं १६५५ में ज्ञानबलसे अपने आयुष्यका अन्त निकट जानकर राधा (वैशाख) कृष्णा ८को तीन आहारके त्यागरूप अनशन ग्रहण किया एकादशीको संघके समक्ष प्रत्याख्यानादि कर डाभके संथारेपर संलेखना कर दी शत्रु और मित्रपर समभाव रखते हुए अहन्तादि पदोंका ध्यान करते हुए, १५ दिनकी संलखना पूणकर वैशाख सुदि ६ को ६० वर्ष ५ मास और ५ दिनका आयुष्य पूर्ण कर स्वर्ग सिधारे। श्री जिनेश्वर सूरिजो ने इनका प्रबन्ध बनाया।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ ४३० ३१६)

श्री गुणप्रभसूरिजीके शिष्य श्री जिनेश्वर सूरिजीके पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरि हुए जिनका परिचय इस प्रकार है।—

उसका नाम शिवचन्द्र रखा गया। कुमार दिनोंदिन वृद्धि प्राप्त होने लगा और अब उसकी अवस्था १२ वर्षकी हुई, उस समय उसी नगरमें गच्छनायक जिनधर्मसूरिका शुभागमन हुआ। सघने प्रवेशोत्सव किया, और अनेक लोग गुरुश्रीके व्याख्यानमें नित्य आने लगे। सूरिजीके व्याख्यान श्रवणार्थ धर्मसी और शिवचन्द्र कुमार भी जाने लगे और संसारकी अनित्यताके उपदेशसे कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया, *यावत् माता पिताके पास आग्रह पूर्वक अनुमति* लेकर सं० १७६३ में गुरु श्रीकेपास दीक्षा ग्रहण की। मासकल्पके परिपूर्ण हो जानेसे सूरिजी नवदीक्षित शिवचन्द्रके साथ विहार कर गये। ज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशमसे नवदीक्षित मुनिने व्याकरण, न्याय तर्क और आगम ग्रन्थोंका शीघ्र अध्ययन कर विद्वता प्राप्त की।

जिनधर्म सूरिजी जयपुर पधारे और वहां शारीरिक वेदना उत्पन्न होनेसे आयुष्यकी पूर्णाहुतिका समय जानकर सं० १७७६ वैसाख शुक्ला ७ को शिवचन्द्रजीको गच्छनायक पद देकर (वहीं) स्वर्ग सिधारे। आचार्यपदका नाम नियमानुसार जिनचन्द्रसूरि रखा गया। उस समय (राणा संग्राम राज्ये) उदयपुरके श्रावक दोसी मीला सुत कुशलने पद महोत्सव किया और पहरावणी, याचकोंको दान आदि कार्योंमें बहुतसा द्रव्यका व्यय कर सुयश प्राप्त किया। आचार्य पद प्राप्तिके पश्चात् आपने शिष्य हरिसागरके आग्रहसे वहीं चतुर्मास किया धर्मप्रभावना अच्छी हुई। चौमासा पूर्ण होने पर आपने गुजरातकी ओर विहार कर दिया। सं० १७७८ में (गच्छनायकके) परिग्रहको त्यागकर विशेष वैराग्य भावसे क्रियोद्धार किया और

है। उनके पट्टधर जिनवर्द्धनसूरिजीसे यह शाखा भिन्न हुई थी, उनके पट्टधर आचार्योंका नामानुक्रम इस प्रकार है —

जिनवर्द्धन सूरि—जिनचन्द्रसूरि—जिन सागर सूरि—(जिन्होंने ८४ प्रतिष्ठायें की थीं और उनका स्तूप अहमदाबादमें प्रसिद्ध है)। जिन सुन्दर सूरि—जिनहर्षसूरि—जिनचन्द्र सूरि—जिनशील सूरि—जिनकीर्तिसूरि—जिनसिंहसूरि—जिनचन्द्रसूरि (सं० १६९६ विद्यमान) इसका राजसुन्दरने उल्लेख किया है हमारे संग्रह की पट्टावली आदिसे इस शाखाके पश्चातुवर्ती पट्टधरोंका अनुक्रम यह ज्ञात होता है —जिनरत्नसूरि—जिनवर्द्धमानसूरि—जिनधर्म सूरि—जिनचन्द्र सूरि—(अपर नाम शिवचन्द्र सूरि) इनमें जिनरत्न सूरिके पीछेके नाम प्रस्तुत शिवचन्द्र सूरि रासमें भी पाये जाते हैं। अब रासके अनुसार जिन (शिव) चन्द्र सूरिजीका विशेष परिचय नीचे दिया जाता है —

जिन शिवचन्द्रसूरि ×

(पृ० ३२१)

मरुधर देशके भिन्नमाल नगरमें अभीतसिंह भूपतिके राज्यमें ओसवाल रांका गोत्रीय शाह पदमसी रहते थे। उनकी धर्मपत्नीका नाम पदमा था। उसके शुभ मुहूर्तमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और

मंधर स्वामीसे सूरि मंत्र संशोधन कराया। श्रीमंधर स्वामीने आचार्योंके नामकी आदिमें जिन विशेषण लगानेकी सूचना दी इसीसे पट्टधर आचार्यों के नामके आगे जिन विशेषण दिया जाता है।

×पूर्वे ११ साधुपर्याय ११ गच्छ नायक १८ इस प्रकार कुल ४४ वर्ष का आयुष्य पाया।

उसका नाम शिवचन्द्र रखा गया। कुंवर दिनोंदिन वृद्धि प्राप्त होने लगा और जब उसकी अवस्था १३ बरसकी हुई, उस समय उसी नगरमें गच्छनायक जिनधर्मसूरिका शुभागमन हुआ। सघने प्रवेशोत्सव किया, और अनेक लोग गुरुश्रीके व्याख्यानमें नित्य आने लगे। सूरिजीके व्याख्यान श्रवणार्थ पदमसी और शिवचन्द्र कुमार भी आने लगे और संसारकी अनित्यताके उपदेशसे कुमारको वैराग्य उत्पन्न हो गया यावत् माता पिताके पास आग्रह पूर्वक अनुमति लेकर सं० १७६३ में गुरु श्रीकेपास दीक्षा ग्रहण की। मासकल्प परिपूर्ण हो जानेसे सूरिजी नवदीक्षित शिवचन्द्रके साथ विहार कर गये। ज्ञानावर्णी कर्मके क्षयोपशमसे नवदीक्षित मुनिने व्याकरण न्याय तर्क और आगम ग्रन्थोंका शीघ्र अध्ययन कर विद्वत्ता प्राप्त की।

जिनधर्म सूरिजी उदयपुर पधारे और वहां शारीरिक वेदना उत्पन्न होनेसे आयुष्यकी पूर्णाहुतिका समय जानकर सं० १७७६ वैसाख शुक्ला ७ का शिवचन्द्रजीको गच्छनायक पद देकर (स्वर्ग) स्वर्ग सिधारे। आचार्यपदका नाम नियमानुसार जिनचन्द्रसूरि रखा गया। उस समय (राणा संग्राम राज्य) उदयपुरके श्रावक दोसी गीरा पुत्र कुशलेन पद महोत्सव किया और पहरावणी, याचकोको दान आदि कार्यों में बहुतसा द्रव्यका व्यय कर सुयश प्राप्त किया। आचार्य पद प्राप्ति पश्चात् आपने, शिष्य हरिसागरके आग्रहसे वहीं चतुमास किया धमप्रभावना अच्छी हुई। चौमासा पूर्ण होने पर आपने गुजरातकी ओर विहार कर दिया। सं १७७८ म (गच्छनायकने) परिग्रहका त्यागकर विशेष वैराग्य भावसे क्रियोद्धार किया और

आत्म गुणोंकी साधना करते हुए भव्योंको उपदेश प्रदान आदि द्वारा स्वपर हित साधनमें तत्पर हुए।

गुजरातमें विचरते हुए शत्रुंजय तीर्थ पधारे और वहां ४ महीने की अवस्थित कर ९९ यात्राएं कीं। वहांसे गिरनारमें नेमनाथकी यात्राकर जूनागढ़की यात्रा करते हुए खंभात पधारे, वहांकी यात्रा कर चतुर्मास भी वहीं किया। वहां धरम ध्यान सविशेष हुआ। वहांसे मारवाड़की ओर विहारकर आबू तीर्थकी यात्रा करके तीर्थाधिराज सम्मेतशिखर पधारे। वहा बीस तीर्थंकरोंके निर्वाण स्थानों की यात्रा करके, विचरते हुए बनारसमें पार्श्वनाथजी की यात्राकी। रास्तेमें पावापुरी चम्पापुरी राजगृही, वैभारगिरिकी भी संघके साथ यात्राकी और हस्तिनापुरमें शान्ति कुन्थु और अरिनाथप्रभु की यात्रा कर दिल्ली पधारे, वहां चतुर्मास करके विहार करते हुए पुनः गुजरातमें पदार्पण किया। वहां भणशालीकी कपूरके पास एक चतुर्मास किया और पंचमाङ्ग भगवतीसूत्रका व्याख्यान देने लगे, इति उपद्रव दूरकर सुयश प्राप्त किया। ज्ञान-भक्ति और धर्म प्रभावना अच्छी हुई, शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की यात्राकी भावना पुनः उत्पन्न होनेसे राजनगरसे विहारकर शत्रुंजय और गिरनारतीर्थकी यात्राकर वीरमंदरमें चौमासे रहे। वहांसे फिर शत्रुंजयकी यात्रा करके घोघा बंदर भावनगर आदिकी यात्रा करते हुए भी १७६४ के माह महीनेमें खम्भात पधारे। वहांके गुणानुरागी श्रावकोंने आपका अतिशय बहुमान किया उनके उपकारार्थ आप भी धर्मदेशना देने लगे।

इसी समय किसी दुष्ट प्रकृति पुरुषने वहांके नवनाधिपके समक्ष

कोई पुराणी खाई, अतः उसने अपने सेवकोंको आचार्यजीके पास भेजा। राज्य सेवकोंने पूज्यश्रीको बुलाकर "आपके पास धन है वह हमें देदो" कहा, पर सूरिजी तो बहुत पहलेही परिग्रहका सर्वथा त्याग कर चुके थे, अतः स्पष्ट शब्दोंमें प्रत्युत्तर दिया कि भाई हमारे पास तो भगवान् नाम स्मरणके अतिरिक्त कोई धन माल नहीं है, पर वे अब कामी सत्य कब माननेवाले थे। उन्होंने सूरिजीको तंग करना शुरू किया। इतनाही नहीं राज्यसत्ताके बलपर अंध होकर यवनाधिपतिने सूरिजीकी खाल उतारनेकी आज्ञा दे दी। सूरिजीने यह सब अपने पूर्व संचित अशुभ कर्मोंके उदयका ही फल है, विचारकर मरणान्त कष्ट देनेवाले दुष्टोंपर तनिक भी क्रोध नहीं किया। धन्य है! इस समभावी उग्र आत्म-साधक महापुरुषोंको !! रात्रिके समय दुष्ट यवनने क्रोधित होकर बड़े दुःख देने आरम्भ किये। मार्मिक स्थानोंमें बड़े जोरोंसे मारने (दंड प्रहार करने) लगा और उस पापीष्टने इतनेसे ही न रुककर सूरिजीके हाथ पैरके जीवित नखोंको उतार असह्य वेदना उत्पन्न की। वेदना क्रमशः बढ़ने लगी और मरणान्त अवस्था आ पहुंची पर उन महापुरुषने समभावके निर्मल सरोवरमें पैठ आत्मरमणतामें तल्लीनता कर दी। अपने पूर्वके मेतार्य-गजसुकुमाल-स्कन्धक आदि महापुरुषोंके चरित्रोंके स्मृति चित्र अपने आंखोंके सामने लाकर पुद्गल और आत्माके भिन्नत्व विचाररूप भेद ज्ञानसे इस असह्य वेदनाका अनुभव करने लगे।

यह वृतान्त ज्ञात होते ही प्रातःकाल श्रावकगण सूरिजीके पास आये तब यवन भी सूरिजीका धैर्य देख और अपनी भारी दुष्टवृत्ति

की हथिनी होनेसे रुकना गया। और श्रावकोंको उन्हें अपने स्थान ले जानेको कहा। रूपा बोहरा उन्हें अपने घर लाया। नगरमें सर्वत्र हाहाकार मच गया।

इस समय नाय (न्याय!) सागरजीने सूरिजीका अन्तिम समय ज्ञातकर उत्तराध्ययन आदि सूत्रोंका श्रवण कराके अनशन आराधना करवाई। श्रावकोंने यथाशक्ति चतुर्थ व्रत हरित त्याग १२ व्रतादि के यथाशक्ति नियम लिये। आचार्यश्रीने गच्छकी शिक्षा अपने शिष्य हीरसागरको देकर सं० १७६४ वैशाख ६ रविवार सिद्धयोग के प्रथम प्रहरमें जिनेश्वरका ध्यान करते इस नश्वर देहका परित्यागकर (प्राय) देवके दिव्य रूपको धारण किया। श्रावकोंने उत्सवके साथ अन्त क्रिया की और रूपा बोहरने वहां स्तूप कराया। इसी तरह राजनगरके बहिरामपुरमें भी स्तूप बनवाया गया। हीरसागरके आग्रहसे कपुरमासती शाह उमयाने सं० १७६५ के आश्विन शुक्ला ५ बृहस्पतिवारको राजनगरमें इस रासकी रचना की।

१७२५ चैत्र कृष्णा ११ को जेतारणमें आपका स्वर्गवास हुआ। इनके पश्चातक पट्टपराका क्रम यह है —१ जिनलब्धि जिनमाणिक्य जिनचन्द्र जिनोदय-जिनसंभव जिनधर्म जिनचन्द्र जिनकीर्ति-जिन युक्तिक्षम जिनअमारअसूरिके पट्टधर जिनचन्द्रसूरिजी पाटीमें अभी विद्यमान हैं।

भावहर्षीय शाखा

भावहर्षजी उपाध्याय

(पृ० १३५)

शाह कोड़ाकी पत्नी कोडमदेके आप पुत्र थे। श्रीकुलतिलकजी के आप सुशिष्य थे। संयमके प्रतिपालनमें आप विशेष सावधान रहा करते थे और सरस्वती देवीने प्रसन्न होकर आपको शुभाशीष दी थी। माह शुक्ला १ को जैसलमेरमें गच्छनायक जिनमाणिक्य सूरिजीने (सं० १५९३ और १६१२ के मध्यमें) आपको उपाध्याय पद दिया था।

अन्य साधनोंसे ज्ञात होता है कि आप सागरचन्द्रसूरि शाखाके या साधुचन्द्रके शिष्य कुलतिलकजीके शिष्य थे। आप स्वयं अच्छे कवि थे। आपके रचित स्तवनादि बहुतसे मिलते हैं। सं० १६ १ में आपने उ कनकतिलकादिके साथ कठिन क्रिया-उद्धार किया था। आपके हेमसार आदि कई विद्वान और कवि शिष्य थे। आपके द्वारा खरतर गच्छ में ७ वां गच्छ भेद हुआ। और आपके नामसे यह शाखा भावहर्षीय कहलाई। बालोतरमें इस शाखाकी गादी अब भी विद्यमान है। आपके शाखाकी पट्ट परम्परा इस प्रकार

है —भावहर्षसूरि—जिनतिलक—जिनोदय—जिनचन्द्र—जिनसमुद्र—जिनरत्न—जिनप्रमोद—जिनचन्द्र—जिनसुख—जिनक्षमा जिनपद्म—जिनचन्द्र—जिनफतेन्द्रसूरि हुए, आपकी शाखामें अभी यतिवर्य नेमिचन्द्रजी बालोतरमें विद्यमान है।—विशेष विचार खरतर गच्छ इतिहासमें करेंगे।

जिनसागर सूरि शाखा [लघु आचार्य]

जिनसागरसूरि

(पृ १५८२ से १३१४)

मरुधर जंगल देशके बीकानेर नगरमें राजा रायसिंहजी राज्य करते थे। उस नगरमें बोथरा गोत्रीय शाह बच्छा निवास करते थे, उनकी भार्या मृगादेकी कुक्षिसे सं० १६५२ कार्तिक शुक्ला १४ रविवारको अश्विन नक्षत्रमें आपका जन्म हुआ था। आप जब गर्भमें अवतरित हुए थे तब माताको रत्न बोल रत्नावलीका स्वप्न आया था उसीके अनुसार आपका नाम "चोला" रक्खा गया, पर लाड (अतिशय प्रेम) के नाम सामलसे ही आपकी प्रसिद्धि हुई।

एकबार श्रीजिनसिंहसूरिजीका यहां शुभागमन हुआ और उनके उपदेशसे सामल कुमारको वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसने अपनी मातुश्रीसे दीक्षाकी अनुमति मांगी। इसपर माताने भी साथ ही दीक्षा लेनेका निश्चय प्रकट किया। इधर श्री जिनसिंह सूरिजी विहारकर अमरसर पधारे। तब वहां जाकर सामलकुमार ने अपने बड़े भाई विक्रम और माताके साथ सं० १६६१ माह सुदी

७ को सूरिजीसे दीक्षा ग्रहण की*। उस समय अमरसरके श्रीमाली थानसिंहने दीक्षा महोत्सव किया।

नवदीक्षित मुनिके साथ जिनसिंहसूरिजी ग्रामानु-ग्राम विहार करते हुए राजनगर पधारे। वहां युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी को वंदना की, सूरिजीने नवदीक्षित सामंत मुनिको (मांडलेके तप वहन कर लिये, ज्ञातकर) बड़ी दीक्षा देकर नाम स्थापना "सिद्धसेन" की। इसके पश्चात सिद्धसेन मुनि आगमके उपधान (तपादि) वहन करने लगे और बीकानेरमें छः मासी तप किया। विनय सहित आगमादिका अध्ययन करने लगे। युगप्रधान पूज्यश्री आपके गुणोंसे बड़े प्रसन्न थे। कविवर समयसुन्दरके सुप्रसिद्ध शिष्य वादी हर्षनन्दनने आपको विद्याध्ययन बड़े मनोयोगसे कराया।

इस प्रकार विद्याध्ययन और संयम पालन करते हुए श्री जिनसिंहसूरिजीके साथ संघवी आसकरणके संघ सह शत्रुंजयतीर्थकी यात्रा की। वहांसे विहारकर खंभात अहमदाबाद, पाटण होते हुए वरकाणेमें जिनवल्लभसूरिजीकी यात्रा की। वहांसे विहारकर सिरोही पधारे। वहांके राजा राजसिंहने बहुत सम्मान किया और संघने प्रवेशोत्सव किया। वहांसे आबू और सांडप गूणाड़ा होते हुए घंघाणी के प्राचीन जिन बिम्बोंके दर्शन कर बीकानेर पधारे। यहा बाप-मलने प्रवेशोत्सव किया। जिनसिंहसूरिजीने चातुर्मास वहीं किया। इसी चातुर्मासके समय सम्राट् सलेमने मेवड़े दूत भेजकर आमन्त्रित

* विवाह रासमें धणारेका दीक्षित नाम माणिक्यमाला और बीकेका नाम विवेक कल्याण लिखा है।

किये। सम्राट्‌की विज्ञप्तिके अनुसार यहांसे विहारकर वे मेड़ते पधारे, वहां शारीरिक व्याधि उत्पन्न होनेसे आराधना पूर्वक स्वर्ग सिधारे।

इस प्रकार जिनसिंहसूरिजीकी अचानक मृत्यु होनेसे संघको बड़ा शोक हुआ। पर कालके आगे कर भी क्या सकते थे, आखिर शोक निवारण करके संघने राजसी (राज समुद्र) जी को भट्टारक (गच्छ नायक) पद और सिद्धसेन (सामल) जीको आचार्य पदसे अलंकृत किये।

संघपति (चोपड़ा) आसकरण, अमीपाल, कपूरचन्द, ऋषभदास और सूरदासने पद महोत्सव बड़े समारोहसे किया। (पूनमीया गच्छीय)हेमसूरिजीने सूरिमंत्र देकर सं०१६७४ फाल्गुन शुक्ल ७को शुभ मुहूर्तमें जिनराजसूरि और जिनसागरसूरि नाम स्थापना की।

आचार्य पद प्राप्तिके अनन्तर आपने मेड़तेसे विहार कर राणकपुर वरकाणा, तिमरी (पार्श्वनाथजीकी), ओसियां और फलोधीकी यात्राकर चतुर्मास मेड़ता किया। यहांसे जैसलमेर पधारे। वहां राउल कल्याण और श्रीसंघने वंदन किया और भणसाली थीरूशाहने (प्रवेश) उत्सव किया। वहां श्रीसंघको ११ अंगोंका श्रवण कराया। शाह कुशलने मिश्री सहित रुपयोंकी लाहण की। यहांसे संघके साथ लौद्रवा पधारे। (भणसाली) श्रीमल्ल सुत थाहरूशाहने स्वामी—वात्सल्यादिमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया। वहांसे आचार्य जिन सागरसूरि फलवधी पधारे। श्रावक मानेने प्रवेशोत्सव किया और

जिनसिंह रास गा ९ और श्रीसारकीर्ति कृत गीतके कथनानुसार आपको आचार्य पद युग प्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके वचनानुसार मिला था।

याचकोंको दान दिया। संघने बड़ी भक्ति की। वहांसे विहारकर करणुं-भड़ पधारे, वहां संघने भक्तिसे वंदना की। इस प्रकार विहार करते हुए बीकानेर पधारे, वहां पामाणीने संघके साथ प्रवेशोत्सव किया एवं (मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रके पुत्र) भागचन्द्रके पुत्र मनोहरदास आदि सामहीयेमें पधारे।

बीकानेरसे विहारकर (सूनकरण) सर चतुर्मास कर जालय सर पधारे। वहां मंत्री भगवानदासने बड़े उत्सवके साथ पूज्यश्रीको वंदन किया वहांसे डीडवाणेके संघको वंदाते हुए सुरपुर एवं मालपुर आये, वहां भी धर्म-ध्यान अधिकतर हुआ। इस प्रकार विहार करते हुए बीलाड़ेमें चौमासा किया। वहांके कटारिये श्रावक खरतर गच्छके अनन्य अनुरागी थे उन्होंने उत्सव किया।

बीलाड़ेसे विहार कर मेड़ता आये वहां गोलछा रायमलके पुत्र अमीपालके भ्राता नेतसिंह भ्रातृपुत्र-राजसिंहने बड़े समारोहसे नान्दि स्थापन कर व्रतोच्चारण किये श्रीफल नालेरादिके साथ रुपयोंकी लाहण (प्रभावना) की। वहांके रेखाजी भीमजी, वीरदास मांडण रैणा रीहड़ वरड़ाने भी धार्मिक कार्योंमें बहुतसा द्रव्यका सद्व्यय किया। आचार्य श्री वहांसे विहारकर राणपुर और कुम्भलमेरके जिनालयोंको वंदन कर मेवाड़ प्रवेश होते हुए उदयपुर पधारे। वहांके राजा करणने आपका सम्मान किया। और मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र पुत्र लक्ष्मीचन्द्रके पुत्र रामचन्द्र और रुपनाथके साथ अमावसने वन्दन किया। वहांसे विहार कर स्वर्णगिरि पधारे वहां संघने बड़ा उत्सव किया। साचोर संघने एवं हामीसाहने बहुत आग्रह कर चतुर्मास साचोरमें कराया।

इस प्रकार उपरोक्त सारे वर्णनात्मक इस रासको कवि धर्मकीर्ति (यु० जिनचन्द्रसूरि उपाध्याय धर्मनिधानके शि०) ने सं० १६८१ के पौष कृष्णा ५ को बनाया।

उपरोक्त रास रचनेके पश्चात् सं० १६८६ में गच्छ नायक जिनराजसूरि और आचार्य जिनसागरसूरिके किसी अज्ञात कारण विशेससे मनोमालिन्य या वैमनस्य* उत्पन्न हुआ।

फलस्वरूप दोनोंकी शाखायें (शिष्यपरिवार आदि) भिन्न २ हो गई। और तभीसे जिनराजसूरिजीकी परम्परा भट्टारकीया एवं जिनसागरसूरिजीकी परम्परा आचारजीया नामसे प्रसिद्ध हुई, जो आज भी उन्हीं नामोंसे प्रख्यात है।

शाखा भेद होने पर जिनसागरसूरिजीके पक्षमें कौनसे विद्वान और कहांका संघ आज्ञानुयायी रहा। इसका वर्णन निर्वाण रासमें इस प्रकार है —

श्रीजिनसागरजीके आज्ञानुवर्ती साधु संघमें उपाध्याय समय सुन्दरजी (की सम्पूर्ण शिष्य परम्परा), पुण्य-प्रधानादि युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके सभी शिष्य, और श्रावक समुदायमें अहमदाबाद, बीकानेर, पट्टण खम्भात मुल्तान, जैसलमेरके संघ नायक संख-वालादि, मेड़तेके गोलछे, आगरेके ओसवाल, बीलाड़के संघवी कटारिये एवं जयतारण जालौर, पवियारा, पाल्हनपुर सुज्ज, सूरत दिल्ली, लाहोर, लूणकरणसर, सिन्ध प्रान्तोंमें मरोठ बहा, डेरा, मारवाड़में फलौधी पोकरण आदिके (ओसवाल-अच्छ २

*जयकीर्त्तिके गीतके अनुसार यह कारण अहमदाबादमें हुआ था।

पदाधिकारी) थे ।* उनमेंसे मुख्य श्रावकोंके धर्मकृत्य इस प्रकार है —

करमसी शाह संवत्सरीको महम्मदी (मुद्रा) व्रत और उनके पुत्र लालचन्द प्रत्येक वर्ष संवत्सरीको सबमें श्रीफलोंकी प्रभावना किया करते थे । लालचन्दकी विद्यमान माता धनादेने पूठियेके ऊपर के खरतरकी पीटपीको समराइ (जीर्णोद्धारित की) और उसकी माता कपूरदेने जो कि रूपसेनकी माता थी, धर्मकार्योंमें प्रचुर द्रव्य व्यय किया ।

शाह शान्तिदासने भ्राता कपूरचन्दके साथ आचार्यश्रीको स्वर्णके बेहिये दिये थे, एवं २॥ हजार रुपयोंका खर्च कर सुयश प्राप्त किया था । उनकी माता मानबाईने उपाश्रयके १ खरतरकी पीटपी करा दी थी और प्रत्येक वर्ष आषाढ़ चातुर्मासीके पोषधोपवासी श्रावकोंको पोषण करनेका वचन दिया था ।

शाह मनजीके विद्यमान कुटुम्बमें शाह उदयकरण, हाथी, जेठमल और सोमजी मुख्य थे । उनमे हाथीशाहने तो रायचन्दी-क्षेत्र का विरुद प्राप्त किया था । उनके सुपुत्र धनजी भी सुयशके पात्र थे । मूलजी, संघजी पुत्र वीरजी एवं परीख सोनपाल सूरजीने २४ पाक्षिकोंको भोजन कराया था । आचार्य श्रीकी आज्ञामें परीख चन्द्रभाण असू-

---

*समयसुन्दरजी कृत ग्रन्थमें आपके आज्ञानुवर्तियोंकी सूची है इसके अतिरिक्त अजमेर, मेवाड़, जोधपुर, नागौर, वीरमपुर, सांचोर, फिर होर, सिद्धपुर महाजन रिणी सांगानेर, मालपुर, सरसा बीकानेर, नवा राजपुर बारामपुर आदिके संघोंके भी नाम भी आते हैं ।

अमरसी शाह, संघवी कुंवरमल, परीख अला, वाछड़ा देवकरण, साह गुणराजके पुत्र रायचन्द गुलालचन्द, इस प्रकार राजनगरका प्रशंसनीय संघ था और धर्मकृत्य करनेमें संभातके भणशाली वधुका पुत्र भयभदास भी उल्लेखनीय था।

इयनन्दनके गीतानुसार मुकरबखान (नवाब) भी आपको सन्मान देता था। इस प्रकार आचार्य श्रीका परिवार अव्यवस्त था, गीतार्थ शिष्योंको आचार्यश्रीने यथायोग्य वाचक उपाध्यायादि पद प्रदान किये थे और अपने पदपर स्वहस्तसे अहमदाबादमें जिनधर्मसूरिजीको (प्रथम पट्टेशी मोढ़ाकर) स्थापन किया। उस समय भणशाली वधूकी भार्या विमलदे, भणशाली सधुभाकी पत्नी सहिजलदे (जिसने पूर्व भी शत्रुंजय संघ निकाला और बहुतसे धर्मकृत्य किये थे) और आ बेवकीने पदमहोत्सव बड़े समारोहसे किया।

पद स्थापनाके अनन्तर जिनसागरसूरिके रोगोत्पत्ति होनेके कारण आपने वैशाख शुक्ला ३ को शिष्यादिको गच्छकी शिक्षामण दे, गच्छ भार छोड़ा। वैशाख सुदी ८ को अनशन उच्चारण किया। उस समय आपके पास उपाध्याय राजसोम राजसार, सुमतिगणि दयाकुशल वाचक, धर्ममंदिर, समयनिधान ज्ञानधर्म सुमतिवल्लभ आदि थे। सं० १७१६ ज्येष्ठ कृष्णा ३ शुक्रवारको आप स्वर्ग सिधारे और हाजीशाहने अग्नि संस्कारादि अन्त क्रिया धूमसे की। इसके पश्चात् संघने एकत्र होकर गायें, पाड़े बकरीयें आदि जीवोंकी २०) रुपये खर्च कर रक्षा की और शान्ति जिनालयमें देववन्दन कर शोकका परित्याग किया।

उपरोक्त (वर्णनवाले) रासकी रचना सुमतिकलशने (सुमति समुद्र शिष्यके साथ) सं १५२० माघ शुक्ला १५ को की। आचार्य श्रीके रचित गीती एवं स्तवनादि उपलब्ध हैं।

जिनधर्मसूरि

(पृ २२५ २६)

आप सचन्ती गोत्रीय (रिणमल) की पत्नी सुगादेके पुत्र थे। पद स्थापनाका उल्लेख ऊपर आही चुका है। ज्ञानहर्षके गीतानुसार आप बीकानेर पधारे उस समय गिरधरशाहने प्रवेशोत्सव बड़े समारोहसे किया था। विशेष ज्ञातव्य देखें —खरतरगच्छपट्टावली संग्रह।

जिनचन्द्रसूरि

(पृ० २२७)

आप जिनधर्मसूरिजीके पट्टधर थे। चुहरा वंशीय सांवलदास आपके पिता और सांवलदे आपकी माता थी। विशेष ज्ञातव्य देखें— खरतरगच्छपट्टावलीसंग्रह।

जिनयुक्ति सूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि

(पृ० २२७-२८)

उपरोक्त जिनचन्द्रसूरिके (पल्यान पट्टावलीके अनुसार) पट्टधर जिनविजयसूरिके पट्टधर जिनकीर्तिसूरिके पट्टधर जिनयुक्तिसूरिजी हुए उनके पट्टधर आप थे। रीहड़ गोत्रीय सा० भागचन्दकी भार्या यशोदाकी कुक्षिसे आप अवतरित हुए। बीकानेर चतुर्मासके समय कवि आलमने यह गीत रचा था। गीतमें प्रवेशोत्सवके समयकी सचित्र संक्षिप्त वर्णन है।

आपके रचित कृतियोंमें १—सौभाग्यपंचमी चौ०, २—नवतत्त्वबाला० (श्राविका कनकादेवीके लिये रचित श्रीपूज्यजी भं० नं० ४११), ३—अनुपरी आदि मुख्य हैं। आपके लि० एक प्रति अजीमगंज भंडारमें है।

जिनरंगसूरिजीके पट्टधर आचार्योंकी नामावलीका क्रम इस प्रकार है —जिनरंगसूरि जिनचंद्रसूरि जिनविमलसूरि जिनललित-सूरि जिनअक्षयसूरि जिनचंद्रसूरि-जिननन्दिवर्द्धनसूरि जिनजयशे-खरसूरि जिनकल्याणसूरि जिनचंद्रसूरिजीके पट्टधर जिनरत्नसूरि सं० १९९२ वै० व० १५ को लखनऊमें स्वर्ग सिधारे। इस शाखाकी गद्दी लखनऊमें है।

मंडोवरा शाखा

जिनमहेन्द्रसूरि

(पृ ३०२ से ३ ४)

शाह रूपचंदकी पत्नी सुन्दरा देवीकी कुक्षिसे आपका जन्म हुआ था, श्रीजिनहर्षसूरिजीके आप पट्टधर थे। गीतमें कवि रामकरणने पूज्यश्रीके मण्डोवर पधारने पर जो हर्ष हुआ और प्रवेशोत्सवकी भक्ति की गई उसका सुन्दर चित्र अंकित किया है। गहुँली नं १में उदयपुर मगसन आपको यहां पधारनेके लिये विनती स्वरूप परवाना भजन और मेड़ता अम्बरगढ़ बीकानेर जैसलमेर संघकी भी विनतियें आनेका सूचित किया है। एवं कवि अपनी ओरसे एक बार जोधपुर पधारनेकी विनती की है।

आपका परिचय विस्तारसे विचार फिर कभी करेंगे। आपके पट्टधर जिनमुक्तिसूरिजीके पट्टधर जिनचंद्रसूरिजी अभी जयपुरमें विराजमान हैं। उनके पट्टधर युवराज धरणेन्द्रसूरि विचरते हैं।

तपागच्छीयकाव्यसार

शिवचूला गणिनी

(पृ० २२६)

पोरवाड़ गोत्रकी पत्नी विल्हणदेकी कुक्षिसे जिनकीर्तिसूरि उत्पन्न हुए, उनकी बहिन प्रवर्तिनी राजलक्ष्मी थी।

सं० १४९३ वैशाख कृष्णा १४ को मेवाड़के देवकुलवाड़ेमें शिवचूला साध्वीको महत्तरा पद दिया गया उस समय महादेव संघवीने महोत्सव किया सोमसुन्दरसूरिने वासक्षेप दिया। रत्नशेखरको वाचक पद दिया गया। और भी पन्यास गणीश स्थापित किए एवं दीक्षा महोत्सव हुए। याचकोंको दान दिया गया, पताकाओंसे नगर सजाया गया और वादित्र बजने लगे।

श्रीविजयसिंहसूरि

(पृ २४१ से २६४)

कवि गुणविजयने सब प्रथम सिरोही मण्डण आदिनाथ, ओसवालोंके जिनालयमें श्रीहीरविजयसूरि प्रतिष्ठित श्रीसम्भवनाथ शिवपुरीके स्वामी शान्तिनाथ श्रीराणा तीर्थपति पार्श्वनाथ, संभव वाड़ व पीरवाड़ाके मण्डन श्रीमहावीर एवं सरस्वती और गुरु श्रीकमल-विजयके चरणोंमें नमस्कार करके श्रीहीरविजयसूरिके पट्टधर जसिंहजी (विजयसेनसूरि) के पट्टाधीश विजयदेवसूरिके शिष्य विजयसिंहसूरिके विजयप्रकाश रासकी रचना प्रारम्भकी है, जिन्हें विजयदेवसूरिने अपने पट्टपर स्थापित किया था।

श्रीआदिनाथके पुत्र मरुदत्तके बसाया हुआ मरु नामक देश है जहां ईति, भीति, अनीति चोरी-चकारी और रूकावटीका नामो-निशान भी नहीं है, बड़े-बड़े व्यापारी निवास करते हैं और करोड़-कोड़ सम्राक्त्र कोश रखे हैं। राजा लोग भी धर्मिष्ठ हैं, परमेश्वर की पूजा कराते हैं, जीवोंका "अमारि" नियम पालते हैं एवं शिकार भी नहीं खलते। यहांके सुभट शूर-वीर, लम्बी मूछोंवाले हैं उनके हाथमें कृपाणी चमकती है, व्यापारी प्रसन्न वदन रहते हैं और परम्परम सुभिक्ष सुकाल है।

जिस प्रकार मारवाड़ मोटा देश है वैसे यहांके कोश भी लम्बे हैं, निवासी भद्र प्रकृतिके हैं मनमें रोष नहीं रखते, कमरमें कटारी बांधते हैं। वणिक लोग भी जबर योद्धा हैं हथियार धारण किये रहते हैं। रणभूमिमें पैर पीछा नहीं करते स्वधर्मियोंको धर्ममें स्थिर करते हैं। निष्कपट घूंघटमें भी लम्बा घूंघट रखती हैं, सादगी जीवन और रसोईमें रावकी प्रधानता है बिपकामें भी हाथमें चूड़ियां रखती हैं। धान्यमें ऊंटकी प्रधानता है पथिक लोग जहां थकते हैं वहीं विश्राम करते हैं परन्तु चोरोंका भय नहीं है। शत्रुओंसे अभेद्य मार वाड़के ये ६ कोट हैं —१ मण्डोवर (जोधपुर) २ आबू ३ जालोर ४ बाड़मेर ५ पारकर ६ जैसलमेर ७ कोटड़ा ८ अजमेर ६ पुष्कर या फलोदी।

धन्य है मंडोवर देश जहां मंडोवरा पार्श्वनाथ और फलवर्द्धि पार्श्वनाथका तीर्थ है कवि कहता है कि उनके दर्शनोंसे मैं सफल और सनाथ हो गया।

मरु मंडलमें यशस्वी मेड़ता नगर है इसकी उत्पत्तिके लिये यह लोककथा प्रसिद्ध है कि जैसे जैनशासनमें भरतादि चक्रवर्ती हुए वैसे शिवशासनमें मान्धाता नामक प्रथम चक्री हुआ उसकी माताका देहान्त हो जानेसे वह इन्द्रकी देखरेखमें बड़ा होकर महाप्रतापी चक्रवर्ती हुआ उसका आयुष्य कोड़ा कोड़ी वर्षोंका था। उसके लिये कृत युगमें इन्द्रने राज्य स्थापना करके मेड़ता नगर बसाया।

मेड़ता नगर अति समृद्धिशाली था, सरोवरादिका वर्णन कविने रासमें अच्छा किया है। निकटवर्ती फलवर्द्धि पार्श्वनाथका तीर्थ महामहिमाशाली है, पोष दसमीको मेलेमें जहां एक लाख जनता एकत्र होती है—दूर-दूर देशोंसे यात्री आते हैं।

इस मड़तमें ओसवाल जातिक चोरड़िया गोत्रीय शाह मोहण का पुत्र नथमल निवास करता था उसकी पत्नीका नाम नायकदे था। उसके घरमें लक्ष्मीका निवास था सामग्री भरपूर थी, (उसकी) दानी पूर्वक धर्म कार्यों में धनका अच्छा सदुपयोग किया करती थी। नथमलके १ खेमो २ कमो ३ कर्मचन्द ४ कपूरचन्द और ५ पंचायण नामक पांच पुत्र थे, पांचो पुत्रोंमें तृतीय कर्मचन्द हमारे चरित्र नायक हैं इनका जन्म वि० सं० १६४४ (शक १५०६) फाल्गुन शुक्ला २ रविवारको उत्तराभाद्रपदाके चतुर्थ चरण और राजयोगमें हुआ था।

एकबार रात्रिमें सेठ नथमल सुख शय्यापर सोए हुए थे जागृत होकर संसारके सुखोंके मिटनेका कारण विचार करते हुए वैराग्य वासित होकर सुगुरुका संयोग प्राप्त होनेपर कृत पापोंकी-आलोयणा लेनेका विचार किया। दैवयोगसे तपा-गच्छके श्रीकमलविजयजी म०

५५ ठाणोंसे विचरते हुए मेड़ता पधारे, उनके समक्ष श्रेष्ठिने आकर आलोयणा लेनेकी इच्छा प्रगट करनेपर मुनिवरने गच्छनायकसे आलोयणा लेनेकी राय दी परन्तु आखिर नयमलजीका अत्याग्रह देखकर २१ अट्ठम तप और बहुतसे बेले और उपवासोंकी आलोयणा दी।

आलोयणाके अनन्तर विशेष वैराग्य वासित होकर अपनी स्त्री नायकदे और भ्राता सुरताणको भी महाव्रत लेनेके लिए उद्यत देखकर, दीक्षाका परामर्श किया सबके साथर कर्मचन्द आदि पुत्रोंने भी स्वीकृति दी। सेठने गच्छनायकके मिलनेपर दीक्षा लेना निश्चित किया।

इसी अवसरपर लाहोरमें दो चातुर्मास करके विजयसेनसूरि मेड़ता पधारे। नापू शाह पांचो पुत्रोंके साथ गुरुजीको वन्दनार्थ आया। शुभ लक्षणवाले कर्मचन्दको देखकर गच्छनायकने सोचा कि अगर यह चरित्र ले, तो बड़ा विचक्षण होगा। गुरुजीने नापू शाहसे कहा कि अभी हम हीरविजयसूरिजीके दर्शनार्थ जा रहे हैं तुम यथावसर कर्मचन्द्रादिके साथ आ जाना ऐसा कहकर मेड़तासे सादड़ी, पर्युषणाके पारणेपर राणकपुर, वरकाणा तीर्थकी यात्रा करते हुए जालोर पधारे यहां कमलविजयजीने उन्हें वन्दना की बीजोवाका संघ भी आया। वहांसे विहारकर श्री विजयसेनसूरि सिरोही होकर पाटण पधारे और हीरविजयसूरिजीका निर्वाण हुआ जानकर वहीं ठहरे।

इधर मेड़तेमें कर्मचन्द आदि दीक्षाकी तैयारियां करने लगे, उत्सवसे धर्मकृत्योंको करते हुए जेसा और पञ्चायणको गृह भार संभलाकर १ नापू २ सुरताण ३ कर्मचन्द्र ४ केसा ५ कपूरचन्द्र

(६ नायकन्द) ६ व्यक्तियोंने सं० १६५२ माघ (शुक्ला) २ को पाटणमें विजयसेनसूरिके पास दीक्षा ग्रहण की। उनके दीक्षाके नाम इस प्रकार रखे गए—नाथू = नेमविजय, सुरताण = सूरविजय, रूपचन्द्र = कनकविजय, केसा = कीर्तिविजय, कपूरचन्द्र = कुंवर विजय, इनमें कनकविजयको सुयोग्य समझकर विजयसेनसूरिने स्वशिष्य विजयदेवसूरिको सौंप दिया, उन्होंने इनको विद्याध्ययन कराया, श्रीविजयसेनसूरिने अहमदावादमें सं० १६७० में पंडितपद से विभूषित किया। वीसा और वछाने महोत्सव किया। खंभातमें श्रीविजयसेनसूरिका स्वर्गवास हो जानेसे उनके पट्टधर विजयदेव सूरि हुए उन्होंने सं० १६७३ में पाटणमें चौमासा किया, पोष वदी ६ को सहसी श्राविकाने इनके हाथसे प्रतिष्ठा करवाई, इसी समय कनकविजयको उपाध्याय पद भी दिया गया।

सम्राट जहांगीर विजयदेवसूरिसे माण्डवगढ़में मिले और प्रसन्न होकर "महातपा" पद दिया। विजयदेवसूरिने गुर्जर देशमें विहार करते हुए श्री शत्रुंजयकी यात्रा की इसके पश्चात् दो चौमास दीवमें करके गिरनारकी यात्रा कर नवानगर पधारे, वहां संघने ७००) लाखी व्ययकर सामइया किया। तत्पश्चात् उन्होंने पुनः शत्रुंजयकी यात्राकर खंभात चातुर्मास किया, वहां तीन प्रतिष्ठाओंमें सोलह हजार व्यय हुए। वहांसे आप शुदि १ को सावली पधारे। ३ मास तक मीन रह वहां सोनी रतनजीने अमारि पालन कराई उस समय उ० कनकविजयजी ही व्याख्यान देते थे। गुरुने बहुतसे छट्ट अट्ठमादि किए और ६ आंबिल करके पूर्वदिशिकी ओर ध्यान

क्रिया करते थे। सूरि मंत्रके आराधनमें वैशाखमें स्वप्नमें इनको कनकविजयजीको पद स्थापनका निर्देश किया उसके बाद पूज्य साबली और ईडर पधारे। वहां दो चौमास किये प्रासाद प्रतिष्ठा हुई। इसके बाद राजनगर चातुर्मास करके एक चातुर्मास बीबीपुरमें किया। चातुर्मासके अनन्तर सीरोहीके पजाबत तेजपाल और राय अखैराजके पोरवाड़-मंत्री तेजपालने गुरु वन्दना की, गुरुश्री पुनः श्री सिद्धाचलजीकी यात्राकर कमीपुर पधारे। तेजपालने पारस्परिक झगड़ा मिटाकर मेल कर इनेको विज्ञप्ति की इन्होंने भी स्वीकार कर समझौतेका पत्र लिखा आचार्य विजयानन्दसूरि व नन्दिविजय वा धनविजय, धर्मविजय आदिने विजयदेवसूरिकी पुनः आज्ञा शिरोधार्य की, तेजपाल पूज्यश्रीको सिरोही पधारनेकी विज्ञप्तिकर वापिस आ गया। पूज्यश्री राजनगरसे विहारकर ईडर आये वहां तपागच्छीय संघके आग्रहसे श्री व कनकविजयजीको वै० सु ६ सोमवारको पुष्य नक्षत्रके दिन सूरिपद देकर स्वपद पर स्थापन किया। इस समय ईडर संघ मुख्य सोनपाल, सोमचन्द, सूरजीके पुत्र साधू स, सहसमल, सुन्दर, सहजू, सोमा, धनजी मन जी इन्दुजी और अमीचंद राजनगरके संघवी कमलसिंह, अहमद पुरके पारख वैजाके पुत्र बापूसी पारख देवजी, सूरजी थानसिंह, रायसिंह, साभामा दोशी चमुमुख सिंह, जागा जसु, जेठा—जो गुरुश्रीके माइ थे कोठारी वच्छराज रहीआ कर्मसिंह, धर्मसी तेजपाल, अखयराज मंत्री समरथ मं० जसु मीमजी भामा, मोजा, फड़िया माडजी माणजी छला चोपिया गांधी वीरजी मेघजी

सा० वीरजी, देवकरण, पारख जस्सू, माणजी, सुरजी, तेजपाल इत्यादि ईडरका संघ सम्मिलित हुआ इसी प्रकार खम्भात और अहिमनगरका संघ एवं सावलीका संघ पद्मसी, थावसी आदि एकत्र हुए, सा० नाकर पुत्र सहजूने चतुर्विध संघके साथ पद प्रदानके लिये तपागच्छ नायकको एवं उ० धर्मविजय वा० जयविजय वा० चारित्रविजय पं० कुशलविजय इन चारोंको बुलाया गया। पदस्थापनाके अनन्तर कनकविजयका नाम विजयसिंहसूरि रखा गया, पं० कीर्तिविजय, लावण्यविजयको वाचकपद और अन्य ८ साधुओंको पंडित पद दिया गया। इस उत्सवमें सहजूने पाँच हजार महम्मदी व्यय किये, ईडर नरेश कल्याणमल्ल प्रसन्न हुए। ज्येष्ठ मासमें बिम्ब प्रतिष्ठा हुई शाह रहमान उत्सव किया दूसरे पक्षमें अमराजने सुयश लिया, पारख देवजीके घर पूज्यश्रीने प्रतिष्ठा की इस प्रकार सं० १६८१में बड़े ही आनन्दोत्सव हुए। राय कल्याणने दोनों आचार्यों को ईडरमें चौमासेके लिए रखा।

सीरोहीके शाह तेजपालकी विज्ञप्तिसे चैत्र मासमें सूरिजी आबू पधारे सं० महाजल दोसी, जोधा सन्मुख आए। आबूकी यात्राकी। अमणवाड़ा वीर प्रभुकी यात्रा कर चातुर्मासार्थ सीरोही पधारे। सा तेजपालादिने बहुतसे सुकृत किये। इसी समय विजयादशमी सं १६८२ को यह विजयप्रकाश रास कमलविजयके शिष्य विद्याविजयके शिष्य गुणविजयने रचा।

ऐतिहासिक सज्झायमाला भा० १ पृ० ७० (सज्झाय नं० ३४ अरुद्रुशाउहल) में कई बातोंका अन्तर व विशेषतायें हैं।

१ पुत्रोंके नाममें ५ वें पंचायणके स्थानमें प्रथम जेठाका नाम है।

२ पांचही व्यक्तियोंके दीक्षा लेनेका लिखा है सुरताण-सूरविजय का उल्लेख नहीं है। नायकदेका दीक्षा नाम नयश्री लिखा है, एवं दीक्षा सं० १६५४ लिखा है।

विशेष—सं० १६८४ पौष शुक्ल ६ बुधवार जालोरके मंत्री जयमल्लने गुणसुधाका नन्दिमहोत्सव कराया इस समय जससागर के शिष्य जयसागरको और विजयसिंहसूरिके भाई कीर्तिविजयको वाचक पद दिया। आचार्य विजयसिंहसूरिने राणा जगतसिंहको प्रतिबोध दिया मेड़तेमें आगरा निवासी बालसाहके मुख्य व्यवहारी हीरानंदकी भार्या मनीने इनके हाथसे प्रतिष्ठा कराई, इसी प्रकार किसनगढ़में राठौर रूपसिंहके महामन्त्री रायसिंहके आग्रहसे चातुर्मास कर प्रतिष्ठा की। सं० १७ ६ असाढ़ सुदि २ अहमदाबादके नवीनपुरामें उनका स्वर्गवास हुआ।

संक्षिप्त कविपरिचय

अक्षरानुक्रमसे कवियोंके नामोंकी सूची

अभयतिलक (३०) जिनपतिसूरि पट्टधर जिनेश्वरसूरिके शिष्य थे, आपके रचित १ सं० १३१२ पाल्हणपुरमें हेमचंद्रसूरिकृत द्याश्रय (२० सर्ग) काव्यवृत्ति २ न्यायालङ्कार टिप्पन (पंचप्रस्थ न्यायतर्क व्याख्या) ३ वीररास (सं १३१७) विशेष परिचय देखें —जैनयुग वर्ष ? पृ० १५६ ला० भ का लेख।

१ अमैविलस (४११) श्रीपालचरित्र कर्त्ता जयकीर्त्तिजीके शिष्य प्रतापसौभाग्यजीके आप शिष्य थे। आपकी परम्परामें अभी ह्यानचंद्रसूरि विद्यमान हैं।

२ आनन्द (१७७)।

३ आनन्दविजय (२०६)।

४ आलम (३३८) कविवर समयसुन्दरकी परम्परामें आप करणशीलके शिष्य थे, आप अच्छे कवि थे आपके रचित १ मौन एकादशी चौ (१८१४ मकसूदाबाद) २ सम्यक्त्व कौमुदी चौ० ३ जीवविचारस्तवन आदि उपलब्ध हैं।

५ कनक (१३४) आप सम्यक्त्व उ० क्षेमराजजीके शिष्य थे, आपका पूरा नाम 'कनकतिलक' होगा।

६ कल्याणकमल (१००)—देखें —युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० १७२।

७ कल्याणचंद्र (५२) कीर्तिरत्नसूरिजीके शिष्य थे। सं० १५१७में सूरिजीसे आपने आचारांगकी वाचना ली जिसकी प्रति जे० भं० में (नं० २) अब भी विद्यमान है।

८ कल्याणहर्ष (२४७)

९ कविदास (१७४)

१० कवीयण (२६३-२६७)।

११ कनकसिंह (२४३) जिनसिंहसूरि शिष्य, देखें यु जि० सू० पृ० २११।

१२ कमलरत्न (२३३) देखें यु जि सू पृ० २१५।

१३ कमलरूप (२४०) श्रीजिनराजसूरि शिष्य मानविजयजी के आप शिष्य थे आपके रचित —१ पांडवरास (१७२८ आ० व ७ र मेड़ता) २ धना चौ (१७२५ आ० सु० ६ सोजत) ३ अंजना चौ (१७३३ आ० सु ७) ४ रात्रि भोजन चौ (१७४० मि० लूणकरणसर) ५ आर्द्रकुमार चौढा० ६ दशवैकालिक सज्झायें इत्यादि उपलब्ध हैं।

१४ कनकधर्म (२६६)।

१५ कनकसोम (९०-१४४) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९४

१६ करमसी (२५७)

१७ कीर्तिवर्द्धन (३३३) जिनहर्ष (आयपक्षी) सूरिजीके शिष्य दयारत्न (कापड़हेड़ारास कर्ता १६६५) के आप शिष्य थे, आपके रचित सदयवत्ससावलिंगा चौ० (१६९७ विजयदसमी) प्राप्त है।

१८ कुशलधीर (२०७) देखें युगप्रधान जिनचंद्रसूरि पृ० १९४।

१९ कुशललाभ (११७) „ „ „ „ १९६।

२ खड़पति (१३८)

२१ क्षमाहंस (२१७) क्षेमकीर्ति (शाखाके आदि पुरुष) जीके शिष्य थे, आपकी रचित मेघदूत दीपिका उपलब्ध है। जयसोम, गुण विनय आपहीकी परम्परामें थे।

२२ क्षमाहंस (२४२ ४३) आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं।

२३ गुणविजय (३६४) आपके रचित १ विजयप्रशस्ति काव्यके अन्तिम ५ सर्गमूल और सम्यक्त्वपर टीका २ कल्प कल्पलता टीका ३ सातसौ बीस जिन स्त० आदि उपलब्ध हैं।

२४ गुणविनय (६३ ६६ १०० १२५ १७२ २३०) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २ ०।

२५ गुणसेन (१३६) सागरचंद्रसूरि शाखाके वा सुखनिधानजी के आप शिष्य थे आपके रचित कई स्तवन हमारे संग्रहमें हैं। आपके यशोलाभ नामक शिष्य थे जो अच्छे कवि थे।

२६ चारित्रनंदन (२६७)।

२७ चारित्रसिंह (२०५) देखे यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९७।

२८ चन्द्रकीर्ति (४०६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०८।

२९ जयकीर्ति (३३४) कविवर समयसुन्दरजीके शि० वादी हर्षनंदनजीके शिष्य थे।

३० जयकीर्ति द्वि० (४११ १२) आप कीर्त्तिरत्नसूरि शाखाके अमरविमल शि० अमृत सुन्दरजीके शिष्य थे, आपके रचित १ श्रीपाल चारित्र (१८६८ जेसलमेर) २ चैत्रीपूनम व्याख्यान आदि उपलब्ध हैं।

३१ जयनिधान (१४५) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० २०६।

३२ जयसोम (११८) देखें यु० „ पृ १६७।

३३ जल्ह (११८)।

३४ जिनचन्द्रसूरि (४१८) इसी ग्रन्थमें रास सार पृ ३६६

३५ जिनसमुद्रसूरि(३१५ १६) इसी ग्रन्थमें रास सार पृ०५५

३६ जिनेश्वरसूरि (४३) बेगड़ गुणप्रभसूरि शि

३७ देवकमल (१३६) इनका नाम जयतपदवेलिमें आता है अतः साधुकीर्तिजीके गुरु-भ्राता होना सम्भव है।

३८ देवचंद (३६४)।

३९ दयालदास (१४०)।

४० धर्मकलश (१६)।

४१ धर्मकीर्ति (१८६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८३।

४२ धर्मसी (२५ -५०) देखें राजस्थान पत्र वर्ष २ अंक २ में प्र मेरा लेख।

४३ नयरंग (३२६) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १६५।

४४ नेमिचंद भंडारी (३७२) षष्टीशतक कर्ता, जिनपति शिष्य जिनेश्वरसूरिके पिता।

४५ पुण्यसागर (५) देख यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १८८।

४६ पुण्य (३३७) यथासम्भव आप समयसुन्दरजीके परम्परामें (कविवर विनयचंद्रके प्रगुरु) होंगे और पूरा नाम (पुण्यचंद शि०) पुण्यविलास होगा।

४७ पद्मराज (६७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १९०।

४८ पद्ममन्दिर (५६) आपके रचित १ प्रवचनसारोद्धार बाला० (१६५१) उपलब्ध है।

४९ पद्दराज (४०)

५० पल्ह (३६८) इनका नामोल्लेख चर्चरी टीका (अपभ्रंश काव्यत्रयी पृ० १०) में आता है, आप दिगम्बर भक्त और (जिन दत्तसूरिके) अभिनवप्रबुद्ध भाक्त थे लिखा है।

५१ मतत (६)।

५२ मतिकीर्ति (५४) उ० जयसागरजीके शि० रत्नचंद्रजीके आप सुशिष्य थे आपके रचित १ कल्याणकाव्य २ लघुशान्तिक पारिका टीका (१५७१ विक्रमपुर) ३ सीरावल्ली पार्श्व०मंत्रगर्भ स्तोत्र व ३ ४ सीमंधरस्तवनादि उपलब्ध हैं। आपके शि० पार्श्वचंद्रजी कृत १ उत्तम कुमारचरित्र २ रतिसार चौ० ३ हरिबल चौ० (१५८१ मा० सु० ३) ४ मदनमयिपालमन्थि (१५८०) आदि उपलब्ध हैं आपकी परम्परामें श्रीवल्लभोपाध्याय हो गये हैं देख यु चरित्र पृ० ०३।

५३ महिमा समुद्र (४३१ ३०) बेगड़शाखा

५४ महिमहर्ष (४३२) वगड़ गच्छ, अच्छे कवि थे।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ माणसास (३१८)

५७ माणक (५६४)

५८ माधव (३३६)

५६ मेरुनन्दन (३६६) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध हैं।

६० रयणशाह (७)

६१ राजनिधान (१०३ १२३) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ १०४

६२ राजकरण (३ ३ ३ ४)

६३ राजलक्ष्मी (३४)

६४ राजलाभ (२५५ २५७) देखें यु जिनचंद्रसूरि पृ १०३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिन-राजसूरि देखें इसी ग्रन्थमें रासतार पृ० २२

६६ राजसुन्दर (१२०) प्रशस्तिमे स्पष्ट है कि आप (जिन सिंहसूरि) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४६) कविवर समयसुन्दरजीके शि० हर्षनन्दन शि० जयकीर्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित श्रावकाराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं० १७०६ मा० सु ६ जेसलमेर जिनसागरसूरि शि० जसवीर पठ) ३ इरियावही मिथ्यादुष्कृतस्तव०भाषा० ४ फारसी स्त० आदि उपलब्ध हैं।

६८ राजहंस (२३१)

५४ महिमाह्प (४३२) बगड़ शाखा, अच्छे कवि थे।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ माणदास (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माधव (३३६)

५९ मेरुनन्दन (३६६) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध है।

६० रयणसार (७)

६१ रत्ननिधान (१०२ १२३) देखें यु जिनचन्द्रसूरि पृ० १ ४

६२ राजकरण (३ ३ ३०४)

६३ राजलब्धी (३४)

६४ राजलाभ (२५५ २५७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ० १७३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिन राजसूरि देखें इसी ग्रन्थमें रासासार पृ २२

६६ राजसुन्दर (३२०) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिन सिंहपट्टे) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४२) कविवर समयसुन्दरजीके शि० हर्षनन्दन शि जयकीर्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित भावकाराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं १७ ६ मा० सु ६ जेसलमेर जिनसागरसूरि शि० जसवीर पठ) ३ इरियावही मिथ्यादुष्कृतस्तवबाला० ४ फारसी स्त० आदि उपलब्ध है।

६८ राजहंस (२११)

६६ रूपचन्द्र (२४१) आप राजविजयजीके शिष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८ १२१ १२२)देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७१ लब्धिशेखर (६८)

७२ ललितकीर्ति (२०७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७३ लाघशाह (३२१) कडुआमती (कडुवा-खीमो-वीरो-जीवराज तेजपाल-रतनपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-लघुजी थोमणशि०) थे। आपके रचित १ जम्बूरास (१७६४का० सु० २ गुरु मोईगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७९३ मि० ब० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्रबाला० (१८०७ मि० सु०५ रवि० राधणपुर) प्राप्त हैं।

७४ वसतो (२६५) आपके रचित १ स्रोत्रबास्त (१८१७ मि० ब ५ र०) २ बीसस्थानक स्त० गा० १६, ३ रात्रिभोजन सझाय, ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध हैं।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे संग्रहमें हैं।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वल्लभी (७५१)

७९ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २०७

८० श्रीसुन्दर (१७१) " " पृ० १७७

८१ समयप्रमोद (८६ ६६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८२

८२ समयसुन्दर (८८ १०६-७-८ ६ २६-२७-२८-२६ ३१-

५४ महिमहंस (४३२) वेगड़ शाखा, अच्छे कवि थे।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ माणदास (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माणव (३३६)

५९ मेरुनन्दन (३६६) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध है।

६ रत्नलाभ (७)

६१ रत्ननिधान (१ ३ १२३) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १०४

६२ रामकरण (३०३ ३ ४)

६३ राजलक्ष्मी (३४)

६४ राजलाभ (२५५ २५७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ १७३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिन-राजसूरि, देखें इसी ग्रन्थमें राससार पृ २२

६६ राजसुन्दर (३२) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिन सिंहपट्टे) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४६) कविवर समयसुन्दरजीके सि इपनन्दन सि जयकीर्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित श्रावकाराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं १७०६ श्रा० सु० ६ जेसलमेर, जिनसागरसूरि सि जसवीर पठ०) ३ इरियावही मिच्छादुक्कडस्तव्बाला ४ फारसी स्त आदि उपलब्ध है।

६८ राजहंस (२३१)

६९ रूपहर्ष (२५१) आप रामविजयजीके शिष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८ १२१ १२२)देखें यु०जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७१ लब्धिशेखर (६८)

७२ लब्धिकीर्ति (२०७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७३ लाभानन्द (१२१) कडुआमती (कडुआ-खीमो-वीरो-जीवराज तेजपाल-रत्नपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-लघुजी थोभणजि०) थे। आपके रचित १ जम्बूरास (१७६४का० सु० २ गुरु सोहीगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७९३ मि० व० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्रबाला० (१८०७ मि० सु०५ रवि० राधणपुर) प्राप्त है।

७४ वसतो (२६५) आपके रचित १ छोत्रबास्त० (१८१७ मि० व ५ र) २ बीशस्थानक स्त० गा १६, ३ रात्रिभोजन सझाय ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध हैं।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे संग्रहमें हैं।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वैसजी (२५१)

७९ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ २ ७

८० श्रीसुन्दर (१७१) " " पृ० १७२

८१ समयप्रमोद (८६-६६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १४०

८२ समयसुन्दर (८८ १०६ ७-८-६-२६ २७-२८-२६ ३१-

५४ मतिमहर्ष (४३२) वैगड़ शाखा, अच्छे कवि थे।

५५ मतिमहंस (३०)

५६ माणदास (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माधव (३३६)

५६ मेरुनन्दन (३६६) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध है।

६० रत्नपताय (७)

६१ रत्ननिधान (१०३ १२३) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १०४

६२ राजकरण (३०३ ३ ४)

६३ राजलब्धी (३४)

६४ राजलाभ (२५५ २५७) देखें यु० जिनचंद्रसूरि पृ १७३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिन-राजसूरि देखें इसी ग्रन्थमें रासलार पृ २२

६६ राजसुन्दर (३२०) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिन सिंहसूरे) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४६) कविवर समयसुन्दरजीके शि हर्षनन्दन शि० जयकीर्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित श्रावकआराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं० १७०६ मा० सु ६ जेसलमेर, जिनसागरसूरि शि० जसवीर पठ) ३ इरियावहीमिच्छादुक्कड़स्त०भाषा ४ फारसी स्त आदि उपलब्ध है।

६८ राजहंस (२३१)

६९ रूपचंद (२४१) आप रामविजयजीके शिष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८ १२१ १२२)देखें यु जिनचन्द्रसूरि पृ०२०६

७१ लब्धिप्रकाश (६८)

७२ ललितकीर्त्ति (२ ७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ०२०६

७३ लघमाल (३२१) कडुआमती (कडुवा-खीमो-वीरो-जीवराज तेजपाल-रतनपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-लघुजी थोभणसि०) थे। आपके रचित, १ जम्बूरास (१७६४का० सु० २ गुरु मोहीगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७९३ मि० व० १० गु सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्ररास (१८०७ मि० सु०५ रवि० राधणपुर) प्राप्त है।

७४ वसतो (२६५) आपके रचित् १ लोद्रवास्त० (१८१७ मि० व ५ र०) २ बीसस्थानक स्त० गा० १६, ३ रात्रिभोजन सज्झाय, ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध है।

७५ विमलरत्न (२०८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे संग्रहमें है।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वेलजी (७५१)

७९ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २०७

८ श्रीसुन्दर (१५१) " " पृ० १५२

८१ समयप्रमोद (८६ ६६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १४०

८२ समयसुन्दर (८८ १०१-७-८-६ ७६-७७-७/ ७६ ३१-

५४ महिमहर्ष (४३२) नगर्ग शाखा अच्छे कवि थे।

५५ महिमाहंस (३००)

५६ माधदास (३१८)

५७ माणक (२६४)

५८ माधव (३३६)

५९ मेरुनन्दन (३६६) जिनोदयसूरि आपके दीक्षागुरु थे। आपके रचित अजितशान्तिस्तवनादि उपलब्ध हैं।

६० रयणशाह (७)

६१ राजनिधान (१०३ १२३) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १०४

६२ राजकरण (३ ३ ३०४)

६३ राजलक्ष्मी (३४)

६४ राजलाभ (२५५ २५७) देखें यु जिनचन्द्रसूरि पृ० १५३

६५ राजसमुद्र (१३२) आचार्य पदके अनन्तर नाम जिन-राजसूरि देखें इसी ग्रन्थमें रासमार पृ० २२

६६ राजसुन्दर (३२) प्रशस्तिसे स्पष्ट है कि आप (जिन सिंहसूरि) पिप्पलक जिनचन्द्रसूरिजीके शिष्य थे।

६७ राजसोम (१४६) कविवर समयसुन्दरजीके शि० हर्षनन्दन शि जयकीर्त्तिजीके शिष्य थे। आपके रचित आराधना (भाषा) २ कल्पसूत्र (१४ स्वप्न) व्याख्यान (सं० १७०६ आ सु ६ जेसलमेर, जिनसागरसूरि शि जसवीर पठ०) ३ इरियावही मिथ्यादुष्कृतस्तवबाला ४ फारसी स्त० आदि उपलब्ध हैं।

६८ राजहंस (२३१)

६६ रूपहर्ष (४१) आप रामविजयजीके शिष्य थे।

७० लब्धिकल्लोल(७८ १२१ १२२)देखें यु०जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७१ लब्धिसागर (६८)

७२ लब्धिकीर्ति (२०७-४०५) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

७३ लालचन्द (१२१) कडुआमती (कडुआ-खीमो-बीरो जीवराज तेजपाल-रतनपाल—जिनदास-तेज-कल्याण-लघुजी थोभणसि०) थे। आपके रचित, १ अम्बूरास (१७६८का० सु० २ गुरु मोहीगाम) २ सूरत चैत्य परिपाटी (१७९३ मि० व० १० गु० सूरत) ३ पृथ्वी-चन्द्रगुणसागर चरित्रबाला० (१८०७ मि० मु०५ रवि० राधणपुर) प्राप्त है।

७४ वसतो (२६५) आपके रचित् १ लोद्रवास्त० (१८१७ मि० व ५ र०) २ बीजस्थानक स्त० गा० १६, ३ रात्रिभोजन भास ४ पार्श्वनाथ स्तवनादि उपलब्ध हैं।

७५ विमलरत्न (२ ८)

७६ विद्याविलास (२४५) आपके रचित कई संस्कृत अष्टक आदि हमारे संग्रहमें हैं।

७७ विद्यासिद्धि (२१४)

७८ वेमजी (२५१)

७९ श्रीसार (६१-६४) देखें युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि पृ० २ ५

८० श्रीसुन्दर (१५१) „ „ पृ० १९२

८१ समयप्रमोद (८६ ६६) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १९२

८२ समयसुन्दर (८८ १ ६ ७-८-६ ९६-७५-७८ ६ ३१-

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

२०० २२७) देखें उपरोक्त पृ० १६७ और रासार पृ० ४५।

८३ समयहर्ष (२५४)

८४ सहजकीर्ति (१७५ ७३) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० २०६

८५ सारमूर्ति (२३)

८६ साधुकीर्ति(९२ ६७-४०४)देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १९२

८७ सुन्दरम (१४६)

८८ सुमतिकल्लोल (६४) ,, पृ० १०५

८९ सुमतिकलश (१६८)

९० सुमतिविजय (१७०)

९१ सुमति विमल (२५०)

९२ सुमतिरंग (४१०-४२१) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३१५

९३ विवेकसिद्धि (४२२)

९४ सोमकुंअर (४८) आप व जयसागरजीके विद्वान शिष्य थे। विज्ञप्तित्रिवेणी पृ० ६१ से ६३) में आपके रचित कई आलंकारिक पद्य भी पाये जाते हैं।

९५ सोममूर्ति (३८७) जिनपतिसूरि शि जिनेश्वरसूरिजीके आप सुशिष्य थे और व अभयतिलकजीके आप सतीर्थ थे। देखें जैनयुग वष २ पृ १६४।

९६ हर्षकुल (५७) महो०-पुण्यसागरजीके शिष्य थे, उल्लेख यु० जिनचन्द्रसूरि पृ १६

९७ हर्षचन्द्र (२५६) रत्नहर्ष शि०, आपके रचित काव्य एक गहुंली भी संग्रहमें है।

९८ हर्षनन्दन(१२४ ३२ ३३ १४६ २०१ २०३)देखें यु०प्र० १७१

९९ हर्ष वल्लभ (४१७) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० १८५

१०० सदकसुन्दर (४२०)

१०१ हेमसिद्धि (२११ १३)

१०२ क्षमाकल्याण (२६६ ३०६-७) देखें इसी ग्रन्थमें रासमार पृ० ६४

१०३ ज्ञानकलश (३२६)

१ ४ ज्ञानकुशल (२३२)

१०५ ज्ञानहर्ष (३३५ ३७८) देखें यु० जिनचन्द्रसूरि पृ० ३०५

कवियोंके नामके आगे प्रस्तुत संग्रह (मूल) के पृष्ठोंकी संख्या दी गई है। कई कवि एकही नामसे एकही समयमें कई हो गये हैं अतः संक्षिप्त परिचय देना उचित नहीं ज्ञात हुआ ।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह

कक्कवि गु वेगु कोइ हियइ, संघ मणछित देइ फल्लु ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरुवि, पम्मु पयासिउ जिण अमल्लु ॥३॥
अमयवयणु जिणि विन्नु सयल संघह विक्कमपुरि ।
किय पयट्ट जिण वसम सुवणि बहुविह लच्छु मरि ।
जिणि पडिबोहउ कुमरपालु नरवय तिहुयण गिरि ।
पंचसत्त मुणि नेमि सेणि चारित देसण करि ।
उज्जेणी नयरु कोडणि तणउं, जिणि पडिबोहउ झाण बलि ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरुवि, दुयउ न होइ सइ इत्थु कलि ॥ ४ ॥
बारह पंचुत्तरइ पवक वैसाख छट्ठि विधि ।
सइ जिणदत्त मुणिंद ठविउ जिनचंदु पट्टि तहि (? जिणि) ॥
विक्कमपुरि जिण वीर सुवणि थाप्पिय मणु मोहइ ।
गणहर सेम सुहंम सामि भवियण दिण बोहइ ।
जिणचन्द सूरि मसु चन्दु सम, कक्कवि उज्जोयवह ययणु जिणि ।
.. .. ॥ ५ ॥
बारह सइ तेवीस समइ कत्तिय सिय तेरसि ।
पवेरपुरि ठविउ सूरि जिणपत्ति महा रिसि ॥
मंतु दिनु जयदेव सूरि सूरहि सुपवित्तिण
.. ..
अत्थाणु पहुविरायइ तणउ जिणि रंजवि जयपत्तु लियउ ।
लाइरय सदि जगि पयडिय, जुग पहाणु पहुविप्पयउ ॥ ६ ॥
बारमट्टुत्तरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ ।
जिणेसर सूरि पइसरइ सघु समलु विविह सज्जइ ।

सूरिमंतु सिरि सव्वएवसूरिहिं जसु दिन्नउ ।
आलउरहिं जिणवीर भुवणि बहु उच्छव (को) मउ ।।
कंसाल ताल झल्लरि पडह, घण वंसु रसियामणउ ।
सुपढंति भट्ट सुमहि गहिर, जय जय सद सुहावणउ ।।७।।
जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचंदु सु जिणवइ ।
तुय सुन्दर आसीस दिंति जिणेसरसूरि मुणिवइ ।
एयहि ठाम अट्ठ राइगयणि ठाम मह दिणेसरु ।
ताम पयासिउ सूरि धंमु जुगपवरु जिणेसरु ।।
जिहि संघु स नंदउ दिणगविणु, वीर तित्थु चिरु होउ घर ।
पूजन्ति मणोरह सयल तहिं, जम्पइ पढंति नारि नर ।। ८ ।।
[इति षट्पदम्]

अज्जवि सु वेगु छोइ हियइ, संघ मणच्छिय देइ फलु ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरुव्वि धम्मु पयासिय जिण अमलु ॥३॥
असवरतु जिणि विमु सयल संघह विक्रमपुरि ।
किय धम्मह जिण कुसम मुवणि बहुविह जल्लु भरि ।
जिणि पडिबोहउ कुमरपालु नरवय तिहुयण गिरि ।
पंचसय मुणि नेमि खेमि चारित्त दैसण करि ।
कसमेरी कनडु बोहणि तमर्व, जिणि पडिबोहउ झाण बलि ।
जिणदत्त सूरि पहु सुरगुरुवि, सुयत न होइ सउ इत्थु कलि ॥ ४ ॥
सायर पंचुत्तर बहुल बैसाख छट्ठि दिणि ।
सु जिणदत्त मुणिद ठविउ जिनचंदु पट्टि तहि (? जिणि) ॥
जिणपुरि जिण वीर मुवणि थापिय मणु मोहइ ।
गणहर खेम सुधम्म सामि भविसयण दिय बोहइ ।
जिणचन्द सूरि जसु चन्दु सम, अज्जवि उज्जोयइउ गयणु जिणि ।
— — — — — ॥ ५ ॥
एय बत्तीस समइ कयिय सिय तेरसि ।
जेपुरि ठविउ सूरि जिणपत्ति महा रिसि ॥
मंडु देव सूरि सूरहि सुपवित्तिण,
— — — — — — —
कुबिरायह तणउ जिणि एंज्जवि जयपत्तु लियउ ।
एय मरि जगि पयडिय गुण पहाणु पहुविप्पयउ ॥ ६ ॥
... सिय छट्ठि मणिज्झइ ।
बारे ...सर सूरि पयसरइ सयु सयलु विविह सज्झइ ।

॥ श्री गुरु गुण षट्पद ॥

जिणवल्लह पमुहाणं, सुगुरूण जो पढइ वर-छप्पं ।
मंगल-दीवंमि कए सो पावइ मंगलं विमलं ॥१॥

इग्यारह सइ सट्ठसत्त समहिय संवछरि ।
आसाढह सिय छट्ठि चित्तकोट्टंमि पवरपुरि ।
महावीर जिणभवणिट्ठिय संठिउ जिणवल्लह ।
जिणि उज्जोयउ संघु गच्छु पंडिय जिणवल्लह ।
गुरु तह कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध घर ।
परिहरवि भावि विहि पयड कर, पुहवि पसंसिज्जइ सुपरपरि ॥१॥

इग्यारह गुणहत्तरइ किसण वैसाह छट्ठि दिणि ।
चित्तऊड वर नयरि संघु मिलियउ आणंदिणि ।
वद्धमाण जिणभवणि भयउ तहि पयड महोच्छवु ।
देवभद्द संठियउ सूरि जिणदत्त मुनिच्छवु ।
आगम पुराण सूरि सिद्ध, जिम झाण नाण संजुत्त मण ।
जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि पुणवि न सक्कइ तुम्ह गुण ॥ २ ॥

अज्जवि जसु जस पसरु महि उच्छलइ परत्थिहि ।
अज्जवि जसु गुण नियरु थुणहि पंडिय बहु भत्तिहि ।
अज्जवि सुमरिज्जंतु दिंतु अमयरउ पवित्तम ।
नाम ग्रहणि दुरंति जसु अज्जवि भवियण दिण ।

अमर प्रभावी योगीन्द्र युगप्रधानजी जिनदत्त सूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीय प्राचीन ताडपत्रीय प्रति के काष्ठफलक पर चित्रित)

॥ श्री गुरु गुण षटपद ॥

जिणवल्लह-पमुहाणं, सुगुरुण जो पढइ नर-कव्वं ।
मंगल-दीवंमि कए, सो पावइ मंगलं विमलं ॥१॥

इग्यारह सइ सत्तुसत्त समहिय संवछरि ।
आसाढइ सिय छट्ठि चित्तकोटंमि पवरपुरि ।
महावीर जिणभवणिट्ठिय संठिउ जिणवल्लह ।
तिणि वद्धोपउ चंदु गहु पंडिय जिणवल्लह ।
गुरु तक्क कव्व नाटय पमुह, विज्जा वास परिट्ठ घर ।
परिहरवि आवि विहि पयड कउ, पुहवि पसंसिजइ सुपरपरि ॥१॥

इग्यारह गुणहत्तरइ किसण वैसाख छट्ठि दिणि ।
चित्तऊड वर नयरि संघु मिलियउ आणंदिणि ।
वद्धमाण जिणभवणि भयउ तहि पणउ महोछवु ।
देवभद्द संठियउ सूरि जिणदत्त सुनिछवु ।
आयम पुणंति सूरि मिउ, जिम हाम नाण संतुट्ठ मण ।
जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि पुणंवि न सकइ तुम्ह गुण ॥ २ ॥

अज्जवि जसु जस पसरु महि छत्तसंड धरत्तिहि ।
अज्जवि जसु गुण नियरु थुणहि पंडिय बहु भत्तिहि ।
अज्जवि सुमरिज्जंतु खिणपयु भवहरइ पवित्तण ।
नाम महणि कुणंति जसु अज्जवि मंविपण त्रिण ।

मज्झवि सु वेसु छोड़ हियउ, संघ मणाछिउ देइ फलु ।
जिणवत्त सूरि पहु सुरगुरुवि, धम्मु पयासिउ जिण अमलु ॥३॥
अभयदाणु जिणि दिनु सयल संघह विक्कमपुरि ।
फिय पयडु जिण धम्म सुवणि पडुविहु रुछनु मरि ।
जिणि पडिबोहउ कुमरपालु नरवय तिहुयण गिरि ।
पंचसत्त मुणि नेमि जणि वारिउ देसण करि ।
वज्जेपी वसकु जोइणि तणउं, जिणि पडिबोहउ ज्ञाण बलि ।
जिणवत्त सूरि पहु सुरगुरुवि, हुयउ न होइ सइ इत्तु कलि ॥ ४ ॥
बारह पंचुत्तरइ भवल वैसाख छट्ठि दिणि ।
सइ जिणदत्त मुणिंद ठविउ जिनचंदु पट्टि सहि (? जिणि) ॥
विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि थापिय मणु मोहइ ।
गणहर नाम सुहंम सामि भवियण दिण बोहइ ।
जिणचन्द सूरि जसु चन्दु सम, मज्जवि उज्जोयइउ गयणु जिणि ।
.. .. ॥ ५ ॥
बारह सइ तेवीस समइ कत्तिय सिय तेरसि ।
बवेरपुरि ठविउ सूरि जिणपत्ति महा रिसि ॥
मंतु विगु अभयदेव सूरि सूरहि सुपवित्तिय,
.. ..
अरयाणु पहुविरायइ तणउ जिणि रंजवि जयपत्तु लियउ ।
खरहरय सहि जगि पयडिउ, गुण पहाणु पहुविप्पयउ ॥ ६ ॥
बारमट्ठहत्तरइ माह सिय छट्ठि मणिज्जइ ।
जिणेसर सूरि पइसरह सपु सयलु विधिह सज्जइ ।

सूरिमंतु सिरि सम्मपभसूरहि जसु दिन्नउ।
माळउरहि जिणवीर भुवणि बहु उच्छम (को) नउ॥
कंसाल ताल झल्लरि पडह, वेण वंसु रक्खियामणउ।
सुपढंति भट्ट सुंमहि गहिर, जय जय सद सुहावणउ ॥७॥
जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचंदु सु जिणवइ।
तसु सुपइ आसीस दिति जिणेसरसूरि मुणिवइ।
तसु पटि नाम अनु राय गच्छपति आस मइ जिणेसर।
ताम पयासिउ सूरि चंदु जुगपवर जिणेसर॥
जिम संघु स नंदउ विणगविणु वीर तित्थु चिर होउ घर।
पूजन्ति मणोरह सयल तहि, कल्लाण पढंति नारि नर ॥ ८ ॥
[इति षट्पदम्]

॥श्री जिणदत्तसूरि स्तुति ॥

सिरि सुयदवि पसाउ कर, गुरु श्रीजिणदत्त सूरि ।
वन्निसु खरतर गण गयणि सूरि नाम गुण पूरि ॥ १ ॥
संवत इग्यारह बरसि, बत्तीसइ जसु जम्म ।
वाछिग मंत्री पिता जणणि, वाइ (ह) दवि सुरम्म ॥ २ ॥
इगतालइ जिणवय गहिय, गुणहुत्तरइ जसु पाट ।
बइसाखह वदि छट्ठि दिणि, मय पणमी सुर थाट ॥ ३ ॥
अंबड सावय कर लिहिय, सोवन अक्खर वंचि ।
जुग पहाण जगि पयडियउ ए, सिरि सोहम पडिबिंब ॥४॥
जिम चोसटि जोगिणी जितिय जितवाउ बावन्न ।
डाइणि साइणि विभूसीय पहुवइ नाम न भन्न ॥ ५ ॥
सूरि मंत्र बलि कर सहिय साहिय जिण धरणिंद ।
सावय सविय छत्तिस इग पडिबोहिय जण वृन्द ॥ ६ ॥
अरि करि केसरी दुद्धरह, वसकिय देव निकाय ।
आण न लोपि कोइ जगि, जसु पणमइ नरराय ॥ ७ ॥
संवत बारह इग्यार समइ, अजयमेरुपुर ठाम ।
इग्यारसि आसाढ सुदि, सग्गिपत्त सुह झाणि ॥ ८ ॥
श्री जिणदत्तह सूरि पए श्रीजिणदत्त मुणिंदु ।
विघ हरण मङ्गलकरण, करउ पुण्य आणंदु ॥ ९ ॥

श्री पुण्यसागर कृत

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि अष्टकम् ॥

श्रीजिनदत्त सुरिन्दपय, श्रीजिनचन्द्र मुणिन्द ।
मय (?)र मणि मंडित भाल यस, कुमक कुमुय वणचंद॥१॥

संवत मिय मत्ताणवयं, मद्दवमि सुदि जम्मु ।
रासल नाम सुमातु जसु, दल्हण देवि सुपम्म ॥ २ ॥

संवत बार तिरोत्तरय, फागुण नवमि विशुद्ध ।
पय मद्दमाय भरि धरिय, पालत्तणि पडिबुद्ध ॥ ३ ॥

बारह सइ पंचोतरइ ए वैसाषाह सुदि छट्टि ।
थापिउ विक्रमपुर नयरि, जिणदत्त सूरि सुपट्टि ॥ ४ ॥

मेविमइ माद्रव कमिणि, चवदसि सुह परिणामि ।
सुरपुरि पत्तउ मुणिपवर, श्री जोयणिपुर ठामि ॥ ५ ॥

सुह ज्म पूजा जइ करइ ए नामय तासु किसम ।
रोग सोग मारनि टल्इ ए मिलइ छग्डिउ गुविगार ॥६॥

नाम मंत्र जे सुग जपइ ए मसु तगु सुद्दि निर्मल ।
मनवंछित मिलि तसु हुवइ कन्यारंभ अपंग ॥ ७ ॥

मसु सुजसु जगि तिगमिगे ए, चंदुजल निकलंक ।
प्रसु प्रताप गुण विप्फुरइ दलइ समर अरि संघ ॥ ८ ॥

इय श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु, संथिणिउ गुणि पुन्न ।
श्री "पुण्यसागर" वीनवइ सद्गुरु द्याउ सुप्रसन्न ॥ ९ ॥

इति श्रीजिनचन्द्रसूरि महाप्रभावोद अष्टकं संपूर्णम् ।
(गुणविनयकारी लाखमीके गुटका में (१२५ से उद्धृत)

शाह रयण कृत
श्रीजिनपतिसूरि धवल गीतम्

वीर जिणेसर नमइ सुरसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपति सूरि गुण गायसो, भत्तिभर हरसिहि मनिरमले ॥१॥
तिहुयण तारण सिव सुख कारण वंछिय पूरण कप्पतरो ।
विघन विणासण पाव पणासण, दुरित तिमिर भर सहस करो ॥२॥
पुहवि पसिद्धउ सूरि सूरिसर शम दम संयम सिरि तिलउ ए ।
इणि कलिकालहि एह जो युगपवर, जिणचंद सूरि महिमा निलउ ए॥३॥
अत्थि मरुमण्डले नयर विक्रमपुरे, अमोघचंदु मणि माणिउ ए ।
तसुघर गोहिणी सूहव देविय आसु वर पुत्त वखाणिउ ए ॥ ४ ॥
विक (म) संवच्छर बार बदोतरे चैत्र पुरि आठमि जो जाईयउ ए ।
नयर नर नारि नय(व?)रंग भरि गायो, असोवरपसु वधावियउ ए॥५॥
तिणि सुह दिवसहि निय मणि रंगहि, जम्मण करिय नव नविय परे ।
निरुपम "नरपति" नामु तसु किअए, क्रमि क्रमि वाधइ तात घरे॥६॥
बार अट्ठार ए वीर जिणालय, फागुण वदि दसमिय पवर ।
वरीय संजम सिरीय भीमपल्लीपुरे भविय वर ठविय जिणचंदसूर ॥७॥
अह सयल भार सिद्धांत अवगाहए, सजणमण नयण आणंदणउ ए ।
नाम गुण चरण गुण पयासण चउ विह संघ मोहामणउ ए ॥८॥

पार त्रेवीसार नयरि वन्नेरए, कातिय सुदी तिन तेरसीए।
श्री जिणचन्दसूरि पाटि संठाविउ, श्रीजयदस सूरि आयरीए ॥६॥
गुरुय नामेण जिनपति सूरि ठवियउ, चन्द्र कुलंवर चन्दसउ ए।
विहरए सयल देसमि गुण भरिउ समइ सरोरह (? वर) हंसलउ ए॥१०॥
पनि फिरि रूव लावन्न गुण आयार जग जण जंपए मनि धरी ए।
सिरि माल्हूय कुल कमल दिवायर, वादीय गय घड कसरी ए ॥११॥
पामीउ प्रभु छत्रीस विवादिहि, जयसिंह पहविय परपद (इ) ए।
बोहिय पुहविय पमुह नरिन्दह, जासु वयणि जिण आदर(इ)ए ॥१२॥
रीरिय बहु सीस पयहिय पह विय, मापिय रीति खरतर तणी ए।
जासु पय पणमए सामणा वहि, देवि आउंधरा रंभिणी ए ॥१३॥
भइ मरुकोटहिं नेमुचन्द निवमए (गुरु)गुरु देखि मनु मवि गम(इ)ए।
जासु मनि निवमए खरउ जिण धम्मु खरउ आचारि गुरु
मनि गम (इ) ए ॥१४॥
शायणु मोपुरि(पुरे) नयरि गामागार गुरु २ वि(वि?) रिय जोबइ अपारे
समिमउ बारह वरिस भण्डारिय, सुगुरु देहंतउ समय सारे ॥१५॥
माइ अजर बामरे पट्टम पुरवर श्रीयजिनपतिसूरि वेरिउ फर।
नउ मनि मानिय सपणजण आणिय आणिरीयउ गुरु हरिम भरे।१६।
शासु संगोम मुनियपय जाणि जाणिय मयदरिय कीरिए फर।
नयग जिग मामण पमाउ पयडंतउ पहुतउ पाल्हणपुर नयरे ॥१७॥
सुलस्ति वाणि बखाणु फडंतउ भविय बाइंतउ पिपिह परे।
माइ(?) सावय जण जम्म सत्ता करइ सब सारइ सुर सुपरि पर॥१८॥
मन्नें निर्जने पार सहानरें माम असाढि जिण धणमरी ए।
मन्न मुद दसमहि सिय हममी दिवसहि पहुचउ सूरि अमरापुरी ए।१६
प्रभु श्री जिनपति सूरि गुरु गुणपवर माइ 'रयण इम संथुण्इ ए।
ममरइ जे मर मार निरंतर तहा घर नवनिधि संपजइ(इ) ए ॥२०॥

कवि भत्तउ कृत

श्रीमज्जिनपतिसूरीणां गीतम्

वीर जिणेसर नमीउ सुरेसर तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर जिनपतिसूरि गुण गाइसो मनि रमले ।१।
तिहुअण तारण सिव सुह कारण, वंछिय पूरण कप्पतरो ।
विग्घन विण्णासन पाव पणासन दुरित तिमिर न(?म)र सहस करो ।२।
काम धेनोत्तम काम कुम्भोपम पूरण जग चिन्तामणय ।
वीय जिण सासणि नव नव रंगिहि, अतुल प्रभाव प्रगटीयकरण ।३।
तिहुअण रंजण भव दुह भंजण दंसण नाण चारित्तजुत्ता ।
सकल जिणागम सोहग सुन्दर अभिनवउ गोयम अवयरीयो ।४।
पुहवि प्रसिद्ध सूरि सूरीसर चन्द्र कुलंबर चन्द्रुल्ल ए ।
कमल नयण मंगल पुल कारण गज्जमल तासु जसु निरमलउ ए ।५।
इणि कलिकालिहि अवर नवि सुणीइए, सिरि माल्हूय कुले सिर तिलउ ए
सोहम वंसिहि वयरह सारिहि जिणवइ सूरि महिमा निलउ ए ।६।
अवर वर वासुरि पुन्य भर भासुरे मूम नक्षत्रि चउमइ सु सारो ।
पुणई सुर नमई नर चरण चूडामणि, जायउ पुत्र नरवय कुमारो ।७
नर वर नारिय घरि घरे गायउ असोवरद्धनु वधावीउ ए ।
तस घरणीय माणव मन हरणीय रउल गरुअ करावीउ ए । ८ ।
देसि मुरमुण्डले नयरि विक्रम पुरे जसो वरद्धनु जगि जाणीउ ए ।
सूहवदेविय उयरि ऊपन्नउ तिहूयण नयणि वखाणीउ ए । ९ ।
विक्रम संवच्छरे बार बहोतर, चैत्र बहुल आठमि (आठमि ?) पवरे ।

मल्हीय मय "नरपति "इणि नामिहिं, क्रमिक्रमि वाधइ ए तामपर ।१०
यार मड्डारइ ए वोर जिमालम, फागुण धुरि दसमीय पवर ।
वरीय संजमसिरि श्रीमपल्लीय पुर नंदि ठविय जिणचन्दसूर ।११।
पढय जिणागम पमुह विज्ञावलीय, दरसणि त्रिभुवनु मोहीउं ए ।
कमल दलमवउ वह सुकोमल, गुणमणि मन्दिर मोहीउं ए ।१२।
रूव कम्म गम गुण रयणायर तिहुमण नयण आणंदयंतो ।
महायग सोहइ ए भविक जन मोहइ ए, पालइ ए मोह तिमर हरंता ।१३
यार तबामइ ए नयरि पयरइ ए, कातिक सुदि तिण तरसी ए ।
मागीय सयसय सूरिहिं यापिय तिहुमण मण मण उल्हसी ए ।१४।
सिरि जिणचन्दह तणय सुपाटिहिं उछमम रस भर पूरायउ ए ।
सुवहीय पाड विहार करंतउ अजयमर नयरि सम्मामरिउ ए ।१५।
पामाड मंतु छत्रीस विवादिहिं जयसिद पुहवीय परपदइ ए ।
वादिय पुण्यिय पमुह नरिंदह, निसुणीय वयणि जिय धम्मु करइ ए ।१६।
श्रीसिय पहुलीम पयद्विय बहुविह पिव, यापीय रीति खरतर गणाए ।
ग्रम पव धेनइ ए निमि म्नि सयइ ए दखा जालंधर जिमी ए ।१७।
मुनअम्मि वाणि मयाम करंतउ, परन्न ममाउ ममदवग ए ।
मन सुर सामिहिं दसमिय निसिहिं पहुतउ मूरि ममरा पुरा ए ।१८।
परग कमम नरपर सुर ममइ महुम वनि निराम हु ए ।
घूमर रयग पाल्हणपुर नयरिहिं तिहुमण पुरइ ए मास हु ए ।१९।
मामइ कम यदि भयर जिम "मलउ" पाय कमम पखालिग पाउ ।
समरइ ए ज नर मारि निरंमर सिद्धी पर रिद्धि मनिहिं रम्यइ ए ।
इति श्रीमज्जिनपति सूरीणां गीतम् ।

श्रीजिनपति सूरि स्तूप कलशः

जनितभुवनतोषं रम्यसम्यक्त्वपोषं,
पटितकलुषमोषं स्नात्रमस्यस्तदोषम् ।
प्रभुजिनपतिसूरेः प्रीणितप्राज्ञसूरे
र्व्यपगतमलगात्रे सुस्तवे पुण्यपात्रे ॥ १ ॥
कनककलशपूरे कान्तिनिर्धूतसूरे
र्कलकमलपिधाने पुष्पमालाप्रधाने ।
जिनपतियतिसूरे मज्जनं सज्जनानां,
जनयति भवनोदं विदवविदग्ध्रमोदम् ॥ २ ॥
श्रीमत्प्रह्लादनपुरवर प्रोन्नतस्तूपरत्ने
स्फूर्जन्मूर्ति जिनपतिगुरुं रत्नमालोअलंक्षा ।
धारे नीरं स्नपय सुगुरा मल्पगाका भशोकाः,
श्रेयः श्रेयः स्थिममनुपमा येन रम्यां समस्ये ॥३॥
इति जिनपतिसूरिर्गाभिम श्रोगुपमा
प्रभुपुगररजम्पूस्यामिररसप्रभाप ।
मधितगुपथपों महिजन महिजनमी
मकरकमलाराध्या पातु संपाय लक्ष्मी ॥४॥

॥इति श्रीजिनपतिसूरीणां स्तूपकलशः ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि गीतम् ॥

खरतर गच्छि वर्द्धमान-सूरि, जिणसर सूरि गुरो।
अभयदेवसूरि जिणवल्लह, सूरि जिणदत्त जुग पवरो ॥१॥
सुगुरु परंपर सुणहु सुम्हि, मणिमहु मणि भरि।
सिद्धि रमणि जिम वरइ सयंवर नव नविय परि ॥आंचली
जिणचन्दसूरि जिणपतिसूरि जिणम सु (रि) गुणनिधानु।
तदनुक्रमि उपनले सुगुरु, जिणसिंघ सूरि जुगप्रधानु ॥२॥
तासु पाटि उदयगिरि उदय ले, जिणप्रभसूरि भाणु।
भविय कमल पडिबोहणु मिछत तिमिर हरणु ॥ ३ ॥
राउ महंमद साहि जिणि निय गुणि रंजियउ।
मेडमंडलि दिल्लिय पुरि, जिण धरमु प्रगटु किउ ॥ ४ ॥
तसु गछ धुर धरणु भयलि, जिणदेवसूरि सूरिराउ।
जिणि थापिउ जिणमा सूरि नमहु जसु मनइ राउ ॥ ५ ॥
गीतु पवीतु जो गायए सुगुरु परंपरह।
सयल समीहि सिझहिं पुहविहिं तसु नरह ॥ ६ ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि गीतम् ॥

क सलहउ ढोली मयर हे, के वरलउ वखाणु ए।
जिनप्रभसूरि जग सलहीजइ जिणि रंजिउ सुरताणु ॥१॥
चालु सखि वंदण जाइ गुण गरुवउ जिनप्रभसूरि।
रछियइ तसु गुण गाहिं राय रंजणु पंडिय तिलउ। आंचली
आगमु सिद्धंतु पुराणु वखाणिइ, पडिवोहइ सव्वलोइ ए।
जिणप्रभसूरि गुरु सारिखउ हो विरला दीसइ कोइ ए ॥२
आठमी आठमिहि चाल्यो तेडावइ सुरिताणु ए।
पुहु मिलु मुख जिणप्रभ सूरि चलियउ, जिमि ससि इंदुविमाणिए ॥
"असपति" "कुतुबदीनु" मनि रंजिउ दीठेहि जिणप्रभ सूरी ए।
एकंति हि मन सासउ पूछइ, राय मणोरह पूरो ए ॥ ४
गाम भूरिय ऍसिम गज वस, तुठउ देइ सुरिताणु ए।
जिणप्रभसूरि गुरु कंपिनइ छइ, निहुमणि अमन्निय माणु ए ॥५
ढाल दमामा अरु नीसाणा गहिरा बाजइ तूरा ए।
इणपरि जिणप्रभसूरि गुरु आवइ संघ मणोरह पूरा ए ॥ ६

॥ श्रीजिनप्रभसूरीणां गीतम् ॥

अय ए खरतर गछ गयणि अभिनवउ सहस करो ।
सिरी जिणप्रभसूरि गणहरो, जंगम कप्पतरो ॥ १ ॥
वंदहु भविक जन जिणसासण, वण नव वसंतो ।
छत्तीस गुण संजुत्तो वाउय मयगल दलण सीहो ।आयडी।
वर पंचासियउ पोस सुदि आठमि सणिहि वारो ।
भेटिउ असपति 'महमदो'' सुगुरि ढीलिय नयर ॥ २ ॥
आपुणु पास बइसारए, नमिवि आदरि नरिन्दो ।
अभिनव कवितु वखाणिवि, राय रंजइ मुणिंदो ॥ ३ ॥
हरखिउ देइ राय गय तुरय धण कणय देस गामा ।
मणइ अनेवि ज चाहउ हो त गुरु दिउ इमा ॥ ४ ॥
एउ णहु किंपि जिणप्रभसूरि मुणिवरो भनि निरीहो ।
श्रीमुखि सलहिउ पातसाहि, विविह परि मुणि सीहो ॥५॥
पूजिवि सुगुरु वस्त्रादिकहिं, करिवि सहिथि निसाणु ।
दइ फुरमाणु अनु कारयाउ नव वसति राय सुजाणु ॥६॥
पाट हथि चाडियि गुणपवर जिणदेव सूरि समेता ।
मोकलइ राउ पासाल ह वहु, मलिक परि करीतो ॥७॥
वाजहिं पंच सबद गहिर सरि नाचहि तरुण नारि ।
इंदु जम गई वसहि गु गुरु आवइ वसतिहिं मझारि ॥८॥
सम्म पुर परन गयउ सयल, आयक जन झिमि दणु ।
संघ संजुत बहु भगति भरि, मर्दह गुरु गुणनिधानु ॥९॥
मानिधि पउमिनि देवि इम जगि गुण जयवन्तो ।
नंदउ जिणप्रभसूरि गुरु संजम सिरि हार वो ॥१० ॥

॥ श्री जिणदेवसूरि गीतं ॥

निरुपम गुण रयण मणि निधानु संजमि प्रधानु ।
सुगुरु जिणप्रभसूरि पट्ट उदयगिरि उदयले नवल भाणु ॥ १ ॥
वंदहु भविय हो सुगुरु जिणदेवसूरि ढिल्लिय वर नयरि देसणउ
अमियरसि वरिसए मुणिवरु जणु घणु ऊमाहिउ ॥ आंचली ॥
जेहि कन्नाणापुर मंडणु सामिउ वीर जिणु ।
महमद राइ समप्पिउ थापिउ सुभ लगनि सुभ दिवसि ॥ २ ॥
नाणि विन्नाणो कला कुसले विद्या बलि अभंगु ।
लक्खण छंद नाटक प्रमाण षटदर्शन आगमि गुण अमेउ ॥ ३ ॥
धनु कुल धर जसु कुच्छि धपनु इहु मुणि रयणु ।
धनु वीरिणि रमणि चूडामणि जिणि गुरु उरि धरिउ ॥ ४ ॥
धनु जिणसिंह सूरि दिक्खियउ धनु चंद्र गछु ।
धनु जिणप्रभसूरि निज गुरु जिणि निज पाटिहि थापियउ ॥५॥
इहि सदे धणउ सोहावणिय रलियावणिय ।
दमण जिणदेवसूरि मुणिराय ह जाणउं नितु सुणउ ॥ ६ ॥
महि मंडलि धरउ समुधरए जिण सासणिहि ।
अणुदिण प्रभावन करइ गणधरो अवयरिउ जयइरसामि ॥७॥
वाद्दिय मयगल दलण सीहा विमल सील धरु ।
छत्रीस गुणधर गुण कलिउ चिरु जयउ जिणदेव सूरि गुरु ॥८॥

॥ इति श्री आचार्याणां गीत पद्यानि ॥

श्रीधर्मकलशमुनि

कृत

श्रीजिनकुशलसूरि पट्टाभिषेक रास

सयल कुसल कल्लाण वल्ली, घणु संति जिणेसर ।
पणमवि जिणचंदसूरि, गोयमसमु गणहरु ।
नाण मह्वय दि गुण निहाण गुरु गुण गाय सु ।
पाट ठवणु जिन कुशलसूरि वर रासु भणेसु ॥ १ ॥
आसि जिणसर सूरि पवरु अणहिल्लपुर पट्टणि ।
वसहि मग्ग पयडण, राउ रंजिउ "दुलह" जिणि ।
तासु पट्टि जिणचंदसूरि गुणमणि रोहण सम ।
विहिय जण संवग-रंग-साला मासोवम ॥ २ ॥
अभयदेव नव अंग वित्तिकर, पासु पयासणु ।
पउमावइ धरणिंद पमुह, सुर साहिय सासणु ।
तउ जिणवल्लभसूरि तरणि, संवेगि सिरामणि ।
संवाहिय चित्तउडि रंगि, चामुंडा पउमणि ॥ ३ ॥
जोगिराउ जिणदत्तसूरि, उदियउ सहसकरु ।
नाग साम जोइणिय दुट्ठ दमिय किंकर करु ।
रूवंतु पच्चक्खु मयणु जग नयणाणंदु ।

घात'—सयल संघह सयल संघह केहि मावासु ।
अणहिल्लपुर वर नयर गुज्जरात घर मुक्ख मंडणु ।
देस दिसंतरि ठवि मिलिय सयल संघ वरिसंत जिम घणु ।
पात्र धुरन्धर संठविड, मिलिय मिलावइ सूरि ।
संघ महोछवु करावइ, वज्जंतइ मंगलतूरि ॥ २२ ॥
स आदजिय आदिजिणिंद भरहु, नेमि जिम नारायणु ।
पासह प जिम धरणिंदु, जिम सेणिय गुरु वीर जिणु ।
तिम परि प सुह गुरु भत्ति, महंतियाणि परि सलहिय प ।
पडिक्कमप तहि परिपुण्ण, विजयसीहु जगि जस लिम्पइ प ॥२३॥
संघवइ प सामल वंसि दसि विदेसहि आणिय प ।
भव जिम प धणु वरिसंतु, गोरदेव वखाणिय प ।
कारइए नीमणवार, साहमिय वच्छल वर ।
संघइ प कप्पइ वार गुरुयमत्ति गुरु पूज कर ॥ २४ ॥
वोसइ प अहिणव वात पत्तणि दरिसण संत हुय ।
सूरिहिं पसइ सत्त-सात साहु, साहुणि पत्रवीस-सय ।
रयई प सत तेजपालि घरि, तहिड पहिरावियइ ।
जइ सइ प दूसमकालि, चन्द्रहि मामतं सिहावियइ ॥ २५ ॥
घर घरि प मंगल चार, पुन्न कलस घर घरि ठविय ।
घर घरि प वंदुर वाल, घरि घरि गूडी ऊमविय ॥ २६ ॥
वाजिजय प तूर गंभीर, अंबरु बहिरिउ पडिरमण ।
नाचवहि प अवछिय वाल, रखिय सुर पक्खा रवेहिं ॥ २७ ॥
अणहिलि प पुर मंझारि नर नारी जोवन मिलिय ।
किसउ सु तजउ साहु जसु पवढइ वच्छ रलिय ॥ २८ ॥

पुणरवि पुणवि सो साहु, संघ सयछि सम्माणिय ए।
आ गई ए उच्छव साह, सिरि चन्द कुलि जगि जाणिय ए ॥२६॥
इण परि ए तहवि संघु, पाट महोछवु कारविउ।
जिण गरूय नव नव भंगि सयल दिन सु समुद्धरिउ ॥३०॥

घात'—धवल मंगल धवल मंगल कलयलारवे।
वज्जत घण तूर वर मधुर सदि नचइ पुरंधिय।
वसुधारहि वर संति नर केवि मेहु जेम मनहि रंजिय।
ठामि ठामि कल्लोल झुणि, महा महोछवु मोय।
कुणपत्ताण पयसंठवणि, पूरिय मग्गण लोय ॥ ३१ ॥

सयल संघ सुविहाण, जिण सासण उज्जोय करो।
कोह लोह मय मोह, पाव पंक विधंसियरो ॥ ३२ ॥
जइवाचल जिम भाणु, मविय कमल परिबोह करो।
तिम जिणचंद सूरि पाटि, उदयउ सिरि जिण कुसल गुरो ॥३३॥
जिम जाइ रवि विबि चि, इरपुहोइ पंथि आइ कुलि।
जण मण नयणाणंदु, तिम पीठउ गुरु सुह कमलि ॥ ३४ ॥
जणहियपुर मंझारि, महिपल गुरु देसण करइ।
नाज नीरइ वरिसंतु, पाव पंकु जिम पणु हरइ ॥ ३५ ॥
ता महि-मंडलि मेरु, गयणंगणि जा रवि तपए।
सिरि जिणकुसल मुणिंदु, जिण-सासणि ता चिरु जयउ ॥३६॥
नंदउ विहि समुदाउ, तजपालु सावय पवरो।
साहंमिय साधारु, दुस दिसि पसरिउ कित्ति भरो ॥ ३७ ॥
गुणि गोयम गुरु एसु, पढहि सुणहि जे संगुणहि।
अमरावर तहि वासु धम्मिय "धम्मकलसु" भणइ ॥ ३८ ॥

मयल कम संपुल वंदु जिणचन्द मुणिंदु ॥ ४ ॥
ताइ करहि केसरि किसोर, जिणपत्ति जाइसु।
पुणवि जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु।
सयल सुद्द सिद्धंत सहिल, सायर अप्पाह।
जिणपबोह सूरि भविय कमल, सविया गणधारु ॥५॥
तयणं तर गोयमह सामि, सम ऋद्धि समिद्धिय।
बहुय देसि सुविहिय विहारि, तिहुमणि सुपसिद्धउ।
"कुतबदीन" सुरताण राउ रंजिउ स मणोहरु।
जगि पयडउ जिणचंदसूरि, सूरिहिं सिर सेहरु ॥ ६ ॥
॥ घात ॥
चंद कुल निहि चंद कुल निहि, तवइ जिम भाणु।
नाण किरण सज्झाय कर, भविय कमल पडिबोह कारणु।
कुमइ गइ मच्छिम पह, कोह लोह तमहर पणासणु।
महि मंडलि अच्छरिय परो, जिण रंजिउ सुरताणु।
सूरि राउ सो सग्गहि गयउ, जाणिउ निय निरवाणु ॥ ७ ॥
त अह ढिल्लिय पुर वर नयरि, जिणिचंदसूरि गणधारु।
त जयवल्लह गणि तैडियउ, मंतु किमउ सुविचारु।
त विजयसीह ठक्कर पवरो महंतियाण कुलि सार।
तउ मसु ठामि (सु)तसु अप्पियउ, तउ गोयम(गोयम)सउं गणधार।।८।।
त गुज्जरधर मंडणउ अणहिलवाडउ मासु।
त मिलिय संघु समुदाउ तहिं महतियाण अभिरामु ॥ ६ ॥
त उसवाल कुल मंडणउ, तेजपाल तहिं साहु।
त सहूं पंचम स्वद सहिउ, गुरु साहम्मि पसाउ ॥ १० ॥

त गुरु राजेन्द्रचन्द्रसूरि आचारिज वर राउ।
सुय समुद्द मुणिवर रयणु, विवेकसमुद्द उवझाउ ॥ ११ ॥
संघ सयल गुरु विनवए, तेजपालु सुविसालु।
पाट महोच्छव कारविसु दियइ सुगुरु आएसु ॥१२ ॥
त संघ वयणि आणंदियउ, जाल्हण तणउ मल्हारु।
त देस विदेसंतर पाठवए कुंकुउत्री सुविचारु ॥ १३ ॥
सुणिउ वधावणु आणहिल पुरे, सुघनवंत सुह गेह।
त सयल संघ तिक्खणि मिलिय पावसि जिम घण मेह ॥१४॥
कंठ छिउ गोलय सहिउ गुरु भाणा संजुत्तु।
वायगंतु वाहड तणय, विजयसीहु संपत्तु ॥ १५ ॥
त पइसारउ संघह कियउ वज्जहि वज्जंतेहि।
जिम रामहि अवज्झा नयरि बहु सुह पमुहेहि ॥ १६ ॥
दीण दुहिय फिरि कप्पतरो राय पसाय महंतु।
त धम्म महाधर धुरि धवलो, देवराज पवर मंत्रि ॥ १७ ॥
त तसु नंदणु सेल्हा घरणि जयतसिरी बखाणि।
त कुसलकीरति तहि कुखि तिलकु, धण गुण रयणह खाणि ॥१८॥
तेरहसय सत्तहत्तरइ जिन्नंग (?कृष्ण) इगारसि सिट्ठ।
मुर विमाणु फिरि मंडियउ नंदि भुवणि तिणि दिट्ठि ॥१६॥
त राजेन्द्रचन्द्रसूरि, जिणचन्दसूरिहि सीसु।
त कुसलकीरति पाटहि ठविउ, मणहर बाणारिसु ॥ २० ॥
नाम ठवियउ जिणकुसलसूरि, वज्जिय नंदिय तूर।
त संघु सयलु आणंदियउ मणह मणोरह पूर ॥ २१ ॥

सयल कला संपुन्न चंदु जिणचन्द मुणिंदु ॥ ४ ॥

ताइ करवि ,केसरि किसोर, जिणपत्ति अक्सु।
पुणवि जिणसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सोमु।
सयल शुद्ध सिद्धंत सलिल, सायर अप्पारु।
जिणपबोह सूरि मसिय कमल, सविया गणधारु ॥५॥
तयणं तर गोयमह सामि, सम छद्धि समिद्धिउ।
वहुय देसि सुविहिय विहारि, तिहुयणि सुपसिद्धउ।
'कुमरवील" सुरताण राय, रंजिउ स मणोहरु।
जगि पयडउ जिणचंदसूरि, सूरिहि सिर सहरु ॥ ६ ॥

॥ घात' ॥

चंद कुल निहि चंद कुल निहि, उदय जिम भाणु।
नाम किरण पज्झाय कर, भविय कमल पडिबोह कारणु।
कुगह गह मच्छिम पह कोह छोह तमहर पणासणु।
महि मंडलि अच्छरिय परो जिण रंजिउ सुरताणु।
सूरि राउ सो सग्गहि गयउ, जाणिउ निय निरवाणु ॥ ७ ॥
त भइ हिडिय पुर वर नयरि जिणिचंदसूरि गणधार।
त असमाउ गमि लेविियउ, संतु किमउ सुविचार।
त विजयसीह ठक्कर पवरो मईवियाय कुक्खि सार।
तउ नामु ठामि (सु)तसु अप्पियउ, तउ गोयम(गोयम)सउ गणधारु ॥८॥
त गुज्जरधर मंडणउ अणहिल्लवाडउ नामु।
त मिलिय संघु समुदाउ तहि महवियाण अभिरामु ॥ ९ ॥
त उमवास कुल मंडणउ, तेजपाल तहि साहु।
त एहु संघन स्पृह सहिउ, गुरु साहम्मि पसाउ ॥ १० ॥

ता गुरु राजेन्द्रचन्द्रसूरि आचारिज वर राउ।
सुय समुद मुणिवर रयणु विवेकसमुद्र उवझाउ ॥ ११ ॥
संघ सयल गुरु विनवए, तेजपालु सुविसेसु।
पाट महोच्छव कारविसु दियउ सुगुरु आएसु ॥१२ ॥
त संघ वयणि आणंदियउ, आल्हण तणउ मल्हार।
त देस दिसंतर पाठवए, कुंकुउत्ती सुविचार ॥ १३ ॥
सुणिउ सहलु आणंदिउ पुरु, सुपनवंत सुह गेह।
त सयल संघ तिक्खणि मिलिय पावसि जिम घण मेह ॥१४॥
सेठि छिय गोठय सहिउ, गुरु आणा संजुत्तु।
नायकु माहइ तणउ विजयसीहु संपत्तु ॥ १५ ॥
त पइसारउ संघह कियउ बहुविह वज्जतेहि।
जिम रामह अवधा नयरि, उच्छव पमुहेहि ॥ १६ ॥
दीण दुहिय किरि कप्पतरो राय पसाय महंतु।
त धम्म महाधर धुरि धवलो, देवराज पवर मंत्रि ॥ १७ ॥
त वसु मंदिरु सोहा धरणि, जयतसिरि घराणि।
त कुमरकीरति तसि कुखि तिलउ, घण गुण रयणह खाणि ॥१८॥
तरहसय सतहत्तरइ किन्नेग (?जम्म) इगारसि सिद्दु।
मुर विमाणु किरि मंडियउ मंदि सुवणि जिणि दिट्ठि ॥१९॥
त राजेन्द्रचन्द्रसूरि, जिणचन्दसूरिहि सीसु।
त कुसलकीरति पाटहि ठविउ, मणहर आयारिस ॥ २० ॥
नाम ठवियउ जिणकुसलसूरि, वज्जिय नंदिय तूर।
त संघु समस्तु आणंदियउ, मणह मणोरह पूर ॥ २१ ॥

घात—सयल संघह सयल संघह केवि आवासु।
अणहिल्लपुर वर नयर गुजरात धर मुखह मंडणु।
देस विदेसहि तहि मिलिय सयल संघ परिसेस जिम घणु।
पाट पुरन्दर संठविउ, मिलिय मिलावउ भूरि।
संघ महोच्छवु कारावइ, वज्जंतइ पणतूरि॥ २२॥

त आवहिय आविभिणिइ भणु नेमि जिम नारायणु।
पासह य जिम धरणिंदु, जिम सेणिय गुरु वीर जिणु।
तिम परि य सुह गुरु भत्ति महंतियाणि परि समहिय य।
परिकलय तहि परिपुण, जिणपसीहु जगि जस छियइ य॥२३॥

संघवइ य सामल वंसि देसि विदेसहि जाणिय य।
धण जिम य घणु वरिसंतु, वीरदेव वखाणिय य।
आवइय जीमणवार, साहंमिय वच्छल वर।
संघह य कप्पइ वार, गुरुयभत्ति गुरु पूय कर॥ २४॥

चोसाइ य भट्टियव वास, पाउणि वरिसण संघ हुय।
सूरिहि पसउ छठ-घाउ साहु, साहुणि चउवीस-सय।
तर्इ य सह हेमपाणि परि हेविउ पहिरामियइ।
जइ सर्इ य पूनमचंसि, चन्द्रहि नामइं किद्धावियइ॥ २५॥

घर घरि य मंगल चार, पुन्न कलस घर घरि ठविय।
घर घरि य बंदर वाल, घरि घरि गूडी ऊभविय॥ २६॥

वजिजय य तूर गंभीर, अंबरू बहिरिउ पडिरमण।
नाचहि य अपछिय पाउ, रजिय सुर पवला रवहि॥ २७॥

अणहिल्लि य पुर मंझारि नर नारी ओच्छव मिलिय।
दिसउ सु तंजउ माडु अमु पवरउ पउज रखिय॥ २८॥

पुणरवि पुजवि सो साहु, संघ सयलि सम्माणिय ए।
जा गई ए उच्छव सारु, सिरि चन्द कुलि जगि जाणिय ए ॥२६॥
इम परि ए वेडवि संघु, पाट महोच्छवु कारविउ।
जिण गरुए नव नव भंगि सयल विव सु समुद्धरिउ ॥३०॥
घात—धवल मंगल धवल मंगल कम्मसारवे।
बज्जंत घण तूर बर महुर सदि नच्चइ पुरंघिय।
वसुधारहि वर सेठि नर केवि मेहु जेम मनहि रंजिय।
ठामि ठामि उच्छोल झुणि, महा महोच्छवु मोय।
सुगापहाण पयसंठवणि पूरिय मगगण लोय ॥ ३१ ॥
सयल संघ सुविहाण, जिण सासण उज्जोय करो।
कोह लोह मय मोह, पाव पंक विपंसियरो ॥ ३२ ॥
उदयाचल जिम भाणु, भविय कमल पडिबोह करो।
तिम जिणचंद सूरि पाटि, उदयउ सिरि जिण कुसल गुरो ॥३३॥
जिम ऊगइ रवि बिंबि सि हरपुहोइ पंथि जइ कुलि।
जण मण नयणाणंदु, तिम दीठइ गुरु मुह कमलि ॥ ३४ ॥
जणहियपुर मंझारि, भविअण गुरु बेसण करइ।
नाण नीरु बरिसंतु, पाव पंकु जिम घणु हरइ ॥ ३५ ॥
ता महि-मंडलि मेरु, गयणंगणि जा रवि तपए।
सिरि जिणकुशल सुणिंदु, जिण-सासणि ता चिर जयउ ॥३६॥
मंत्रुउ विहि समुदाय, तेजपालु साबय पवरो।
मारुमिय साधारु, दस दिसि पसरिउ कित्ति भरो ॥ ३७ ॥
सुणि गोयम गुरु पसु, पवहि सुणहि जे संथुणहि।
अमराउर तहि बासु, धम्मिय "धम्मकलसु" भणइ ॥ ३८ ॥

घात'—सयल संघह सयल संघह कहि आवासु ।
अणहिल्लपुर वर नयर गुजरात धर मुकुट मंडणु ।
देस दिसंतरि तहि मिलिय सयल संघ बरिसंत जिम घणु ।
पाट पुरन्धर संठविउ, मिलिय मिछामइ सूरि ।
संघ महोछवु कारावइ, वद्धंतइ घणतूरि ॥ २२ ॥
स आदहिय आदिजिणिंद भरहु, नैमि जिम नारायणु ।
पासह ए जिम धरणिंदु, जिम सेणिय गुरु वीर जिणु ।
तिण परि ए सुह गुरु भत्ति महंतियाणि परि सक्षहिय ए ।
पडिवनय तहि परिपुन्न, विजयसीहु जगि जस लिहइ ए ॥२३॥
संभवइ ए सामल वंसि, देसि विदेसहि जाणिय ए ।
घण जिम ए घणु वरिसंतु, धीरदेव वखाणिय ए ।
कारइय जीमणवार, साहंमिय वच्छल वर ।
संघह ए कप्पड वार, गुरुयभत्ति गुरु पूज कर ॥ २४ ॥
चीसई ए करिसण वात, पत्तणि दरिसण संदर हुय ।
सूरिहि पसव सत्त-सात साहु, साहुणि चउवीस-सय ।
वसई ए सव तेजपालि परि तदिउ पहिरावियइ ।
अइ सई ए दूसमकालि, चन्द्रहि नामउ लिहावियइ ॥ २५ ॥
घर घरि ए मंगल वार, पुन्न कलस घर घरि ठविय ।
घर घरि ए वंदुर वाल, घरि घरि गूढी ऊभविय ॥ २६ ॥
वज्जिय ए तूर गंभीर, अंबरु बहिरिउ पडिरमण ।
मायहि ए अपवित्र माल, रजिय सुर घवला रवेहि ॥ २७ ॥
अणहिल्लि ए पुर मंझारि, नर नारी जोअण मिलिय ।
भिसउ मु तेजउ साहु, जसु पयट्ट वउव रलिय ॥ २८ ॥

पुणरवि पुणवि सो साहु, संघ सयलि सम्माणिय ए।
मा गई ए उच्छव सारु, सिरि धन्न कुछि मगि जाणिय ए ॥२६॥
इम परि ए तउवि संघु, पाट महोछवु कारविउ।
जिण गरुय नव नव भंगि सयल विव सु समुद्धरिउ ॥३०॥

घात—धवल मंगल धवल मंगल कलयलारवे।
वज्जंत घण तूर वर महुर सद्दि नवाइ पुरंपिय।
बहुभावहि वर संति नर केवि मेहु जेम मनहि रंजिय।
ठामि ठामि पयोल झुणि, मढा महोछवु मोय।
झुगपहाण पयसंठवणि, पूरिय मगगण लोय ॥ ३१ ॥

सयल संघ सुविहाण, जिण सासण पज्जोय करो।
कोह लोह मय मोह, पाव पंक विपंसियरो ॥ ३२ ॥
उदयाचल जिम भाणु, भविय कमल पडिबोह करो।
तिम जिणचंद सूरि पाटि, उदयउ सिरि जिण कुसल गुरो ॥३३॥
जिम सरउ रवि बिंबि वि हरपूरोइ पंमि भाइ कुछि।
जण मण नयणाणंदु, तिम दीठउ गुरु मुह कमलि ॥ ३४ ॥
भणहिल्लपुर मंझारि, भविपण गुरु देसण करइ।
नाण नीर परिसंतु, पाव पंकु जिम धणु हरइ ॥ ३५ ॥
ता महि-मंडलि मेरु, गयणंगणि जा रवि तपए।
सिरि जिणकुशल मुणिंदु, जिण-सासणि ता थिरु जयउ ॥३६॥
नंदउ विहि समुदाउ, तेजपालु सावय पवरो।
साहंमिय माधारु, दस दिसि पसरिय किति भरो ॥ ३७ ॥
गुणि गोयम गुरु पमु, पभाहि सुणहि जे संघुमहि।
अमरातर तहि वासु धम्मिय "धम्मकलसु" भणइ ॥ ३८ ॥

कवि सारमूर्ति मुनि कृत

॥श्री जिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास॥

सुरतरु रिसह जिणिंद पाय, अनुसर सुयदेवी ।
　　सुगुरु राय जिणचन्दसूरि, गुरु चरण नमेवी ॥
अमिय सरिसु जिणपदम सूरि, पय ठवणह रासु ।
　　सवणंजलि तुम्हि पियउ भविय, लहु सिद्धिहि वासु ॥ १ ॥
वीर तित्थ भर धरण धीर, सोहम्म गणिंदु ।
　　जंबूस्वामी तह पभव-सूरि, जिण भवणाणंदु ॥
सिज्जंभव जसभद्दु, अज्ज संभूय विजायरु ।
　　भद्दबाहु सिरि थूलभद्दु, गुणमणि रयणायरु ॥ २ ॥
इणि अनुक्रमि वद्धमाणु, पुणु जिणसर सूरी ।
　　तासु सीस जिणचन्द सूरि, अभिय गुण भूरी ॥
पासु पयासिउ अभय सूरि वंभणपुरि मंडणु ।
　　जिणवल्लह सूरि पावरोर, दुखावल खंडणु ॥ ३ ॥
तउ जिणदत्त जाईसुसामि जसु सगग पणासइ ।
　　रूवबंतु जिणचन्द सूरि, सावय आसासय ॥
वाई गय कंठीर सरिसु, जिणपति जाईसरु ।
　　सूरि जिणेसर जुग पहाणु गुरु सिद्धापसु ॥ ४ ॥
जिणपबोह पडिबोह करणि, भविया गणधारू ।

निरुवम जिणचन्द सूरि, संघ मण वंछिय कारू ॥
उदयउ तसु पट्टि सयल कला, संपुनु मयंकू ।
सूरि मउड चूडामणिसु, जिण कुसल मुणिंदु ॥ ५ ॥
महि मण्डलि विहरन्तु सुपरि, आयउ देराउरि ।
तत्थ विहिय पय गहण भाउ, पय ठवण विविह परि ।
निय आउ पज्जंतु सुगुरु जिणकुसलउ सुणइ ।
निय पय सिरि समप्पा, सुपरि आयरिहि देइ ॥ ६ ॥

॥ घत्ता ॥

जेम दिनमणि जम दिनमणि धरणि पयडेय ।
गन तय दिप्पंत तम सूरि मउडु, जिणकुसल गणहरू ।
दस ऍदु छमरग महिउ, पाव रोर मिछत्त तम हरू ।
पन्द गच्छ उज्जोय कर महि मंडलि मुणि राउ ।
अणुदिणु सो नर नमउ सुणिंदु, जा मिहुपनि बराउ ॥ ७ ॥
सिधु देसि राणु नयर कंचण रयण निहाणु ।
महि दीहदु सावय हुई पुनचन्दु चन्द समाणु ॥ ८ ॥
तसु नंदणु हरष घरडा सिरि संपइ संजुनु ।
साहु राय हरिपाल वर हरायरि संपनु ॥ ९ ॥
सिरि तरणचन्दु आयरिउ, नाग चरण आधार ।
सु पद्मचन्दि पुग विसदग कर जाइवि हरिपाउ ॥१०॥
पय ठवणुच्छव उगरद, आदरिसु बहु रंगि ।
नाम सुगुरु आइसु दियए निसुणवि हरिसिअ अंगि ॥११॥
चउविहिय पर ठवण, इम विमि संघ हरसु ।
मयण संजु सिधि आदिपर, बहरि करइ परोसु ॥१२॥

पुहवि पयडु श्रीमाल कुलहि, जसमीधरु सुविसालु ।
तसु नन्दण भांवउ पवरो, वीण दुहिय साधारु ॥ १३ ॥
तासु घरणि झीकी उयर, रायहंसु अवयरिउ ।
त पदमसूरि कुल कमलु रवे, बहु गुण विद्या भरिउ ॥१४॥
विक्रम निव संवछरिण, तेरह सइ नऊ एहिं ।
जिट्ठि मासि सिय छट्ठि तहि सुह दिणि ससिवारहिं ॥१५॥
आदि जिणेसर वर भुवणि, ठविय नन्दि सुविसाल ।
धय पताग तोरण कलिय, चउदिसि मंडुरवाल ॥ १६ ॥
सिरि तरुणप्पह सूरि वरो, सरसइ कंठाभरणु ।
सुगुरु वयणि पट्टहि ठविउ, पदमसूरि वि मुणिरयणु ॥१७॥
सुगपहाणु जिणपदम सूर, नामु ठविउ सुपवित्त ।
माणंदिय सुर नर रमणि, जय जयकार करंति ॥ १८ ॥

॥ घत्ता ॥

मिलिउ दसदिसि मिलिउ दस दिसि संघ अपाल ।
वराउरि वर नयरि तुर सदि गज्जंति अंबर
मच्छंलिय वर रमणि ठामि ठामि पिक्खणय सुन्दर
पय ठवमुत्ति सुगवरइ विहसिउ मग्गण लोउ
जय जय सहु समुच्छलिउ तिहुयणि हुयउ पमोउ ॥ १९ ॥
धन्नु सुवासउ मासु, धन्नु पसु मुहुत वरो ।
अभिनव पुनम चन्दु महिमंडलि उदयउ सुगुरु ॥ २ ॥
तिहुयणि जय जय कारु, पूरिउ महिमण्डु तूर रवे ।
धणु वरिसइ असुधार, नर नारिय नाइ ।वहि परे ॥२१॥

संघ महिम गुरु पूय, गुरुयार्णवहि कारवए ।
साहम्मिय पण रंगि, सम्माणइ नव नविय पर ॥ २२ ॥
वर वत्थामरणेण पूरिय मग्गण दीण जण ।
धवलइ मुक्खु भसेण, सुपरि साहु हरिपालु जिइम ॥ २३ ॥
नाचइ अवलीय बाल, पच सबद वाजहि सुपर ।
घरि घरि मंगलचार, घरि घरि गूडिय ऊभविय ॥ २४ ॥
उद्यउ कलि अकलंकु पाप तिमरु जिणकुसल सूर ।
जिण सासणि मार्यंडु जयवन्तउ जिणपद्म सूरे ॥ २५ ॥
जिम तारायणि चन्दु, सहस नयण अखिमु सुरह ।
चिंतामणि रयणाह, तिम सुहगुरु गुरुयउ गुणइ ॥ २६ ॥
नवरस देसण वाणि, सवणंजलि जे नर पियहि ।
मणुय जम्मु संसारि, महलउ किउ इत्थु कलि तिहि ॥२७॥
जाम गयण ससि सूर धरणि जाम थिर मेरु गिरि ।
विहि संघह संजुत्तु, ताम जयउ जिणपद्म सूरे ॥ २८ ॥
इहु पय ठवणह रासु भाव भगनि जे नर दियहि ।
ताह होइ सिव वास, "सारमुत्ति" मुणि इम भणइ ॥२६॥

॥ इति श्रीजिनपद्मसूरि पट्टाभिषेक रास ॥

खरतर गुरुगुण वर्णन छप्पय

मो गुर सुगुरु जु छविह जीव अप्पण सम जाणइ।
सो गुर सुगुरु जु सवलव सिद्धंत वखाणइ।
सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मल परिपालइ।
सो गुर सुगुरु जु दव्व रूग विसम सम भणि टालइ।
सो वेद सुगुर जो मूल गुण, उत्तर गुण जइणा करइ।
गुणवंत सुगुर मो भवियणह, पर तारइ अप्पण तरइ ॥ १ ॥
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु जीव हणिज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु कूड़ भणिज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ नहु चोरी किज्जइ।
धम्म सुधम्म पहाण जत्थ परत्थी न रमिज्जइ।
सो धम्म रम्म जो गुण सहिय दाण सील तव भाव मइ।
मो भविय कोय दुमिह पर करिय, मरसव आलिम सीगमउ ॥२॥
सिरि वद्धमाण तित्थे जुगवर, सोहम्म सामि वंसंमि।
सुविहिय चूडामणि मुणिजो, खरतर गुरुणो गुणस्सामि ॥३॥
सिरि उज्जोयण वद्धमाण सिरि सूरि जिणेसर।
सिरि जिनचंद-मुणिंद[1] तिलक सिरि अभय गणेसर।

---

[1] तिलक

जिणवल्लह जिणदत्त सूरि जिणचन्द नमिज्जइ ।
जिणपत्ति जिणेसर जिणप्रबोह जिणचंद मुणिज्जइ ।
जिणकुसल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलद्धी जिणचंद गुरु ।
जिणउदय पट्टि जिणरायवर, संपय सिरि जिणभद्दगुरु ॥४॥

इग्यारह सइ सतसठइ जिणवल्लह पय दिट्ठउ ।
इग्यारह गुणहत्तरइ तहइ जिणदत्त पसिद्धउ ।
बारह पंचग्गलइ तहवि जिणचन्द मुणीसरु ।
बारह तेवीसइ सहिय जिणपत्ति जईसर ।
जोगीस जिणेसर सूरि गुरु, बारह अठहत्तरि वरसि ।
जिणपबोह गच्छाह वइ, तेरह इगतीसा वरसि ॥ ५ ॥

तेरह इगताल वरसि पट्ट जिणचन्दह हूअउ ।
तेरहसय सत्तहत्तरइ सहिय जिणकुसल पसिद्धउ ।
तेरह नव्वा एम जाणि जिणपउम गणीसरु ।
हूअ नाम जिनलब्धि सूरि चउदय सय वछरि ।
जिणचन्द सूरि गच्छह तिलउ, चउदह सय छोत्तरइ ।
जिणउदयसूरि उदयवंतपहु, सय चौदसह पनरोत्तरइ ॥ ६ ॥

इग्यारह सतसठइ जेण पाट पद दिट्ठउ ।
पासाद्व दिय पट्टि चित्तकोटहि सुपसिद्धउ ।
जिसण पट्टि बारसाल इग्यारह गुणहत्तरि ।
सूरि राउ जिणदत्त ठविय चित्तवड्ढ उप्परि ।

---

१ वइ, ३ जाणि ४ सूरि ।

जिणचन्दसूरि बरमारजय, सुद्द छट्ठि विक्कमपुरहि ।
मयकंम हुव जिण सासणहि, सय बारह पंचसरहि ॥ ७ ॥
कम्मेरह जिणपत्तिसूरि बारह तेवीसइ ।
कत्तिय सिय तेरसिहि पट्ट जयवंतउ दीसइ ।
माह छट्ठि जाळउरि सुद्दतहि ठविय जिणेसर ।
बारह अठहत्तरह रूप अवन्न मणोहर ॥
जिणपबोह सूरि आसोज पंचमि, जालउरय मयउ ।
इक्कोस बरसि मनुगर सइ, पट्ट तह दुणि परिठ्ठयउ ॥ ८ ॥
तेरह सय इगताल सुगुरु जिणचन्द सुणिज्जय ।
बयसाखह सिय तीय नयरि जाळउरि कुणज्जय ॥
तेरह सय सत्तहत्तरह सूरि जिणकुसल पसिद्धउ ।
जिहु कत्तिण इग्यारसहि पट्टु भणहिल्पुरि विद्धउ ॥
जिणपद्मसूरि तेहर (रह) नवइ जिहु मासि सयाम मयउ ।
तह सुद्द छठि देराउरहि, सयल संघ आणंदयउ ॥ ९ ॥
सय चउदह जिण लब्धि सूरि पट्टहि सुपसिद्धउ ।
आसाढह बदि पडवि तहवि पट्टागम किद्धउ ॥
तासु पट्टि इह सुगुरु ठविय चउदह सय छग्गोत्तरि ।
जेसलमेरह माह दसमि सुद्दह सुह वासरि ॥
नर नारि ताह मंगल करइ जिण सासणि उछव मयउ ।
जिणचन्द सूरि परिवार सई, सयल संघ अणुदिणु जयउ ॥१०॥
खंभ नयरि मझारि चउद पनरोत्तर बरसहि ।
सियम मंगु आयरिय इंव आणंदिय समणहि ॥

अजितनाथ वर भवण नंदि मंडिय गुरु थप्पियरि ।
सयल संघ पट्ट परि मिलिय रलिय पूरिय मनभितरि ॥
जिण कुसल सूरि सीसह तिलउ, जिणचन्दह पट्टुद्धरणु ।
जिणचंदसूरि भवियह भमरु, सयल संघ मंडिय करणु ॥११॥
गुण गण वय मयंक वरमि फग्गुण वदि छट्ठहि ।
मणहिल्लपुरि वरि नंदि ठविय संतीसर दिट्ठिहि ॥
सिरि लोयमायरिय मंतु अप्पिय सुमुहुत्तहि ।
सिरि जिणउदय मुणिंद पट्ट उद्धरिय परित्तहि ॥
छत्तीस गुणावलि परिवरिय चन्द गच्छ उज्जोय कर ।
जिणराजसूरि गुरु जगि जयउ सयल संघ आणंदयर ॥१२॥
पग सग वेय मयंक[1] वरिस माहह छग्ग धामरि ।
भाणुसल्लि वर भवणि अजियनाहह जिण मंदिरि ॥
नंदि ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचन्द गणहरि ।
सूरि मंतु जसु दिद्ध किद्ध मंगलु विरदु[2] प्परि ॥
जिणराजसूरि पट्टह तिलउ, जिणसासण उज्जोयकर ।
जा चन्द सूरि ता जगि जयउ, सिरि जिणभद्द मुणिंद वर ॥१३॥
मंत मज्झि नवकार सार माणिक धुरि कयउ ।
देव मज्झि अरिहन्त सत्थ कल्पह धुरि उत्तउ ॥
नगर मज्झि वर अमरनयर मेरद धुरि मुणिवर ।
पक्खि मज्झि जिम रायहंस पव्वय धुरि मंदिर ॥
जिणराजसूरि पट्टुद्धरण, भविय माय पडिबोहवर ।
तिम सयल सूरि पूरावयम, जिणभद्दह गुण पवर ॥१४॥

1 उत्सव 2 तिह 3 विवह

मंगल सिरि अरिहन्त देव, मंगल सिरि सिद्धह ।
मंगल सिरि गुणपवर सूरि, मंगल उवझायह ॥
मंगल सुविहिय सव्व साहु मंगल जिणधम्मह ।
मङ्गल विहरइ सव्व मङ्ग मङ्गल सन्नाणह ॥
सुपयवि होइ मङ्गल अमङ्ग, मङ्गल जिय सासण सुरह ।
वर सीसह जिणचम सुह गुरह, मङ्गल सूरि जिणसरह ॥१५॥
मालू माल्ह सिंगार साह रतनिग कुलमंडणु ।
सुहाव्व सुरा संसि पुहवि धारल्दे नंदणु ॥
चउदह सय पनरेतिरइ कमिण आसाढइ तेरसि ।
पटु महोच्छव किय साह रतनागर वरसि ॥
खरतरह गच्छि उज्जोय कर, जिणचन्द सूरि पट्टु धरणु ।
जिणउदय सूरि नंदउ सुपहु विहिसंघह मङ्गल करणु ॥१६॥
जिम जलहरंमि मोर जिहा वसंतमि कोकिल ढ़ुंती ।
सूरउगमणे कमलु तह भविया तुह आगमणे ॥
जिम जलहर आगमणि मोर हरसिय मण नचइ ।
जिम शिशिर उगमणि कमल कमसिरि सिरि विकसइ ॥
ससिहर संगम जेम सयल सायरू जल विकसइ ।
जिम वसंति महिवलि हंसलि कोयल मह मचइ ॥
तिम सूरि राउ जिनउदय गुरु, पखाहिव रसि (रवि) उल्हसिय ।
जिनराजसूरि गुरउं सजहि भविय समण मण उल्हसिय ॥१७॥

---

१ वेरम्म

पासिग उप्परि धरणि धरणि उप्परि जिम गिरिवर ।
गिरिवर उप्परि मेरु मेरु उप्परि रवि ससिहर ॥
ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुर वर ।
इंदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पंचुत्तर ॥
सव्वट्ठसिद्धि तसु उप्परि, जिम तसु उप्परि मुक्ख ठिइ ।
तिम सूरि जिणेसर जुगपवर, सूरहि उप्परि इत्थ कलि ॥१८॥

कुसल वडो संसार, कुसल सज्जण जण चाहइ ।
कुसलह महग्घ वारि कवि कुसलहि परि भावइ ।
कुसलहि धण वरसंति कुसलि धण धन रवन्नउ ।
कुसलहि पोढ घट्टि कुसलि पहिरिय सुवन्नउ ॥
परिसउ नाम सुह गुरु तणउ, कुसलहि मग रक्खियामणउ ।
जिण कुसल सूरि नाम महणि, घरि घरि होइ वधामणउ ॥१९॥

दस सय चउवीसहि नयरि पट्टणि अणहिलपुरि ।
हूयउ वाद सुविहितह चउथामी सउ बहु परि ॥
दुल्लभ नरवइ सभा समुखि जिण इत्थ जितउ ।
चियवास उत्थप्पिय चैत्य गुज्जरह वहितउ ।
सुविहिय गछि खरतर बिरुद, दुल्लभ नरवइ तहि दियइ ।
सिरि वद्धमाण पट्टह तिलउ, जिणेसर सूरि गुरु गहगहइ ॥२ ॥

रवि किरणहू पवणि चडिय अट्ठावय तित्थहि ।
निय २ वन्न पमाण बिंब वंदिय जिण भत्तिहि ।

---

१ उप्परि २ बोलावइ ३ करि

मंगल सिरि अरिहन्त देव, मंगल सिरि सिद्धइ ।
मंगल सिरि गुणधर सूरि, मंगल उवझायइ ॥
मंगल सुविहिय सव्व साहु मंगल जिणधम्मह ।
मङ्गलु जिहरइ सव्व साहु मङ्गल सन्ताणह ॥
सुयणहिं हाइ मङ्गलु अमङ्गु, मङ्गलु जिण सासण सुरइ ।
वर धीसइ जिणप्रभ सुह गुरुह, मङ्गल सूरि जिणसरह ॥१५॥
मालुर माल सिंगार सारइ रयणिग कुछमंडणु ।
मुत्ताहल सुल संसि पुहवि भारछवे नंदणु ॥
बारसइ सय पनरोत्तिरइ फग्गिण मासाइह तेरसि ।
पट्ट महोच्छव किय साह रयणागर वरसि ॥
खरतरह गच्छि उज्जोय कर जिणचन्द सूरि पट्टह भरणु ।
जिणप्रभ सूरि नंदउ सुगुरु विविसपक्ख मङ्गल करणु ॥१६॥
जिम जलहरंमि मोर जिहा वसंतमि कोकिल हुंती ।
सुरकुमागमण कमलु तह भविया गुरु आगमणे ॥
जिम मलहर आगमणि मोर हरसिय मण नाचइ ।
जिम दिणियर उग्गमणि कमल वणसिरि सिरि विकसइ ॥
सम्मिहर संगाम जेम सयल सायरु जल विकसइ ।
जिम वसंति महियलि हंसति कोमल मइ मचइ ॥
तिम सूरि राउ जिनप्रभ गुरु, पट्टाविय रसि (१पि) उल्हसिय ।
जिनरायसूरि गुरुदंसणहि भविय नयण मण उल्हसिय ॥१७॥

---

१ दंसण

पासिग उप्परि धरणि धरणि उप्परि जिम गिरिवर ।
गिरिवर उप्परि मेरु मेरु उप्परि रवि ससिहर ॥
ससिहर उप्परि तियस तियस उप्परि जिम सुर वर ।
इंदुप्परि नवगीय गीय उप्परि पंचुत्तर ॥
सव्वट्ठसिद्धि तसु उप्परि, जिम तसु उप्परि मुक्ख ठिति ।
तिम सूरि जिणेसर जुगपवर, सूरहि उप्परि इत्थ कलि ॥१८॥
कुसल भणो संसार, कुसल सज्जण जण चाहइ ।
कुसलह मङ्गल वारि कलि कुसलहि परि आवइ ।
कुसलहि घण वरसंति कुसलि धण धन्न रवन्नउ ।
कुसलहि पोस पट्टि कुसलि पहिरिय सुवन्नउ ॥
परिसउ नाम सुगुरु तणउ, कुसलहि जग रलियामणउ ।
जिण कुसल सूरि नाम भणवि घरि घरि होइ वधामणउ ॥१९॥
दस सय चउवीसेहि नयरि पट्टणि अणहिलपुरि ।
हूयउ वाद सुविहितह चेइवासी सउं बहु परि ॥
दुल्लभ नरवइ सभा समक्खि जिण हेलइ जित्तउ ।
चिइवास उत्थप्पिय देस गुज्जरह वदित्तउ ।
सुविहित गच्छ खरतर बिरुद, दुल्लभ नरवइ तहि दियइ ।
सिरि वद्धमाण पट्ट तिलउ, जिणेसर सूरि गुरु गहगहइ ॥२०॥
रवि किरणेहि जगगि अवरिय अइसय तिस्यहि ।
निय २ कन्न पमाण जिण वंदिय जिण भत्तिहि ।

---

१ उप्परि २ बोलावइ ३ करि

पनरह सय तापस पबोह दिक्खिय जिण सत्तिहि ।
पारावइ इग पत्ति सब्व खीरइ पिय रत्तिहि ॥
अखीण महाणसि लद्धिवर, गोयम सामिय गुण तिलउ ।
जसु नामिण सिज्झइ कज्ज सवि, सो झायउ तिहुयण तिलउ ॥२१॥
सो जयउ जेण वहियं पयमि (पाउ) चउत्थिपज्जूसरण ।
पत्त चउद्दसि जाया नम्मविया कालकसूरियो ॥
कालिकसूरि मुणिंद जयउ तिहुअण मण रंजण ।
उज्जेणो गद्दभिल्ल राय मूलह निकंदण ॥
सरसइ साहुणि कज्जि सिव संजम सिरि रक्खिय ।
सोहम्माहिवइ सयल आलसउ अक्खिय ॥
मरहट्ठदेसि पयठाणपुरि, सालवाहण भवरोहपर ।
सो कालिकसूरि संघह जयउ, चउत्थि पज्जूसरण विहिय धरि ॥२४॥
जिणदत्त नंदउ सुपहु जो भारहंमि जुगपवरो ।
अंबाएवि पसाया विन्नाउ नागदेवेण ॥ १ ॥
नागदेव वर सावएण वर्ज्जित[1] चढेविणु ।
पुच्छिय जुगवर अंब एवि उववास करे विणु ॥
तसु सत्ति गुरु नाम तीय, करि अक्खरि लिहिया ।
भणिउ '[2]सवांइय पम्ह सय [3], जुगपवर सुपसिमिय ॥
अभिउम्म पढवि अणहिल्लपुरि, जुगपहाण तिणि जाणियउ ।
जिणदत्तसूरि नंदउ सुपहु, अम्बाएवि बखाणियउ ॥२५॥
गय धम्मो देव सिरी फग्गुण कन्नाय च (ब)बसी दिवसे ।
पंडिय बजजाणंदो निक्खमिय "अमयतिलकेण" ॥ १ ॥

---

१ वर्जित चढेविणु २ वासु ३ कवाइय ४ सेव

पाणि तणइ विमाणि रज्ज जयसिंघ नरिंदह ।
उज्जेणी वर नयरि मुवणि पहु संती जिणंदह ।
जिणवल्लभ जिणदत्त सूरि जिणचन्द कुवेसरु ।
रंजिय जिणवय सूरि धरइ सिरि सूरि जिणेसर ॥
ता ? कन्हई सीयल्लु लयइ कल्लु, फासुय थप्पिय विगइप्परि ।
निक्खिणिउ विजयाणंद ति(छि)हि, अमयतिलकि पयपट्टि धरि ॥२४॥
रयणि रमन रमणि पवेसु नहवणु नहु निसाहि
जिणेसर नै दिन दोसा समय बलि न सम्मरिय विसरइ ।
नहु जामणहि पवट्टरत्ति रहु भमइ नममणइ ।
नहु विहारि बलापु जत्त सुगो मरि समणइ ॥
भवियणह अहिलइ चिय भवहि, तह सुयंमि पुयरय करउ ।
तउ मोई मूढ मूलण गयइ, जिणवल्लह पय अणुसरउ ॥२५॥
जिणदत्त सूरि मंगलु मंगलु, जिणचन्द्रसूरि रायस्स ।
जिणवय सूरि जिणेसर, मंगलु तह वद्धमाणस्स ॥ १ ॥
वद्धमाण पणगुणनिहाण मंगलु कलि भमिलइ ।
सुगुरु जिणेसर सूरि वसहि पयडण धुरि धवलइ ।
मंगलु पहु जिणचन्द अभयदेव जिणवल्लह ।
मंगलु गुरु जिणदत्त सूरि मंगलु जिणचन्दह ॥
जिणपत्ति सूरि मंगलु अमलु, जास सुजस पसरिय धरइ ।
चउविह सुसंघ संकलह कवि, मंगल सूरि जिणेसरह ॥२६॥
जइस चन्द्र निम्मलइ जइस तारायण मम्मल ।
जइस सुपवित्त जइस वगुलउ भय सम्मल ॥

पनरह सय तापस पबोह दिक्खिय जिण सत्तिहिं ।
पाराविय इग पत्ति सव्व खीरह घिय दत्तिहिं ॥

बत्तीस महागसि लद्धिवर, गोयम सामिय गुण तिलउ ।
जसु नामिण सिज्झइ कज्ज सवि, सो झायउ तिहुयण तिलउ ॥२१॥

सो जयउ जेण वद्दिय पयमि (माउ) चउरित्थपमूसरण ।
पत्त चउद्दसमि जाया मम्मत्थिया कालकारियो ॥

कालिकसूरि मुणिंद जयउ तिहुयण मण रंजण ।
उज्जेणी गद्दभिल्ल राय भूयबल निकंदण ॥

सरसइ साहुणि करिय सिय संजम सिणि रक्खिय ।
सोहम्माहिवइं सयल भाखउ अक्खिय ॥

मरहट्ठदेसि पयट्ठाणपुरि, सालवाहण मनरेसरपर ।
सो कालिकसूरि संघह जयउ, चउत्थिय पजूसरण विहिय धरि ॥२२॥

जिणवत्त नंदउ सुपहु जो भारहंमि जुगपवरो ।
संवायवि पसाया, विन्नाउ नागदेवेण ॥ १ ॥

नागदेव वर सावय्य चडिअउ[1] बरोविणु ।
पुच्छिय जुगवर संघ पवि उववास करे विणु ॥

तसु सत्ति तुट्ठाय दीय, करि अक्खरि लिक्खिया ।
भणिउ 'जयार्हम पमइ सव , जुगपवर सुधम्मिय ॥

अभिलग्ग पवि अणहिल्लपुरि, जुगपवरण तिणि जाणियउ ।
जिणदत्तसूरि नंदउ सुपहु, अम्बाएवि वखाणियउ ॥२३॥

गइ धम्मो दव सिसी पुरगम कन्नाव च (उ)धसी दिवसे ।
पंडिय वमयारुंदो निम्मणिय अमयतिलएण" ॥ १ ॥

---

१ चडिअउ वरेविणु २ ताहु ३ उवाइय ४ तेण

इंद भवणि गय गुहिर सद्दम पउसहि नेउम्मिय ।
धाग्धर सय पंच तोह इक्कच्छ सुद किय ।
मुहि मुहि किय अट्ठ दंत दंतहि दंतहि अट्ठ वाविय ।
वावि वावि अट्ठ कमल कमलि दल दल्नु लख न(?ना)चिय ॥
बत्तीस बद्ध नाडय बहु, पत्ति पत्ति नच्चइ रसिय ।
इयरिसिय रिद्धि पिक्खेवि फर, दसणभद्द मउ गउ(?य) गलिय ॥२१॥
दसणभद्द चिंतइ अहह मइ सुकिय न किद्धउ ।
तउ मनि धरि संवेगि झत्ति तणि संयमु लिद्धउ ॥
वीर पासि सु ज आइ भामि मुणिराउ पइट्ठउ ।
ताम मत्ति सुरराय नमिय सो गुणहि गरिट्ठउ ॥
भणय इंदु तय जसु मुणिंद, उद्धारिय निम्मल मइ ।
जं करउं विनाय माणस मुणि, मइ नि होइ संजम किमइ ॥२२॥

॥ दूसरी प्रतिकी विशेष गाथायें ॥

अमर त जिनवर गिर न मेरु निसियर लक्कामण्हु,
तरु त ममलोर धन त धनु मदना पंचासनु ।
गर त संख तिमदूर न ससु मद गुरुम त दिवायर,
मक्कन त भूपमणि नद त गंग सम पाहुक त मायर ।
जिगनुरग न मंडोमर भमउ, तुंगत्तमि चापरि गय्यनु
पुनि तास जाणि जिगपति गुरु सूरि मउइ पुहुरम्यु ॥१७॥
जिम नर सुरनरू मदि रयण मणिहिं चिंतामणि,
पशु मदि जिम कामधेनु गह मदि दिनामनि ।

कहस नीर सुरसरीय कहस बाहलेय पवित्तिय ।
पदमराग कह गुरुय कहस पयरिय रंगिय ॥
जिणपदम सूरि पट्टु पट्टुधर, अमिय वाणि वेसण वरिस ।
सुहि कर सुजीह जिनगछि परिठिसि, जिनलब्धि सूरि गणहरसरसु ॥२७॥
एगे केरि लागूरि जवइ सिरिविसि करि भखिय ।
एग जंव अम्बखिय वल दाडिम जे चाखिय ।
एग जेव अंबूयइ मयख पिम्पल जे असियइ ।
वडमाल्ल य रुवरन एय एय पसर अप्पसिय ॥
पउमण्णइ नारिंग नइ सु नयनिमल कोमल महूय ।
जिणपत्ति सूरि नालियर इह मरारि कोर चंच भंजेय तुम ॥२८॥
जिम नसि सोहइ चंद जेम कलसु तरलकरहि ।
हंस जेम सुरवरहि पुरिस सोहइ जिम छलिहि ।
कंचणु जिम हीरेहि जेम कुल सोहइ पुत्तहि ।
रमणि जेम भत्तार राउ सोहइ सामंतइ ।
सुर माह जेम सोहइ सुरउ जगि सोहइ जिणधम्म भरु ।
आयरिय मझि सिंहासणहि तिम सोहइ जिणचन्द गुरु ॥२९॥
वसणभइ नरनाह वीर आगमि आवंविय ।
पमणइ वंदिसु तेम जेम केणावि न वंदिय ।
राइ सज्जिय गय तुरिय तुरिय पक्खरिय पक्खालिय ।
सुखासण सय पंच चडवि चल चिंतिहि राणिय ॥
बहु छत्त चमर परवारि मर्ड, आम सयल समोसरणि ।
ताम इंद तसु मणु मणवि अमराबइ आवइ मणि ॥३०॥

इंद्र वयणि गय गुहिर सहस पउसट्ठि पउम्मिय ।
मारत्तर सय पंच ठीइ इककइ सुह किय ।
मुहि मुहि किय अठ दंत दंतहि दंतहि अठ वाविय ।
वावि वावि अठ कमल कमलि दल लक्खु सरस न(?ना)विय ॥
पत्ताम पट्ट नाडय पड, पत्ति पत्ति मयरइ रल्लिय ।
इयमिय रिद्धि पिल्लेवि कर, दसणभद्द मउ गउ(?य) गल्लिय ॥३१॥
दसणभद्द चिंतय भद्दइ मइ सुक्किय न किद्धउ ।
तउ मनि धरि संवेगि झत्ति तणि संयमु लिद्धउ ॥
बोर पाभि मु अ आइ जामि मुणिराउ वइट्ठउ ।
ताम भत्ति सुरराय नमिय मो गुणहि गरिट्ठउ ॥
भणय इंदु तय अनु मुणिहु उद्धारिय निम्मल मइ ।
जं करउ चिनाग आणण थुणि, मइ नि होइ संजम किमइ ॥३२॥

॥ दूसरी प्रतिकी विशेष गाथाएँ ॥

अमर त मियवर गिर त मेरु निमियर उद्मामगु,
तरु त अमरतरु धन त धनु मइना वंपामगु ।
गउ त संक विमइर न समु गइ गुण्य त दिवायर,
भरम त हृयमणि मइ त गंग जल वरुस त मायर ।
जिणमुरम न नंद्दोमर भणउ, मुंगत्तणि त्तापरि गयमु
पुनि शासन आणि जिणपति गुरु सूरि मउड़ पूहारमगु ॥१४॥
जिम तरु सुरतरु मदि रयण मणिहि चिंतामणि,
धेनु मति जिम कामधेनु गइ मति दिवामणि ।

उडगण सउहिं चंदु इंदु जिम सगि पसिद्धउ,
गिरवर मझिहिं मेरु राउ जिम रह निरुत्तउ ।
तिम पहु मूरि सुरिहिं पवरु जिणपमोदसूरि सोसवर,
जिणचंदसूरि भवियहु नमहु, पहवि पसिद्धउ जुगपवर ॥१८॥
जिण सासण वर रयणि चंद गछिहिं समरंगणि,
वरण सुरंगमि चडवि संतिक्कार खग्गु गहेविणु ।
जिण भाणा सिरिसिरक सीधि संनाहु सुसज्जिय,
पंच महव्वय राय सवल मुणिपत्ति भगंजिय ।
पररिसउ सुहडु मिच्छत्त सूरि, पिक्केविणि रहरियतणु ।
जगमिडिय मुडिय मुणिपय पडिय समणमाणु मिल्हेवि पुण ॥१९॥
उत्तर दिसि महवड मासि जिम गज्जइ जलहरु,
जिम हत्थी गलगयड बेम किन्नरि सरु मणहरु ।
सायर जिम कल्लोल करइ जिम सीह गुंजारइ,
जिम कुसुमिय सहयार सिहरि कोइल टहकारइ ।
सपोस घंट जिण अम्मलवाणि वक्खाणिय जिम महमहइ,
जिणपदम सुरि सिद्धंत तिम, वक्खाणंतउ गहगहइ ॥ २१ ॥
जिम अन्तर गोहक बुद्धि अंतरु मणि सुरमणि
जिम अंतरु सुरकट पलास जिम जंबुय केसरि ।
जिम अंतरु बग रायहंस जिम दीवय दिणयर
जिम अंतरु गो कामधेनु जिम अंत(र) सुरेसर,
जिणपदम सूरि तिम (अ)भगुरु, एमह अंतरु भविय मुणि ।
खरतरह गछि मुणवर तिलउ हयु जीह जिम सहज धुणि ॥२२

नवखल कुलि धणसाहनंदणु सुप्रसिद्धउ,
सलखाहि तिय कुखि आउ बहु गुणह समिद्धउ।
बालपणि निरुवमवि माइ सजम सिरि रत्तउ,
गोयम चरिय पयास करणु इणि कालि निरुत्तउ।
जिणपदम सूरि पट्टुद्धरणु वयरसाह उन्नति करउ।
जिनलब्धिसूरि भविमहु नमहु, चंदगछि मुणि गुणधरउ ॥२३॥
उदय बाहड संसारि उदय सुरवर नर नंदय
उदय जिणहु गह गयणि उदय सहसकर चंदय।
उदय धम्मी सवि कज्ज रज्ज सिद्धंत प्रमाणह,
उदउ अनुपम सयल उदय वलि वलि कल्याणह।
धम धम्म पुत्त परियण सयल, उदय(व)गो जस विस्तरउ।
जिणउदय सूरि इणि कारणिहिं, उदउ सयल संघह करउ ॥२४॥
जिम चिंतामणि रयण मज्झि उत्तम सलहिज्जइ,
जिम कणयाचल गिरिह मज्झि किरि पुरहि ठविज्जइ।
जिम गंगाजल जलह मज्झि सुपवित्त भणिज्जइ,
जिम सोह गह करणु मज्झि ससहरु वन्निज्जइ।
जिम तरह मज्झि चंदिण तरु, सुरतरु महिमा महमहइ।
जिम सूरि मज्झि जिणभद्दसूरि सुगुणपहाण गुरु गहगहइ ॥२५॥
जिणि उम्मूलिय मोहजाल सुविसाल पयंडिहिं,
जिणि सुजाणि किवाणि मयणु किउ खंडो खंडिहि।
जसु कणाइ मइ कोह लोह मइ किमिहि न मंडिहि,

गहगण सव्वहिं चंदु इंदु जिम मणिग पसिद्धउ,
गिरवर महिहिं मेरु राउ जिम रह निरुत्तउ।
तिम पहु भूरि सूरिहिं पवर जिणपबोहसूरि सीसवरु,
जिणचंदसूरि मणियइ भमइ, पहवि पसिद्धउ जुगपवरु ॥१८॥
जिम सासण वर रवि चंद गच्छिहिं समरंगणि,
वरण तुरंगमि चडवि अंतिकवार समगु गवेसिनु।
जिण आणा सिरिसिरक सीहि संगाहु सुसज्जिउ,
पंच महव्वय राय सचउ मुणिपत्ति भगंजिउ।
परतिसउ सुहडु जिनकुसल सूरि, पिक्खेविण रहरियणगु।
मणमिहिउ सुहिउ मुणिपय पहिउ मयणमासु मिल्हेवि पुण ॥१९॥
उत्तर दिसि मरुवा मासि जिम गज्जइ अम्बरु,
जिम हत्थी गलयलइ जेम किन्नरि सरु मणहरु।
सायर जिम कल्लोल करउ जिम सीह गुंजारउ,
जिम कुसुम सहयार सिहरि कोइल टहकारउ।
सपोस पंथ जिम जम्मनयणि आणंदिय जिम महुयरु,
जिणपदुम सूरि सिद्धंत तिम, वक्खाणंतउ गहगहइ ॥ २१ ॥
जिम अन्तर गोरुक बुद्धि अंतरु मणि सुरमणि
जिम अंतरु सुरतरु पलास जिम अंबुय केसरि।
जिम अंतरु वग रायहंस जिम दीवय दिणयर,
जिम अंतरु गो कामधेणु जिम अंत(र) सुरेसर,
जिणपदुम सूरि तिम (अ)वरगुरु, पवड अंतरु भविय मुणि।
खरतरह गच्छि मुणवर तिलउ इमु कीइ किम सकउ गुणि ॥२२॥

शासन प्रभावक श्री जिनप्रभसूरि जी की हस्तलिपि

(सं० १३११ लि० प्रतिलिपिका अन्तिम पत्र)

गय जिम जिणि मय रूक्ख भग्ग तब सुडा हविहि।
सो गच्छनाह जिणभद्दगुरु वच्छिय पूरण कप्पतरू,
कल्लाण वल्लि नवधार घण, वसइ मज्झ अयवंत चिर ॥२८॥
जिणि दिणि दुम्मि सभा सकार खरतर जय विप विणि
पडिबोहिय चामुण्ड कुमवि खरतर भी तिणि दिणि।
जिणीस वास सहुमइ मासि फुड खरतर विणिदिणि,
... ...
रंजिय नरवंम नरिंद जिहिं, धारनयर स्युं नरवरा।
जिणभद्दसूरि ते गुरु सवि, भविअउ लोणि खरतर खरा ॥११॥
वम्माखि (वि) का मर्यादि सांख्य सोगत नैयायक,
मीमांसक गुरु मुकरवादि गुरु गम निवारक।
वरसूत्राविधि मार्ग वर्ग देसक वति प्रभा,
कटि धर्मकुम्भ कुल विसाल सौपोक्ख सुम्भग।
कल नयन सुधाकर हविरकर, मदन महीधर कुलिसाम्बर
जय सूरि मुकुट गत कप्प भट, गुरु जिणभद्द सुगपवर ॥१२॥
सयल गरूय गुण गण गणित्र गम सीस भयह भणि
निय अपणिहिं पर वादि निद्दलय सुलक्खणि।
सवि आचार विचार सार विहिमग्ग पयासइ,
भविय भण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ।
पुरि नयरि देसि गामागरहिं, विहरतउ सो होइ सुगुरु।
सो जयउ जिणसर मासमिहिं, श्रीजिणभद्द मुणिन्दवर ॥१३॥

शासन प्रभावक श्री जिनभद्र सूरि जी की हस्तलिपि

(सं १५११ लि. मार्गविधिका अन्तिम पत्र)

ताम तिमिर भरि फुरइ जाम त्रिणयरु नहु उग्गइ ।
ताँ मयगल मयमत्त जाम कमरीय न लग्गइ ।
ताम विहग चिगचिगै जा न सिचाणउ दुघुइ ।
ता गज्जइ पशु गयणि जाम नहु पवण फुगइ ।
तिम सयल वादि निय निय घरिहिं, ताँम गव्व पव्वइ चडइं ।
जिनभद्र सूरि सुह गुरु तणीय, इणु न जाँ कन्निहिं पडइं ॥२४॥
पर पुर नगर निवासि जय निय गब्ब पयासइं ।
वोलावंता बहुय विरुद्द नहु किंपि विमासइं ।
पहुवि पयउ पमाण लक्खण वर वखाणइं ।
वादि विवाद विनोदि संक निय चित्त न याणइं ।
परिस भि कवि गुवर्णिहिं भमइं, वादी मयंगल गडयडइं ।
जिनभद्र सूरि कसरि करिहिं त पुग्गजवि परणिहिं पडइं ॥२५॥
नाग कुमर नरनाह मुनाह गण गिहुयणि जिन्ना ।
तिहुयण सत्तजिनेन्दे विव गाउ पम भूवलय १
भूवलयंमि पसिद्ध मिद्ध जा संकर भणियउ ।
गोरी पयनति गलिय मोय इमि वाणिहि हणियउ ।
दानव मानव असुर मरि इक्क जा छिन्दउ ।
सो नागयण सोळ सहस गोपी वसि किद्धउ ।
दिव एह अधिक मदि वाउकउ न मुणियोयई कर्मिहि ।
जिणभद्रसूरि इमि कारगिहि मयण मन्नु जित्तउ वलिहिं ॥२६॥

दुर्घट पटना घटित कुटिल कपटागम सूत्कट ।
बावाटोत्कट करटि करट पाटन सिंहोद्भट ।
न किट संकट मुक्त निकट बिन तारि भट स्फट,
हाटक मुकुट किरीट कोटि घृष्ट क्रम नख तट,
विस्टप वांछित कामघट विघटित दुष्ट घट प्रकट
जिनभद्र सूरि गुरुवर किकट, सितपटसिरोमुकुट ॥१७॥

॥ इति समस्तदेव गुरु पट्पदानि ॥

॥ पहराज कवि कृत ॥

॥ जिनोदयसूरि गुण वर्णन ॥

किमि गुणि सोवण्णिवर्णं, सिद्धिहिका मंति तुम्ह हो सुणिण ।
संसार फेरि हरणं, दिसा पाल्हणण गहणं ॥१॥
बालत्तणि वय गहण सुगुणि मुणिवर संभासियउ ।
मइ कम्म निज्जणवि गमण दुग्ग गइ टालियउ ॥
लगु लघु जिण तवउ विणु संमइहि रहिउ ।
संजम करिसु पहाणु मयण समरंगणि वहिउ ।
जिणउदय सूरि पय पय नमहि, ति नर मुक्ति रमणी रमइ ।
"पहराज" भणइ गुरु जिन्नउ, भजउं भवगु किवि गुणि तवहि ॥२॥
सीझ्यवि सिद्धि पावहि जे नर पणमंति परिसा सुगुरु ।
मुणिवरह चिंत कप्पिउ नहु मन्नइ मन्न तिमन्न ॥३॥
मुणिवर मसुमम कव्विउ मवि जिणवरह मनावइ
भमर तरणि नहु गमइ सिद्धिरमणि इह मावइ ।
करइ तवणि बहु भंगि रंगि आगम वखाणइ ।
मधुर जीव बोहेव जन सुमरयह माणय ॥
जिणउदय सूरि गच्छाहिवइ गुरु मगिग धोरि सुपहु ।
"पहराज" भणइ सुपसाउ करि, सिव मारग दिखालि महु ॥४॥
सुगुरु सिव मग्ग रूप किय कम्म विसारइ
मंस मच्छग परिहरउ सुरा मिउं भेउ निवारइ ।
वेसन रस कउ ५५ पाउ पाउहरि समंतउ ।

चोरी म करि मयाण रति दुग्गव जिउ जंतउ ॥
पर रमणि मिम्हि सत्तय वसणि जोव दय दड संमझ्यउ ।
जिणदत्तसूरि सुहगुरु नमहु, सिद्धि रमणि छीमड कहड ॥३॥
सुगुरु सिद्धि इम भणइ किति सुय तणी थुणिज्जइ ।
सुगुरु देव इम मणय छीह गणहर सुय दिज्जय ।
सुगुरु सुमिद्ध गय विति मरवलु सुय नामहि भगइ ।
गुरुव पढइ सिद्धंत सुगुरु जिनमत्ति विहगाव ॥
जिणदत्तय सूरि जग जुगपवर, गुम गुण वनउं सहसि फणि ।
परसउ सुगुरु हो मविपणइ, कव्य सिद्धि पक्ममन्तमणि ॥४॥
कवणि कवणि गुणि थुणउं कवणि किणि मेय वखाणउ ।
बूम्मइ गुरु सीक छम्मि गोयम गुरु जाणउ ।
पाव पंक मउ मकिउ दखिव कन्दप्प निदलउ ।
गुरु गुमिवर सिरि तिलउ मविय कप्पयरु पहुत्तउ ॥
जिणदत्तसूरि मणहर रयण सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
"पहुराज" मण्इ इमजाणि करि फल मनवंछिव सुह करणु ॥५॥
फल मनवंछिव होइ जि किवि गुरु नाम पयासय ।
गुरु नाम सुणि सुगुर रोर दारिद पणासइ ।
नामगहणि गुरु तणय सयक भावय उस्सासहि ।
॥
जिणदत्तसूरि गणहर रयणु, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु ।
'पहुराज' भणइ इम आणि करि, सयल संघ मगलु करणु ॥६॥

संजम सरसइ निरपंसु सुगीप तित्थमर च (भ) रणं ।
सुगुरु गणहररयणं, वंदे जिणसिंह सूरिमहं ॥ ६ ॥
जिणपह सूरि मुणिंदो पयडिय नीसेस विहुउपपणाय्यंदो ।
संपइ जिणवर सिरि, वद्धमाण तित्थ पभावेइ ॥१०॥
सिरि जिणपह सूरीणं पट्टंमि पइट्ठि ओगुण गरिट्ठो ।
जयइ जिणदेव सूरी निय पन्ना विजय सुरसूरी ॥११॥
जिणदेव सूरि पट्टोदय, गिरि चूडाविभूषण भाणू ।
जिण मेरु सूरि सुगुरु, जयउ जए सयल विग्घनिहिं ॥१२॥
जिणहित सूरि मुणिंदो, तप्पमेरवित्य कुसुमचय चंदो ।
भमणकरि कुम विहरण, दुद्दरपंचाणणो जयउ ॥१३॥
सुगुरु परंपरा गाहा, जुम्म जिणजो पढेइ पच्चूसे ।
सो लहइ मणोवंछिय सिद्धि सव्वापिमम्मजणे ॥१४॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरि छप्पय ॥

गयण थकी जिण कुलह माणि ओपइ उतारी ।
किध्यो महिय स्यु वाद सुण्यउ नगरी मयधारी ॥
पातिसाह रंजियउ साथि मइ हस पठायउ ।
सत्रुंजय रायण सरिस वरिस दुद्धइ झड़ लायउ ॥
जिण तोरकुर मुद्रिका प्रकट कीय जिन प्रतिमा जुक्तिय वयण ।
जिणप्रभसूरि खरतर सुगछि, भरतक्षेत्र मंडिय रयण ॥१॥
॥ इति गुरावली गाथा कुलकं समाप्तम् ॥

---

१ नाचि २ मुख ३ नयर पिरवाइ ४ दिल्लीपति उठाय एवि
५ सिहरि ।

छंद—

गुरु गच्छ धणी हंस हरखि गाहसु, प्रथम हरिभद्र सूरि गुरो ।
तसु वंसि क्रमि श्रमण मुणीसर, देवसूरि सुगणहरो ॥
सिरि नेमिचन्द मुणिंद सुंदर, पाट तसु उज्जयाल ए ।
सिरि सूरि उज्जोयण जईसर, पाव पंक पखालए ॥ ६ ॥

रागदेशाख छाया

मासुघ ऊपरि मास छ सीम, साधिउ सूरिमंत्र लेइ (य) नीम ।
पायालह पहुतउ धरणिंदो, प्रगटियो बज्रमय मातिजिणंदो ॥ ७ ॥
मिथ्याती जे मोगो (य) जडिया सुहगुरु मतिसइ ते सहुमडिया ।
जिणशासन हूउ जयवाउ, विमल तणइ मनि आणंद थाउ ॥ ८ ॥
विमल सुवसहोय विमलि कराबी (य),
तसु उबएसिहिं (य) त्रिभुवनि भावी ।
आजि कि मंत्रीसर परसादो, परतखि देवल मिसि जसवादो ॥६॥

॥ छंद ॥

जसुवाउ जसु उवएसि क्षोयउ, विमलवर मंत्रीसरे ।
कारविय निरुपम विमल वसही, गढमगिरि आबू सिरे ॥
सिरि सूरि मंत्र प्रमाव प्रगष्पिय सुविहिय मग्ग दिवायरो ।
सिरि वद्धमाण मुणिंद नंदउ सयल गुण रयणायरो ॥१०॥

॥ राग राजवलभ[१] ॥

गूजर देसिहिं जाणियइ पाटण अणहिलपुर नामी ए ।
राज करइ गजपति तिहां सिरि दुलह नरवइ नामी ए ॥११॥
चउरासी मठपति तिहां माचारिज छइ सिरि कालि ए ।
जिणहर मंदिरि त वसइ इक सुविहित मुनिवर टालि ए ॥१२॥

१ बाद ।

सुविहित नइ मठपति हुउ, ग (?रा)संगणि वसिहि विवादू ए ।
सूरि जिणेसरि पामिउ, जग देखत जय भयवादू ए ॥१३॥
दससय चउवीसहिं गए, थापिउ चइसवादु ए ।
श्रीजिनशासनि थापिउ वसतिहि, सुविहित मुनि(वर)वासू ए ॥१४॥
गुरु गुणि रंजिउ इम भणइ श्री मुक्ति दुलह नरनाहू ए ।
इणि कलिकालिहि खरहरा, चारित्रधर पहुमि साहू ए ॥१५॥

॥ छन्द ॥

खरहरा चारित्रधर गुरु, पहु बिरद प्रकासिउ ।
[1]
अवप्पिय चियवास सुविहिय संघ वसहि निवासिउ ।
रजाइउ जिणि राउ दुल्लह, जयउ सूरि जिणेसरो ।
तसु पाटि सिरि जिणचन्द गणहर, भविय क्षेम दिणेसरो ॥१६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

श्रीजिन शासन उधरिउए,
[2]
नव अंगए तणइ वखानि, श्री अभयदेवसूरिगुणपवरो
प्रगटिउ एथंभण पास श्रीजयतिहुमणि थय गुरो ॥१७॥

॥ छन्द ॥

गुरु गरुम खरतर गच्छि वरयइ, अभयदेव गणसरो ।
जसु पायइ वंदइ देवि पदमावती धरण सुरवरा ॥
निय प्रथम सीमंधर जिणसर भासु गुण वखाण ए ।
जिम सु मरीउ मूड़ ते गुरु, वरणवी भणि आज ए ॥१८॥

---

[1] चरितिचियवास २ वयइ ।

जाणिमइ सुविहित सिरोमणि ए।
तसु तण ए पाटि सिंगार, पुन्न विहिं "पिंडविसुद्धि" करो।
इणि जुगी ए एक जोगिंद श्रीजिनवल्लभ सूरि गुरो ॥१६॥

छंद—

गुरु गुण तणउ भंडार गणहर, समय संयम भर धरो।
वागडी देसि वखाणि जिणधम, दससहस श्रावक करो।
श्रीचउंड रूपरि देवि चामुंड, प्रसिद्ध जिणि प्रतिबोधिया।
तिणि सूरि जिण वल्लद जईसरि, कवण लोय न मोहिया ॥२०॥
श्रीजिनदत्त सूरि गुरु नमउ ए।
अम्बिका ए देवि आदेसि, जाणियइ चिहुं जुगे जुग प्रधान।
सयंभरी ए राय दइ जेहि, दीघउ श्रीजिनधर्म दान ॥२१॥

छंद—

जिनधर्म दानिहिं पनरसय मुनि, दीखिया जिण निज करे।
वखाण सुणिवा देव आवइ, सेव सारइ बहु परे॥
चउसट्ठि योगिणी नामि दिवी, जासु आण न लोपए।
तसु गुरु तणइ सुपसाइ मंदिर, धमु खरतर संघ ए॥२२॥
श्रीजिनचंद सूरि मर रयण।
नरमणी ए जासु निलवटि, झलहलइ जेम गयणहिं दिणंदो।
तसु तणइ ए पाटि प्रचंड, श्रीसूरिजिनपति सुरिंदो ॥२३॥

छंद—

सिर सुरिंद मुणिंद जिनपति, श्रीजिन[1] शासनि गज्ज ए ।
छत्री वादइ जयपताका, जिवड जसु जगि छत्र ए ॥
नाईधि(जि)रि जिणेसर सूरि वंदउ, जिण प्रबोह मुनीसरो ।
कलिकाल केवलि बिरद गणहर, तयणु जिणचंद सूरि गुरो ॥२४॥

राग धन्याश्री नाम—

साहेलीए नयरि देरउरि सुरतरु, सुगुरु वर श्रीजिनकुशल सुर ।
साहेली ए भूमिहिं प्रणमइ तसुपय, भविपजन[2] सगति कगति सूर ।
साहली ए तोह तणे जाइहि दोहग, दुरिय दालिद्द दुहसयल दूर ।
साइलीए दीह तण्ह मंदिर बिलसइ, संपति सय वरसु भरि पूरे ॥२५॥

छंद—

भरि पूरि भावइ सयल संघय भविय जोयइ नितु घर ।
ग भूमि भो जिनकुसल सुह गुरु, पय नमइ देराउरे ।
तसु पाटि सिरि जिणपदम गणहर, समव पुहवि प्रसिद्धउ ।
"कूर्चाल सरसती" बिरुद पाटणि जासु संघहि दिद्धउ ॥२६॥
साहेली ए इणि गच्छि लब्धिहि गोयम गछ गहइ श्रीजिनलब्धि सूर ।
साहली ए चन्द्र गच्छे पूनिमचन्द जिम सोह ए श्रीजिनचंद सूरे ॥
साहली ए श्रीसंघ उदयकर चंदउ नंदन श्रीजिनउदय सूरे ।
साहली ए सूरि पुरंदर सुंदर गुणभर श्रीजिनराज सूर ॥२७॥

---

1 ठेवपति २ जे

साहेली ए नितु नवनव वखाण ए जाण ए समय सिद्धान्त सारो।
साहेली ए मनहर रूपि मनोपम संजम निरमल गुण भंडारो।
साहेली ए गायम मंतु कि अभिनवउ अभिनवउ पूछमइ वयर गुरि।
साहेली ए संपइ प्रणमउ गच्छपति श्रीजिनभद्रसूरि जुग पवरो।२८।
साहुसाखइ तिलउ वछराज साह मल्हारो।
स्याणीय कुलंहि अवयरिउ छाजइ खरतर गच्छ मारो।
साहेली ए संपय पणमउ गच्छपति श्रीजिनचन्द्र सूरि युगपवरो।
दंसणि मविअण मोहए सोहइ सूरि गुणरयण घरो ॥२६॥

छंद[1]—

कुगवर तणा गुणरयण पूरी गहम यह गुरावली।
भासंपि भाविहि सांमलो ती मन तणी पूरउ रली ॥
आराधतउ विधि खरतर सं- ~ ~ ।
इम भणइ भगतिहि सोमकुंअर नाम चंद दिणंदउ ॥३०॥
इति श्रीविधिपक्षालंकार श्रीखरतर गुरुणा गुर्वावली समाप्ता ॥

नोट—श्रीजिनकृपाचन्द्र सूरि ज्ञानभण्डारस्थ गुटकेमें २६ वीं गाथा अतिरिक्त मिली है।

ज्ञात होता है उस प्रतिके लिखने के समय जिनचन्द्रसूरि विद्यमान होगे अतः यह १ गाथा उसीमें वृद्धि कर दी है।

१ छंद गलवर गत्यइ

श्रीभावप्रभसूरि गीतम्

समरवि सुहगुरु पाय महे, ज(सु) वरसणि मनु उल्लसइ ए।
युगीयइ मुणिवर राय महे, कलियुगे जसु महिमा वसइ ए ॥१॥
निरमल निय जस पूरि महे चन्दन वन जिम महिमहइ ए।
श्रीय भावप्रभसूरि महे, श्रीयलवरतगछे गहगहइ ए ॥ २॥
अमिय समाणीय वाणि महे नवरस देसन जो करइ ए।
समय विवेक सुजाणि महे, समकित रयण सो मनि धरइ ए ॥३॥
पंच महव्वयभार महे, पंच विषय परि गंजणू ए।
पालय पंच आचार महे, पंचमि (ध्यान) भंजणू ए ॥ ४ ॥
भंजणु मोह नरिंदा महे, मयणु महाभडो वसि कीउ ए।
वसि कीउ कोहु गयंदो महे, मानु पंचाननु मन (स?)कीउ ए ॥५॥
वसकीउ दुखिउ कषाय महे छोम भुयंगमु निगजणिउ ए।
निजणिउ मरि रागाय महे, भयछ सुरा सुरे सेवीयउ ए ॥ ६ ॥
सेवइ जसु पय माय महे, पंकय मधूमर गण जगइ ए।
धन धनु जं नरनारि महे, निम नितु प्रभु गुण गण थुणइ ए ॥७॥
मंगल छठि विलास महे पूरइ ए वंछिय सुहकरू ए।
निरुवम उपसम वास महे, रंजण भविमण मुणिवरू ए ॥ ८ ॥
नव रस देसण वाणि महे, घन जिम गाजइ ए गुहिर सर।
भयण दवानल वारि महे नासिहिं जसि वरिसइ सुरसर ॥ ९ ॥
विहरइ सुविहिदी आचार महे, काम कुसुम जसु निरमलउ ए।

माल्हूण साख विसाल महे, छुपिंग कुलि महियलि तिलउ ए ॥१०॥
लबधिहिं गोयम सामि महे, सीयलिहिं साधु सुदरसनु ए ।
सम्मइ साह मल्हार महे, राजल देवि य नंदनु ए ॥११॥
निरमल गुण भंडारो महे, श्रीय जिनराजसूरे सीस वरो ।
संयम सिरि उरि हारो महे, सागरचन्द्रसूरे पाटु धरो ॥१२॥
सुमणउ-सुरतरु तेम महे, सुहगुरु रसो भरि पूरीउ ए ।
गुणमणि रयणिहिं जेम महे, खउजिम मंजरि अंकूरीउ ए ॥१३॥
दिणियर जिम सविकासो महे, मस खीयरविगुण विसतरीय ।
जगि जयवंतउ सूरे महे, पूरव गुरु सवि उद्धरी ए ॥१४॥
उद्धरिय धीरिम मे(रु) गिरि जिम, चन्द्रगछि मुख मंडणो ।
पंच समतिहिं त्रिहुं गुपिति गुपतउ, दुरित भवभय खंडणो ।
सिरि भावरिय सुवर कांति दिणियर, भविक कमल सविकासणो ।
जयवंतु श्रीय गुरु माणमसूरि, जाम ससि गयणंगणो ॥१५॥

॥ इति श्रीगदाधावाणां गीतम् ॥

श्रीरागि डाल ॥ छ ॥

श्रीकल्याणचन्द्रगणि कृत

श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि चउपइ

सरसति सरस वयण द देवि, जिम गुरु गुण बोलिउं संखेवि ।
पीअइ अमीय रसायण बिंदु, तउवि सरीरिइ हुइ गुण वृन्द ॥१॥
महि मंडण धमडउ धम रिद्धि नयर महेवउ नर बहु बुद्धि ॥
ओसवंस अति धण तिणि ठाम, वसइ सुरदम जिम धणठाण ॥२॥
तहि श्री संखवाल गुणवंत बहुधनवंत साखा धनवंत ।
कोचर साह तणइ संतान, आपमल देपा बहु मानि ॥ ३ ॥
सीखिहिं सीता रुपइ रंभ दान देइ न करइ मनि दंभ ॥
तप धरणी देवलदे नारि, पुत्र रयण तिणि जन्मा च्यारि ॥४॥
लखउ माल्हउ साह सुरंग, केल्हउ देल्हउ पंचम चंग ॥
धनद जेम धनवंत अनेक, धर्मकाजि जसु मति सविवेक ॥५॥
चउथइ गुणपचासइ अम्मु, दिक्खिउ देल्ह जेसलुर रंगु ॥
श्रीजिनवर्द्धन सूरिहिं सार, कीर्तिराज सीलाविय सुपात्र ॥६॥
दिय वाणारीय पद सतरइ, पाठक पद असीयइ कयउ ॥
तयणंतरि आयरिइ मंतु, जोगि जाणि गुरि दीधउ मंतु ॥७॥
लखउ केल्हउ करइ विस्तारि, उच्छव जेसलमेर मंझारि ॥
श्रीजिनभद्रसूरि सुपाणवाहु, किया श्री कीर्तिरयण सूरिंद ॥८॥
वादी मइगल ता गइ मडइ, जां गुरु केसरि दृष्टि मन पडइ ॥
मन किरि भमइ गुरु वाक्क चोक, वादी मूकइ मांन त्रिलोक ॥९॥

जसि मस्तकि गुरु निय कर ठवइ तइ घरि नवनिद्धि संपद हुवइ।
सुह गुरु जेह नमावइ सीस, त पहिरइ हुइ बिस्वा वीस ॥१०॥
जिहां जिहा गुणवंता रहइ, तिहां श्रावक रिधिहि गहगहइ ॥
गाम नगर त भविचल खेम, छवंछित भविमइ एम ॥११॥
पनरह पणवीसइ वरसंमि आसाढा वदि विण पंचमि।
पंचवीस दिण अणसण पालि, सरगि पहुंता पाव पखालि ॥१२॥
रविबिंब झगमगि झिगमिग करइ, मवइ तेज तनु अणसण धरइ।
अतिसय जिम तिर्थंकरतणा, गुरु अनुभवि हुया अतिघणा ॥१३॥
सुह गुरु अणसण सीधउं जाम, वीर विहारे देवहि ताम।
सउ दर्सल दीवो पुण कीप, अतिम किमाडिहि लोक प्रसिद्धि ॥१४॥
जिम उदयाचलि उगउ भाणु, तिमपूरव दिसि प्रगट प्रमाणु।
थापिउ थूभ मुनिमंडलभाण, श्री वीरमपुर उत्तम ठाणि ॥१५॥
श्रीखरतर गणि सुरतर राय जहि सिरि किर्तिरत्ण सूरि पाय।
आराहउ भवियणभगतिचित्ति त मण वंछित पामइ झत्ति ॥१६॥
चिन्तामणि जिम पूरइ आस पूजइ जे मनि धरिय उल्लास।
तिणि कारणि गुरु चरण त्रिकाल सेवइ नर नारि भूपाल ॥१७॥
श्री कीर्तिरतन सूरि चउपइ पढइ गुणइ जे निश्चल थइ।
मणइ गुणइ सिद्धि काम सरंति "कल्याणचन्द्र"गणि मगतिभणंति ॥१८॥
॥ इति श्रीकीर्तिरत्नसूरि चउपइ ॥

सं० १६३७ वर्षे शाके १५८२ प्र ज्येष्ठ मास शुक्लपक्षे पेष्टा तिथौ गुरुवासरे। श्रीमहिमावती मध्ये श्रीवृहत्खरतर गच्छे श्रीजिन चन्द्रसूरि विजयराज्ये संखवाल गोत्रीय संघभार धुरन्धर साह्मलदान त्पुत्रसा० धन्ना तत्पुत्रसा० वरसिंघ तत्पुत्र सा० कुंवरा तत्पुत्र सा मखा तत्पुत्र सा सुरताण तत्पुत्रसा खेमसीह मातृ साह वांधी पुस्तिका कराविता पुत्र पुत्रादि चिरनंदतात्। शुभं भवतु।

[श्रीपूज्यजीके संग्रहस्य गुटकाके पृ० ४२ से]

श्रीभक्तिलाभोपाध्याय कृत

॥ श्रीजिनहंससूरि गुरुगीतम् ॥

सरसति मति दिउ अम्ह अतिघणी सरस सुकोमल वाणि
श्रीजिनहंससूरिगुरुगाइसिउं मन धीअउ गुण जाणि ॥१॥सर०
अति अमीयवियउ मति दुध सरसति, सुगुरु बंदण जाइइ ।
अहठति श्रीजिनहंससूरि गुरु, भाव भगतिहिं गाईइ ॥२॥
पाट करमउ स्नान खेची (पिरोजी) कर, करमसिंह कराविय ।
गुरु ठामि ठामि विहार करता आगरा सब आवए ॥३॥
सब हरखित डुंगरसी घणो, बंधव मजी पामदत्त ।
श्रीमाल चतुर नर जाणियइ, खरतर गुरुगुण रत्त ॥४॥
तब हरखित डुंगरसी करावइ, सुगुरु पइसारा वणी ।
बहु परें मजाई सहु सुगच्छो, वाच म छे अति घणी ॥५॥
पाखरिया हाथी पातसाह सुगुरु साम्हो मंचरइ ।
गुरु पाय हठइ अमीपानइ पत्तोसा बहु पाथरइ ॥६॥
पातसाह साहमो आविउ, वंदर खान वजीर ।
लोक मिलिया पार न जाणियइ मोरइ काच कपूर ॥७॥
बाबीया साहमा पातसाह सब बाजा बाजग ।
गण गरणाइ अबरि संद बाजइ, मसरिअ अंबर गाजए ॥८॥
मोति बधावइ गीत गावइ, पुण्य कलस धरइ सिर ।
सिंगारसारा सब नारी करइ उच्छव घर घरे ॥९॥

दर्पंका सहित तंबोल दियइ, बेंचित वित्त अपार।
इम पइसारो विस्तार कीयो, वरतिओ जय जयकार ॥१०॥
तंबोल दियन सुजस लीयउ, इसी बात घणी सुणी।
आसिकन्दर पातशाह, वडइ दिल्लीनउ धणी ॥११॥
जिसी जिनप्रभसूरि किरामति पातशाह मणियइ।
पणी सहू लोकमांही, धर्मु धर्मु वखाणीयइ ॥१२॥
दीवान महि तेडावीया कीधी पूज बहुत।
देखाडी किरामती आपणि गुरुया गुरु गुणवंत ॥१३॥
दीवान माहे घोर तप तड, आप सुगुरु मन धरइ।
जिनदत्तसूरि पसायइ चौसठि योगिनी सानिध करइ ॥१४॥
श्रीसिकंदर चित्त मानियउ, किरामत कांइ कही।
पांचसइ बंदी बाकरसी, छोडव्या इण गुरु सही ॥१५॥
बंदि छोडि विरुद मोटउ हुयउ, तप जप शील प्रमाणि
गुरु मोटा करम तणा धणी जाणिइ इणइ इहनाणि ॥१६॥
बंदि छोडि मोटउ विरुदधारउ, पातशाहे परखिया।
श्रीपासनाह जिणंद तुट्ठउ, संघ सकलइ हरखीया ॥१७॥
श्रीमरिश्राम तणाय बोलइ भगति आणी मनि घणी।
श्रीजिणहंससूरि चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिरधणी ॥१८॥

इति गुरु गीतम्

(ॐ)

श्री पद्ममन्दिर कवि कृत

॥ श्री देवतिलकोपाध्याय चौपई ॥

पास जिणसर पय नमु निरुपम कमला कंद ।
सुगुरु गुण गाता पामियइ, अविहड सुख आणंद ॥१॥
भारहवास अओध्या ठाम, पाइड गिरि बहुपय अभिराम ।
चवदहमउ चम्माल प्रसिद्ध, निवसइ लोक घणा सुसमृद्ध ॥२॥
ओसवाल भणसाली वंश, निरमल उभय पक्ष ।
करमचंद सुहकरम निवास, तसुघरि जनम्या गुणह निवास ॥३॥
तासु घरणि सोहग खाणिमइ, सील लील उपम आणीयइ ।
पनरहसइ तत्रीसइ वास तसु घरि जनम्या गुणह निवास ॥४॥
दीपउ ओमी दद्यो नाम अनुक्रमि वाधइ गुण अभिराम ।
रामति रमतउ अति सुकमाल, माइ ताइ मन मोहइ बाल ॥५॥
उगणात्रइ संजम आदरि पाप आग अगस्य परिहरी ।
समीप सयल सिद्धांत सार छासठइ पद सह्यो उदार ॥६॥
भादेवतिलक पाठक गहगहइ, महियलि महिमा सहुको कहइ ।
देस विदेसे करी विहार भवियण नइ कीधा उपगार ॥७॥
इग्नयल समरस ससि वास सय पंचमो मिगसर मास ।
करि अणसण आराहण ठग, पाम्यउ अनिमिष तणउ विमाण ॥८॥

जेसलमेर थुंभ आणियइ प्रगट प्रभाव पुहवि माणीयइ ।
वरसण वोठइ भवि उछाह समरणि सवि टालइ दुखदाह ॥९॥
स्वास खास जर प्रमुहज रोग नाम लियइ नवि आए सोग ।
अधिक प्रताप सलहियइ आज जो प्रणमइ तसु सारइ काज ॥१०॥
थाल विसाल थापना करी, निरमल नेवज आगलि धरी ।
केसरि चन्दन धूप रसाल, विरची चाढइ कुसुमह माल ॥११॥
म्रगमद मेलि अगर घनसार, भोग करावइ भगतिहिं च्यार ।
करि साथियउ अखंड तंदुल्ल, सुगुणगान कीजइ तिह वल्ल ॥१२॥
चित्त तणी सवि चिंता टलइ, मनह मनोरथ ततखिण फलइ ।
खरतरगच्छनायकि सखि समर, माणिकलोक करिजोडी नमइ ॥१३॥
गुरु श्रीदेवतिलक पसाय प्रणम्यइ पामइ सुह समवाय ।
अरि करि केसरि विसहर चोर, समर्यइ असिव निवारइ घोर ॥१४॥
इम चउपई सदा जे गुणइ, उठि प्रभाति सुगुरु गुण थुणइ ।
कहइ "पद्ममंदिर" मनशुद्धि, तसु थाए सुख संपति रिद्धि ॥१५॥

मुनि हर्षकुल कृत

महो० श्रीपुण्यसागर गुरु गीतम्

राग:---सूहव

श्रीजगगुरु पय वंदीयइ, सारद लागइ पसायजी।
पंचइंद्रिय जिणि वशि कीय ते गायसु मुणिरायजी ॥१॥
मन शुद्धि भवियण भावियइ श्रीपुण्यसागर उवझाउ जी।
पाळइ शील सुदृढ सदा मन वंछित सुखदाउ जी ॥
विमल वदन जसु दीपतउ, जिम पूनम नउ चंद जी।
मधुर अमृत रस पीवता थाइ परमाणन्द जी ॥मन०॥२॥
दस विधि साधु धरम धरइ उपशम रस भण्डारो जी।
खमा खड्ग करि जिन हण्यउ दुर्द्धर मदन विकारो जी ॥३॥मन॥
ज्ञान क्रिया गुणि सोहतउ जसु पणमइ नरवर राउ जी।
नामइ नव निधि संपजइ, सेवइ मुनिवर पाय जी ॥४॥म०॥
धन उत्तम दे उरि धरयउ, उदयसिंह कुलि दिनकार जी।
जिन शासन मांहि परगडउ, सुविहित गच्छ सिणगार जी ॥५॥म०॥
श्रीजिनहंस सूरिसरइ सइ हथि दीखिय सीस जी।
हरषे "हरष कुल" इम भणइ गुरु प्रतपउ कोडि वरीस जी ॥६॥म०॥

श्री जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास

दोहा —राग असावरी

जिनवर जग गुरु मन धरि, गोयम गुरु पणमेसु ।
सरस्वती सद्गुरु सानिधइ, श्री गुरु रास रचेसु ॥ १ ॥
भाव सुणो जिम अन सुकइ त तिम कहिस जगीस ।
अधिको ओछो जो हुवइ कोप(प?) करो मत रीस ॥ २ ॥
महावीर पाटइ प्रगट श्री सोहम गणधार ।
तास पाटि चउसट्ठिमइ, गच्छ खरतर जयकार ॥ ३ ॥
संवत सोल बारोत्तरइ, जैसलमेरु मंझार ।
श्री जिन माणिक सूरि नै थापिउ पाट उदार ॥ ४ ॥
मानियो राउल मालदे गुण गिरुओ गणधार ।
महीयलि जसु यश निरमलो कोय न लोपइ कार ॥ ५ ॥
तेजि तपइ जिम दिनमणि श्री जिनचन्द्र सूरीश ।
सुरपति नरपति मानवी सेव करे निशदीस ॥ ॥
पुण्यभाग जगि सुरतरू, सूरि सिरोमणि एह ।
श्री जिन शासनि चिरजियो शील सुनिम्मल देह ॥ ७ ॥
पूरब पाटण पामियो खरतर बिरुद अभंग ।
संवत सोल सनोतर ऊमवाछव गुरू रंगि ॥ ८ ॥
साधु विहार विहरतां आया गुरु गुजराति ।
करइ चउमासो पाटणे, उच्छव अधिक विख्यात ॥ ६ ॥

युगप्रधान जिनचन्द्र सूरिजीकी हस्तलिपि

(सं १६११ लि० कर्म
स्तव वृत्तिका अन्तिम पत्र)

चालि राग सामेरी

उच्छव अधिक विख्यात, महीपति मोटा अवदात ।
पाठक वाचक परिवार, जूयाधिपति जयकार ॥ १० ॥
इणि अवसरि श्रावक मोटी मत आणउ को नर खोटी ।
कुमति न कीधउ मन्थ, ते दुरगति करउ पंथ ॥ ११ ॥
हठवाद घणा तिण कीधा, संघ पाटण नइ जसलीधा ।
कुमति नउ मोडिउ मांन जग मांहि वधारिउ वांन ॥ १२ ॥
पेख्यो इणि मारग भासइ, गुरु नामइ कुमति नासइ ।
पूज्य पाटण थय पद पायउ, मोतीड़ नारि वधायउ ॥ १३ ॥
गामागर पुरि विहरंता गुरु अहमदावाद पहुंता ।
तिहां संघ चतुर्विध वंदइ, गुरु दरसण करि चिर नंदइ ॥ १४ ॥
उच्छव आडम्बर कीधउ, धन खरची लाहउ लीधउ ।
गुरु भांजी भाम अनन्त चउमासि करइ गुणवन्त ॥ १५ ॥
चउमासि तणइ परमाणि सुद्ध गुरु पहुंता खंभाति ।
चउमासि करइ गुरुराज, श्री संघ तणइ हितकाज ॥ १६ ॥
खरतर गच्छ गयण दिणंद, अभयादिम देव मुणिंद ।
प्रगट्या जिण थंभण पास आगइ आविसइ अरदास ॥ १७ ॥
श्री जिनचन्द्र सूरिन्द भटयउ प्रभु पास जिणन्द ।
श्री जिन कुशल सुरीस वंद्या मन धरि जगीस ॥ १८ ॥
हिव अहमदावाद सुरम्म जोगीनाथ साह सुधम्म ।
शत्रुंजय भटेवारंगि वांद्या गुरु वेगि सुचंगि ॥ १९ ॥

मेली सहुसंघ गुरु साथि, परघल खरचइ निज माथि ।
　　चाल्या भेटण गिरिराज, संघपति सोमजी सिरताज ॥ २० ॥

राग मल्हार दोहा

पूर्व पच्छिम उत्तर दखिण चिहुं दिसि जाणि ।
　　संघ चालिउ सेत्रुंज भणी प्रगटी महीयलि आंणि ॥ २१ ॥
विक्रमपुर मण्डोवरउ सिन्धु जेसलमेर ।
　　सीरोही जालोर गढ, मोरठि चांपानेर ॥ २२ ॥
संघ अनेक तिहां आविया, भेटण विमल गिरिन्द ।
　　कोकलणी संख्या नहीं, साथि गुरु जिनचन्द ॥ २३ ॥
चोर चरड़ अरि भय हरी, केती आवि जिणंद ।
　　कुशले निज घर आविया मानिय श्री जिनचंद ॥ २४ ॥
पूज्य चउमासो सूरतइ, पर्युषा वर्या काछि ।
　　संघ सकल हरखित थयउ, फल्यो मनोरथ माछि ॥ २५ ॥
वली चौमासो गुरु कीयउ, अहमदाबादि रसाल ।
　　अवर चौमासो पाटणे, कीयो मुनि भूपाल ॥ २६ ॥
अनुक्रमि आव्या खम्भपुरि भेटण पास जिणंद ।
　　रूप करइ आदर घणउ करउ चउमासि मुणिंद ॥ २७ ॥

राग धन्याश्री० ढाल उलालानी

हिव विक्रमपुर ठाम राजा रायसिंह नाम ।
　　कमचन्द तसु परधान मानउ बुद्धिनिधान ॥ २८ ॥
आस मही वंश हीर बच्छावत बड़ वीर ।
　　रामउ करण समान तजि उपम जिम भांण ॥ २९ ॥

सुन्दर मच्छ सोभागो, खरतर गच्छ गुरु रागी ।
बड़ भागी पलकन्त, छपु संघव असवन्त ॥ ३० ॥
श्रेणिक मगध कुमार, तासु तणइ अवतार ।
सुहणो मतिवन्त कहियइ, तसु गुण पार न लहियइ ॥ ३१ ॥
पिसुण तणइ घण फेर, मुक्यो बीकम नयर ।
लाहोरि नयर उच्छाहि, सल्यो श्री पातिशाह ॥ ३२ ॥
मोटउ भूपति अकबर, करम करइ तसु मरभर ।
चिहुं खण्ड वरसिय नाम, सहु नर राय रांग ॥ ३३ ॥
मरि गमण भंजन सिंह, महीयलि मसु जस सीह ।
धरम करम गुण जाण साचड ए सुरताण ॥ ३४ ॥
बुद्धि महाद्रुधि माणी भोजी निज मनि आणी ।
कर्मचन्द तहीय पामि रातइ मन उल्लासि ॥ ३५ ॥
मान महुत तसु दीयउ, मन्त्रि सिरोमणि कीयउ ।
कर्मचन्द शाहि सु प्रीत चालइ उत्तम रीति ॥ ३६ ॥
मीर मलक खोजा खांन दीजइ राय राणा मांन ।
मिलीया मच्छ दीवाणि साहिब बोलइ मुख वाणि ॥ ३७ ॥
मुंहता कहि तुम मर्म देव कवण गुरु धर्म ।
मंत्रउ मुझ मन भ्रन्ति निज मनि करिय एकन्ति ॥ ३८ ॥

राग सोरठी दोहा

कल्लउ मुहतउ विनवइ, सुणि साहिब मुझ बात ।
देव दया पर जीव नै, ते अरिहंत विख्यात ॥ ३९ ॥

मय मान माया तजी, नहीं जसु लोभ लगार ।
उपशम रस में झीलता, ते सुगुरु गुरु अणगार ॥ ४० ॥
जसु मित्र बोय मारिया, दान शीयल तप भाव ।
जीव जतन जिहां कीजिये धर्मह आणि स्वभाव ॥ ४१ ॥
मई जाण्या इस सदगुरु, कुगु तेरह गुरु पीर ।
मन्त्रि मणइ साहिब सुणउ, इम खरतर गुरु धीर ॥ ४२ ॥
जिनदत्त सूरि प्रगट हुइ, श्री जिन कुशल मुणिन्द ।
तसु अनुक्रमि हुइ सुगण नर श्रीजिनचन्द्र सूरिंद ॥ ४३ ॥
रूपइ मयण हराविउ, निरुपम सुन्दर देह ।
सकल विद्यानिधि आगरु गुण गण रयण सुगेह ॥ ४४ ॥
सांभलि अकबर हरखियउ, कहां हइ ते गुरु आज ।
राजनगर छई सांप्रतइ सांभलि तु महाराज ॥ ४५ ॥

राग धन्या श्री

बात सुणी ए पातिसाह, हरखियउ हीयइ अपार ।
हुकम कियो महुता भणी तेडि गुरु आज म बार ॥ ४६ ॥
मत बार आणउ सुगुरु तडण, भेजि मेरा आदमी ।
अरदास इक साहिब आगइ, करइ मुहतउ सिर नमी ॥ ४७ ॥
अब धूप गाढ़ि पाव चलिय प्रवहण कुल वासे नहीं ।
गुजराति गुरु हुइ दीठि गिरुआ आविस सकल अबसही ॥४८॥
वखतउ कहइ मुहता भणी तेडउ वसका सीस ।
हुइ आण गुरु नइ सुणीया हित करी विस्वा वीस ॥ ४९ ॥
हितकरि मूंक्या वेगि सुजाण मारुसिंह यहां भेजीय ।
जिन शाहि अकबर तासु दरसणि देखि नियमन रंजीय ॥५०॥

महिमराज वाचक सातठाणे, मुकीया लाहोर भणी ।
मुनि वग पहुंता साहि पासइ, दखि हरखिउ नरमणी ॥ ४७ ॥
साहि पूछइ वाचक भणइ, कब आवइ गुरु सोय ।
जिण दीठइ मन रंजीयइ, जास नमइ बहुलोय ॥
बहु लोय प्रणमइ जासु पयतलि, जगत्रगुरु इह भो वडा ।
तब शाहि अकबर सुगुरु तेडण, वलि मुकइ मेवडा ॥
चउमासि नयरी मांहि आवइ, चालवइ नवि गुरु तणउ ।
तब कहिइ अकबर सुणउ मंत्री लाभ थाइ तसु घणउ ॥४८॥
पातशाहि जब भखिया, सुह गुरु तेडण काजि ।
रंगस कुछ ते नवि करइ, गइ गहीयउ गच्छराज ॥
गच्छराज दरसणि वेगि देखि, देखि हियडउ हींस ए ।
अति हर्ष आणी साहि भणवे बार बार सलीम ए ॥
सुरताण श्रीजी मंत्रीश्रीजी, लेख सुन्दर पठाविया ।
सिर नामी ते जब कहइ गुरु कुं, शाहि मंत्री बोलाविया ॥४९॥
सुह गुरु कागल वांचिया, निज मन करइ विचार ।
हिव सुभ आवइ तिहां सही, संघ मिलिउ तिण वार ॥
तिणवार मिलियउ संघ सघलो जस मन आलोच ए ।
चउमास आवी देश मछ्याड, सुगुरु कहइ किम पहुंच ए ॥
सम्भावि श्रीसंघ खंभपुर थी, सुगुरु निज मन दृढ सही ।
मुनिवेग चाल्या सुद नवमी, आम वर कारण सही ॥५०॥

राग सामेरी दूहा—

सुन्दर शकुन हुआ बहु देता कहुं तम नाम ।
मन मनोरथ जिण फलइ, सीझइ वंछित काम ॥५१॥

क्रोध मान माया तजी, नहीं जसु लोभ लगार ।
उपसम रस में झीलता, ते शुभ गुरु अणगार ॥ ४० ॥
शत्रु मित्र दोय सारिखा, दान शीयल तप भाव ।
जीव जतन जिहां कीजिय धर्मह आणि स्वभाव ॥ ४१ ॥
मई आण्या हर्ई वहुत गुरु, कुण तेरह गुरु पीर ।
मन्त्रि भणइ साहिब सुणउ, हम खरतर गुरु पीर ॥ ४२ ॥
जिनदत्त सूरि प्रमुख हूए, श्री जिन कुशल मुणिन्द ।
तसु अनुक्रमि हूउ सुगण नर श्रीजिनचन्द्र सुरिंद ॥ ४३ ॥
रूपइ मयण हरावित, निरुपम सुन्दर देह ।
सकल विद्यानिधि आगरु, गुण गण रयण सुगेह ॥ ४४ ॥
मंत्रवि अकबर हरखियउ कहां हइ ते गुरु आज ।
राजनगर छई सांभलउ साभलि तु महाराज ॥ ४५ ॥

राग धन्या श्री

नाम सुणी ए पातिसाह, हरखियउ हीयइ अपार ।
हुकम कियो मन्त्री भणी तेडि गुरु आय म वार ॥ ४६ ॥
मत वार लावउ सुगुरु तेडण भक्ति मेरा आदमी ।
अरदास इक साहिब आगइ, करइ मुहतउ सिर नमी ॥ ४७ ॥
अब धूप गाढ़ि पाव चलिम, प्रवहण कुउ बइसे नहीं ।
गुजराति गुरु हइ बीचि गिरुआ नाविन सकइ मवसहो ॥४८॥
बलन्त बहर सुहता भणी तडउ वसका सीस ।
हुउ आण गुरु मइ सुकीया दिउ करी बिस्वा बीस ॥ ४९ ॥
हिनकरि मूंक्या बेगि दुरजण मानसिंह इहां समीय ।
जिम साहि अकबर तासु दरसणि, वेगि नियमत रंजीय ॥५०॥

महिमराज वाचक सातठाणे सुक्लीया लाहोर भणी ।
मुनि वेग पहुंता साहि पासइ, देखि हरखिउ नरमणी ॥ ४७ ॥
साहि पूछइ वाचक प्रतई, कब आवइ गुरु सोय ।
जिण दीठइ मन रंजीय, खास नमइ बहु लोय ॥
बहु लोय प्रणमइ जासु पयकमलि, जगत्रगुरु इह मो मया ।
तब साहि अकबर सुगुरु तेडण, वेगि मुक्कइ मेवड़ा ॥
चउमासि मयरी मघही आवइ, चालवउ नवि गुरु तणउ ।
तब कहिइ अकबर मुसा मंत्री खास पर्डगउ तसु पणउ ॥४८॥
पतसाहि अम भखिया, सुह गुरु तेडण काजि ।
संजम दुखउ ते नवि करइ, गइ गहीयउ गच्छराज ॥
गच्छराज दरसणि वेगि देखि, हजि हियडउ हींस ए ।
अति हर्ष आणी साहि जपते वार वार सधीस ए ॥
सुरताण मोजी मंत्रवीमी खेम सुमइ पठाविया ।
सिर नामी ते अम भइइ गुरु कुं शाहि मंत्री आख्यिया ॥४९॥
सुह गुरु कागल वांचिया, निज मन करइ विचार ।
दिन सुभ जाणउ तिहां थकी संघ मिलिउ तिण वार ॥
तिणवार मिलियउ संघ सघलो, चरम मन आलोच ए ।
चउमास भारी दुःख अल्पाउ सुगुरु कहउ किम पहुंच ए ॥
समझावि श्रीसंघ ग्रंमगुर था सुगुरु निज मन दृढ़ मन्ना ।
मुनिवेग चाल्या शुद्ध नवमी खास वर कारण बद्दी ॥५०॥

राग मामेरी दूहा—

सुन्दर शकुन हुआ घणा कहुं तस नाम ।
मन मनोरथ जिण चन्द्र सीझइ वंछित काम ॥५१॥

यशो वछमदी बछइ, इरखइ संघ रसाल ।
 भाग्यबली जिणचंद गुरु, आणइ बाल गोपाल ॥५२॥
तेरसि पूज्य पधारिया अमदावाद मंझार ।
 पइसारउ करि जस लीयउ संघ मल्यो सुविचार ॥५३॥
हिव चउमासो आवियउ, किम हुइ साधु विहार ।
 गुरु मालोचइ संघ सुं, भावइ वात विचार ॥५४॥
तिण अवसरि फुरमाणि वलि, आव्या दोय अपार ।
 घणुं २ मुहतइ लिख्यो, मत लावउ तिहां वार ॥५५॥
जय कारण मत गिणउ लोक तणउ अपवाद ।
 निश्चय बहिला आवज्यो जिम थाइ असवाद ॥५६॥
गुरु कारण जांणी करी होस्यइ लाभ अनंत ।
 संघ कहइ हिव जायवउ, कोय करउ मत खंत ॥५७॥

ढाल गौडी (निंबीयानी) (आंकणी)

परम सोभागी सद्गुरु वंदियइ, श्रीजिनचंद सूरिन्दो जी ।
 मान दीयइ जस अकबर भूपति, चरण नमइ नरइन्दो जी ॥५८॥
संघ वंदावी गुरुजी पांगुरया, आया महसाणे गामो जी ।
 सिधपुर पहुंता खरतर गच्छ धणी साद वनो तिण ठामो जी ॥
गुरु आडंबर पइसारो कियउ, खरचिउ गरथ अपारो जी ।
 संघ पाटण नउ वेगि पधारियउ, गुरुवंदन अधिकारो जी ॥५९॥
पुज्य पाटण पुरि पहुंता शुभ दिनइ, संघ सकल उच्छाहो जी ।
संघ पाटण मइ गुरु वांदी वलिउ, सातिण करिस्यइ लाहो जी ॥६०॥

महुर बधाउ आविउ सिवपुरि, हरखिउ संघ सुजाणो जी।
पाल्हणपुर श्रीपूज्य पधारिया, जाणिउ राय सुरताणो जी ॥६१॥ प०
संघ सही ने रावजी इम भणइ, आपुं छुं असवारो जी।
तेहि आवउ वेगि मुनिवरु, मत लावउ तुम्ह वारो जी ॥६२॥
श्रीसंघ राय जण पाल्हणपुरि जइ, तही आवइ रंगो जी।
गामागर पुर सुहगुरु विहरता, करता धर्म सुचंगो जी ॥६३॥

राग देशाख ढाल (इकवीस ढालियानी)

गीराह्या रे आवाजउ गुरु नी सही, नर-नारी रे आवइ साम्हा उमही।
हरि कर रथ रे पायक बहुला विस्तरइ,
कोणी(क) जिम रे गुरु वंदन संघ संचरइ ॥
संचरइ वर नीसाण नेजा, मधुर मादल बज्ज ए।
पंच शब्द झल्लरि संख सुस्वर जाणि अंबर गज्ज ए ॥
भर भरइ भरी थालि नफेरी सुहव सिर पहकिज ए।
सुर असुर नर वर नारि किन्नर देखि दरसण रंज ए ॥६४॥
वर सूहव रे पूठि थकी गुण गावती भरि थाली रे मुत्ताफल बधावती।
जय २ रव रे कविजन जणसुरा उचरइ बरनगरी रे मांहि इम गुरु संचरइ
संचरइ श्रावक साधु सायर, जाति जिन अभिनंदिया।
साबलगिरि श्रीसंघ आवइ, उच्छव कर गुरु वंदिया।
राय श्रीसुरताण आवी वंदि गुरु पय वीनवइ।
सुझ कृपा कीजइ वाच दीजइ, करउ पजुसण दिवइ ॥६५॥
रंग जाणि रे आपइ राजा सेघ भइ, पजुसण रे करइ पूज्य संघ सुभ मनइ।
अट्ठाही रे पाली जीव दया खरी, जिनमंदिर रे पूजइ श्रावक हित धरी।

हितकरिय कहइ गुरु सुणउ नरपति, जीव हिंसा टालीयइ ॥
जिण पर्व पूनिम दिवस मंइ मुझ, अभय आखिउ पालीयइ।
गुरु संघ श्रीआबाबपुर नइ वेगि पहुंता पारणइ ॥
अति उच्छव किपइ साह वल्लइ सुजस लीघो तिणि दिणइ ॥६६॥
मंत्री कर्मचन्द रे करि अरदास सुसाहिनइ।
फुरमाण्या रे मूक्या हुइ अप पूज्य नै ॥
चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजोन
पण जिण इक रे मडइ बार म लगाइमो।
म लगाडिमो तिहां वार काइ, उछति आवी अति घणी ॥
पारणइ पूज्य विहार कीधउ, आयवा लाहुर भणी।
श्रीसंघ चतविध सुगुरु साथइ, पातिसाही जण वली ॥
गोवर्ध भाजक भाट चारण लिया गुणियन मन रली ॥६७॥
दिन केहरे गाम सराणइ आणियइ, ममराणी रे दीठइयरंगि वधाविया
संघ आवी रे विक्रमपुर नो कमही।
गुरु वंदारे महाजन मजकइ गहगही ॥
गहि गहीय ठाहिणा संघ कीधी नयर ढूणाडइ गयो।
श्रीसंघ जेसलमेरु नो तिहां वंदी गुरु हरखित थयो।
रोहीठ नगरइ वरुउ बहु करि पूज्य श्री पधराविया।
साह विरद मेरउ सुजम आपा, राग पटु वधराविया ॥ ६८॥
संघ मोटउ रे जोधपुरउ तिहां आवीयउ,
करि साहिज रे सामनि सोम चढाविया।
इम चोबो रे, मांत्री करी बिहुं वयों।

तिथि बारस र सुक्र ठाकुर जस वर्यो ।
जस वर्यो संघइ नयर पाटणी, आडंबर गुरु मंडियउ ।
पूज्य वांदिया विहा नांदि मांडी, दानि दालिद्र खंडियउ ।
लंबिया मामई छाम आयो सूरि सोभित निरखिया ।
जिनराज मंदिर दखो सुन्दर, वंदि श्रावक हरखिया ॥ ६६ ॥
चौमासइ र, आनन्द पूज्य पधारीए ।
पइसारउ र प्रगट कीयउ कट्टारीए ।
अइसारणि र, आवे बाजा धाभिया ।
गम थयो र, दान अमम संघ गाभिया ॥
गाभियउ जिनचंद्रसूरि गच्छपति वोर शासनि ए वड़ो ।
कलिकाल गोतम स्वामि समवड़, नहीय को ए जेवड़उ ।
विहरता सुनिवर वेगि आवइ नयर मोन्हइ मेड़तइ ।
परसरइ आया नयर केरे सहइ संघ सुहणा प्रगइ ॥ ७० ॥

॥ राग गौडी धन्या श्री ॥

कर्मचन्द्र कुल सागर उदया शुभ दोय चन्द ।
भागचन्द मंत्रीसर, बाधव लिखमीचन्द ।
इम गय रह पायक, मंत्री बहु जन वृन्द ।
करि सबल दिवाजइ, वंदइ श्री जिनचन्द ॥ ७१ ॥
पंच शब्द रुवारि, बाजइ ढोल नीसाण ।
मंगियण जण गावइ, गुरु गुण मधुरि वाण ।
निहां मिलीयो महाजन, दीजइ फोफल दान ।
सुन्दरी सुकलीणी सूहव करइ गुण गान ॥ ७२ ॥

कह्यो वछ्छवी वच्छ, हरखइ सघ रसाल ।
मारग्मच्छी जिणचंद गुरु, मागइ बाल गोपाल ॥५२॥
तरसि पूज्य पधारिया अमदावाद मंझार ।
पइसारउ करि बस छीयउ सघ मल्यो सुविचार ॥५३॥
हिव चउमासो आवियउ, किम हुइ साधु विहार ।
गुरु आलोचइ संघ सुं, मावइ वात विचार ॥५४॥
तिण अवसरि फुरमाणि वलि, आव्या दोय अपार ।
मगु २ सुवइ लिख्यो, मत लावउ तिहां वार ॥५५॥
वरा कारण मत गिणउ, लोक वणउ अपवाद ।
निश्चय वहिला आवज्यो जिम थाइ जसवाद ॥५६॥
गुरु कारण जाणी करी होस्यइ लाभ असंख ।
संघ कहइ हिव आवयउ, कोय करउ मत कंख ॥५७॥

ढाल गौडी (निंदीयानी) (आंकणी)

परम सोभागी सहगुरु वंदियइ, श्रीजिनचंद सुरिन्दो जी ।
मान दीयइ जस अकबर भूपति, चरण नमइ नरवृन्दो जी ॥५८॥
संघ वंदावी गुरुजी पांगुरया आया महेसाण गामो जी ।
सिध्पुर पहुंता खरतर गच्छ धणी साह करो तिण ठामो जी ॥
गुरु आडंबर पइसारो कियउ, खरचिउ गरथ अपारो जी ।
संघ पाटण नउ वेगि पधारियउ, गुरुवंदन अधिकारो जी ॥५९॥
पुण्य पाल्हण पुरि पहुंता शुभ दिनइ, संघ सकल वच्छाहो जी ।
संघ पाटण मउ गुरु वांदी वलिउ, सादिम करिस्यइ उछाहो जी ॥६०॥

मड़ुर मनाइ आविउ सिवपुरि, हरखिउ संघ सुजाणो जी ।
पाल्हणपुर श्रीपूज्य पधारिया, आणिउ राय सुरताणो जी ॥६१॥पा०
संघ तड़ी ने पावजी इम मण्इ, आपुं धुं मसवारो जी ।
तेडि आवउ यति मुनिवरू, मत आवउ तुम्ह वारो जी ॥६२॥
श्रीसंघ राय मण पाल्हणपुरि जइ, तड़ी आव्या रंगो जी ।
गामागर पुर सुगुरु विहरता, करता धर्म सुचंगो जी ॥६३॥

राग देशाख ढाल (इकवीस ढालियानी)

सीरोही रे आयामउ गुरु नो सुणी नर-नारी र आवइ सामहा धसी ।
हरि कर रथ रे पायक बहुल विस्तरइ,
कोमो(क) जिम रे गुरु वंदन संघ संचरइ ॥
संचरइ बर नीसाण मेजा, मधुर मादल बज्ज ए ।
पंच शब्द सफेरि सरल सुस्वर जाणि अंबर गज्ज ए ॥
भर मरइ भेरी वलि नफेरी सुहव सिर घटकिज ए ।
सुर असुर नर बर नारि किन्नर देखि हरखय रंग ए ॥६४॥
वर सुहव रे पूठि बली गुण गावती भरि थाली र मुगताफल वधावती ।
जय२ कार रे कविजन जप मुख उच्चरइ, घर नयरी र मांहि इम गुरु संचरइ
संचरइ श्रावक साधु सायर, आदि जिन अभिनंदिया ।
आबूगिरि श्रीसंघ आयउ, उच्छव कर गुरु वंदिया ।
राय श्रीसुल्ताण आवी, वंदि गुरु पय वीनवइ ।
तुम्ह कृपा कीजइ बोल दीजइ, करउ पजुसण दिवस ॥६५॥
गढ आविउ रे आमइ राजा संघ मउ, पजुसण रे करइ पूज्य संघ सुभ मनइ ।
अठाही रे पाली जीव दया खरी जिनमंदिर र पूजइ श्रावक हितकरी ।

हितकरिय महुर गुरु सुमत नरपति, जीव हिंसा टालीयइ ॥
जिम पर्व पूनिम दिवइ मंइ तुम्ह, अभय अविचल पालीयइ।
गुरु संघ भीमावाव्पुर नइ वेगि पहुंता पारणइ॥
अति वच्छव किया साह वन्नइ सुजस लीधो तिणि जिणइ ॥६६॥
मंत्री कर्मचन्द रे करि अरदास सुसाहिनइ।
फुरमाण्या रे मूक्या तुइ जण पूज्य ने ॥
चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजो।
पण किम इक र पछइ वार म लगाड़जो।
म लगाड़िजो तिहां वार कांइ, अछति आणी अति घणी ॥
पारणइ पूज्य विहार कीधउ, आयवा लाहुर भणी।
श्रीसंघ चउविह सुगुरु साथइ, पातिसाही भण भणी॥
गांधर्व भोजक भाट चारण मिल्या गुणियन मन रली ॥६७॥
हिव देउर गाम सराणउ जाणियइ, समराणी रे आंडपरीसी वखाणियइ,
संघ आवी रे विक्रमपुर नो उमही।
गुरु वंदार महाजन मनसुद्ध गहगही ॥
गहि गहीय आविउ संघ कीधी नयर हुणाडइ गयो।
श्रीसंघ जेसलमेरु नो तिहां वंदी गुरु हरखित थयो।
रोहीठ नागइ उच्छव बहु करि, पूज्य श्री पधराविया।
साह मिरइ मेरइ सुजस आपा, दान बहु देवराविया ॥ ६८॥
संघ मोटउ रे जोधपुरउ तिहां आवीयइ,
करि आदिण रे शासनि शोभ चढ़ाविवो।
दान दीधो रे, मांडी करी विहुं दरवों।

तिथि बारस र मुंकी ठाकुर जस थयौ ।
जस थयौ संघइ नयर पाटणि, आडंबर गुरु मंडियउ ।
पूज्य वांदिया तिहां नांदि मांडी, दानि दालिद्र खंडियउ ।
खांभियां मामई खम आणी सूरि सोहिम निरखिया ।
जिनराज मंदिर देखी सुन्दर, वलि श्रावक हरखिया ॥ ६६ ॥
बीलाड़ा रे आनन्द पूज्य पधारीय ।
पासारउ र प्रगट कीयउ अट्टारीय ।
जइतारणि रे, आवे वाजा वाजिया ।
गुरु आयो र, दान बहइ संघ गाजिया ॥
गाजियउ जिनचंद्रसूरि गच्छपति वीर शासनि ए वडो ।
कलिकाल गौतम स्वामि समवड महीय को ए अवडउ ।
विहरता मुनिवर वेगि आवइ नयर मोटइ मेड़तइ ।
परसाद आया नयर केरे वडइ संघ मुहता प्रमइ ॥ ७० ॥

॥ राग गौडी धन्याश्री ॥

कर्मचन्द कुल सागर उदया सुन होय चन्द ।
भागचन्द मंत्रीसर, बाघर छिमसीचन्द ।
रूप गुण रउ पामक, मेल्हे बहु जन वृन्द ।
करि सकल शृंगार वंदइ श्री जिनचन्द ॥ ७१ ॥
पंच शब्द झल्लरि बाजइ ढोल नीशाण ।
सवियण जण गायइ, गुरु गुण मधुरि वाण ।
तिहां मिलीया महाजन, दीजइ फोफल दान ।
सुन्दरी सुलखीणी, सूहव करइ गुण गान ॥ ७२ ॥

गज हस्वर सबलउ, पूज्य पधार्या आंम ।

मन्त्री साहिण कीधी, सरची बहुल दाम ।

मारवाड़ मन पोप्या जग में राख्यो नाम ।

धन धन ए मानव, करइ जउ उत्तम काम ॥ ७३ ॥

व्रत नन्दि महोत्सव, ठाम अधिक तिण ठांण ।

तदनन्तरि पातसाहि, आव्या छे फुरमाण ।

चाल्या मंघ साथइ फल्रौधि पधि ठामि ।

श्री पास जिणेसर, ध्याइ त्रिभुवन स्वामि ॥ ७४ ॥

छिंव नगर नागोरइ रउ आया श्री गच्छराज ।

वाजित्र बहु इम गम मेलो श्री संघ साज ।

आवि पउ बंदी करइ इम उत्तम भाव ।

जउ पूज्य पधारया तउ सरिया सब काज ॥७५॥

मन्त्रीसर बांधइ मेहइ मन नइ रङ्ग ।

पइसारो सारउ कीधो अति उच्छरङ्ग ।

गुरु दरसण देखि भविया हर्ष कल्लोल ।

महीयलि जस व्यापिउ आपिउ वर तंबोल ॥७६॥

गुरु आगम तदनन्तर प्रगटिया पुन्य पडूर ।

संघ बीकानेरउ आविउ संघ मनूर ।

त्रिणसउ सिजवाला प्रवहण सउ बलि च्यार ।

धन दरसण भवियण, आवइ बर नर नारि ॥७७॥

अनुक्रम पडिहारइ राजुलदेसर गामि ।

रस मा रीणीपुर पहुता सरसर स्वामि ।

संघ उच्छव करइ आडंबर अभिराम ।
संघ आवियो वंदण, महिम नगर तिण ठाम ॥७८॥
हरखी घन बरसी श्री जिनराय विहार ।
गुरु वाणि सुणि चित्त हरखिउ संघ अपार ।
संघ वंदी श्रीमेघउ, पहुंतउ महिम मंझार ।
पाटणसरणइ बसि, कपूर हुयउ जयकार ॥७९॥
लाहुर महाजन वंदन गुरु सुजगीस ।
मनसुख ते आविउ चालो कोस चालीस
आया हापाणइ श्रीजिनचन्द सूरीस ।
नर नारी पयनमि सब करइ निसदीस ॥८०॥

राग गौड़ी दूहा—

वहि बधाइ आवियउ, कीयउ मंत्रीसर जाण ।
श्रम २ पूज्य पधारिया हापाणइ सहिठाण ॥८१॥
साभी रमता हम नो कर कंचन के काण ।
शान्तिदास सिर गरियउ, तासु दीयउ बहुमान ॥८२॥
पूज्य पधार्या जाण करि मेली सब संघात ।
पहुंता श्री गुरु वांदिवा सफल करइ निज आथ ॥८३॥
लाहौर रहइ मास चारि करइ साह नई मन्त्रीस ।
ग तुम्ह सुगुरु बोलाविया ते आव्या सुरीस ॥८४॥
अकबर बरसी इम भणइ तहइ ते गणधार ।
दरसन तसु करउ चाहिये, जिम हुइ हरष अपार ॥८५॥

हितकरिय कहइ गुरु सुगुण नरपति, जीव हिंसा टालीयइ ॥
जिण पर्व पूनिम विहु मंइ सुस, अभय अविचल पालीयइ।
गुरु संघ श्रीमालपुर मइ वेगि पहुता पारणइ ॥
अति उच्छव कियउ साह वन्नइ सुजस लीधो तिणि तिणइ ॥६६॥
मंत्री कर्मचन्द रे करि अरदास सुसाहिनइ।
चउमासा रे मूक्या हुइ श्रम पूज्य मे ॥
चउमासउ रे पूरउ करिय पधारजोअ
पण जिण इक रे पछइ बार म लगाड़ज्यो।
म लगाड़िज्यो तिहां बार काइ, साहि वाणी अति घणी ॥
पारणइ पूज्य विहार कीधउ, आयवा लाहुर भणी।
श्रीसंघ चउविह सुगुरु मावइ, पातिसाही जस वसी ॥
गांधर्व भोजक भाट चारण मिल्या गुणियन मन रसी ॥६७॥
हिव देछरे ग्राम सरापउ जाणियइ, अमराणी रे लांडपरंगि वखाणियइ,
संघ आवी रे विक्रमपुर नो उमही।
गुरु वंदाय महाजन मजलइ गहगही ॥
गहि गहीय आविण संघ कीधी मयर तूणाहइ गयो।
श्रीसंघ जेसलमेरु नो तिहां वंदी गुरु हरखित थयो।
रोहीठ माहइ उच्छव बहु करि पूज्य श्री पधराविया।
साह विरद मेरउ सुजस लाघा, दान बहु दवराविया ॥६८॥
संघ मोटउ रे, जोधपुरउ तिहां आवीयइ,
करि साहिम रे सासनि सोभ चढ़ावियो।
तब चोपो रे, मांत्री करी विहुं चर्वयों।

तिणि वारस रे, मुक्यो ठक्कुर जस बर्यो ।
जस पर्यों संघ नयर पाछो, आडंबर गुरु मंडियउ ।
पूज्य वाडिया तिहां मांहि मांडी, दानि दालिद्र खंडियउ ।
खाथियां मामई खास भाख्यो, सूरि सोझिन निरखिया ।
जिनराज मंदिर देखी सुन्दर, बंदि श्रावक हरखिया ॥ ६६ ॥
चोमासु रे आनन्द पूज्य पधारीए ।
पइसारउ रे प्रगट कीयउ वट्टारीए ।
जइगारणि रे मान घाना धामिया ।
गरु श्वो रे दान बहुइ संघ गाजिया ॥
गाजियउ जिनचंद्रसूरि गच्छपति वीर शासनि ए वडो ।
कलिकाल गोतम स्वामि समवड, नहीय को ए जोवडउ ।
वैरागी मुनिवर बैगि आवइ नयर मोटइ मेड़तइ ।
परसरइ माया नयर केरे, कहइ संघ मुंहता प्रतइ ॥ ७० ॥

॥ राग गौडी धन्या श्री ॥

कर्मचन्द कुल सागर उदया सुत दास चन्द ।
भागचन्द मंत्रीसर, बाघव लिछमीचन्द ।
इम राय राइ पालक मझो बहु जन वृन्द ।
करि सकल दिवाजउ, वंदइ श्री जिनचन्द ॥ ७१ ॥
पंच शब्दस ल्हारि, वाजइ ढोल नीशांण ।
भविअण गण गावइ गुरु गुण मधुरि वाण ।
तिहां मिलीयो महाजन दीजइ फोफल दांन ।
सुन्दरी सुलखीणी, सूरव करइ गुण गान ॥ ७२ ॥

गज हम्मर सवगढ़, पूज्य पधार्या जाम ।
मन्त्री खरि(ग) कीधी, खरची बहुस दाम ।
याचक जन पोष्या जग में राख्यो नाम ।
धन धन त मानव, करइ जउ उत्तम काम ॥ ५३ ॥
इस नन्दि महोत्सव लाभ अधिक तिण ठांण ।
ततखिण पातसाहि, मान्या के फुरमाण ।
चाल्या संघ साथइ पहुंता फलवधि ठाणि ।
श्री पास जिणेसर भेट्या त्रिभुवन भाणि ॥ ५४ ॥
हिव नगर नागोरइ रंगे आया श्री गच्छराज ।
वाजित्र बहु हय गय मंत्री श्री राजा साज ।
आवि पद वंदी करइ इम उत्तम काज ।
जउ पूज्य पधाया तउ सरिया सब काज ॥५५॥
मन्त्रीसर वांदइ महइ मन नइ रङ्ग ।
पइसारो सारइ कीधो अति उच्छरङ्ग ।
गुरु दरसण देखि वधियो हर्ष कल्लोल ।
महीयलि जस व्यापिउ भाषिउ वर तंबोल ॥५६॥
गुरु आगम ततखिण प्रगन्या पुन्य पडूर ।
संघ बीकानेरइ भाविउ संघ सनूर ।
त्रिणसई जिनशासन प्रभावन माहे घणि प्यार ।
धन धरमइ भवियण श्रावक वर नर नारि ॥५७॥
अनुक्रम पडिहारइ राणुसेमर गामि ।
रम रंग रीणीपुर पहुंता गच्छपति स्वामि ।

गज टम्भर सवछइ, पूज्य पधाया जांम ।

मन्त्री लाहिण कीधी, राख्यी महुत्ता ग्राम ।

याचक जन पोष्या जग में राख्यो नाम ।

धन धन ते मानव, करइ जउ उत्तम काम ॥ ७३ ॥

प्रभु नन्दि महोत्सव, छाम अधिक तिण ठाम ।

तपगिण पातसाहि, आप्या क फुरमाण ।

चास्या संघ साथइ पहुंता फलवधि ठाणि ।

भी पास जिणेसर भेट्या त्रिभुवन भाणि ॥ ७४ ॥

हिव नगर नागोरउ रई आया श्री गच्छराज ।

वाजित्र बहु हय गय मल्यो श्री संघ साज ।

आवि पउ वैदी करइ इम उत्तम काज ।

जउ पूज्य पधाया तउ सरिया सब काज ॥७५॥

मन्त्रीसर बोहड मेहइ मन नइ रङ्ग ।

पइसारो सारउ कीधो अति उच्छरङ्ग ।

गुरु वरसण देखि थयो हर्ष कल्लोल ।

मरीयकि अस स्थापिउ आपिउ बर तंबोल ॥७६॥

गुरु आगम ततखिण प्रगटिया पुन्य पडूर ।

संघ बीकानेरउ आविउ संघ सनूर ।

जिणसई सिणगारा प्रवहण सई बलि च्यार ।

धन खरचइ अविचल साथइ नर नर नारि ॥७७॥

अनुक्रम पडिहारउ, राजुलदेसर गामि ।

रस १ग रीणीपुर पहुंता खरतर स्वामि ।

संघ उच्छव अइ आडंबर अभिराम ।
संघ भाविसो वंदण, महिम नगर जिण ठाम ॥७८॥
नरखी घन अरखी श्री जिनराय विहार ।
गुरु वाणि सुणि चित हरखिउ संघ अपार ।
संघ मंत्री वछोपउ पहुंतउ महिम मंझार ।
पाटणपुरमइ वलि, कपूर हूयउ जयकार ॥७९॥
आइर महासन वंदन गुरु सुजगीस ।
मनसुद्ध स आविउ चाल्यौ कोस चालीस
आया हापाणइ श्रीजिनचन्द सूरीस ।
नर नारी पयतलि सब करइ निसदीस ॥८०॥

राग गौड़ी दूहा—

वेगि वधाउ आवियउ, कीयउ संघीसर जांम ।
क्रम २ पूज्य पधारिया हापाणइ अभिराम ॥८१॥
साथी रमना हम नी कर कंकण क कांम ।
गाजिइ वाजिइ वंदियउ, भामु शोभा बहुमान ॥८२॥
पूज्य पधारया जाण करि मंत्री सब संघात ।
पहुंता श्री गुरु वांदिवा सफल करइ निज गात ॥८३॥
मेरो हरख भ्रात फरि कहइ साह नई सम्भीम ।
ए तुम्ह सुगुरु पधारिया ते आया सुरीस ॥८४॥
अकबर बखसो हम भगत मेरा है गणधार ।
दरसन हमु कउ चाहिये, जिम हुइ हरख अपार ॥८५॥

राग गौड़ा याल्हानी —

पंडित मोटा साथ मुनिवर जयसोम,
कनकसोम विद्या घरू ए।
महिमराज रत्ननिधान वाचक,
गुणविनय समयसुन्दर शोभा धरू ए ॥८६॥
इम मुनिवर इकतीस गुरु जी परिवर्या
ज्ञान क्रिया गुण शोभता ए।
संघ चतुर्विध साथ याचक गुणी जण
जय जय वाणी बोलता ए ॥८७॥
पहुंता गुरु दीवाण दरखी अकबर
आवइ साम्हा उमही ए।
वंदी गुरु ना पाय मांहि पधारिया
साहिब गुरु नो कर ग्रही ए ॥८८॥
पहुंता वडड़ी मांहि सुगुरु साह जो
धरमवात रंग करइ ए।
चिते श्रीजी देषी ए गुरु सेवतां,
पाप ताप दूरइ हरइ ए ॥८९॥
गच्छपति दे उपदेश, अकबर आगलि
मधुर स्वर वाणी करी ए।
जे नर मारइ जीव ते दुख दुरगति
पामइ पातक आचरी ए ॥९०॥

बोलइ कूड़ बहुत नर मम्मम,
इण परभवि दुख लहइ ए।
चोरी करम चण्डाल जिहुं गति रोलवइ,
परम पुरुष ते इम कहइ ए ॥६१॥
पर रमणि रम रंगि सेवइ जे नर,
दुरगति दुख पावइ सही ए।
लोभ घणी दुखदोय जाणइ भूपति
सुख संतोष हवइ सही ए ॥६२॥
पंचइ आश्रव ए तज नर सेवइ
भवसायर हेलां तरइ ए।
पामइ सुख अनन्त मर कइ सुरपद,
कुमारपाल तणो परइ ए ॥६३॥
इम सांभलि गुरु वाणि रंजिउ नरपति
श्री गुरु ने आदर करइ ए।
धन कंचन वर कोडि आपइ बहु परि,
गुरु आगइ अकबर धरइ ए ॥६४॥
लिउ दुक इहु तुम्ह सामि मो कुउ चाहिये
सुगुरु कहइ इम क्या करां ए।
देखि गुरु निरलोभ रंजिउ अकबर
बोलइ ए गुरु अणुसरां ए ॥६५॥
श्रीपुज्य श्रीजी दोय आव्या बाहिरि,
सुणउ दिवांणी कामीयो ए।

धरम धुरंधर धीर गिरुओ गुणनिधि,
जैन धर्म को राजीयो ए ॥६६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

सफल मरद्वि धन संपदा, कायम हम दिन आज ।
गुरु देखी साहि हरखियो जिम केकी घन गाज ॥६७॥
धजी मुई बाली करि, आया अब हम पासि ।
पहुंचो तुम निज थानकै, संपमनि पूरी आस ॥६८॥
वाजित्र हयगय अम्ह तणा, मुद्दता ल परिवार ।
पूज्य उपासरइ पहुंचवउ, करि आडम्बर सार ॥६६॥
कसतउ गुरुजी इम भणइ, सांभलि तूं महाराय ।
हम दोवाज क्या करां, सावउ पुन्य सखाय ॥१० ॥
आग्रह अति अकबर करी, मेलइ सवि परिवार ।
उच्छव अधिक उपासरइ, आवइ गुरु सुविचार ॥१ १॥

राग आशावरी—

इम राय पायक बहुपरि आगइ, बाजइ गुहिर निसाण ।
धवल मंगल घर सूहव रंगइ मिलीया नर राय राण ॥२॥
भाव धरीने भविषण भेटउ श्रीजिनचन्द्रसूरिन्द ।
मन सुधि मानित साहि अकबर प्रणमइ जास नरिन्द रे ॥भ ॥भा॥
ना मइ चउविह सुगुरु साधइ, मेत्रीश्वर कर्मचन्द ।
पइसारो शाह परवल कीधउ, आणिमन आणंद रे ॥ ३ । भाव० ॥
उच्छव अधिक उपाश्रय आव्या, श्री गुरु द्यइ उपदेस ।
मनीय समाणि वांणि सुर्णता भाजइ सयल किलेस रे ॥४॥भा०॥

भरि मुगताफल थाल मनोहर सूहव सुगुरु वधावइ।
याचक हर्षइ गुरु गुण गाता, दान मान बहु पावइ रे ॥५॥ भा०
फागुण सुदि बारस दिन पहुँता, लाहुर नयर मंझारि।
मनवंछित महुछव कीया, वरत्या जय जयकार रे ॥६॥भा०॥
दिन प्रति श्रीजी सुं वलि मिलता वाधिउ अधिक सनेह।
गुरु श्री सूरति देखि अकबर, कहइ जग धन धन एह रे ॥७॥ भा०
कउ कोपी न लोभी कूड़ के मनि धरइ गुमान।
षट् दरसन मइं नयण निहाले, नहीं कोइ एह समान रे ॥८॥भा०
हुकम कीयउ गुरु कुं शाहि अकबर, वड्डी महुल पधारउ।
श्री जिनधर्म सुणावो हम कुं, दुरमति दूर वारउ रे ॥९॥भा०
धरम बात (रे) गइ निस करता, रंजिउ श्री पातिसाहि।
लाभ अधिक है तुम कुं आपोस सुणि मनि हुयउ उच्छाहि रे ॥१०॥

राग—धन्याश्री । ढाल- सुणि सुणि जंबू नो

अन्य दिवस वलि निज उत्कर भरई महुरमउ मकुला गुरु आगा धरइ।
इम कहइ श्री गुरु आगलि सिहाँ अकबर नृपति।
गुरराज संपइ मुगल नरवर नवि महइ ए धन जनि।
ए वाणि अकबर शाहि हरख्या, धन्य धन ए मुनिवरू।
निरलोभ निरमम मोह वरजित जपि रंजित नरवरू ॥११॥
तब ते आपिउ धन मुंहमांगी परम सुधानिक सरपउ ए राजा।
ए राजीव सरवर पुन्य संपत कीयउ हुकम मुंहतो भगी।
परम ठामि दीयउ सुगम खीपउ वडी महिमा जग घणी।

इम चैत्री पूनम दिवस सांतिक, साहि हुकम मुंहतइ कीयउ।
जिनराज जिनचंदसूरि वंदी, दान याचक नइ दीयउ ॥ १२ ॥

सज करी सेना देस साधन भणी,
कास्मीर ऊपर चढ़ीयउ नर मणी।

गुरु मणीय आग्रह करीय तेड़या मानसिंह मुनि परवर्या।
संचर्या साथइ राय राणा, अम्बरा से गुणभर्या ॥

वलि मीर मिलक बहु खान खोजा, साथि कर्मचन्द मंत्रवी।
मय सेन वाटइं मदइ सुखयइ, न्याय चालवइ सूत्रवी ॥ १३ ॥

श्री गुरु वांणि श्रीजी नित्त सुणइ,
धर्म मूर्ति ए धन धन मुख भणइ ।

शुभ दिवस रिपु बल देखि भंजी, नयर श्रीपुरि ऊतरी।
अम्मारि तिहां दिन आठ पाली देश साधी जयवरी।

आवियउ भूपति नयर लाहुर गुहिर वाजा वाजिया।
गच्छराज जिनचंदसूरि देखी, दुरत दूरइ भाजीया ॥ १४ ॥

जिनचन्द्रसूरि गुरु श्रीजी सुं आवि मिली,
एकान्तइ गुण गोठि करइ रली।

गुण गोठि करता चित्त धरतां मुणिवि जिनदत्तसूरि वरी।
हरखियउ अकबर सुगुरु ऊपरि प्रथम गई सुरग हितकरी।

सुगरधान पत्था दिद्धयुगु सुं विविध वाजा वाजिया।
बहु दान मानइ सुजस गानइ सप सवि मन गाजिया ॥ १५ ॥

गच्छपति प्रति बहु भूपति वीनवइ ।
सुणि अरदास हमारी सुं दिवइ ॥

मरि मुगताफल थाल मनोहर सूहव सुगुरु बधावइ।
याचक इर्षइ गुरु गुण गाता, दान मान तप पावइ र ॥५॥ भा०
फागुण सुदि बारस दिन पहुंता, लाहुर नयर मंझारि।
मनवंछित महुकरा फलीया, वरत्या जय जयकार र ॥६॥भा०॥
दिन प्रति धोमी मुं वलि मिलतां, वाधिउ अधिक सनेह।
गुरु नी सूरति देखि अकबर, कहइ जग धन धन एह र ॥७॥ भा०
कइ क्रोधी कइ लोभी तृष्णा के मनि धरइ गुमान।
एह दरसन मइं नयण निहाल्या, नहीं कोइ एह समान र ॥८॥भा०
हुकम कीयउ गुरु कुं शाहि अकबर दउड़ी महल पधारउ।
श्री जिनधर्म सुणावी मुझ कुं दुरमति दूरइ वारउ र ॥९॥भा०
धरम बात (रें) गइ निश करता, रंजित थी पातिशाहि।
सम अधिक हुं तुम कुं आपीस सुणि मनि हुयउ उच्छाहि र ॥१०॥

राग—धन्याश्री। ढाल सुणि सुणि जंबू नी

अन्य दिवस वलि निज उच्छ मरई महुरमउ एकज गुरु आगे धरउ।
इम धरइ भो गुरु आगलि सिरी अकबर भूपति।
गुरुराज जंपइ सुगउ नरवर जबि मढ़इ ए धन जति।
ए वाणि सम्मलि शाहि हरख्यो धन्य धन ए मुनिवरू।
निर्लोभ निरमम मोह वाजित रूपि रंजित सारवरू ॥११॥
तब ते आणिउ धन मुंदणामती, परम सुपानिक ग्यारजउ ए गजा।
ए गभीय ग्यारजउ पुन्य संपउ कीयउ हुकम मुंहता भणी।
धरम ठामि दीयउ सुजस लीयउ करी महिमा जग घणी।

धरम धुरंधर धीर गिरुओ गुणनिधि,
जैन धर्म को रागीयो ए ॥६६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

सफल करिह धन संपदा, आयस हम दिन आज ।
गुरु देखी साहि हरखियो जिम केकी धन गाज ॥६७॥
धमी सुई साखी करि, आया अब हम पासि ।
पहुंचो तुम निज थानकें, संयमनि पूरी आस ॥६८॥
वाजित्र द्यगम अमह तणा, मुहता ए परिवार ।
पूज्य उपासरइ पहुंचवउ, करि आडम्बर सार ॥६९॥
अकबर गुरुजी इम भणइ, सांभलि तूं महाराज ।
इम दीवाज क्या करों, मावउ पुन्य सलाम ॥१००॥
आम्ह मति अकबर करी, मेल्हइ सवि परिवार ।
उच्छव अधिक उपासरइ, आवइ गुरु सुविचार ॥१०१॥

राग आसावरी—

हय गय पायक बहुपरि आगइ, वाजइ गुहिर निसाण ।
धवल मंगल धन सूहव रंगइ मिलीया नर राय राण ॥१०२॥
भाव धरीने भविजन भेटउ श्रीजिनचन्द्रसूरिन्द ।
मन सुधि मानित साहि अकबर प्रणमइ जास नरिन्द रे ॥म०॥आं॥
श्री सङ्घ चउविह सुगुरु सायइ, मंत्रीश्वर कर्मचन्द ।
पइसारो साह परकत कीयउ, आणिमन आणंद रे ॥ ३ । भाव ॥
उच्छव अधिक उपाश्रय आव्या श्री गुरु द्यइ उपदेस ।
अमीय समाणि वाणि सुणंता भाजइ सयल किलेस रे ॥४॥मा०॥

भरि मुगताफल थाल मनोहर, सूहव सुगुरु वधावइ ।
याचक हर्षइ गुरु गुण गाता, दान मान तब पावइ रे ॥५॥ भा०
फागुण सुदि बारस दिन पहुंता, लाहुर नयर मंझारि ।
मनवंछित सहु करता फलीया, वरत्या जय जयकार रे ॥६॥ भा०॥
दिन प्रति भोजी सुं बसि मिलतां, बाधिउ अधिक सनेह।
गुरु नी सूरति देखि अकबर, कहइ जग धन धन एह रे ॥७॥ भा०
कइ क्रोधी कइ लोभी कूडे कइ मनि धरइ गुमान ।
सद् दरसन मइं नयण निहाले, नहीं कोइ एह समान रे ॥८॥ भा०
हुकम कीयउ गुरु कुं शाहि अकबर, वडा महुल पधारउ ।
श्री जिनधर्म सुणावी हम कुं, दुरमति दूर निवारउ रे ॥९॥ भा०
परम धरम (रे) गइ निज करता, रंजिउ श्री पातिशाहि ।
हम अधिक हुं तुम कुं आपीस सुणि मनि हुयउ उच्छाहि रे ॥१०॥

राग—धन्याश्री । ढाल सुणि सुणि जबू नी

अन्य दिवस वसि निज उमग धरइ महुरमउ एकम गुरु मान धरउ।
इम धरइ श्री गुरु आगलि मिलीं अकबर भूपति ।
गुरुराज जंपइ सुणउ नरवर मनि धरइ ए धन जनि ।
ए वाणि सम्मभि शाहि हरख्यो धन्य धन ए मुनिवरू ।
निस्नेम निरमम मोह वरजित कृपि रंजित नरवरू ॥११॥
मन मैं आपिउ धन मुंहगामगो परम सुखानिध नरवर ए सगो ।
ए गरीय नरवर पुन्य मंनउ कीयउ उत्तम मुंहता भनी ।
परम कामि श्रीपत सुजस जीपा कीरति महिमा जग घनी ।

इम चैत्री पूनम दिवस सातिक, माहि हुकम मुंहगइ कीयउ।
जिनराज जिनचंदसूरि संघी, दान याचक मइ दीयउ ॥ १२ ॥
सज करी सेना देस साधण मणी,
काश्मीर ऊपर चढ़ीयउ मर मणी।
गुरु भणाय आगइ करीय तेड्या मानसिंह मुनि परवर्या।
मेवर्या साथइ राय राणा, अम्बरा व गुणमया ॥
वलि मीर मिलक पठाण खोज, साथि कर्मचन्द मंत्रवी।
सब सेन बाटइं बहइ सुखइ, न्याय चलवइ सूत्रवी ॥ १३ ॥
श्री गुरु वाणि श्रीजी नित सुणइ,
धर्म मूर्ति ए धन धन मुहइ भणइ।
सुम दिनइ रिपु बल हेलि भंजी, नयर श्रीपुरि उतरी।
अम्मारि तिहां दिन आठ पाळी देस साधी जयकरी।
आविया भूपति नयर लाहुर गुहिर बाजा वाजिया।
गच्छराज जिनचंदसूरि देखी दुरित दूरइ भाजीया ॥ १४ ॥
जिनचन्द्रसूरि गुरु श्रीजी सुं आवि मिली
एकान्तइ गुण गोठि करइ रळी।
गुण गोठि करता चित्त धरतां सुणिवि जिनचन्द्रसूरि वरी।
हरखियउ अकबर सुगुरु उपरि प्रगम सइ मुख हितकरी।
युगप्रधान पदवी दियइ गुरु कुं विविध वाजा वाजिया।
बहु दान मानइ गुणइ गानइ, संघ सवि मन गाजिया ॥ १५ ॥
गच्छपति प्रति बहु भूपति वीनवइ।
सुणि अरदास हमारी तुं दिवइ ॥

मरगाम प्रभु अवधारि मेरी, मन्त्रि मोजो कहइ वली ।
मद्दिमराज ने प्रभु पाटि थापउ एह मुझ मन छइ रली ॥
गुणनिधि रत्ननिधान गणिनइ, सुपद पाठक आपीयइ ।
शुभ लगन वेला दिवस छेइ वेगि इनकुं थापियइ ॥ १६ ॥
नरपति वांणी श्रीगुरु साभली
कहइ मंइ मानी वातज ए भली ।
ए बात मानी सुगुरु बांणी लगन शोभन वासरइं ।
मंडियउ उच्छव मंत्रि कर्मचन्द, मेलि महाजन बहुरइं ॥
पातिसाहि मुखमुख नाम थापिउ, सिंह सम मन भाविया ।
जिनसिंह सूरि सुगुरु थाप्या सुहवि रंग वधाविया ॥ १७ ॥
आचारज पद श्री गुरु आपिउ,
संघ चतुर्विध सालइ थापियउ ।
व्यापीउ निरमल सुजस महीयलि, सयल श्रीसंघ सुखकरू ।
चिरकाल जिनचंदसूरि जिनसिंह, तपउ जिहां लगि दिनकरू ॥
जयसोम रत्ननिधान पाठ (क) दोय वाचक थापिया ।
गुणविनय सुन्दर, समयसुन्दर सुगुरु तसु पद आपीया ॥ १८ ॥
धप मप धा धों मादल वाजिया
नव तसु माद्दइ अम्बर गाजिया ।
गाजिया माल कंसाल निवली भरि बीणा मृ गली ।
मनि रंग माचइ पात्र नाचइ भगति भामिना मलि मिली
मानीया माल मरवि उपटि बार बार बधावणा ।
इक राग माग उछाहि देता मधुर स्वर गुण गावणा ॥ १६ ॥

कर्मचन्द्र पराग्र पद उत्तमा कीधो
संघ भगति करि मधुग मेलोपोयइ।
मंगाविया श्रावक ग्राम दइ किहु कोडि पमाइ ए।
संग्राम मंत्री तमउ नन्दन करइ निज मनि भाउ ए॥
नव ग्राम गईवर दिद्ध अनुक्रमि, रंग पवि मन्त्री बली।
मांगता अन्न प्रधान आव्या पांचसइ ते सवि मिली॥ १०॥
इण परि आडुरि उच्छव अति घणा
कीधा श्री संघ रंगि बधावणा।
दस चोपडा शास्त्रभूझार गुणनिधि साह चांपा कुल तिलउ।
धन मात चांपल देई कहीय, जासु नन्दन गुण निलउ॥
तिथि वेद रस शशि मास फागुण शुकल बीज सोहामणी।
थापी श्री जिनसिंह सूरि, गुरुपाट संघ बधामणी॥ ११॥

राग—धन्याश्री

ढाल—(श्रीराणक मण्डण सामी सुहिम श्री)

अविहड़ि आडुरि नयर बधामणाजी वाज्या गुहिर निसाण।
पुरि पुरि श्री (२) मंत्री बधाइ मोकल्या जी॥ २२॥
हर्ष धरी ओछी भोगुरु मणी श्री आवइ दिवस सुजाण।
बरतइ श्री (२) आण हमारी सां सगइ श्री॥ २३॥
मास असाढ मठइ पाउसी श्री आदर अधिक अपारी।
सपण्ड श्री (२) लिखि फुरमाण सु पाठवीजी॥ २४॥
बारस दिवस, श्री सकबर मूकियाजी कंयनगर सहिठाणि।
गुरु भइ श्री (२) मीमी साम दीवइ भजडजी॥ २५॥

कर्मचन्द्र परगट पद त्रयो कीयो
संघ भगति करि मवण मंगोपोयइ।
मंगोपिया श्रावक दान दइ, किद्ध कोडि पसाउ ए।
संग्राम मंत्री तणउ नन्दन करइ निज मनि भाउ ए॥
नव साम गईवर दिद्ध अनुक्रमि, रंग धरि मन्त्री वली।
मांगता अन्न प्रधान आप्या, पांचसइ ते मवि मिली॥ २ ॥
इण परि आहुरि उच्छव अति घणा,
कीधा श्री संघ रंगि वधामणा।
इम चोपड़ा साख शृङ्गार गुणनिधि, साह चांपा कुल तिलउ।
धन माय चांपल देइ कहीय आसु नन्दन गुण निलउ॥
विधि वेद रस शशि मास फागुन, शुक्ल बीज सोहामणी।
थापी श्री जिनसिंह सूरि गुरुपद संघ वधामणी॥ २१ ॥

राग—धन्याश्री

ढाल—(श्रीराजस मगहण सामी अंजिस जी)

अन्यहिज लाहुरि नयर वधामणाजी आव्या गुरुजिर निसाण।
घुरि घुरि श्री (२) मंत्री वधाइ मोकल्या जी॥ २ ॥
हर्ष धरी भोजो श्रीगुरु मणी जो, आवइ त्रिदस सुसाव।
वरवइ श्री (२) माण हमारी जां कह्या जी॥ २३॥
साम समाइ महाइ पाठवी जी आवर अधिक समारो।
मपवइ जो (२) लिखि फुरमाण सु पाठवीजो॥ २४॥
वरस दिवस, सगि जलघर सूकियाजी हंमनगार अहिठाणि।
गुरु नइ श्री (२) श्रीमी अम दीपइ जगउजी॥ २५॥

वसु युग रस शशि वच्छरइ ए, जेठ वदि तेरस जांणि ।स०।
शांति जिनेसर सानिधइ ए, रास चढ़िउ परमाणि ॥३४॥स०॥
आग्रह करि श्री संघ नइ ए, अहमदाबाद मंझारि ।स०।
रास रच्यो रळियामणउ ए, भवियण जण सुखकार ॥३५॥स०॥
पभ्रइ गु(सु)णइ गुरु गुण रसी ए, पूजइ तास जगीस ।स०।
कर जोड़ी कवियण कहइ, विमल रंग मुनि सीस ॥३६॥स०॥

इति श्री युगप्रधान जिनचन्द्र सुरीश्वर रास समाप्ता मिति। लिखितं लब्धिकल्लोल मुनिभिः श्री स्तम्भ तीर्थे, पं ललितकीर्त्ति मुनि वाच्यमानं चिरं नंद्यात् यावचन्द्र दिवाकरौ। श्रीरस्तु।

॥ कवि समयप्रमोद कृत ॥
॥ श्री युगप्रधान निर्वाण रास ॥

दोहा राग (आसावरी)

गुणनिधान गुरु[1] पाय नमि, सरस वाणि अनुसार (आधारि)।
युगप्रधान निर्वाण नो, महिमा कहिसु विचार ॥ १ ॥
युगप्रधान संगम यति, गिरुआ गुण गम्भीर।
श्री जिनचन्द्र सुरिन्दवर, धुरि धोरी ध्रम धीर ॥ २ ॥
संवत पनर पंचाणूयइ रीहड़ कुलि अवतार।
श्रीवन्त सिरिया दे धरंइ,[2] सुत सुरताण कुमार ॥ ३ ॥
संवत सोल चडोत्तरइ, श्री जिनमाणिक सूरि।
मइ हथि संयम आदर्यउ, मोटइ महत पडूरि ॥ ४ ॥
महिपति असपति नइ थाप्या राउल माल।
संवत सोल बारोत्तरइ, धनु तपइ सिर भाल ॥ ५ ॥

ढाल (१) राग जयतसिरि
(करजोड़ी आगल रही एहनी ढाल)

आज बधावो संघ मई दिन दिन अधिकै[3] आनद रे।
पूज्य प्रताप आपइ घणो दुरमन कीधा मानइ र ॥६॥ आ०

---

१ गौतम २ दयोमइ ३ आपइ ४ तपइ

युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीकी मूर्ति
(बीकानेरके ऋषभ जिनालयमें
सं १६८६ प्रतिष्ठित मूर्ति)

॥ दोहा सोरठी ॥

महा मुणीश्वर मुकुट मणि, खरतरियां दीवाण।
च्यारि मती गच्छ सेहरो, शासण नउ सुरताण ॥१५॥
मतिसागर आदि जगि, झूठ कर्यु तउ तेम ।
जिम अकबर सनमानिउ, तिम वलि शाहि सलेम ॥१६॥

ढाल (जतनी)

पातिसाहि सलेम सकोप किया खरतरिया सुं कोप ।
ए अणगारा काम्हो दरबार थी दूरि करामो ॥१७॥
एकन कुं पाग बंधावइ, एकन कुं नागाम अणावइ ।
एकन कुं देशवटो अगर दीजे, एकन कुं फलाकी कीजइ ॥१८॥
ए शाहि हुकम सांभलिया, तसु कोप (कष्ट) सघली सांभलिया ।
जगमान मिली इंमतमा, दरगाह करइ गुरु अतना ॥१९॥
के नासि हीई पूठि पडीया, केइ मरुथल मइ चडीया ।
केइ वंतर मइ थया कइ रीफ गुफा मांहि (माइ) पइठा ॥२०॥
जे नगर यवने हलस्या, ते आणि सालसी भाख्या ।
पापी ने अभज पाल्या, अपरीढा बार मुं नाल्या ॥२१॥
इम सांभलि शासन रीसा, जिणचंद सुरीस सुसीख ।
गुणराशि पाट थी प्यारइ, जिन शासन मान वधारइ ॥२२॥
मति आमन्त्रि वलि गुरु आलो, असुरां भय दूरइ पालो ।
हस्तिनपुरइ पउधारउ पुन्य शाहि उन्म दरबारई ॥२३॥

---

१ कर्यु १ का २ हिंदु
६

सुविहित पद उवझाइयउ, पूज्य परिहरइ परिग्रह माया रे।
 इम विहारइ विहरतां, पूज्य गूर्जर देसइ आया रे ॥ ८ ॥

रिणिमतीयां सुं तिहां ययउ, अति झूठी पोथी नाठी रे।
 पूज्य बखत बहु कुमतियां, परगट गाल्यउ नाठी रे ॥ ९ ॥ आ॥
पूज्य तणी महिमा सुणी, सन्मान्या अकबर शाहइ रे।
 युगप्रधान पद आपियउ, साह साहइर उच्छाहइ रे ॥ १० ॥ आ॥
कोडि सवा धन खरचियउ, मंत्रि कर्मचन्दजी भूपाहइ रे।
 आचारिज पद तिहां थयउ, संवत सोल सतावनइ रे ॥ ११ ॥ आ॥

संवत सोलसइ बावनइ, पूज्य पंच नदी (सिन्धु) साधी रे।
जिन कासी जय पामियउ करि गोतम ज्युं सिधि साधी रे ॥ १२ ॥ आ॥
राजा राणा मंडली, एतउ आइ नमें निज माथइ रे।
 श्रीजिनचंदसूरिसरु पुज्य सुखकर नित २ पाथइ रे ॥ १३ ॥ आ॥
सइं हथि करि जे दीखिया पूज्य शीस तणा परिवारो रे।
 ते आगम नव अर्थे सर्या, मोटी पदवीधर सुविचारो रे ॥ १४ ॥ आ॥
जोगी सोम, खिमा समा, पूज्य कोपा संमयी साथा रे।
 ए बवदात सुगुरु तणा आणि मानिक हीरा आथा रे ॥ १५ ॥ आ॥

---

१ इस रासकी ३ प्रतियें हमारे पास हैं जिनमें ऐसा ही लिखा है। कुछि "गणधर सार्ध शतक" में भी इसी प्रकार है। किन्तु सम्यक्ति आदि में प्रवेश सं० १६४८ ही लिखा है।

२ भाव तन्त्र ३ शक्ति

॥ दोहा सोरठी ॥

महा मुनीश्वर मुकुट मणि, दरसणियां दीवांण।
च्यारि मसी गच्छि सहरो, शासण नउ सुरतांण ॥१५॥
मतिरूप सागर च्यार्दि लगि, मूठ कर्यु तउ नेम।
जिम अकबर सनमानिउ, तिम वलि साहि सलेम ॥१६॥

ढाल (जतनी)

पातिसाहि सलेम सकोप किपउ दरसणियां सुं कोप।
ए जमणगार कामो, दरबार थी दूरि हरामो ॥१७॥
एकन कुं पाग बंधावउ, एकन कुं मामाम अणावउ।
एकन कुं देसवटो अगउ दीजै एकन कुं पलासी कीजइ ॥१८॥
ए साहि हुकम सांभलिया, वसु कोप (कउप) कष्ठे सलसलिया।
गजमान मिली दंमठना दरहास करइ गुरु गलना ॥१९॥
केइ नासि हीई पूठि पड़ीया, केइ भाखासइ जइ चड़ीया।
केइ जंगल जाई पइठा केइ दौलत गुफा माहि (जाइ) पइठा ॥२०॥
जे मरड मचके हरस्या, ते आणि मासखी थाक्या।
पापी ने ममता पाम्या, बपरीहा बपर सुं साम्या ॥२१॥
इम सांभलि शासन हीला, जिणचंद सुरीश सुशीला।
गुजराति थकी पधारइ, जिन शासन थान वधारइ ॥२२॥
मति जाणति वलि गुरु भाखे असुरां मन दूरइ थाकी।
उग्रसेनपुरइ पधारइ, पुण्य शाहि सन्म दरबारइं ॥२३॥

---

१ अनु १ का २ लिपु
६

पुज्य देखि रीझ्यउ मिजिया, पातिसाह तमा कोप गमीया।
गुजराति धरा वर्यु माप, पातिसाहि गुरु बहुआप ॥२३॥
पातिसाहि कुं देण आसीस, इम भाप साहि जगीस।
काहे पाया दुःख सरीर, जाभो सकल करउ गुरु पीर ॥२५॥
एक शाहि हुकुम जउ पावां, बंदियड़ा बंदि छुड़ावां।
पतिसाहि अमरात करीजइ दरसणियां पूर (दूबउ) दीजइ ॥ २६ ॥
पतिसाहि हुंतउ से रूठउ, पूज्यमाग बचइ मति वूठउ।
जाउ विचरउ देश हमारे, तुम्ह फिरतां कोइ न वारइ ॥ २७ ॥
धन धन खरतरगच्छ राया, दरसणियां वन्द छुड़ाया।
पूज्य सुजस करि जगि छाया, फिरि साहरि मेड़तइ आया ॥२८॥

दूहा (धन्यासिरि)

श्रावक श्राविका बहु परइ, भगति करइ सविसेष।
जाण मनै गुरुराज श्री गोतम समवड़ देखि ॥ २९ ॥
परमाधारिज धर्म गुरु, परम तपस आधार।
हिव चउमासउ जिहां करइ, ते निसुणो सुविचार ॥ ३० ॥

ढाल (राग—धवल धन्यासिरी, चिन्तामणिपासपूजिये)

देस मंडोवर दीपतउ तिहां बीलाड़ा नामो रे।
नगर वसै विवहारिया सुख संपद अभिरामो र ॥३१॥ दे० ॥
पोरी पवरू जिसा तिहां खरतर संघ प्रधानो रे।
कुल दीपक कुमारिया जिहां परि बहु धन धान्नो रे ॥३२॥ दे०॥

१ बंध २ दंड, ३ भाखी ४ जिहाँ तेे ५ बहुरमवाह।

गुरु कुळ वासे हा वसियो चउदां रे, मन लोपइ गुरु कार।
सार मनड़ वहि संयम पालियो रे, सूधो साधु आचार ॥४२॥सा०॥
संघ सहु ने धर्मलाभ आगलइ रे, लिखियो देश विदेश।
गच्छधुरा जिनसिंहसूरि निर्वाहिस्यै रे, करिस्यो वसुधा लेश॥४३॥सा०॥
साधु भणी इम सीख दे पूजजी रे, अरिहन्त सिद्ध सुसाखि।
संमुख अणसण पूज्य जी उचरइ रे, आयू परि छे पाखे॥४४॥सा०॥
जीव चउरासि लख (रासि) खामिनै रे कथन कुम सब निन्द।
ममता नै वलि माया मोसउ परिहरी र, इमनि म पाप निकंद॥४५॥सा०॥
अपर कुमार जिम अणसण उमहउ रे, पाळे पहुर विचार।
सुख ने समाधे ध्याने धरम नइ रे पहुंचइ सरग मझार॥४६॥सा०॥
इन्द्र तणो तिहां अपछर ओलगइ रे, सेव करइ सुर इन्द।
साधु तणउ धर्म सूधो पालियो रे, तिण फलिया ते आणंद॥४७॥सा०॥

दोहा (राग गौड़ी)

रंगोत्सव पावन सबह, पूज्य पसाउली अंग।
चोवा चन्दन अरगजा संघ करावइ रंग॥४८॥
बाजा बाजइ जन मिलइ, धार बिहूगा पात्र।
सुर नर आवै देखवा, पूजन तणउ शुभ गात्र॥४९॥
वेस अपाली साधु नइ, पूपि सकल शरीर।
बैसाड़ी पालखियइ, उपरि अमुल अबीर॥५०॥

ढाल राग-गउड़ो (श्रेणिक मनि अचरिज थयउ एहनी)

हाहाकार जगत्र हुयइ, मोटो पुरुष असमानो रे।
वड़ वरली बिमाणिमउ, दीवइ सिरै धूसाणइ रे॥५१॥

पुण्य पुण्य मुखि उच्चरइ, नयणि नीर नवि मायइ रे।
सद्गुरु सो(?सा)छइ सामरइ, हियडुं तिल तिल थायइ रे ॥५२॥पुण्य०॥
संघ साधु इम विलविलइ, हा! खरतर गच्छि चंदउ रे।
हा! जिणसासण सामियां हा! परताप दिणंदउ रे ॥५३॥पुण्य०॥
हा! सुन्दर सुगुरु सागरू, हा! मोहिम मंडारउ रे।
हा! रीहड कुल सेहरउ, हा! गिरुआ गणधारउ रे ॥५४॥पुण्य०॥
हा! मरसाह मंहादधि, हा! शरणागत पाल रे।
हा! धरणीधर धीरमा, हा! नरपति सम भाल रे ॥५५॥पुण्य०॥
बहु जन मोहइ भूमिका, चाण्णगंगा मइ तीर रे।
आरोगी किसणागरइ चाजाइ सुरमि समीर रे ॥ पु०॥५६॥
चावन्ना चंदन ठवी, सुरहा तल घी धार र।
पुन विद्वानर तर पिनइ, कीधउ तनु संस्कार र ॥ पु०॥५७॥
वैश्वानर वेदनउ सगउ पवि अतिसय संयोग।
मनि दाझो पुण्य मुंहपत्ति दगइ नपला लोग रे ॥ पु०॥५८॥
पुण्य रत्न विगइ करी साधि मरवउ न यावइ रे।
शान्तिनाथ समरण करी संघ सहु घर आवइ रे ॥ पु०॥५६॥

राग—धन्यासिरी

(सुविचारी हो प्राणी निज मन थिर करि जोय)

ढाल—

सुविचारो हा पूज्यजी, तुम्ह विनु घड़ी रे छः मास।
दरसन दिगाइउ आपणउ हो सयल पूजइ आस ॥६०॥ सुवि०

गुरु कुल वासे हो वसिज्यो चउदां रे, मत लोपइ गुरु कार।
सार भनइ करि संयम पालिज्यो रे, सूधो साधु आचार ॥४२॥ना०॥
संघ सहु नै धर्मलाभ कागज र, लिखिज्यो देस विदेश।
गच्छप गुण जिनसिंहसूरिनिवाहिस्ये रे,करिज्यो तसु आदेश॥४३॥ना०॥
साधु भणी इम सीख दे पूजजी रे, अरिहन्त सिद्ध सुसाखि।
संमुख अणसण पूज्य जो उचरइ रे, मासू पखि पा स ॥४४॥ना०॥
जीव चउरासि लख (राशि) खामिनै रे कञ्चन तृण सम निन्द।
ममता नै वलि माया मोसइ परिहरी र, इमनि म पाप निकन्द ॥४५॥ना०॥
वयर कुमार जिम अणसण उजलउ रे, पाळ्यो पहुर चियार।
सुख नै समाधे ध्याने धरम नइ रे पहुंचइ सरग मझार ॥४६॥ना०॥
इन्द्र तणो तिहां अपछर ओलगइ रे, सेव करइ सुर वृन्द।
साधु तणउ धर्म सूधो पालियो रे, तिण फलिया ते आणंद ॥४७॥ना०॥

दोहा (राग गौडी)

रंगोलक पावन भवउ, पूज्य पसायी संग।
 चोवा चन्दन अरगजा संघ लगावइ रंग ॥ ४८ ॥
वाजा वाजइ अति भिलइ, पार विहूणा पात्र।
 सुर नर आवै देखवा, पूज्य तणउ शुभ गात्र ॥४९॥
वेस अमावी साधु नइ, धूपि सकल शरीर।
 बैसाडी पालखियइ, ऊपरि बहुल अबीर ॥ ५० ॥

ढाल राग-गउडी (भेगिक ममि अबरिज थयउ एहनी)

डाडाम्बर अगत्र हुवइ, मोटो पुरुष असमानो रे।
बहु पखरी विभामियइ, वीवइ जिहं सुमाणउ रे ॥ ५१ ॥

पुण्य पुण्य मुखि च्चरइ, नयणि नीर नवि माय‍इ रे।
सद्गुरु सो(?सा)भ्य सोमरइ, हियई तिल तिल धायइ रे ॥५२॥पूण्य०॥
संघ साधु इम विलविलइ हा ! खरतर गच्छि चंदउ रे।
हा ! जिणशासण सामियां, हा ! परताप दिणंदउ रे ॥५३॥पुण्य०॥
हा ! सुन्दर सुख सागरु, हा ! मोहिम भंडारउ रे।
हा ! रीहड़ कुल सेहरउ हा ! मिलवा गणधारउ रे ॥५४॥पुण्य०॥
हा ! मरजाद महोदधि, हा ! शरणागत पाल रे।
हा ! धरणीधर धीरमा, हा ! नरपति सम भाल रे ॥५५॥पुण्य०॥
बहु वन सोहइ भूमिका, बाणगंगा नइ तीर रे।
आरोगी किसणागरइ, वाजइ सुरभि समीर रे ॥ पू० ॥ ५६ ॥
बावन्ना चंदन ठवो, सुरहा तेल नी धार रे।
घृत विसवानर तर पिलइ, कीधउ तनु संस्कार रे ॥ पू०॥५७ ॥
वइसानर वेहलउ सगइ, पणि अतिसय संयोग।
नवि दाझो पुम्य मुंहपत्ति, वंदइ सफला लोग रे ॥ पू०॥५८ ॥
पुरय रत्न विरहइ करी भाखि मरवइ न थावइ रे।
शान्तिनाथ समरण करी, संघ सहु घर आवइ रे ॥ पू०॥५६॥

राग—धन्यासिरी

(सुविचारी हो प्राणी निज मन थिर करि जोय)

ढाल —

सुविचारी हो पूज्यजी, तुम्ह विनु घड़ी रे छ मास।
दरसण दिराइउ आपणउ हो सेवक पूजइ आस ॥६०॥ सुवि०

एकरसउ पखारियइ हो, दीजइ दुरक्षण रसाल ।
संघ घमाहु अति घणइ हो वंदन चरण त्रिकाल ॥६१॥ सुवि०
बालेसर रखियामणा हो, ले अति सारवा मील ।
जिम श्री पांगरउ पूज्यजी रे, मो मनि प परतीत ॥६२॥ सुवि०
इणि भवि भवे भवान्तरइ हो, तुं साहिब सिरताज ।
मात पिता तुं बन्धवा हो, तुं गिरुमा गच्छराज ॥६३॥ सुवि०
पूज्य चरण नित चरचतां हो, वन्छित वंछित जोइ ।
अखिम विघन भयगा टरइ हो, घरि २ संपत होइ ॥६४॥ सुवि०
सांतिनाथ सुपसाउलइ हो, जिनचन्द कुशल सुरिन्द ।
तिम युगवर गुरु सानिधइ हो, संघ सयल आणंद ॥६५॥ सुवि०
मीठा गुण श्रीपूज्य ना हो, जेहवी साकर द्राख ।
रंगक कुइ ग्रहा त(न?)ि हो, वन्दा सुरिज साख ॥६६॥ सुवि०
तासु पाटि महिमागरू हो, सोहग सुरतरु कन्द ।
सूर्य जेम चढती कला हो श्री जिनसिंह सुरीद ॥६७॥ सुवि०
हो युगवर नामइ जय जय कार ।
वंस मथावइ श्रोपता हो दिन दिन अधिकउ वान ।
पाटोधर पुहवी तिलउ हो चिर नन्दउ श्रीमान् ॥६८॥ सुवि
युगवर गुरु गुण गांवतां हो नव नव रंग विनोद ।
गहुंगुर[१] भाख्या पभण हो, कनक "समयप्रमोद" ॥६९॥ सुवि०
॥ इति युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि निर्वाणमिद ॥

---

१ दूसरी हस्तलिखित प्रतिमें नहीं है।

॥ युगप्रधान आलजा गीतम् ॥

मास् मास मछि आवीयउ, पूज्यजी, आयउ दीवाळी पव पू० ।
कती चउमासो आवीयउ, पू० आया अवसर सर्व ॥१॥
तुम्ह आवो रे मियावे का मंडन तुमे किनु पछिम न आय पू० ।
तुम्हे किन मळजो आय पूज्य० ॥ तुम्हे० ॥
दादि सहेम मळी संवरा पू० संभारइ सहु कोइ ।
धर्म सुणावइ भाविनइ पू० जीव दया सम होइ ॥तु०॥२॥
भावक आया वांदिवा पू०, ओसवाळ नइ श्रीमाळ ।
वरहाम पउ इक वार कउ, पू० वाणि सुणावउ विशाळ ॥तु०॥३॥
पामछठ मांडयउ वैमणइ, पू कमळी मोडी सुधार ।
मसाम नी वेळा धइ पू०, श्रीसंघ जोयइ वाट ॥पू०॥तु०॥४॥
भाविका मिळि आवी सहु, पू० वांदण वे कर जोड़ ।
वंदावो धर्मलाभ द्यो पू० जिम पहुंचइ मन कोड़ि ॥पू०॥तु०॥५॥
भाविका उपधान माडु वहे पू० मांडयउ नंदि मंडाण ।
माळ पहिरावउ भाविनइ पू० जिम हुवे जन्म प्रमाण ॥पू०॥तु०॥६॥
अभिमह वांदण उपरि पूज्य० कीधा हुंता नर नार ।
ते पहुंचावउ तेहना पू० वंदावउ एक वार ॥पू०॥तु०॥७॥
परव पजूसण वहि गया पूज श्री सूत्र वाच्छे सहु कोय ।
मन मान्या आदेश धउ, पू० शिष्य सुखी जिम होय ॥पू ॥तु०॥८॥

तुम सरिखउ संसारमें पू० देखुं नहिं को दीदार।
मयना तुमि पामइ नहीं, पू० संभारू सो वार ॥पू०॥गु०॥६॥
सुम मिलवा मनडो घणौ पूज्य०, तुम्हे तो अकल अलक्ष।
सुपनि में आवि दरसावज्या, पू० हुं जाणिसि परतक्षि ॥पू०॥गु०॥१०॥
युगप्रधान जगि जागतउ पू० श्री जिनचन्द मुणिंद।
सानिधि करिज्यो संघ नै पू० समयसुंदर आणंद ॥पू०॥गु०॥११॥

॥ इति श्री जिनचन्द्र सूरीश्वराणां आलखा गीतं ॥

स० १६६६ वर्षे श्री समयसुं(द)र महोपाध्याय शिष्यमुख्य श्री वाचनाचार्य श्रीमहिमासमुद्र ×गणि शिष्य पं० विद्याविजय गणि शिष्य पं० वीरपालेनालेखि ॥ १ ॥ (पत्र ४ हमारे संग्रहमें)

× पाठक श्री समयसुन्दरजीमणि ने इनके आग्रहसे सं १६९० में "भावकआराधना" बनाई जिसकी अन्त्य प्रशस्ति इस प्रकार है :—
आराधनां सुगम संस्कृत वाक्यिकाभ्यां चक्रे क्रमात् समयसुंदर आदरेण।
रत्नाभिधान गणि महिमासमुद्र शिष्याग्रहेण मुनि षड्रस चन्द्र वर्षे॥

꧁❀꧂

॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि गीतानि ॥

(१)

सुरताण मनहि विचार, लेवा संयम भार ।
सुणि मात निज परिवार, बहु अथिर सब संसार ।
अनुमति द्यो सुविचार, हम हरिसे अणगार ।। धन०।। ६ ।।
सुणि पूत तुं सुकमाल, तेरो नव योवन सुरसाल ।
बहु मदन अति असराल, क्या जाणही तुं बाल ।
आपणि मति संभाल, तब पीलइ चारित्रपाल ।। धन ।। ७ ।।
अब निसुणि मोरी माल, प छोडि जूठो बाल ।
चारित्र करइ न्यायाल, नहु कीजइ कछि टाल ।
संयम लेइ विख्यात, अब सु नीको भाँति ।। धन० ।। ८ ।।
भणिया इम इग्यारह अंग, मन महि आणि रंग ।
गुरु साखि अतिहि उत्तंग गुरु रूप रविशिव अनंग ।
परवाद वाद असंग, गुरु वचन गंग तरंग ।। धन० ।। ९ ।।
सोलसइ संवत बार, जिनमाणिक्यसूरि पटधार ।
जिणि सूरि मन्त्र उदार पामीया पुण्य भण्डार ।
सिरिवंत शाह मल्हार सब लोक मानइ कार ।। धन० ।। १० ।।
सुखकरण श्रीजिणचंद सब साधु केरे वृन्द ।
जां लगि रवि भू चन्द ता लगि तुं चिरनन्द ।
कहइ कनकसोम मुणिंद करउ संघ कू आणंद ।। धन० ।। ११ ।।
।। सं० १६२८ वर्षे पं० कनकसोमैर्लिखित ।।

(७)

राग—मल्हार

भवइ श्री भवइ आज पूज्य पधारइ विहरंता गुरु साधु विहारइ मे ।
जागवर श्रीजिन शासनि जागइ महियल मोटइ भाग सोभागइ ।।भ०१।।

सूरिमन्त्र गुरु मानिय माघिउ, पातिसाहि अकबर प्रतिबोधिउ ।म०।
सब दुनीया महि कीधो मक्कार, इकणइ राम अमारि पडाइ ।।म०।।२।।
पर्चनिद पंच चोर मारायो, संघ उदय काजि पैचनदी साधी । म० ।
साधी अमृत बखाण सुणावइ सूत्र सिद्धांत ना अरथि जणावइ।।म०।।३
बलिहारी म्हारा पूजजी ने वयण, बलिहारी अणियाल नयणं ।म०।
श्रीवन्त-नन्दन सफल सनूर, उदयवन्त गुरु अधिक पडूर।।म०।।४।।
? ~ ~ ~ ~ ~ ~ , ~ ~ ~ ।म०।
श्रीजिनमाणिक्यसूरि पधारी, वाचक श्रीसुन्दर सुगनकारी ।।म ।।५।।

(३)

ए मेरउ साजणीयउ सखि सुन्दर थोइ, जो सुभ काम जणवइ र ।
तिणि बाग्हियउ मेरउ पूज्य पधारइ श्रीगुरु सबहि सुहावइ रे ।
गुरु सबहि सुहावइ जिणि पुरि आवइ, तिणिपुरि साह चढावइ ।
गुरु सोमसी गुरु विधि आगौ पुण्य उदय स चढावइ ।
गच्छराउ गुणी जिनचन्द्र सुणी, जण करि न छोपइ कोइ ।
आवानउ गुरु कउ जा आंगण, मेरउ साजण सोइ ।।१।।
ए जिम मइगलीयउ वन बीस विनासौ जिम धन इग्मण मारा रे ।
रवि हंस चिवइ थोक सुरंगी इग्मन चन्द्र चकोरा रे ।
जिम चन्द्र चकोरा र, तेम अपारा वरिस इग्मन थोरा ।
दिन मंगोपइ पुण्यइ पावइ जनि इरसिम मन मारा ।
निरदम्मी श्रीजिनचन्द्र पधारउ वेगइ होइ प्रमोदी ।
सुमिद देखि माहु जय जिम बोसायम, मइगलीयउ सुखिनोदी ।।२।।

ए गुरु जोवणीवइ विधि मारगि दीपतउ इणिगुरि छोडन मायार।
कसि कंचणीवइ जेम परीखा, तिन तिनि वान सवाया रे।
तिहु वान सवाया मोह न माया मन्मथ आप मनाया।
पहु सोहाया कोमल काया, श्री खरतर गच्छ राया।
कम सागी रंगीरसि जिम रमतउ, अलि मकरंदइ पीणइ।
मारग लक्ष्मी गुणि मन ओवणि, जो विधि मारग लीणउ ॥३॥
ए मनि मार्गविमइ साधु कीरति, बोलइ ए गुरु सीह दुवारा रे।
गुरु सहव वे कूखि मराला, श्रीवन्त साह मल्हारा रे।
सिरि वंत मल्हारा श्रीजयकारा रीहडकुलि सिणगारा।
जग आधारा तिहु अधिकारा माणिकसूरि पटधारा॥
चउरासी गच्छ महि गच्छी तिहाम्हवा, कोइ नहीं इणि तोलइ।
चिरनंदउ जिणचन्द मुनीश्वर, साधुकीर्ति इम बोलइ ॥ ४ ॥

(४)

राग—देशाख

श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदउ, मुखकित वाणि करइ र बखान।
युगप्रधान जिन शासनि सोहइ, अकबर शाहु दीयइ बहुमान ॥१॥
गुणहर मंडलके बोलाये, संवत सुरिन सुनि प्रभु गुणगान।
बहुत पहूरि मुगा पातपारइ, बकल योगि लाहोर सुथान ॥२॥श्री०॥
मरम विचार पूछि सब विध विध, रीझे अकबर साहि सुजान।
बहुत र दरसनि मइ देखे, कोउ नहु या सुगुरु समान ॥श्री०॥३॥
माग सोभाग अधिक या गुरु कउ, सूरनि पाक अधून समवानि।
पैस करइ अकबर जजमोबे सब दुनीयां महि अममादाल ॥श्री०॥४॥

श्रीजिनमाणिक्यसूरि पटोधर, रोहड़ वंशि चढ़ावन वांन।
भद्र गुणविनय पूजजो प्रतपउ, खरतरगच्छ उदयाचल भान ।श्री०।५।

(६)

राग—सारंग

सरसति सामिणी विनवुं मांगु एक पसाय। सहीरी।
वक्त्र वाणी गाइसुं, श्रीखरतर गच्छराय ॥ स० ॥ १ ॥
श्रीजिणचन्द सूरिसरू, कलि गौतम अवतार। स०।
सूरि सिरोमणि गुणभर्यो, सकल कला भंडार ॥श्री०॥ २ ॥
ओसवंश सिरि सहरउ रोहड़ कुलि सिणगार। स०।
सिरियादे उरि अवतीया, श्रीवंत शाह मल्हार ॥श्री०॥ ३ ॥
श्रीजिनशासन परगड़उ, बड़ खरतरगच्छ हंस। स०।
नर नारी नित गहगहउ, नाम जपइ निशदीस ॥श्री०॥ ४ ॥
श्री जिनमाणिक्यसूरि नउ, पाटइ प्रगट्या भाण। स०।
राय राणा मुनि मंडली मानइ मोटा जाण ॥ श्री० ॥ ५ ॥
सोभागी महिमानिलउ, महियल माहलउ जि। स०।
अकबर शाह प्रतिबूझवइ वाणि सुधारस रेलि ॥ श्री० ॥ ६ ॥
जग रूपउ जस पामीयउ, प्रतबोधो पातिशाह। स०।
एकमइ दृधि माहली, गायो अधिक उच्छाह ॥ श्री० ॥ ७ ॥
आठ दिवस आषाढ के अमारी निरधारि। स०।
सब दुनीयां मांहि मानजो पाल्यो अमारि ॥ श्री ॥ ८ ॥
दीउ सुलक्षण मोहनइ, सुन्दर साहस धार। स०।
सुविधि सुगरि करि साधीया, पंचनदी पंचपीर ॥श्री०॥ ९ ॥

सूधउ मारग उपदिसी, पाप छमाव्या खास । स० ।
वरसण ज्ञान क्रिया धर, सकिस्यइ पूरइ सास ॥मी०॥१०॥
सइ इणि अकबर थापिया, सद्गुरु युगहप्रधान । स० ।
श्रीसुन्दर प्रभु चिरजयउ, दिन दिन चढ़तइ वान ॥मी०॥११॥

(६)

श्री अकबर बहुमान, कीधउ युगप्रधान ।
कर्मचन्द बुद्धिनिधान । मोर मलिक खोजा खान,
काजीमुख परधान । पयतमइ करि गुणगान, दिन चढ़ते वान ॥१॥
सब दिन सुभ मन बंछित भणी, चिर जिणचन्द सूरिसेव तणो । आं ।
मारवाड़ गुजर बंग, मेवाड़ सिन्धु कलिंग ।
मालव अपूरव अंग, पूरब सुदेस तिलंग ।
सब देस मिलि मनरंग, गावइ सुगुरु गुण चंग ।
जिम केतकि बनभृंग, तिम सुगुरु सुं सुत रंग ॥ २ ॥सब॥
कलि गोतमा अवतार, तजि मोह मदन विकार ।
निरमाय निरहंकार धन धन्न ए अणगार ।
आणिक्यसूरि पटधार, अति रूप कमर कुमार ।
श्रीवंत साह मल्हार, 'सुमतिकल्लोल सुखकार ॥ ३ ॥सब ॥

(७)

अकबर भूपति मानीया तिण मानइ सहु कोइ ।
जिनचन्द्रसूरि सुरीश्वर, बन्दे वंछित होइ ।
वंदता वंछित होइ अहनिसि, देखतां चित हींस ए ।
श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि समवड़ि अवर कोइ न दीसए ।
सम्पति कारक, दुरगनिवारक धमधारक महाव्रती ।
मन भाव आणी ध्यान जाणी नमइ अकबर भूपती ॥ १ ॥

असुरां गुरु प्रतिबोधीउ, दाखी धरम विचार।
शासन सोह चढावीयो, माणिकसूरि पटधार ॥
पटधार माणिकसूरि नइ ए, रीहड़ वंसइ दिन मणी।
श्रीवंत श्रीयादेवी नंदन, सुविहित साधु सिरोमणी ॥
गुणरयण रोहण भविय मोहन, कम्म सोहण प्रत छोड।
सुविचार सार उदार भावइ असुरां गुरु प्रतिबोधीयइ ॥ २ ॥
पहुतो गुरु वंद्यो नहीं इणि लगि ते अकयत्थ।
अकबर श्रीमुख इम कहइ, खरतर गच्छ मणिमय ॥
मणिमय खरतर गच्छ केरउ, अभिनवेरउ सुरतरु।
मन तणा कामित सयल पूरइ, रूप केम पुरन्दरु ॥
जसु तणइ दरसणि दुरित नासइ, रिद्धि वासइ घर सही।
इम कहइ अकबर तेह अकयत्थ, जेणि गुरु वंद्यो नहीं ॥ ३ ॥
युगप्रधान पदवी भली, आपइ अकबर राज।
संघमुख हरखे इम कहइ, ए गुरु सब सिरताज।
सिरताज सब गच्छ पट सद्गुरु, करउ आसीस इम कही,
गुजरात रमाप्त मंदरि करउ निरभय माछली।
वर्धमान सामि तणइ शासनि, करी उन्नति इम रली।
आपइ अकबर अधिक हरखे युगप्रधान पदवी भली ॥ ४ ॥
जां लगि अम्बर रवि ससि, जां सुर सैल महीस।
तां नंदउ ए राजियो मानइ आण नरेस ॥
जसु आण मानइ राय राणा आव बहु दिवरे परी।
नन्द मुनिरस ससि वरसि चैत्रह नवमि तिहि अति गुण भरी।

इम विमल चित्तइ मनइ मत्तइ, समयप्रमोद समुल्लसो ।
युगवर जिनचन्द्रसूरि चंदा जाम अम्बर रवि शशि ॥ ५ ॥

(८)

॥ पंच नदी साधन गीत ॥

विक्रम (पुर) नयर श्री संघ हरषियो एह नी ढाल ।
श्री गोयम गणधर प्रणमी करी मागी उ ट मझ ।
गुरु गुण गावण मुझ मन गह गहै, वाधइ अति उच्छरङ्ग ॥१॥
धन श्रीजिनशासन सह्हियै खरतर गच्छ सिणगार ।
युगप्रधान जिनचन्द्र महीसरु गुरु गोयम अवतार ॥२॥ध ॥
लाभपुरे जिनधर्म सुणाविनै दूझव्यो पातिसाह ।
श्री गुरु पंचनदी प रे साधिवा कीधा मनहि उछाह ॥३॥धन॥
संघ साथि मुलताण पधारिया, पइसारो सविशेष ।
दरस हरख्या सवि जन पय नमै, दान मल्लिक तिम सेख॥४॥धन०॥
ठामि ठामि हुकुमइ श्री शाहिनै वरतो धर्म विचार ।
अभयदान महिमा वरताव्यो संघ उदय जयकार ॥५॥ध०॥
आया पंचनदी तट उत्तम, पंचमुखे ते अभिराम ।
आपिल अट्ठम तप गुरु आदरो, बैठा निश्चल ध्यान ॥६॥धन०॥
सोलसय बावनै वच्छरै पुन्य सहित रविवार ।
माहपक्ष बारस तिथि निरमली शुभ महूरत निशि बार ॥७॥ध०॥
बेड़ी बइसी पहुता तिहां मिलै पंचनदी भर नीर ।
अधरनि निदपक्ष मान तिहां रही ध्यान धरै गुरु धीर ॥८॥धन०॥

शील सत्त तप जप पूजा बर्ले, माणिभद्र प्रमुख सुमन्न।
पम सहु जिनदत्तसूरि सानिधे, तेह थया सुप्रसन्न ॥६॥धन०॥
प्रहसमि गुरुजी पत्तणि आविया, वाज्या जैत्र निसाण।
अम २ ना संघ मिल्या घणा, आपै दान सुजाण ॥१०॥धन०॥
पोरवाड़ वंसे परगड़ा, नानिग सुत राजपाल।
सपरिवार तिहां बहु धन खरचिनै, खेमो थया सुविशाल ॥११॥धन०॥
तिहां थी वच्छनगर गुरु आविया, भेटा शान्ति जिणंद।
दैरावर प्रणम्या जग दीपता, श्रीजिनकुशल सुणिंद ॥१२॥धन०
हिव तिहां थी मारग विधि आवता सुन्दर शुभ निवेस।
पद पंकज जिनमाणिक्यसूरिना, मम्या तिण प्रवेस ॥१३॥ध ॥
नयर पास सुहारी पधारिया, जसलमेरु मझार।
फागन सुदी बीजे सहु हरखीया, श्राद्ध संघ अपार ॥१४॥धन०॥
श्रीजिनचंद यशोभर गुणनिलौ, प्रतपो युग प्रधान।
"पद्मराज" इम पभणइ मन रसइ दिन दिन चढ़ते वान ॥१५॥धन०॥

(९)

बनी है सद्गुरुकी ठकुराइ
श्रीजिनचन्द्रसूरि गुरु वंदो जो इच्छ हो चतुराइ ॥१॥बनी०॥
सकल मनूर हुकम सब मानति तें जिन्ह कुं फुरमाइ।
भार कछु दोष नहीं तिह अंतरि, निमि नवरौ मनिलाइ ॥ ॥बनी०॥
माणिक्यसूरि पाट महिमा बढ़ी, चढ़ जिन ज्युं तिगुणाइ।
झिगमिग ज्योति सुगन्धे जागी 'साधुकीरति' सुरराइ ॥३॥बनी०॥

(१०) राग मल्हार

पूज्य भावाजर सोमकुल सहिय, हरख्या सगलालोक ।
मोरल मन पिण कलस्यल सहिय, जिम हरि दंसण कोक ॥१॥
इण रे सुगुरु की मन माहि बस पल्लव गमाइयल ॥आं०॥
पहिलुं अकबर मानीया सहीय, ए गुरु हीरा खाणि ।
युगप्रधान पद तिण दियल सहिय, पय लागइ रायराणि ॥२॥इण०॥
गच्छ अनेक मई जोइया सहिय, तुम सम अवर न कोइ ।
हेतइ मयण वसी कीयउ सहिय, शीलइ थूलभद्र जोइ ॥३॥इण०
अनुक्रमि श्रीगुरु विहरता सहीय, आव्या पाटण मांहि ।
चउमासउ प्रभु तिहां करइ सहीय, मन आणी उच्छाह ॥४॥इण०॥
ठैस मायड आगरा थको सहीय, आणो सगलो बात ।
साहि सलेम कोपइ चड्यउ सहीय, कुमतो दाख्या रावि ॥५॥इण०॥
चउमासो करि पांगुर्या सहीय, करता देस विहार ।
उग्रसेनपुर आविया सहीय, वरत्या जय जयकार ॥६॥इण०॥
श्रीपातिशाह बोलाविया सहीय, सीगमजुगप्रधान ।
परम मरम कहि मूलगउ सहीय, गुरल दीया फुरमाण ॥७॥इण०॥
जिण शासन उजवालियउ सहीय, साह श्रीचंद कुल चन्द ।
साधु विहार मुगला कीया सहीय, खरतर पति जिणचन्द ॥८॥इण०
सिरिया दे कुखि हंसलउ सहीय, तेजइ दीपइ भाण ।
"लब्धिशखर" मुनि इम भणइ सहीय, सेवक आपणउ जाणि ॥९॥इण०॥

(११)

राग्व श्री मीम इम कहइ जी जाइव वंसि वदीत रे ॥ पूज जी ॥
पधारो गमसमेर नइ जी, प्रीति धरी निज चित्त रे ॥टा०॥१॥

सखउ बड़ा गुणराशि मा जी, पूज पधार्या खेम रे।
मन मन छोक सहुवसि रे, बोहु धसइ छह तेम रे ॥२॥रा०॥
पूज तणइ जे श्रीमुखइ जो, निसुणइ अमृत वाणि रे।
सेव करइ गुरु नी शाश्वती रे, तेहनो जन्म प्रमाणि रे ॥३॥रा०
दिवस घणा विधि चउमीया जी, श्रावण केरी मास रे।
हुंसि अछइ मारइ हियइ जी, इहां गइ करउ चउमासि रे ॥४॥रा०॥
श्री जसलमेरि संघ नी जो, अधिक अछइ मन कोडि रे।
गुरुजी चरणइ लागिवा, रे त्रिकरण शुद्ध कर जोडि रे ॥५॥रा०॥
साधु नी संगति जउ मिलइ रे, तउ पूजइ मन नी आस रे।
चिंतामणि करि जउ चढइ रे तउ चित्त थाइ उल्लास रे ॥६॥रा०॥
शुभ मन हरष घणउ अछइ जी, तुम्ह मिलवा मुं आज रे।
तुम्ह आव्यां सवि साध्यस्यां रे, अधिक धरम तणा काम रे ॥७॥रा०॥
इहां विलम्ब नवि कीजियइ जी, श्री खरतर गणधार रे।
श्री जिनचन्द्र गुणमणइ रे, "गुणविनय" गणि सुखकार रे ॥८॥रा०॥
(स्वयंलिखित-पत्र १ हमारे संग्रह में)

(१२) राग—सामेरी

सुगुरु कइ दरसन कइ बलिहारी।
श्री खरतरगच्छ जंगम सुरतरु, जिनचन्द्रसूरि सुखकारी ॥१॥सु०॥
अकबर शाहि हरख करि कीनउ, सुगुरुपात पधारो।
खंभायत मइ शाहि हुकम तई जलचर जीव उबारो ॥२॥सु०॥
सात दिवस जिनि सब जीवन की हिंसा दूर निवारी।
देस देशि फुरमान पठाए, सब जग कु उपगारी ॥३॥सु०॥

जिनमाणिक्यसूरि पाट प्रभाकर, कलि गौतम अवतारी ।
कहइ "गुणविनय" सकल गुण सुंदर, गावत सब नर नारी ॥४॥सु०॥

(कवि के हस्तलिखित पत्र से उद्धृत)

(१६) राग—धन्यासिरी मारूणी

सुगुरु मेरउ चिरि जीवउ जगसाल ।
खम्मायत दरिया की मच्छी, छोडन बोल रसाल ॥१॥सु ॥
भाग हमारइ तिहाँ आवत हइ, खम्भपुरइ भय टाल ।
श्रीजी कुं भाखी अरज करेज्यो, अकबर कुं प्रतिपाल ॥२॥सु ॥
पछ अरज निसुणी पूज्यां तइ, रंज्यु नर भूपाल ।
हुकम करि मइ आप पठाइ, हरख्या बाल गोपाल ॥३॥सु०॥
युगप्रधान जिनचन्द्र यतीसर, छइ जसु नाम विशाल ।
साहि अकबर तसु फरमाइ तिणि हाकम्याकउ माल ॥४॥सु०॥
निसभरि मीन अभय आवत हइ, मरण तणु भय टाल ।
जय जय जय आसीस दियत हइ, मिलि जीवन की माल ॥५॥सु ॥
धन धन धीर कुमार कुं नन्दन, जीवन दान दयाल ।
धन धन श्रीखरतरगच्छ नायक, पटकाया रखवाल ॥६॥सु ॥
धन मन्त्री कर्मचन्द्र बछावत उद्यम कीउ दयाल ।
साहिब नइ साचइ सुप्रसादइ, अबीय विघ्न सब टालि ॥७॥सु॥
धन ते संघ इणइ ज अवसर परघल खरचाइ माल ।
तसु "कल्याण कमल" नो संपद आपद न हुवइ काल ॥८॥सु०

(१४) अपूर्ण

सरस वचन सरसति सुपसायइ, गाइसु श्री गुरुराय री माइ ।
युगप्रधान जिनचन्द यतीश्वर, सुर नर सेवै पाय री माई ।।
कलियुग कल्पवृक्ष अवतरियो सेवक जन सुखकार री माई ।।आं।।
जिन शासन जिनचन्द तणो यश, प्रसरै पुहवि मझार री माई ।
महसम नित नित श्रीगुरु प्रणमो, श्रीखरतर गणधार री माइ ।।२।।
संवत पनर पचाणु वर्षे, रीहड़ कुल मझु जाम री माइ ।
श्रीवंत शाह गृहणी सिरियादे, जनम्या श्री "सुरताण" री माई ।।३।।
संवत सोल अढोतर वरसे लीधो संयम भार री माइ ।
जिनमाणिक्यसूरि सैं हाथै दिक्षा, शिष्यरत्न सुविचाररी माइ ।।४।।क०
लघु वय बुद्धि विनाणे जाण्यो श्रुतसागर नो सार री माइ ।
अभिनव वयर कुमर अवतारै, सकल कला भंडार री माइ ।।५।।क०।।
सकल संयोगे सोल बारोत्तर, जेसलमेर मंझार री माइ ।
पाम्यो सूरीश्वर पद प्रगट्यो श्रीसंघ जय २ कार री माइ ।।६।।क०
उग्र विहार आदर्यो श्रीगुरु, कठिन क्रियाउद्धार री माइ ।
चारित्र पात्र महंत मुनीश्वर रत्नत्रय आधार री माइ ।।७।।क ।।
सतरोत्तर वर्षे पाटण में अधिक वधारी माम री माई ।
च्यार अमी गच्छ मांहै खरतर बिरुद दीपायो ताम री माइ ।।८।।क०
दृषमाहर मोरोपुर नामे तीरथ विमलगिरिंद री माइ ।
आबूगढ़ गिरनार शिखर गिरि प्रणम्या श्रीजिनचन्दरी माइ ।।९।।क०
आराधग नामें तीरथ रामपुरे गुरुराज री माइ ।
बरकाणा संखेश्वर मांहे, प्रणम्या श्री जिनराजरी माइ ।।१ ।।क ।।

अवर तीर्थ पण श्रीगुरु सेव्या, प्रतिबोध्यो पातिसाह री माई ।
अकबर मधिको मासति निरखी, दीधो मोटो आह री माई ॥११॥
सम्मायन नो लाडो केरा, राख्या जीव अनेक री माई ।
बरस एक लग श्री गुरु वचने, पाल्यो परम विवेक री माई ॥१२॥क०
सात दिवस लगि निज आणा में बरताबी अमारि री माई ।
अकबर अवर अपूर्व कारिज कीधा गुरु उपकार री माई ॥१३॥क०॥
पंचनदी पति परतिख साध्या, माणभद्र विख्यात री माई ।
.. .. ॥

(१८) श्री गुरुजी गीत

युगवर श्री जिनचन्दजी, कलि जिनशासनि चन्द रे ।
प्रहसमि उठी पुजियइ, कामित सुरतरु कंद रे ॥१॥युग०॥
संवति पनर पंचाणुयइ, श्रीवंत साह मल्हार रे ।
मात सिरियादेवि जनमीयड, रीहड़ कुल सिणगार रे ।२।युग०।
संवत सोल बिडोत्तरइ, जाणी जिणि अथिर संसार रे ।
हाथि जिनमाणिक्यसूरि नइ, संग्रहउ संयम भार रे ॥३॥युग०॥
वयरकुमार तणी परइ, अपुबर बुद्धि भंडार रे ।
गुरुकुल वास वसि पामियउ, प्रवचन सागर पार रे ।४।युग ।
संवत सोल बारोत्तरइ जेसलमेरु मझारि रे ।
भाग्य बलि सूरि पदवी लही दरसिया नवि नर नारि रे ।५।युग ।
कठिन क्रिया जिण उद्धरि मांडिवउ उग्र विहार रे ।
सूरि जिणचन्द्र सारिखउ, चरण करण गुणधार रे ।६।युग०।

पञ्च मोल्ह सतरोतरइ, च्यारि मसी गच्छ साखि रे।
खरतर बिरुद दीपावियउ, आगम अक्षर दाखि रे ॥ ७ ॥ सुग० ॥
सौरीपुर हथिणाउरे, विमलगिरि गढ़ गिरिनार रे।
तारङ्ग अर्बुदि चीरपद यात्र करि बहु बारि र ॥ ८ ॥ सुग० ॥
अकबर शाहि गुरु परितोषियउ, कसवटि कंचण जेम रे।
पूरणती मधुर देसण सुणी, रंजियउ साहि सलेम रे ॥९॥ सुग० ॥
आठ दिवस वरताविय, मांहि दुनिया अभयदान रे।
पंच नदी पनि साधिया साधियउ अनि समा दान र ॥१०॥सुग०॥
राजनगर प्रतिष्ठा करी सकल संघाण गुरुराइ रे।
संघवी सोमजी अति घणइ, धन्य किया तिणि ठाइ रे ॥११॥सुग०॥
गुणमस गोहनइ मस्तकइ गुरु परइ वसिग पाणि र।
दैद परि केलिकमला करइ सुरसमइ मविर(ष) वाणि रे ॥१२॥सुग०॥
दरसनी जिन सुगमा करी सोम मित्तर पाणि रे।
अविया नगर किल्यइए, सुगुरु रहा चउमासि रे ॥१३॥सुग०॥
दिवस आसु वदि बीजनइ दरबारी अणसण सार रे।
सुरपुरि सुगुरु सिधारिया सुर करइ जय जयकार रे ॥१४॥सुग०॥
नाम समरणि नवनिधि मिलइ मनि फलइ संघनी आस रे।
आधि मइ व्याधि दूरइ टलइ संपजइ लील विलास रे ॥१५॥सुग०॥
केसर चन्दन कुसुम सुं चरचतां सहगुरु पाय रे।
पुत्र संतान परघल हुवइ, दिन दिन तेज सवाय रे ॥१६॥सुग०॥
श्रीजिनचन्द्रसूरीसरू, चिर जयउ जुगप्रधान रे।
इणपरि गुरु गुण संथुणइ पाठक 'रत्ननिधान' रे ॥१७॥सुग०॥
(श्री जिनहरिसूरि ज्ञान भंडार-सुरतस्थ हस्त लिखित पत्रात्
प्रति कम्पास कल्याणमुनिजी)

॥ इति श्री गुरुजी गीतं ॥

(१६)

॥ ६ राग ३६ रागिणी गर्भित गीत ॥

कीजइ ओच्छव सन्तों सुगुरु केरउ (१)
सुकलिम बयण सुण सखि मेरउ (२)
श्मउरी सरिस खरा गुरु भावतिया (३)
तिण्येस चली मेरी ग्रमतिया (४) ॥१॥

आपरी सखि श्रीबंतमल्हारा,
खरतर गच्छ शृङ्गारहारा। प आंचली (५)
अइसा रंग बधावन कीजइ (६)
गुरु अभिराम गिरा अमृत पीजइ (७)
ऐसे सुगुरु कुं नित्य लग्गाउरी (८)
सुन्दर शरीरा गच्छपति आउरी ॥ ६ ॥ आ० ॥२॥

दुःख क दार सुगुरु शुभ दर री (१०)
गाई गुण गुरु केदारा गउरी (११)
सोरठगिरि की जात्रा करणकु आपयरो गुरु पाय परउ (१२)
मान्यफल्यो आच्छव ओच्छवरको (१३) ॥३॥

तुं कृपापर दउन्नति है मोहि हुं तेरो मगन हुं री (१४)
गुरुजी तुं ऊपर ओव राखी रहुंरी (१५)
हृदु मयनी गुरु मेरा मधुपारी (१६)
हुं चरण कमुं दर दमर वारी (१७) आ० ॥४॥

भ्रह्रो निकेत नटतरारण फइ भागइ

मइसइ नृत्य करत गुरुके रंगइ (१८)

ऐसे छुन्द मान्क होता गावत सुंदरी

वेणु वीणा मुरज बाजत घुमर घुघरी (१६) ॥५॥

रास मधु मावक देति रंभा सुगुरु गावंति वावंति भंभा (२०)

तेजपुञ्ज जिमसे मेहरवी जुगप्रधान गुरु पेखत भवि(२१)भा ॥६॥

धवहि ठकर बरौ अमतसिरी (२२)

गुरुके गुण गावत गुभरी (२३)

मारुणि नारी मिली सब गावत सुन्दर रूप सोभागी रे (२४)

भाज सखि पुन्य दिशा मेरो जागी (२५) ॥७॥

तोरी भक्ति मुझ मन मां वसी री (२६)

साहि अकबर मानइ जसु बावरवंसी (२७)

गुरुके वंदणी तरम्हइसियुणा (२८)

इया सारी गुरुकी मूरतिया (२६) भा० ॥८॥

गुरुकी सुंहिमभूपाल भूपाल कमनिधि सुंहिम सबहि सिरताज(३०)

भाव्ह प रीतह गच्छराज (३१)

संकट मरण भंजन जिन सुप्रसन्न

जिनचंद्रसूरि गुरु मतिकरु (३२) ॥६॥

तेरी सूरतकी बलिहारी, तुं पूरव आस हमारी

तुं जग सुरतर ए (३३)

गुरु प्रणमहरी सुरमर किन्नर चोरवी रे

मनवंछित पूरण सुरमणी रे (३४) ॥१ ॥

मालवा गच्छमिश्री अमृत मइ वचन मीठे गुरु तेरे हइ तम्पइ (३५)
करउ वंदणा गुरुकूं त्रिकाल्ह हरउ पंच प्रमाद रे (३६)
सबकुं कल्याण सुख सुगुरु प्रसाद रे (३७) भा० ॥११॥
बहु परमारि भउ रुष्ड सार (३८)
पंचमइ्रवत धर गुरु उदार (३६)
हुं आदेसकार प्रभुतेरा, युगप्रधान जिनचन्द
मुनिसरा, तुं प्रभु साहिब मेरा (४०) ॥१२॥
दुरित मै वारउ गुरुजी सुख करउ रे श्रीसंघ पुरउ आशा
नाम तुमारइ नवनिधि संपजइ रे प्रगमइ लीलविलास (४१) ॥१३॥
भन्यासरी रागमाला रची उदार, छः राग छत्रोसे भाषा भेद विचार
सोलसइ बावन विजय दसमी दिने सुरगुरुवार,
खंभण पास पसायइ त्रंबावती मझार (२) म० ॥१४॥
युगप्रधान जिनचन्द सूरींद सारा
चिर जयउ जिनसिंघसूरि सपरिवार (३ म०)
सकलचन्द मुणीसर सीस वन्नतिकार
"समयसुन्दर" सदा सुख अपार (६ म०) ॥१५॥

इति श्रीयुगप्रधान जिनचन्दसूरीणां रागमाला सम्पूर्णा
कृता च० समयसुन्दरगणिना लिखिता सं० १६५२ वर्षे
कार्तिक सुदि ४ दिने श्री स्तंभतीर्थ नगरे।

(१७) राग —आसावरी

पूज्यजी तुम्ह चरणे मेरउ मन लीणउ, ज्युं मधुकर अरविंद ।
मोहन वेलि सबइ मन मोहियउ, पेखत परमाणंद रे ॥१॥पूज्य०॥
सुललित वाणि वखाण सुधारस, स्रवति सुधा मकरंद र ।
भविक मयोवधि तारण वेरी, जनमन कुमुदनी चंद रे ॥२॥ पूज्य० ॥
रीहड़ वंश सरोज दिवाकर साह श्रीवंत कउ नंद र ।
"समयसुन्दर" कहइ तुं चिरप्रतपे, श्रीजिनचन्द मुणिंद र ॥३॥पूज्य०॥

(१८) आसावरी

सखे री मात्र श्री जिनचन्द्रसूरि आप ।
श्रीजिन धर्म मरम बूझण कु, अकबर शाहि बुलाए ॥ १ ॥
सद्गुरु वाणी सुणि शाहि अकबर, परमानंद मनि पाए ।
हुकमहरोज अमारि पालन कुं लिखि फुरमान पठाए ॥ २ ॥
श्री खरतर गच्छ उन्नति कीनी दुरजन दूर पुलाए ।
'समयसुन्दर' कहै श्रीजिनचन्द्रसूरि सब जनके मन भाए ॥३॥

(१९) आसावरी

सुगुरु चिर प्रतपे तु कोडि वरीस ।
चौमासउ चन्दर माहमच्छो, सब मिलि देत आशीस ॥ १ ॥ सु०
धन धन श्री खरतरगच्छनायक, अमृतवाणि वरीस ।
शाहि अकबर हमर्ड़ राजमर्ड़, आसु करी बकसीस ॥ २ ॥
लिखि फुरमाण पठाया सबही, मन कर्मचन्द्र मंत्रीश ।
"समयसुन्दर" प्रभु परम कृपा करि पूरउ मनहि जगीस ॥३॥

(२०)

श्री खरतर गच्छ राजीयउ रे माणिक सूरि पटधारो रे ।
सुन्दर साधु सिरोमणो रे, विनयवंत परिवारो ॥ १ ॥
विनयवंत परिवार तुम्हारउ, मारग फरसउ सखी आज हमारो ।
ए चन्द्रानन छइ अति सारउ, श्रीपूज्यजी तुम्हे वेगि पधारो ॥१॥
जिणचन्दसूरिजी रे, तुम्ह जग मोहण वेलि ।
सुणज्यो वीनती रे, मारउ मान्हारउ दिसि, गिरूआ गच्छपतिरे ॥
मास चोमासा माणोस्या रे हरख्या सहु नर-नारो ।
संघ सहु उच्छव करइ रे घरि २ मंगलचारो ॥
घरिघरि मंगलचारो रे गोरी, सुगुरु वधावउ वहिमी मोरी ।
ए चन्द्रानन सांभलज्योरी हुं बलिहारी पूजजी तोरी॥२॥श्री०
अमृत सरिखा बोलड़ा रे सांभलणो सुख पाम्यो ।
श्रीपूज्य दरसण देखनां रे, अलिय विघन सवि जाम्यो ॥
अलिय विघन सहु जायइ रे दूरइ, श्रीपूज्य वांदु ऊगमते सूरइ ।
ए चन्द्रानन गांव हजूरइ, तउ सुख आस पूजइ सवि मूरइ ॥ ३ ॥
जिणरोळ मन उलसइ रे मयणे अमीय झरंति ।
त गुरुना गुण गावतां रे वंछित काज सरंति ॥
वंछित काज सरंति महाराज श्रीजिणचन्दसूरि वांदउ माइ ।
ए चन्द्रानना भास सोहाइ प्रीति "समयसुन्दर" मनिभाइ ॥४॥श्री

(२१)

जिनचन्दसूरि आलीजा गीत राग —आस्यासिधूडो

चिर अकबर नुं पापोयउ, युग प्रधान जग जोइ ।
श्रीजिनचन्दसूरि सारिखउ, मारि० कलिमें न दीसइ कोय ॥१॥

च्यारइ घरी नइ तातजी हुं आवियउ, हो एकरसउ तुं आवि।
मनका मनोरथ सहु फलइ माहरा रे,हो दरसणि मोहि दिखाव ॥ २ ॥
जिनशासनि राजयउ जिणइ, बोलउत दमदाउ।
समझायउ श्री पातिसाह, सद्गुरु लाहयउ तई सुबोध। ऊ० ॥३॥
माहजो मिलवा अति घणउ, आयउ सिष्य श्री एम।
नगर गाम सहु निरखीया, कहो क्युं न दीसइ पूज्य कम। ऊ० ॥४॥
शाहि सलेम सहु अंबरा, मीम सुर भूपाल।
चीतारइ तुं नइ वाद मुं हो पूज्यजी पधारउ किरपाल। ऊ० ॥५॥
पाया आविम वाहुबलि, बोर गोयम ज्युं विलाप।
मिलउ न सरज्यउ माहरउ मा०, त वउ रह्यो पछताप। ऊमा०॥६॥
साह चढउ हो सोमजी सरस्यउ कर्मचन्द्र राज।
अकबर इंद्रपुरि आणीयउ हो आस्तिक वाड़ी गुरु आज। ऊमा०॥७॥
सूयइ कहइ त मूजुरा, जीवइ जिणचन्द्रसूरि।
जग जैपइ जस जेहनउ, गह० हो पुहवि कीरत पहरि। ऊमा०॥८॥
चतुविध संघ चीतारस्यइ, जां जीविसइ तां सीम।
वीसार्यां किम विसरइ,विम० हो निर्मल तप जप नीम। ऊमा०॥९॥
पाटि तुम्हारइ प्रगटीयउ, श्री जिनसिंह सूरीस।
शिष्य निवाज्या तइ सहु, तइं० रे जगीयो पुरी जगीस। ऊमा ॥१०॥
समयसुन्दर कृत अपूर्ण—प्रान

कवि कुशल लाभ कृत

॥ श्रीपूज्य वाहण गीतम् ॥

राग—आसावरी

पहिलो प्रणमुं प्रथमजिण, आदिनाथ अरिहंत ।
नाभि नरेसर कुलतिलक, आपइ सुख अनंत ॥ १ ॥
चक्रवर्त्ती ने पांचमो, सरणागत साधारि ।
शांति करण जिन सोलमो, शान्तिनाथ सुखकार ॥ २ ॥
ब्रह्मचारी सिर मुकटमणि यादव वंश जिणिंद ।
नेमिनाथ भावइ नमुं आणी मन आणंद ॥ ३ ॥
श्री थंभायत मंडणो, प्रणमुं थंभण पास ।
एक मना आराधतां, पूरइ मन नी आस ॥ ४ ॥
शासननायक समरीयइ, वर्द्धमान वर वीर ।
तीर्थंकर चौवीसमो सोवन वर्ण शरीर ॥ ५ ॥
च्यारि तीर्थंकर शाश्वता, विहरमाण जिन वीस ।
त्रिण चौवीसी जिन तणा, नाम जपूं निसदीस ॥ ६ ॥
श्रीगौतमगणधर सधर, प्रणमुं लब्धिनिधान ।
केवलिकमला करि वसइ, महिमा मेरु समान ॥ ७ ॥
समरूं शासनदेवता, प्रणमुं सदगुरु पाय ।
तासु प्रसादे गाइस्युं श्री खरतरगच्छ राय ॥ ८ ॥

सत्तर भेद संयम धरइ, गिरूआ गुण छत्रीस ।
अधिकी उत्कृष्टी क्रिया, ध्यान धरइ निसदीस ॥ ६ ॥
सूयगडांग सूत्रे कह्या, वीर स्तव अधिकार ।
भव समुद्र तारण तरण, वाहण जिम विस्तार ॥ १० ॥
आ भव सागर सारिखुं, सुख दुख अंत न पार ।
सद्गुरु वाहण नी परइ, उतारइ भवपार ॥ ११ ॥

ढालः—सामेरी

भवसागर समुद्र समान, राग द्वेष बि मेरू थाण ? ।
ममता तृष्णा जल पूर, मिथ्यात मगर अति क्रूर ॥ १२ ॥
मोटा ऊंचा अभिमान, विषयादिक वायु समान ।
संसार समुद्र मंझारि, जीव भम्या अनंत वारि ॥ १३ ॥
हिव पुण्य तणइ संयोग, पाम्यो सद्गुरु नो योग ।
भवसागर तारणहार, जिन धर्म तणइ आधार ॥ १४ ॥
वाहण नी परि निस्तारइ, जीव दुर्गति पडितो वारइ ।
काऊरि अति चिह्नांत छीपइ, पर वादी कोइ न जीपइ ॥ १५ ॥
प्रवचन तोपखन न काणइ, सुखि वायु वहइ वैराग्य ।
जल पथ मर्यादुं ऊपगारइ, भविषण जण इणां तारइ ॥ १६ ॥

ढाल—हुसेनी धन्यासिरी

श्रीजिनराम श्रीपाइवड ए, वाहण समुं जिनधर्म
भविक जमतारवा ए ॥ १७ ॥

तारइ २ श्रीचंद साह नो नन्दन माइण तणी परइ ।
तारइ २ सिरियादे नो सुत कि माइण सिख मती ए।
तारइ २ श्रीपूज्य सुसाधु श्रीखरतरगच्छ गच्छपति ए ।। आं० ।।
अविहड माइण ए सही ए, सर्विसु सुख व्यापार ।
धर्म धन दायकू ए ।। १८ ।।
तारइ तारइ श्री समकित अति निर्मलो ए।
पइठ्ठउ ते पयठांण, सुमति सुश्रेयर्यो ए ।। १६ ।।
ता० गुण छत्रीस सोहामणा ए ।
मिहु दिसि बांक मंडाण, सुकृत वस मलिया ए ।। २० ।।
ता० कूया सुभ चारित्र तणउ ए ।
जयणा जोडी संधि, सकल सह तप तणउ ए ।। २१ ।।
ता० शील वजू सो सोभतो ए।
है मत सुगुरु बराणा दया गुण दोरड़ो ए ।। २२ ।।
तारइ तारइ कूआमी ते शुद्धी क्रियाए
पुण्य करणी पर्तास संतोष जखइ भयारइ रे ।।२३।।
ता दशविध धर्म वेडूं गवी ए ।
संवर तेह जना रलि मामरि छत्रडी ए ।।२४।।
ता० सतर भद संयम तणा ए,
ते आश्रम अपार । मंविग सु पंजरी ए ।।२५।।
ता० आसा मालु अमी समोप ।
पंच समिति पर वांण कीर्तिपत्र जइ इदइ ए ।।२६।।
ता० निजइ बारइ भावनाए ।
(ता) होडा शुभ परिणाम नागर मयनस्व तण्णए ।।२७।।

ढा० कलगा कोलइ लेपीउ ए, ग्रान निरुपम मोर ।

झीलउ समरस मर्योर ॥२८॥

ढा० शासन नायक इ (क्) यइए, माझिम श्री गुरुराज ।

करापि मुनिवरूप ॥२६॥

ढा० जिन भाषित मारग बइइ ए भाजित्रराइ सिझाय ।

सुसाधु सज्झसीयाय ॥३०॥

ढाढ २ ए मारग जिनधम तणउए, को डोलइ नहीं छगार ।

सदा सुखियां करइए ॥३१॥

ढा० मछ (वा ?) वारो ते काढाया ए, कुमती चोर होनोर ।

सहु भय टालनाम ॥३२॥

ढा० पुण्य किमागे पूरोया ए, मदुरति वस्तु अनेक ।

सुजस पासर सरीप ॥३३॥

ढा० कयाइ डूगर आळइए, वाइनइ ध्यान प्रवाह ।

सिवमनि भावीयोए ॥३४॥

ढाल-रामगिरी—

धममारग उपदेशता करता र विधइ विहार र ।

आम्वासी नगर प्रवासरो भा संघ हर्ष अपार र ॥३५॥

पूज्य आव्या त आमा कड़ी, श्री खरतरगच्छ गणपार र ।

श्री जिनचन्द्रसूरि वांदीयइ मायइ र साधु परिवार रे ॥३६॥पू०॥

आगम सूत्र सर्वे भया, सुकृत किवाल त सार रे ।

चारित्र बगादि बनि मझी(या) बन पपराग विस्तार रे ॥३७॥

वस्त्र अपूर्व वहुरिया, मिल्या २ मविक नर-नार रे।
विनय करि पुण्य नइ वीनवइ, आपउ २ वस्तु उदार रे ॥३८॥पू०॥
मोटा २ श्रावक श्राविका, करइ मंडाण अनेक रे।
महोत्सव अधिक प्रभावना, आगइ २ विनय विवेक रे ॥३९॥पू०॥
ज्ञान दरसण चारित्र तणा, अमोलक रत्न महंत रे।
पुण्य व्यापारि भावि मिल्या, बहुरतां लाभ अनन्त रे ॥४०॥पू०॥
दान गुण मोतीय निर्मला, पंच आचार ते पांच रे।
दश पचखाण ते कइरवइ, अगर ते सीतल वाच रे ॥४१॥पू०॥
सूफ ते सद्दहणा खरी, सुगुरु सेवा सिकलात रे।
पोत सुपासुर पोसहा, मकमल प्रवचन मात रे ॥४२॥पू०॥
हीर पेटी महोत्सव घणा, इ भा (मा ?) मी ते सूजनी सार रे।
भाव(भत्त)परिवार छिम अति भली, निवृति ते किसमिस दाख रे ॥४३॥
श्रीफल श्रीगुरु देशना बीरा मानिक कमखाब रे।
मांदि चउव मलीयागरउ पूजनी भगति गुलाब रे ॥४४॥पू ॥
देस विरति ते कलकइड, पोली(ख) याँ ते उपधान रे।
दांत(न)? श्रीखंड्यांगरण चकवड, रासी जसु तेह कंसाण रे ॥४५॥पू ॥
सीतल सुकवि भावना स्नात्र तेकपूर बरास रे।
कटीफल कल्याणिक आलोयइ, कंस कप्यो सह उपवास रे ॥४६॥पू०॥
मासखमण मसखारे सर्मु (मर्हु), आरीते मक्त मक्कार रे।
सूत्र मा मेरु हीरा वरा, पवित्र गु वान दीनार रे ॥४७॥पू०॥
पाखर कमण करीया विसइ, अंग ओ(ध)छो विधा(सय)वीस रे।
मास आलोयण चाखीया, छठ तप विसम गुणतीस रे ॥४८॥पू ॥

संसार तारण तु कांबडी, पउघो व्रत तेह दूस्तार रे ।
मगोठ ओविछ निम आपवी, कम(?)य वेयावबसार र ॥४९॥पू०॥
मठम तप ते टोक(प)रो मठाही त सेव रासूर रे ।
समबमरण तप त सिरी, मोपारी सामायिक पुग र ॥५०॥पू०॥
खडिण माल पहिरावमी, उत्तम क्रियाए त जोड़ रे ।
परसीय बस्त से संमझी, लाख मसंरिन हाड़ रे ॥५१॥पू ॥
आ गुरु क्षामण देवना, वाहण मा रखवाल रे ।
मगति सगी मानिय काड़, फलइ मनोरथ माल रे ॥५२॥पू०॥

राग—केदार गौड़ी

दिन २ महोत्सव अति घणा, श्रीसंघ मगति सुहाइ ।
मन शुद्धि श्रीगुरु सेवीयइ जिणि सम्पइ निरमुल पद ॥५३॥पू०॥
भविक जन वंदो सद्गुरु पाय, श्री खरतर गच्छराय ॥भ०॥
प्रमु पाटिण चावीसमइ, श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि ।
उपासकारी अभिनवो उदयो पुन्य अंकूर ॥५४॥भ०॥
शाह (श्रावक) भंडारी वीरजी शाह राका नइ गुरुराग ।
वर्द्धमानशाह विनयइ घणा, शाह नागजी अधिक सोभाग ॥५५॥भ०॥
शाह बडा शाह परमसी देवजीने जैवशाह ।
श्रावक हरराज(पा)रीरजो, मानजी अधिकउ उच्छाह ॥५६॥भ०॥
भंडारा माइम मइ भगति घणी शाह जावडने घणा भाव ।
शाह मनुमान शाह पदमसीया भंडारी अमीउ अधिक उछाह रे ॥५७॥
तिम मिलइ श्रावक श्राविका, संमघइ पूज्य वखाण ।
हीयडइ उल्लटइ धरमइ धम सोभ्या जनम प्रमाण ॥५८॥भ०॥

आम्ह देरो श्री संघनो, पुज्यजी रह्या चउमास ।
धर्मनो माग उपदिसइ इम पहुंतो मननी आश ॥५६॥म०॥
प्रतिमाप्रतिष्ठा थापना, दीक्षा दीयइ गुरुराज ।
इम सफल मेर मत्र तहनो, न करइ सुकृत ना काज रे ॥६०॥म०॥

राग —शुद्ध मल्हार

आव्यो मास असाढ़ झबूके दामिनी रे ।
जोवइ २ प्रीयडा वाट सकोमल कामिनी रे ॥
चातक मधुरइ सादिकि प्रीऊ २ उच्चरइ रे ।
बरसइ घण बरसात सजल सरवर भरइ रे ॥६१॥
इण अवसरि श्रीपूज्य महा मोटा जती रे ।
श्रावक ना सुख हेत आया त्रंबावती रे ।
जोवइ २ मम गुरु रीति प्रतीति मनइ वसी रे ।
विहारमणी साथ रमइ मननी रसी रे ॥६२॥आं०॥
संवेग सुधारसनीर सजल सरवर भर्या रे ।
पंच महाव्रत मित्र संजोगइ संचर्या रे ।
उपसम पालि कैवरि तरंग वैरागना रे ।
सुमति गुप्ति वर नारि संजोग सोभागना रे ॥६३॥
प्रवचन वचन विस्तार अरथ तरवर घना रे ।
कोकिल कामिनी गीत गायइ श्री गुरु तणा रे ।
गाजइ २ गगन गंभीर श्री पुज्यनी देशना रे ।
भविगण मोर चकोर थायइ शुभ वासना रे ॥६३॥

सदा गुरु ध्यान स्नान करि गोतम वहइ रे ।
कीर्ति सुजस विसाल सकल जग मह महइ रे ।
सात खेत्र सुठाम सुवर्मइ नोपजइ रे ।
श्री गुरु पाय प्रसाद सदा सुख संपजइ रे ॥६४॥
सामग्री संयोग सुधम मइइ सुगइ रे ।
फलीया पुण्य व्यापार आधार सुहामणा रे । २
पुण्य सुगाल इवंति मिल्या श्री पूज्यजी रे ।
वाहण आव्या खेति वर बाइ हर ? रमजी रे ॥६५॥
जिहां २ श्रीगुरु आण प्रवर्ते तिहि किणइ रे ।
दिन २ अधिक जगास भो वाहज्यों तिह किणइ रे ।
ज्यां लग मह गिरिन्द ग्रहगणि तारा घणा रे ।
तां लगि अविचल राज करउ गुरु अमह तणा रे ॥६६॥
परता परण पाम जिनसर संभगइ रे ।
श्रीगुरु ना गुण ज्ञानहष भवियण भणइ रे ॥
"कुशललाभ" कर आदि श्रीगुरु पय नमइ रे ।
श्रीपूज्य वाहण गीत सुणतां मन रमइ रे ॥६७॥

संवत सोल सतरोत्तरइ पाटण नयर मझार रे।
मेळी वृरसन सहु संमत, मन्थ नी साखि साधार र ॥५॥जीतउ०॥
पूर्व किरद उजवाळिमउ साखि वालइ सहु लोक रे।
तेज खरतर सद्गुरु तणउ मतिमती ते मयउ फोकरे ॥६॥जीतउ०॥
रिगमती (मतिमती) गो हूंतउ 'कंकडो' वोलतो माल पंपाल रे।
कष्ट फोघउ खरतर गुरे, माण्ड बाळ गोपाल रे ॥७॥जीतउ०॥
निकपट नूर अतिसइ घणइ, खरतर सोइ सम कोडि र।
जंबु करिगमता क मिळइ, मय किम पामइ सोइ रे ॥८॥जीतउ०॥
माणिक्यसूरि पाटइ तपइ रिहड कुल सिणगार रे।
श्रीजिनचन्द्र सूरि गुणमा निलउ, सेवक मन सुखकार रे ॥६॥जी०

---

(२८) विधि स्थानक चौपई

गरुओ गच्छ खरतर तणो जेहनै गुरु श्रीजिनदत्तसूरि।
मन्त्रसूरि माणइ मणों, प्रम्मन्ता होइ आणंद पूरि कि ॥१॥
सूरि शिरोमणि चिरजयउ श्रीजिनचन्द्रसूरि गणधारि।
कुमति वद्ध जिण भांजियउ, वर्त्यो जग मांहिं जय र कार कि ॥२॥
बाळपणइ चारित्र लियउ, विद्या बुद्धि विनय भंडार।
अविधि पंथ जिण परिहरी धारइ पंच महाव्रत भार कि ॥३॥
गुण छतीस सदा धरइ कळिकाळइ गोयम अवतार।
सहु गच्छ माइ सिर धणी रूपे मयण मनायउ हार कि ॥४॥
सूरि "जिनेश्वर" जगतिलउ तासु पाटाऽमय दव विख्यात।
वृत्ति नवांगि जिणइ करो, तदा खरतर प्रगटावदात कि ॥५॥

श्रीसेट्ठी लटनी लटइ, प्रगट किया जिण संमण पास ।
कुमट गमाड्यउ तेहनो ते खरतर गच्छ पूरइ आस कि ॥६॥
संवत सोल सत्तोतरइ (१६१७) अणहिल पाटण नगर मझार ।
श्रीगुरु पाउधा विचरता, सहु भवियण मन हर्ष अपार ॥७॥
केइ कुमति कदाग्रहिया बोलइ सूत्र भरम विपरीत ।
निज गुरु मानित भोलवइ तिहां कणि श्रीगुरु पाम्यो जीत कि ॥८॥
धर्मसागर मही मूरखो, पंडित तणो बहु अभिमान ।
सागर खीचर सम थयो जिहि तर्यो खरतर गुरु मानि कि ॥६॥
पाटण मांहि पंचासरी पाछा पाखलि में पोशाल ।
पौल वेई पैसी रह्यो, ते मुनि खवत आज पंचाल कि ॥१०॥
गच्छ चौरासी मेळवी पंच शाख नी साखि उदार ।
जीत्यउ खरतर राखियो, ए सहुको जाणै संसार कि ॥११॥
मुनि उपधान पौरसी बहु परिपुना कहैतां दोष ।
मृषावाद इम बोलतां बीजो मन किम पामे पोष कि ॥१२॥
पजा दिवस ना बाकुला मांहा गोरस छोया नीर ।
विधिवादइ साधु क्रिया छामि २ ए हीनें हीर कि ॥१३॥
वर्धमान जिन ना (पा?) रजै, छोया वासी मुद्द आचा(हा?)र ।
संघट्टा वेहना तुम्हे टाळो छो ए कवण आचार कि ॥१४॥
पव भारि पोसह तणा बोलइ सूत्र भरम मे मांहि ।
पर्व पखे पोसह करो तेहनी नवि दीसै किह मांहि कि ॥१५॥
मानवीम शास्त्रेरहा इम पूछ्या छइ बहु बोल ।
ते सूधी परि सद्दहो, मत भामक करइ (ग) वामो निठोल कि ॥१६॥

रोम रोम हम मनि नहीं, एक जीभ किम करउं बखाण ।
श्रीजिनकुशल सुरिन्द्र नै, समरणि थायै कोड़ि कल्याण कि ॥१७॥

गहूली नं० (२६) राग—गूजरी ।

भव मइ पायउ सब गुणजांण ।
साहि अकबर कहइ ए सुगुरु, जिनशासन सुलताण ॥भव०॥आंकणी॥
मनोव सती मई बहुत निहाले, नहो को एह समान ।
के कोपी के लोभी कूड़ा कइ मन धरइ गुमान ॥१॥भव०॥
गुरुनी वाणि सुणी अवनिपती, बहुपरइ धइ सन्मान ।
देस विदेस जीव हिंस्या टालो भेजी निज फुरमान ॥२॥भव०॥
श्रीजिनमाणिक सूरि पटोधर खरतरगच्छ राजान ।
चिरजीवो जिनचंद यतीश्वर कहइ मुनि"लब्धि"सुजान॥३॥भव०॥

गहूली नं० (२७) राग—गूजरी ।

दुनिया चाहइ दो सुलतान ।
इक नरपति इक यतिपति सुन्दर आने हइ रहमान ॥दु०॥आंकणी॥
राय राणा मू मरिजम मापी बरताबो निज आण ।
बब्बर बंस हुमाऊ नंदन अकबर माहि सुजाण ॥१॥दु०॥
विधि पथ दीपक दुरजन जनक, गाजो मद अभिमान ।
श्रीजिन सुत भव सूरि सिरोमणी जग मांहि 'जुगप्रधान ॥२॥दु०॥
चाहइ सिहासण हुकम मुनावति को मनि शंका आण ।
सिर मउड़ बहु उनकुं सेवनि इनकुं मुनि राजान ॥३॥दु०॥

इक छत्र सिंह धरि मयाडंबर, भारति दोऊ समान।
कहनि"लब्धि"जिनचंद धरायर, प्रतिपो जहां दोऊ भान ॥मा० सु०॥

गहुंली नं० (२८) राग—धमल धन्याश्री।

नीको नीकउरी जिनशासनि प गुरु नीको।
युगप्रधान जगि जंगम यही,दीयउ प्रभु अकबर टी(टी?)कउरी॥जि ॥मां०
राम श्रम (भाज) हम सुन्दर सफड मयड भव नीको।
साहि अकबर कहइ सु मोकुं, दरसन भयो गुरुजी कउरी ॥१॥जि०॥
मोहन रूप सुगुरु बड़भागी, छयो मान मोजीद को।
जे गुरु उपर मद मच्छर धरतां, हुव मुख तिहकु फीकउ री॥२॥जि०॥
श्रीगुरु नामि दुरति हरि भाजइ नाद सुनी जिउ सींह को।
मार (ह?)मोचंत सुतन चिर जीवउ, साहिब "लब्धि"मुनी को ॥३॥

गहुंली नं० (२९) राग—सोरठी।

आज घउरंग आणंद अंगि वपनों,
आज गच्छ राज ना गुण गुणीजइ।
गाम पुरि पाटणइ रंगि वधावणा
नवनवा उछव संघ कीजइ ॥ आज ॥मा ॥
हुकम श्री साहि नइ पंच नदि साधिनइ
उदय कीयउ संघनो सवायो।
संघपति सोमजी सुणउ शुभ विनती
सोय जिणचंद गुरु आज आयो ॥१॥मा०॥

साहि प्रतिबोधना पंच नदी साधतां,

सुभसमइ आस अंगि मेर वागी ।

"कल्याणकल्लोल" मुनि कहइ (कहति) गुरु गावतां

भाग्य मुझ परम मनि प्रीत जागी ॥२॥भा०॥

(३०) गहुंली

सुगुरु मेरउ कामित कामगवी ।

मनशुद्ध साही अकबर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥१॥सु०॥

सकल निसाकर मंडल समसरि, दीपति वदन छवि ।

महिमंडल मइ महिमा जाकी दिन प्रति नवीनवी ॥२॥सु०॥

जिनमाणिक सूरि पाटि उदयगिरि, श्रीजिनचंद्र रवी ।

पेखत ही हरखत भयउ मन मइ 'रत्न निधान' कवी ॥३॥सु ॥

(३१) सुयश गीत ॥ राग—धन्याश्री ॥

नमो सूरि जिनचन्द दादा सदादीपतउ

दीपतउ सुरमण जाण विसउ ।

रिद्धि नवनिद्धि सुखसिद्धि दायक सही

पादुका प्रहसमइ उठि वेग्र ॥ १ ॥ नमो ॥

सघन मोतियां चौक दाटमइ दरउ

माहि सखेम जसकोप सवा ।

गच्छ खरतरा ना मुनिवर रायिया

साखीया सूरिजिनचन्द देवा ॥ २ ॥ नमो० ॥

भाग सोभाग वइराग गुण आगला,
ओळखा कलियुगि जीव जाणयउ ।
मन्तलगि मातम घरम कारिअ(क)री,
सग पहुतां पछी सुर वखाणयउ ॥ ३ ॥ नमो० ॥
खरतर सेवकां सुरतरू सारिखउ,
कष्ट संकट सवि दूर कीजइ ।
"हर्षनंदन" कहइ चतुर्विध श्रीसंघ,
दिन दिन दौलति एम दीजइ ॥ ४ ॥ नमो ॥

अत्यंत आदर मान गुरुने, पातसाह अकबर दियइ।
धर्म गोष्ठि करतां दया धरता, हिंसा दोष निवारिया।
आणंद वरस्या हुआ ओच्छव, गुरु लाहोर पधारिया ॥२॥
श्रीअकबर आग्रह करी, काश्मीर कियो रे विहार
श्रीपुरनगरसोहामणु, तिहां वरतावी अमार॥
अमार वरती सर्व धरती हुओ जयजयकार ए,
गुरु सीत ताप(मा) परीसह सह्या विविध प्रकार ए।
महालाभ जाणी हरख आणी, धीरपणु हियडे धरी
काश्मीर देस विहार कीधो श्रीअकबर आग्रह करी (३)
श्री अकबर चित रंजियो, पूज्यने करइ अरदास।
आचारिज मानसिंघ करउ, अम मन परम उल्लास
अम्ह मन आज उल्लास अधिकउ फागुण सुदी बीजइ हुवा।
स्वहस्थि जिनचंदसूरी दीधी आचारिज पद संपदा।
करमचंद मंत्रीसर महोत्सव आडंबर मोटो कियो।
गुरुराजना ॥४॥
गुण देखि गिरुआ वरीस सह गुरु, चोपडा चढती कला।
चांपसी साह मल्हार चांपल- देवि माता तन भला,
पातसाह अकबरसाहि परख्यो श्रीजिनसिंघ सूरि चिरजयउ।
आसीस पभणइ "समयसुन्दर" संघ सहु हरखित थयउ ॥५॥

इति श्रीजिनसिंहसूरीणां अवदात गीत समाप्तम्

(२) जिनसिंहसूरि गहुंली

पाटण मांहेथी सदगुरु वांदिवाजो, सखि मुझ मनि वांछिवानो कोड़ रे।
श्रीजिनसिंहसूरि आवीयाजी, सखी करूं प्रणाम कर जोड़ रे ।।१।।आ०
मात चांपलदे उरि धर्याजी, सखो चांपसी साह मल्हार रे ।
मनमोहन महिमा निलउजी, सखो चोपड़ा साख शृंगार रे ।२।आ०
खरतरगच्छ मत भाइयोजी, सखी पैच महाव्रत धार रे ।
सकल कलागम सोहताजी सखो सबिर विद्या भंडार रे ।।३।।आ ।।
श्री अकबर आग्रह करिमी, सखी काश्मीर कियउ विहार रे ।
साधु आचारइ माहि रंजीयउ रे, सखो लिहां बरताबि अमारि रे।४।आ०
श्रीजिनचंद्रसूरि थापीयउजी मखो आचारिज निज पटधार रे।
संघ सयल मान्या फळी, सखी खरतर गच्छ जयकार रे ।५।आ०।
नंदि महोच्छव मंडोयउजी, सखि कर्मचंद्र मंत्रीस रे ।
नयर लाहोर बिच बावरइजो, सखो कवित्त कोडि बरीस रे ।६।आ०
गुरुजी मान्या रे मोटे ठकुरेजो सखी गुरुजी मान्या अकबरसाहि रे।
गुरुजी मान्या रे मोटे रांवरेजो, सखी प्रभु हा त्रिभुवनमांहि रे ।७।आ०
मुझ मन मोह्यो गुरुजी तुम गुणेजो, सखि जिम मधुकर सहकार रे ।
गुरुजी तुम दरसण नयण निरखतांजी सखी मुझमनि हर्षअपार रे ।८।
चिर प्रतपउ गुरु राजीयउजी सखो श्रीजिनसिंघसूरीस रे ।
'समयसुंदर' इम विनवइजी, सखो पूरउ माहरउ मनहीं जगीस रे।९।आ०

बधावा (६)

आज रंग बधामणां मोतीयडे चउक पूरावउ रे ।
श्रीआचारिज आविया, श्रीजिनसिंहसूरि बधावउ रे ।।१।।आ ।।

युगप्रधान जगि जाणीयइ, श्रीजिनचंद्रसूरि मुणिंद रे ।
सहहथि पाटइ थापीया गुरु प्रतपइ तेजि दिणंद रे ॥२॥आ०॥
सुर नर किन्नर हरषीया, गुरु सुकलित वाणि वखाणइ रे ।
पातिशाहि प्रतिबोधियउ, श्रीअकबर साहि सुजाण रे ॥३॥आ०॥
बलिहारी गुरु वयणडे?(वयणडे)बलिहारी गुरु मुखचन्द रे ।
बलिहारी गुरु नयणडे, पेखतां परमाणंद रे ॥४॥आ०॥
धन चांपल दे कूखड़ी, धन चांपसी साह उदार रे ।
पुण्य रतन जिहां ऊपना, श्री चोपड़ा शाख मझार रे ॥५॥आ०॥
श्री खरतर गच्छ राजियउ, जिनशासन माहि दीपउ रे ।
"समयसुंदर" कहइ गुरु मेरउ, श्रीजिनसिंघसूरि चिर जीवउ रे॥६॥आ०

इति श्री श्री श्री आचार्य जिनसिंहसूरि गीतम्
॥ श्री हर्षनन्दन मुनिनालिखितम् ॥

---

(७)

आज कुं धन दिन मेरउ ।
पुन्य दशा प्रगटी अब मेरी, पेखतु गुरु मुख तेरउ ॥ १ ॥ आ० ॥
श्री जिनसिंहसूरि सुद्दि (?) मेरे जीउ में सुपनइ मइ नहीय अनेरो ।
कुमुदिनी चन्द जिसउ तुम लोयउ, दूर थकी तुम्ह नेरउ ॥ ॥आ०॥
सुगुणाए दरसन आनंद (आपउ) बरसनी नयन को प्रेम घनेरउ ।
"समयसुन्दर" कहइ सब कुं वल्लभ जीउ सुं जिन धरम अधिकरउ॥२॥आ

---

(८) चौमासा गीत।

श्रावण मास सोहामणो, महियल वरसे मेहो जी।
बापीयड़ारे पिउ २ करइ, अम्ह मनि सुगुरु सनेहो जी॥
अम मन सुगुरु सनेह प्रगट्यो, मेदिनी हरयालियाँ।
गुरु जीव जयणा जुगति पालइ पदइ नीर परणालियाँ॥
सुध खेत्र समकित बीज वावइ, संघ आनंद अति थयो।
जिनसिंघ सूरि करउ चउमासउ, श्रावण मास सोहामणो॥१॥
भाद्रव भावइ भाद्रवइ नीर भर्यां नीवाणो जी।
गुहिर गंभीर ध्वनि गाजता, सद्गुरु करिही वखाणो जी॥
वखाण कल्पसिद्धांत वांचइ, भविय राचइ मोरड़ा।
अति सरस वेसण सुणी हरखइ, जेम चंद चकोरड़ा॥
गोरड़ी मंगल गीत गावइ, कंठ कोकिल अभिनवउ।
जिनसिंहसूरि मुणिंद गातां, मले रे आव्यो भाद्रवउ॥२॥
आसू मास सहु फली निरमल सरवर नीरो जी।
सद्गुरु उपशम रस भर्यां, सायर जेम गंभीरो जी॥
गंभीर सायर जेम सद्गुरु, सकल गुण मणि सोहए।
अति रूप सुंदर मुनि पुरंदर भविय जन मन मोहए॥
गुरु चंद्रनो परि प्रगट अमृत, पूजतां पूगइ रली।
सेवतां जिनसिंघ सूरि सद्गुरु, आसू मास आसा फली॥३॥
काती गुरु चढती कला, प्रतपइ तेज दिणंदो जी।
चरणीयइ रे धाम भीपतां जग मनि परमाणंदो जी॥
जन मनि परमाणंद प्रगट्यो परम ध्यान अथा घणा॥

वलि परव दिवाली महोत्सव, रलीय रंग वधामणा ॥
षट्मास च्यार मास जिनसिंघ सूरि संपद आगला ।
वीनवइ वाचक "समय सुन्दर", काती गुरु चढ़ती कला ॥४॥

(९) गहुंली

आचारिज तुमे मन मोहियो, तुमे जगि मोहन वेलि ।
सुन्दर रूप सुहामणो, वचन सुधारस केलि ॥ १ ॥आ०॥
राय राणा सब मोहिया, मोह्यो अकबर साह रे ।
नर नारी रा मन मोहिया महिमा महियल माह रे ॥ २ ॥आ०॥
कामण मोहन नवि करो, सुधा दीसो छो साधु रे ।
मोहनगारा गुण तुम तणा, ए परमारथ साध रे ॥ ३ ॥आ०॥
गुण देखी राचे सहुको, अवगुण राचे न कोय रे ।
हार सहुको हियइ धरै भेडर पाय तलि होय रे ॥ ४ ॥आ०॥
गुणवंत रे गुरु अम्हतणा जिनसिंहसूरि गुरुराज रे ।
ज्ञान क्रिया गुण निर्मला "समय सुन्दर" सरताज रे ॥ ५ ॥आ०॥

(१०) गुरुवाणी महिमा गीत

गुरु वाणी (जग) मनमथ मोहीयउ, साचा मोहण वेलो जी ।
सांभलता सहुनइ सुख संपजइ, जाणि अमी रस रेलो जी ।१।गुरु०॥
वावन चंदन तई अति सीतली निरमल गंग तरंगो जी ।
पाप पखालइ भविजन मन तणा, लागो सुम मन रंगो जी ।२।गुरु०॥

वचन चातुरी गुरु प्रतिबूझवी, साहि "सलेम" नरिंदो जी।
अभयदान नइ पडहो बजावियउ, श्रीजिनसिंह सूरिंदो जी।३सुगु०॥
चोपड़ा वंशइ सोम वखाणउ, चांपसी शाह मल्हारो जी।
परवादी गज भंजन केसरी, आगम अर्थ भंडारो जी।४सुगु॥
युगप्रधान सवाई थापिया अकबर शाहि हजूरो जी।
'राजसमुद्र' मनरंगइ उपरइ, प्रतपउ ज्यां ससि सूरो जी।५सुगु०॥

—

(११) गच्छपति पद प्राप्ति गीत

श्रीजिनसिंहसूरि पाटइ बाठा श्रीसंघ आप्या (ह्या?) मान रे।
खरतरगच्छपति साही (पदवी) पाइ, आप्यउ दिन दिन वान॥ १॥
माई ऐसा सद्गुरु वंदीयइ, जंगम जुगहपूरधान रे।
कोडि दीवाली राज करउ ज्युं, धू तारा असमान रे।२मा०॥
सूरिमंत्र सिर छत्र बिराजइ, क्षमा मुगट प्रधान रे।
सुमति गुपति दुइ चामर बींजइ, सिंहासण धर्मध्यान रे।३मा॥
श्रीसंघ रे युगप्रधान पदवी छाजी आया "मकुरबखान" रे।
साजण मन चिन्त्या हुआ, मन्या तुरकाण माण रे।४मा॥
श्रीसंघ रंग करइ अति उच्छव शोभा बहुल दाम रे।
दस दिशि कीर्त्ति कविजन बोलइ, 'हरखनन्दन' गुणगान रे।५मा०॥

—

(१२) ॥निर्वाण गीत॥ ढाल —निंदलरी

मेडतइ नगरि पधारीया श्रीजिनसिंह सुजाण हो। पूजजी।
पोस वदि तेरस निसि मरइ, पाम्यउ पद निरवांण हो।१पूजजी०॥

तुम पञ्जयां माहर किम सरइ, पेखउ नी नही वार हो ।पूजजी०॥
मथम निहाळउ नेह सुं, याठउ सहू परिवार हो ॥ आंकणी० ॥
दीर्घ नींद निवारीयइ, घम तणउ प्रस्ताव हो । पूजजी० ॥
राइ प्रायच्छित साचवउ, पडिक्कमणउ शुभ भाव हो ॥२॥पू०॥
साउर वाजी देहरउ बाजइ मंगल पडूर हो ।
हरखर पंखी मागीया, आगउ सुगुरु सनूर हो ॥३॥पू०॥
मइफाटी पगडउ थयउ, दीयउ पिण फाडण हार हो ।
चौढायां पासइ नहीं, कइ रूठउ करतार हो ॥४॥पू०॥
ममरइ मगल्म मंवरा, "मुकुरबखान" नवाब हो ॥पू०॥
कागल देस विदेश ना, वांची करइ (उ?) जवाब हो ॥५॥पू०॥
प्हुबा वेस खाटिम, मी(वि?)नति करइ विशेष हो ॥पू ॥
पानी परवाडि होजीयइ, सुहइ मामइ देस हो ॥६॥पू०॥
ए पातिसाही मेवडउ, रूमा करइ अरदास हो ॥पू०॥
एक घड़ी पडगुं नहीं, पाळउ श्री जो पास हो ॥७॥पू०॥
माधो बोहिका श्राविका ओसवाल श्रीमाल हो ॥पू०॥
यथासमाधि मइइ करउ, एक वराण रसाल हो ॥८॥पू०॥
बाटम्हारउ पाछि गयउ रहा पोलमल हार हो ॥पू ॥
आप सवारथ मोहम्यउ, पाम्यउ सुरलोक सार हो ॥९॥पू०॥
मौन महा मनचिनथी कीधउ कोइ आलोच हो ॥पू०॥
मगन्न शिष्य सबाजीया आगउ मूल थी माप हो ॥१०॥पू०॥
पाट तुम्हारउ प्रनपीयउ, श्रीजिनराज सनूर हो ॥पू ॥
आपापीरज आधिको कवा श्रीजिनसागर सूर हो ॥पू०॥११॥
मनि २ माग्यो वंदना, श्रीजिनसिंह सूरिंद हो ॥पू०॥
मानिप करज्यो सवरा 'हरखनन्दन' आणंद हो ॥१२॥पू०॥

श्री क्षेमराज उपाध्याय गीतं

सरसति करि सुपसाउ हो गाइसु सुहगुरु रायो ।
गाइसु सुह गुरु सयल सुग्वरु, गछि खरतर सुहकरो ।
महियलइ महिमावंत मुणिवर, पाऊपणि संजम भरो ।
सिद्धान्त सार विचार सागर, सुगुणमणि वयरागरो ।
जयवंत श्री उवझाय खेमराज गाइसु सही य सुह गुरो ॥१॥
भवियण जण पडि बोहइ हो, छाजहड़ कुलि सोहइ हो ।
छाजहड़ कुलि अवतरीय सुहगुरु, साह लीम्ब नन्दणो ।
वर मारि छोजलेवो अवरहं, पाप ताप चन्दणो ।
दिखीया श्री जिनचन्द्रसूरि गुरि संवत पनर सोलोत्तरह ।
सीखविय सुपरहं सोमधज गुरि, भवियण, (मण) संशय हरइ ॥२॥
उपसम रसह भंडारु हे, संजमसिरि वर हारु ए ।
संजम सिरि वर हार सोहइ, पूरव ऋषि समवडि धरइ ।
मकरंद नवरस सरस वैयण, मोह माया परिहरइ ।
जिणमारग मरइ दीपवइ, पंच पमाय निवारए ।
उवझाय श्री खेमराज सुहगुरु, भवह निवारए ॥३॥
कनक मण्ड गिरसामी हे, मइ नवनिधि सिद्धि पामी है ।
पामीय सुहगुरु तणीय सेवा सयल सिद्धि सुहामणी ।
चाउले चौक पूरेवि सुहव वधावउ वर कामिणी ।
दीपंत दिनमणी समत तेजइ भवियजण सुखिइ संजइ ।
कवियण भी उवझाय खेमराज 'कनक मण्ड चिरनंदउ ॥४॥
गुरु गीतं (वर्द्ध० भं० गुटका से) १७ वीं सदी लि०

श्री भावहर्ष उपाध्याय गीतं

श्री सरसति मति दिउ घणी, सुहगुरु करउ पसाय।
हरष करी हुं वीनवुं, श्रीभावहर्ष उवझाय ॥ १ ॥
श्री भावहर्ष उवझायवर, प्रतपउ कोडि वरीस।
तूठी सरसति देवता, हरषि दीयइ आसीस ॥ २ ॥
बुद्धि करीनइ जिम सोड़ी(य)इ, धीर गम्भीर गुणेहि।
मेरु महासागर मही अधिका ते गुरु देहि ॥ ३ ॥
दिन दिनि संजमि संचरइ सायर जिम सित पाखि।
तप जप खप तेहवो करइ, जिसी न अभइ आखि ॥ ४ ॥
सुरतरु जिम सोहामणा मन वंछित दातार।
हर्षे करि सुख संपदा, तर आवण अकम्यार ॥ ५ ॥

राग :—सोरठी

जलधर जिम जगत्र जीवाडइ, मन परम प्रीति धरि आवइ।
वैराग रस सरस दिखाडइ, दुख दुरमति दूरि गमावइ ॥ ६ ॥
भावक भावक स्चइ मोर जीम श्री संघ साइ।
सरवर तै भवियण श्रवण वाणी रमि भरियइ विमण ॥ ७ ॥
उगाइ तिहां सुकृत अंकूर, टलइ मिथ्या मर तमस (तिमिर?)पूर।
संताप पाप दुइ दूर जिनशासन विमलउ सूर ॥ ८ ॥
श्री भावहर्ष उवझाय, ते जलधर कहियइ स्वाय।
उपसम रसि पूरित काय, सोहइ संसारि सहाय ॥ ९ ॥

दूहा'—श्रीजिन माणिक्यसूरि गुरु, दीघउ पद उवझाय।
जेसलमेरउ माहि सुविं वसमि नमउ तसु पाय ॥ १० ॥

सुगुरु पाय प्रमोद नमीयइ, दुरत दुरगति दूरइ गमीयइ।
भव सागरि सिमि न भमीयइ, सुख संपति सरिसा रमीयइ ॥११॥

खरतरगछि पूनिम चन्द, गुरु दीठइ मनि आणंद।
सेवता सुरतरु कंद, रंजइ गुरु वचनि नरिंद ॥१२॥

साह कोडा नंदन धन्न, कोडिम दे उयरि रतन्न।
'कुशलतिलक' सुगुरु चा सीस, उवझाय सदा सुजगीस ॥१३॥

श्री आचार्य हितकारी, सुभत मुनि पंथ विचारी।
पंच समिति गुपति गुणधारी, विहरइ गुरु दोष निवारी ॥१४॥

श्री आचार्य उवझाया, चिरजीवउ मुनिवर राया।
मई हरखइ सुगुरु गाया, सुख दीयइ अधिक सुहाया ॥१५॥

(संग्रहस्थ पत्र १ तत्कालीन लि० रचित)

सुखनिधान गुरुगीतम्

राग धन्याश्री

सुगुरु के पगमी भविषण पाया

श्रीसमयकलश गुरु पाटि प्रभाकर, सुखनिधान गणिराया ।१।

खुंबड वंस विभाव सुणीजइ, घइ सुख सम्पति भ्यामा।

गुणसेन वदति सुगुरु सेवाताई दिन २ तेज सवाया ।२।

१ सं० १६८९ वैशाखदि १ दिने शुक्रवारे पं० गुणसेन लिखितं

कृतिरेव रत्न वाचनार्थं (श्रीपूज्यजी संग्रह वमुपुरेके)

श्री साधुकीर्त्ति जयपताका गीतम् ।

॥ जयपताका गीत ॥

सोलहसइ पंचवीसइ समइ आगरइ नयरि विमप रे ।
पोसहकी चरचा थकी खरतर सुजस नी रेल रे । १ ।
खरतर गच्छ पद पामीयउ, साधुकीर्त्ति जय सार रे ।
साहि अकबर दरबार श्रीमुखई पण्डित पद प्यार रे । खर०
"बुद्धिसागर" तणी बुद्धि गइ, भाखीयउ मति अविचार रे ।
पट थया तथा ऋषिमती खरतरे थइयउ जयकार रे । २ ।
संस्कृत तपगछे न बोलीयउ, थया किसाण अपार रे ।
चतुर अकबर गुरु पंडिते करी सागर बुधि हार रे ।३। खर०
तर्क व्याकर्ण पढ़्यउ नहीं मरम न सुण्यउ अलगउ ए ।
मछम सागर बुधि रूपरमउ, भाखीयउ अशुचि नउ पिंड रे ।४। खर०
गंगासि साह पोपू तणइ, मोडीयउ कुमत नउ मान रे ।
बचन पतिसाह ए बोलियउ, बुद्धि सागर अजाण रे ।५। खर०
पीनसि माहि थी नीकली अहवा रहु पनाह रे ।
ऋषिमती सहु मच्छ पढ़ता सागर बुद्धि तणउ भंग रे ।६। खर०
हुकम करि पातिसाह दीया, भेरि दमाम नीसाण रे ।
गाजतइ बाजतइ आवीया खरतर सुजस बखाण रे । ७ । खर०

श्रीजिनचन्द्रसूरि सानिधइ, "दया कलश" गुरु सीस रे।
"साधुकीर्त्ति" जगि जयत अउ, कहइ कवि "मल्ह" मगीस रे।।८।।सा०

।। इति श्री साधुकीरति गुरु जयपताका गीतं।

(२)

संवत् दस सय असीयइ पाटणइ, ची (चैत्य) वासी मच्छिमाणो जी।
खरतर बिरुद उदयवन्त दुर्लभ मुखइ सूरि जिणेसर जाणोरे।।१।।
जय पाडयउ (पाम्यो?)खरतर पुरि आगरइ, साधुकीर्त्ति बहु नूरे जी।
पोसह पर्व दिनइ जिण थापीयइ, अकबर साहि हजूरे रे।।२।। जय
आगरइ पुरि भिगसरि सुदि बारसी सोलपंचवीस वरीस जी।
पूरव बिरुद सही उजवालियउ साधुकीर्त्ति मुनि सुजगीशो रे।।३।।ज०
च्यारि वरण खरतर (जु)जय (जय)कारि, जाणइ बाल-गोपालजी।
पूठा पाद कराऊ बहु कहइ कुमती सिर पंच ताळोजी।।४।। जय
कुबुद्धि पख थयउ तउ दिन सही, नीठउ मनइ ·· ·· ।।
तस्कर जिम हुइ मेरि भजाविनइ, आव्यउ रयणी ठामजी।।५।।ज०
थाहमल मेघराज मेतसी, के अकबर फुरमाणो जी।
पंच शब्द वजावी जय लहयउ, खरतर कोयउ मंडाणो जी।।६।।ज
श्रीजिनदत्त कुशलसूरि सानिधइ, उत्तम पुण्य प्रकारो जी।
कर जोडी मइ 'नरपति' बीनवइ खरतर जय-जयकारोजी।।७।।ज

इति श्री जयपताका गीतं ।। श्री । श्रा० मरही पठनार्थं ।।

(पत्र १ श्रीपूज्यजी सं०)

(३) गहूली राग—असावरी

वाणि रसाल अमृत रस सारिखी, मोह्या भवियण लोइ जी।
सूत्र सिद्धंत अर्थ सुधा भरइ, सुणतां सवि सुख होइ जी ॥१॥
सद्गुरु साधुकीर्त्ति नितु वन्दीयइ, उपशम रस भंडारो जी।
दीक्षा सुदृढ़ संजम गुण आगला, सयल संघ सुखकारो जी ।स०
पंच सुमति त्रय गुप्ति भली परइ पालइ निरतीचारो जी।
जे नर-नारी पय सेवा करइ, दुत्तर तरइ संसारो जी ॥२॥स०।
वसिग नन्दन गुरु पदवी फळा ओसवंश सिंगारो जी।
धन खेमल दे जिणि उयरइ धर्या, मयिंती कुखि अवतारो जी ।३स०
दरसणि नवनिधि सुख सम्पति मिलइ, ध्यावइ गुरु सीमोजी।
"देवकमल' मुनि कर जोडी भणइ पूरवइ मनह जगीसो जी ।४।स०
॥ सं १६२८ वर्षे माघसुदि १० आगरा नगर जिनचन्द्रसूरि राज्ये हंसकीर्त्ति लिखितं साविका साहिबो पठनार्थं ॥ पत्र १ श्री पुण्यजीव संग्रहमें । (अनायी पाठ्य गायगइ)

(४) कवित्त

साधुकीर्त्ति साधु आगमिक जिसो भव सागरको सार वतायों।
पडिताइ अकबर दरबार जोमइ जिणनाइ सुमति विहायों।
दीयइ जिन जिन चन्दर सदार दीयत बपु नीति विचारों।
मधुरता मद गगर सविं गया
गाय इक दानि सब गगड निवारों ॥१॥

कवि कनकसोम कृत

आद्रतपद वेलि

सरसति सामणी वीनवु, मुझ दे अमृत वाणि ।
मूल थकी खरतर तणा करिस्युं विरुद बखाणि ॥१॥
श्रावक भावी मिली सुणो, मनधरि अति आणंद ।
चित्त विषवाद न को धरउ, सांभउ कहइ मुनिंद ॥२॥
सोलहसय पंचीसइ समई, श्रावक कृपा मुनीस ।
चउमासि आया आगरै, बहु परि करि सुजगीस ॥३॥
"रतनचन्द" वयराग गमि, पण्डित "साधुकीर्त्ति" ।
"हीररंग" गुण आगलो साता 'देवकीरति' ॥४॥
तप करि "हंसकोर्त्ति" भलो, "कनकसोम" जसवंत ।
"पुण्यविमल' मति ध्यान धरि, "देवकमल" बुधिवंत ॥५॥
'ज्ञानकुशल" साता चतुर, 'यशकुशल" हि जस सिद्ध ।
"रंगकुशल" अति रंग करी "सुमनंद" सुप्रसिद्ध ॥६॥
वैरागे चारित्र लीयो, "कीरति(वि)मल सुजाण ।
बहु जिम धारा विस्तरी दिन २ चढ़ते वान ॥ ७ ॥
चालि—नितु दिन २ चढतइ वान, श्री संघ दीयइ बहुमान ।
तपके चरचा उठाइ श्रावकने पास सुणाइ ॥८॥
मो सरिखो पंडित कोइ नही मति आगरे कोइ ।
तिमि गर्व इसो मन कीधउ बुद्धिसागर अपयश लीधो ॥९॥

श्रावक मानै इम बोलई, अम्ह गाथारस(थी) कुण सोलइ ।
श्रावक कहइ गर्व न कीजइ, पूछी पंडित समझीजइ ॥१०॥
संघवी सतीदास कु पूछई, तुम्ह गुरु कोइ इहां छइ ।
संघवी गाजी नई भाखइ साधुकीर्त्ति छै इम दाखई ॥११॥
सिसि आगइ तिणि इक कीन्हउ, श्रावक वचने न पतीनउ ।
पोसह तिहि एक प्रकार, भ्रमि भूलउ त अविचार ॥१२॥
साधुकीर्त्ति तत्व विचार्यो, तत्वारथ मांहि संभार्यो ।
पौषध छई दोइ प्रकार, बूझ्यो नहीं सही गमार ॥१३॥
तिहां भिन्नल दोय वस कीहा, तपगछ तब थया निकीहा ।
मिली पदमसुंदर नइ आवइ, गच्छ ग्यासीकी पद रासई ॥१४॥
दूहा—पदम सुंदर इम बोलियउ, चंदन मायई कोइ ।
स्वारथ पहीलो आपणई तउ आयो इण ठोइ ॥१५॥
हिव अपराध खमउ तुम्हे, पदमो वरांसउ पद ।
हिव सरणे तुम आविया, काइ दिखाडउ छेद ॥१६॥
वपउ ने संतोषीयउ, पिणि साम्भई मन मांहि ।
साधुकीरति जिहां आविस्ये तिहां हुं आविसु नांहि ॥१७॥
सुणी वात खरतर खरी, संघ मिन्यो सब आई ।
गाज वजाडई अपिमनी हिव कीजइ तुम्ह भाई ॥१८॥
धालि—दीक्षा हिव हम्हे न होस्यां अपिमनीपनकी पन ग्रोस्यां ।
खरतर तेजमी बोलायो बहु आणंद सुं ते आव्या ॥१६॥
पंच मिलि वात पनोटी, खरगच्छो हुआ वसीटी ।
पतयान कि मारया यापो ते पर सिरि अनइ अम्ह आपउ ॥२०॥

तपगच्छ रिपु सोभावई, इहां पद्मसुंदर नहीं मावई ।
करिस्यां पातिसाह हजूर, खरतर भरि वाज्या तूर ॥२१॥
मिगसर वदी छठ प्रभातई मिलिया पातिसाह संघातई ।
नाममइ बोलावई पिछाणी, साहि बात सहु गुरुराणी ॥२२॥
आणंदइ खरतर मलहई, कविराज कहंकी माहणमई ।
निज २ बालक सवि आया, दिहाणई कविराज बुलाया ॥२३॥
अनिरुद्ध महार मिश्र, मिलिया विद भट्ट सहस्र ।
साधुकीर्ति संस्कृत भाखई, बुधिसागर स्युं स्युं दाखई ॥२४॥
पंडित कहइ मूढ गमार, तेरो नाम छै बुद्धि कुठार ।
पोषह चरचा विन पंथ, साचउ खरतर पख संथ ॥२५॥

दूहा.—

कविराजई निर्णय कीयउ, मूठउ बुद्धि कुठार ।
साहि पासि जाई कहू पोषह पर्व विचार ॥२६॥
पद्मसुन्दर हम चितवई, इणि हाणई मो हामि ।
साहि पास जाय कहई, यो हम जोवीयास ॥२७॥
मिगसर वदी बारस दिने, गया साहि आवासि ।
खरतर पूछा देवगुरु, तपा गया सब नासि ॥२८॥
साहि हजूर बोलाविया, स्वेताम्बर का न्याय ।
हुं करिसु तहकिम खरा, तेड्या पण्डित राय ॥२९॥

ढाल

दिव तेड्या पंडित रायइं कविराज सभा बोलायई ।
साधुकीर्त्ति संस्कृत बोलई, खरतर कहि वेदना तोल ॥३०॥

साहि सुगन दीयइ साबासि, खरतर मनि अधिक उल्लास ।
बुद्धिसागर कछु न आवई, साहि साधुकीर्त्ति कुं कल्याण ॥३१॥
पंडित सम (भी भा?) बोलई एम, निर्णय कीयो छै जम ।
खरतर गच्छ कई पख साचई, तपक्षम पलि कोइ न राचइ ॥३२॥
मुझ पंडित सम किम होइ, पातिसाह विचार्यो जोइ ।
तव पद्मसुंदर बोलमाय, कुकि रह्यो सभा मांहि लाम्यो ॥३३॥
चउपर्वी पोषह मान्या, खरतर कुं जयपद आप्यो ।
गजबजीया खरतर लोक, मत्सरिमती थया सब फोक ॥३४॥
तिण हुकम मेरि हु (हु?) इं बाबइ, तपा राति दीवी छे आवइ ।
पातिसाह सुणे ए वात, तपखरतरउं करउं निपात ॥३५॥
बाइमल मेवई छोड़ाया, माम सँग करी कढ़वाया ।
तपक्ष कहई घर मरि कीजई, हुरि(इ?)मेरि हुकम इम्ह दीजई ॥३६॥

दूहा:—

खरतर मनहि विचारीयो, एह वात किम होइ ।
जीती बाजी हारीयई, करई पराक्रम कोइ ॥३७॥
पोमू बाइमल नेतसी मेघउ पारस साह ।
नेमिदास धनराज सहजसिंघ, गंगदास भोज अगाह ॥३८॥
श्रीचंद श्रीवच्छ अमरसी हरराइ परवत कल्याण ।
अभमल पद्मसी मारहू रेडउ सामीदास सुजाण ॥३९॥
पोकमण (सी?)री तिहि मिल्या मोहेचा मँघनाम ।
श्रावक सम (भी) तेडावीया, महिम के कोटीवाल ॥४०॥

तपगच्छ रिपु सोभावई इहां पद्मसुंदर नहीं भावई ।
करिस्यो पातिसाह हजूर खरतर घरी काम्या नूर ॥८१॥
मिगशर वदी पडू प्रमाणई मिलिया पातिसाह संघाणई ।
चाहमब बोलावई पिछानो, साहि पास सहु गुणखानी ॥८२॥
आणंदइ खरतर माहइं, कविराज कहुंको माहबल्ल ।
मिस ए यानक मवि भाषा, दिहाडई कविराज बुलाया ॥८३॥
अनिरुद्ध महाबे मिश्र, मिलिया तिहं भट्ट सहस्र ।
साधुकीर्ति संस्कृत भाषई, बुधिसागर सहु स्युं दाखई ॥८४॥
पंडित कहइ गुरु गमार, तेरो नाम छै बुद्धि कुमार ।
पोषह परूपा विन पष, सतवई खरतर पक्ष संघ ॥८५॥

दूहा—

कविरामई निर्णय कीयउ, झूठउ बुद्धि कुमार ।
साहि पासि जाई कहूं पोषह पष विचार ॥८६॥
पद्मसुन्दर इम चितवई, इणि हाणई मो हानि ।
साहि पास जाइ कहई, यो हम गोबीग्गन ॥८७॥
मिगसर वदी बारस दिने गया साहि आवासि ।
खरतर पूठइ देवगुरु, तपा गया सब नासि ॥८८॥
स्वेताम्बर का न्याय ।
करिस तउकिग मरउ, देइया पगिडग राय ॥८९॥

ढाल

रामई, कविराज सभा बोलाई ।
संस्कृत बोलई, खरतर कवि पदमद तोले ॥९०॥

साहि सुगत दीयइ साबासि, खरतर मनि अधिक उल्हास ।
बुद्धिसागर कछु न जाणई, साहि साधुकीर्त्ति कुं बखाणइ ॥३१॥
पंडित सम (घ? मा?) वाखई एम, निर्णय कीधो छै जेम ।
खरतर गच्छ करई पक्ष साचउं, तपक्षा पखि कोइ न राचउ ॥३२॥
मूढ पंडित सम किम हाइ, पातिसाह विचार्यो जाइ ।
तब पदमसुंदर बोलायउ, छुकि रह्यो सभा माहि नाम्यो ॥३३॥
चउपखी पोषद मान्या, खरतर कु जइपद मान्यो ।
गजवभीया खरतर लोक, तपिमनी थया सब फोक ॥३४॥
जिण हुकम मेरि हु (हु?) इ वावइ, तपा रासि दीवी हे आवइ ।
पातिसाह सुण्यो ए वात, तपआर्त्त करउं निपात ॥३५॥
चाइमल मेघई छोड़ाया, मान भंग करी कडूवाया ।
तपक्षा पकड़ई सर भरि कीजई, दुरि(ह?)मेरि हुकम इन्ह दीजई ॥३६॥

दूहा:—

खरतर मनहि विचारीयो, एह बात किम होइ ।
जीती बाजी हारीयई, करउं पराक्रमकोइ ॥३७॥
थोपू चाइमल्ल मेतसी, मेघउ पारस साह ।
नैमिदास धनराज महजसिंघ, गंगदास भोज अगाह ॥३८॥
मीर्चंद मीवच्छ अमरसी हरराज परवत बखाण ।
छाजमल गइमल मारहू रेडउं सामीदास सुजाण ॥३९॥
चोकानय (वी)री तिहि मिल्या महवचा संघवाल ।
श्रावक सम (वी) तेडावीया, महिम के कोटीवाल ॥४०॥

ढालि —

मिलि पहुतावी आंपमि, वाहुडो छई जिहां आवासि ।
आदर किड़ अधि(को)उदीधउ, गुरु मंत्रि चित्त वसि कीधउ॥४१॥
चाइमड़ मेघउ वात वणाइ, अकब्बर रे तिहां कीया सुसाइ ।
परवत नेमीदास हजूर, सोवाई वाजा हुकम पडूर ॥४२॥
अवल्लीआ पातिसाहि तुरंई, सइहाथि थापि कीर्ने पूठई ।
सम वाजा आइत बजावई, अपणा पोरइ कु बधावई ॥४३॥
खोजा छडीदार पठाया, खरतर साचा खस पाया ।
भेरि मद्दल ढोल नीसाणा, बाज्या अड़धो ढोल प्रमाण ॥४४॥
संघ मेलि मिलयई आणन्दई, गुरु सोहइ श्रीसंघ वृन्दई ।
बाजार बजावई केरइ, पइसारई श्रीपर्इ भलेरइ ॥४५॥
खरतरै आइत पद पामो मागत जन सहू अनुसरई ।
पंच वरण व वाइ अनेक, पहिराया संघि विवेक ॥४६॥
हारयई तपको साहु आणई, खरतर कु छोक वखाणई ।
साची भट्ट छई इम चावई, खरतर परम सुद्ध किस्यावै ॥४७॥
जिनदत्त कुसल थानिद्धई, जिनभद्रसूरि वंश वृद्धई ।
जिनचंद्रसूरि सुपसाइ, खरतरै श्रोतई इम थाइई ॥४८॥
तथा "अमरमाणिक्य' गुरु सीस, साधुकीर्त्ति कहो आसीस ।
मुनि "कनकसोम' इम भाखई, पढवि श्रीसंघनी साखई॥४९॥
(तत्कालीन लिखित पत्र ३ संग्रहमें)

—— ** ——

जयनिधान कृत

साधुकीर्त्ति गुरु स्वर्गगमन गीतम्

सुखकरण श्रीशांति जिणेसरू, समरी प्रवचन वयनए जी।
सोहग सुहगुरु गाईए, नि ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ नमाए जी ॥१॥
चतुर सिरोमणि मानई वंदीयइ 'श्रीसाधुकीरति' उवझायो जी।
प्रसमि मविजन कामित सुरतरू, खरतरगच्छ गुरुरायोजी ॥आं०॥
संवत सोल बतोसइ सुह दिनइ, 'श्रीजिनचंद्रसूरिंदो' जी।
माघव मासइं सुदि पुनम थापिया, पाठक पद आणंदो जी ॥२॥च०॥
सु कुल 'सचिंती' श्रीगुरु ऊपना, 'खेमलदे' करि हंसो जी।
'वस्तपाल' पिता जसु जाणिये मुनिजन मांहि अवतंसो जी ॥३॥च०॥
नाण चरण गुण सयल कला घरू, जस परिमल सुविसालो जी।
'अमरमाणिक्य' गुरु पाटइं दीपता, कठमि सक्ति मुखमालो जी ॥४॥च०॥
गाम नयर पुरि विहरी महीयलइं, पडिबोही भगवृन्दो जी।
सोल छयालइ आया संवतइ, पुरि 'जालोर' मुणिंदो जी ॥५॥च०॥
माह वदुल पखि अणसण उच्चरि, आणी निय मन ठामो जी।
~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ॥६॥च०॥
आउ पूरी चउदसि दिन मलइ, पहुता तव सुरलोक जी।
शुभ अपूर्व किमइ गुण (रुं?)तवड, प्रणमीजइ बहुलोक जी ॥७॥च०॥
इण कलिकालो श्रीगुरु जे नमइ, भाव धरी नरनारी जी।
समकित निर्मल हुइ वलि तेहनइं, मन वंछित सुखकारी जो ॥८॥च०॥
घन घन 'साधुकीर्त्ति' रुक्मिणामणा सवही नाम सुहाए जी।
पाय कमल गुरु नितु तस प्रणमता, घरि घरि मंगल थाय जी ॥९॥च०॥
उलट आणी सद्गुरु गाइया वाचक 'रायचंद्र' सीसि जो।
आसा पूरण सुरमणि सुरतरू, 'जयनिधान' सुह दीसि जी ॥१०॥च०॥

वादी हर्षनन्दन कृत

श्री समयसुन्दर उपाध्यायानां गीतम्

(१) राग (मारूणी)

साच 'साचोर' सद्गुरु जनमिया रे, 'रूपसीजीरा' नंद ।
लघयौवन भर संयम संग्रह्यो, सद्गुरु 'श्रीजिनचंद' ॥ १ ॥
भले रे विराज्यो उपाध्याय पेखमें रे, 'समयसुन्दर' सरदार ।
अधिक प्रतापी जग जिम दिनकरै रे, शिष्य शाखा परिवार ॥भले॥२॥
नवरे किया आपण अभ्यासी रे, पण्डित राय पडूर ।
छोडाया धांधा मयने मारता रे राउल 'भीम' हजूर ॥भले०॥३॥
'लाहौर' 'अकबर' रंजियो रे आठ लाख अरथ विख्यात ।
वाचक पदवी पण पामी तिहां रे, परगट देश 'पोरवाड़' ॥भले०॥४॥
सिन्धु विहारे लाभ लियउ घणो रे रंजी 'मखनूम' सेख ।
पांचे नदियां जीवदया भरी रे राखी धेनु विशेष ॥भले ॥५॥
पडिरास्या पूरा मुनिवर गच्छ मा रे, प्रणमे भूपति पाय ।
जगमाल्या बाजा ताजा मेड़ता रे, रंजी मंडोवर राय ॥भले०॥६॥
वाल्हो लागे चतुर्विध संघ ने रे, 'सकलचंद' गणि शीस ।
बहुवखती वादी सदा रे 'हर्षनंदन' सुजगीस ॥भले ॥७॥

राजसोम कृत
महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीतम्

(२) ॥ ढाल हाँजरनी ॥

नवकोटीमें मरु नाम पंडित गिरुआइ, तर्क व्याकरण भण्या ।
धर्म क्रिया अभिराम पदपङ्कणरामो, आठ भास आकरा ॥१॥
साधु भलो ए महन्त 'अकबर' साहे हो, भेद बखाणीयो ।
'समयसुन्दर' भाग्यवंत पातिसाह पु(तु?)ठोहो,आपछि इम कह्योरे॥२॥
जीवदया जससीम राउल रंजी हो, 'भीम' 'जेसलगिरि' ।
करणो उत्तम कीध 'सांढा' छोडाव्या हो, देशमें मारता ॥३॥
सिद्धपुर' माहि सेख 'महम्मद' मोटो हो, जिण प्रतिबोधीयो ।
सिन्धु देश माहि विशेष 'गायां' छोडावी हो, तुरके मारती ॥ ४ ॥
सतर वस्त्र पटकूल गच्छ पहराव्यो, खरतर गच्छमहो ।
वचनकला अनुकूल प्रबंध पेखी हो, शास्त्र कीधाळ्णा ॥ ५ ॥
पर उपगार निमित्त कीधो सगलो हो,जन-मन इम कहे ।
गीत छंद बहु प्रीत कलियुग माहि हो जिणे साको कियो ॥ ६ ॥
युगप्रधान 'जिनचन्द्र स्वयंहस्त वाचक हो पद 'लाहोर' दियो ।
'श्रीजिनसिंहसूरिंद उपर 'अमेरे' हो पाठक पद दीयो ॥ ७ ॥
आगम अर्थ अगाध सहु सुख साधो हो, देखे प्ररूपीयो ।
गिरुओ गुरु गजगाह परिवार पूरो हो, जेहनो परगडो ॥ ८ ॥
कीधो क्रियाउद्धार संवत सोळे हो, [illegible] समे ।
गोतमने अणुसार पंचाचार पाले हो, धर्म वली तप करे ॥ ९ ॥

अणसण करि अणगार संवत सतर हो,सय बिडोत्तरे ।
'अहमदाबाद' मझार परलोक पहुंचा हो, चैत्र सुदि तेरसे ॥ १० ॥
वाड़ीगाम वृक्ष सीह पाट प्रभाकर हो, प्रतपे तेहने ।
'हरषनन्दन' भणवीह पण्डित मोही हो सीह कम्मी जिण ॥ ११ ॥
प्रगट जासु परिवार भाग्यवन्त मोटो हो वाचक जाणीये ।
दिन दिन जय-जयकार जग चिरंजीवो हो,'राजसोम' इम कहा॥१२॥*

[इति महोपाध्याय समयसुन्दरजी गीत]
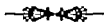
॥ श्री यशकुशल सुगुरु गीतम् ॥

॥ राग काफी ॥

श्री यशकुशल' मुनीसर (नगुण) गावो तुम्ह सुखकारी ।
सहु मनने सुखसातादायक, विघ्न विदारण हारी ॥१॥य०॥
जम जम महिमा सद्गुरुनी जाण लोक सुगाइ ।
तिम तिम वलि इण दग सखिजपे, कहतां मावे कम्ह ॥२॥य०॥
भर दरियाबे समरण करतां हामे कर ऊतारे ।
ध्यान धरे इक मन ज साचो, तेहना कारज सारे ॥३॥य०॥
'कनकसोम' पाटे उदयाचल, श्री 'यशकुशल' मुणिन्द ।
दिन दिन अधिका साहिब साहु जिम मह माहि चंद ॥४॥य०॥
मंदिर करी नइ पोजइ दरिसन, ओलइ सवक सार ।
'सुखरतन' करे कर जोड़ी ने, मवि मवि मुं ही आधार ॥५॥य०॥

* यह गीत वाडउपरके बनि श्री नेमिचन्द्रजीसे प्राप्त हुआ है। पूर्व-सर्व उन्हें धन्यवाद देते हैं।

कविवर श्रीसार कृत

श्री जिनराजसूरिरास

[रचना समय सं० १६८१]

तोरण बंध।

दीठां सगला दुख हरइ आपइ अति उछरंग ॥ ६ ॥ मेरी०।

अति सफार मंदिर अति भली, सोहई घणी पउसाल।

जिहां भावी व्यवहारिया, धरम करइ सुविसाल ॥१०॥ मेरी०।

वन बाग वाड़ी अति घणी तिहां रमइ लोक रसाल।

सोहइ नगर सुहामणउ, भोगी करइ सफल ॥११॥ मेरी०।

'रायसिंघ' राय करावियउ, 'नवउ कोट' अमली माण।

कणयमउ करि सोभतउ अवर करइ कल्याण ॥१२॥ मेरी०।

तिण राज पालइ रंग सेती राजा तिहां 'रायसिंघ'।

वयरी मृगला भांजिवा, ए साचउ सिंघ ॥१३॥ मेरी।

प्रतिपखउ 'राठोड़' कुलइ, सबलां पूरइ आस।

पटराणी साथइ सदा विलसहि भोगविलास ॥१४॥ मेरी०।

तेहनउ 'सुरतउ' मलयपवउ, परदुख काटनहार।

'कर्मचन्द' नामइ दिपतउ, सुंदर मनमथकुमार ॥१५॥ मेरी।

बोहिथी 'रागी' जेण पृथ्वी दिया दान अपार।

पैंतीसइ मांहि मांडियउ, सगलइ सतूकार ॥१६॥ मेरी।

'कोडि' द्रम्य दीधा पातस्यां, 'लाहोर' नयर मच्छाइ।
श्री 'जिनचन्द' युगवर कीया, पातसाहियइ 'पतिसाहि'॥१७॥ मेरी०।
'नव' गाम मइ 'नव हाथीया, तिहां दिया द्रम्य अनेक।
श्री 'जिनसिंहसूरिंद' नइ, आचारिज सविवेक ॥१८॥ मेरी०।
'रायसिंघ' राजा राज पालइ, मंत्रवी तिहि 'कर्मचंद'।
सहू को लोक सुखइ वसइ, दिन-दिन अधिक आणंद ॥१६॥मेरी०॥

दूहा— वसइ तिहां व्यवहारिय, सोभागी सिरदार।
धर्म धुरन्धर 'धर्मसी' बोहिथ कुल सिणगार ॥ १ ॥
दुखियां नइ पीहर सदा, धर्मी नइ धनवंत।
कुल मंडण महिमा निलउ, गुणरागी गुणवन्त ॥ २ ॥
पतिभगत मइ गुणवती, शीयलवती वरियाम।
मनहर नारी तेहनइ, 'धारलदे' इणि नाम ॥ ३ ॥
मणि काणइ चउसठि कला, रूपइ लीली रंभ।
पहुवी नारि को नहि, मदभूल रूप अचम्भ ॥ ४ ॥
दोगंदक सुरनी परइ, सही सगला संजोग।
निज प्रीतम सायइ सदा, विलसइ नव-नव भोग ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—मांहरू भोगना नु कहिज्योरे भरदास। ए जाति।
उत्तम पुर मांहि (ए) कहा रे पउढि 'धारल' देवि। प्रीतमजी। पउ०
हसवद मोती सु नमा रे सुख सज्या निस मेव ॥ प्री सु० । १ ।
प्रीतमजी मांहइ भमर वाणि प्रीतमजी बोलइ कोयल वाणि।
प्रीतमजी तुं मेरा सुखनाय, प्रीतमजी तुं तो चतुर सुजाण।

प्रीतमजी दिठउ स्वप्न उदार, प्रीतमजी कहइ नइ तासु विचार।
प्रीतमजी ये पण्डित सिरदार ॥ आंकणी० ॥

चोवा चन्दन अरगजा रे, कस्तूरि घनसार। प्री० कस्तूरि०।
चिहुं दिशि परिमल महमहइ रे, इन्द्र भुवन आकार ॥प्री० इन्द्र०॥२
दमणा पाडल केतकी रे जाइ जुही सुविशाल। प्री०। जा०।
फूल तिहां महकइ घणा रे, तिम फूलांरी माल ॥ प्री ति०।३।प्री०चो०।
बहुविधी दीवा झलहलइ रे, चन्द्रूअडा चउसाल। प्री० चं०।
मीतइ चीतर चित्र्या भला रे, बारु चन्नरमाल ॥ प्री० बा० ।४। प्री०
मनहर मोती जालियां रे, करइ कबी उजास। प्री० क०।
पुन्य पखइ किम पामीयइ रे एहवा सखर आवास। प्री०प०।५।प्री०।
'धारलदे' पवढि तिहां रे, कोइ न लोपइ लीह। प्री० को०।
किंउं सूती किंउं जागती रे, दीठउ सुहणे सींह ॥ प्री० दी० ।६। प्री०
सुहणउ देखी सुहामणउं रे पामइ हरख अपार। प्री० पा०।
सत्र तणउ फल पूछिवा रे वीनवीयउ भरतार ॥ प्री० वि० ।७। प्री०
भगन सभी वाणि सुणीरे जाग्या 'धरमसी' साह। प्री० जा०।
पुण्यजोग आवी मिली रे, साकर दूधहि मांहि ॥ प्री० सा० ।८। प्री०।
धरि आनंद इसउ कहइ रे, सपरउ सुपन सुपन्न। प्री० स०।
सूरवीर विद्यानिलउ रे, हुइस्यइ पुत्र रतन ॥ प्री० हु० । ९ प्री०।
कुलदीपक कोहिरवरां रे अनिल हुस्यइ राजान। प्री कं०।
सिंह तणो परि साहमी रे, थास्यइ पुत्र प्रधान ॥ प्री० था० ।१०।प्री०।
गरभकाल पूरउ हुस्य रे मास दिवस सब मास। प्री मा ।
पुत्र मनोहर जनमिस्यइ रे पहिस्यै मन नी आस ॥प्री० म०।११।प्री०

हीमइ हरख वयत पक्खरे सुणिमइ सुपन विचार। मी० सु०।
राहचि करी वहि सदा रे, पहुंती भुवन मंझार।मी०प०॥१२॥मी०बो०

दूहा—घरि (भुवन?) आवी इम चिंतवइ, अभेसीम बहु रात।
धरम जागरि जागतां, प्रकटाणउ परभात॥ १॥

बे मणिया बहु चरि-कृत्य, मणिया वेद पुराण।
महूआइ घर तेडिया, जोसी ज्योतिष जांण॥ २॥

'श्रीधर' 'धरणीधर' सखो जोसी 'विठ्ठलदास'।
पहरी खीरोदक धोतीया आव्या मन उल्लासि॥ ३॥

संतोष्या जोसी कहइ सुपन तणउ फल एम।
कुलदीपक सुत होइस्यइ, कुल कर्या तउ नेम॥ ४॥

इम फल सुपन तणउ सुणी, किया बच्छव असमान।
सनमान्या जोसी सहु दिया अनर्गल दान॥५॥

ढालतीजी—मनि मेघकुमर पछतावी॥ ए जाति।

दिव दीजइ दान अनेक, परियण मांहि बध्यउ विवेक।
सुरलोक थकी सुर चवियउ, धारलदे उरि अवतरियउ॥ १॥

वधियउ आगउ परिवार, माता हरखित तिणवार।
राजा दिन दिन सन्मान, तिण दिन थी वधियउ वान॥ २॥

इम गरभ वधइ सुखदाइ, तसु महिमा कहयि न जाइ।
मास त्रीजइ दोहला पावइ माता मनि घणुं सुहावइ॥ ३॥

जाणइ चन्द्र पान करीजइ भरि पुट अमिरस पीजइ।
वलि दान अनर्गल दीजइ, स्वामी री आंखो कीजइ॥ ४॥

जिनवरनी कीजइ जात्र, भरि लैहो पोषुं पात्र।
खरचीजइ धन असमान छोडावुं बन्दीवान॥ ५॥

सुणियइ श्री जिनवर वाणि, मन लागी अमिय समाणि ।

ध्यावइ श्रीअरिहन्त देव, कीजइ सद्गुरुकी सेव ॥ ६ ॥

कर्म रोग गमेवा ओसद, कीजइ पडिक्कमणउ पोसह ।

मनशुद्धि ध्यावु नवकार, दुखियां नइ करू उपगार ॥ ७ ॥

मन वाग जाइ उछरंग प्रीतम सुं कीजइ रंग ।

मनमान्या वरसइ मेह, तउ फलइ मनोरथ एह ॥ ८ ॥

विमलाचल' नइ 'गिरनार' 'सम्मेतसिखर' सिरदार ।

भेटू 'आबू' सुखकारी, पूजा करु 'सतर'—प्रकारी ॥ ६ ॥

माल'—आ 'आमा' आपसी माही, वलि लाहु लखणसाही ।

परसुं सुरसाणि मेवा, कीजइ साहमीनी सेवा ॥ १० ॥

मन रहरची माम दिखावु 'सात क्षेत्रे' वित वावुं ।

तिम दुखित दीन साधारू, इणि परि आपद निस्तारू ॥११॥

इम डोहला पामइ मेह, 'धरमसी' शाह पूरइ तेह ।

उत्तम नर गरभइ आयइ, माता पिण आणंद पायइ ॥ १२ ॥

जब पापी गरभइ आवइ तउ मात दिखाला रहावइ ।

कइ ठिकरि मा खाइ राग्ग, कइ रहायइ भीत खरंड ॥ १३ ॥

एलउ गरभ सदा सुखमाउ, पलि मात मनोरथ माउ ।

गुणवन्त हुस्यइ ए मागइ तिण सहको पावे लागइ ॥ १४ ॥

माता मनि थयउ सनह, सुत देस्यइ नन्दन एह ।

रहान्उ रहरउमनि रहायइ इम काल सुखे करि जायइ ॥१५॥

दिन मास अनइ नव मास पूरइ थयउ गरभावास ।

पल पूग वहरिसी कलियां माता मन हुइ रङ्गरलियां ॥१६॥

भति सीतल वाजइ वाय, दुखियानइ पिण सुख थाय।
गुणवन्त पुत्र जब आयइ, तब सगलउ जग सुख पायइ॥१७॥
मुंह मांग्या बरसइ मेह, लोके २ निवड़ सनेह।
सगलइ भरि हुयइ सुगाल, गुणगावइ वाल्गोपाल॥ १८॥
इम वच्छर सुं भवतरात, सुखसज्या सूती मात।
'धारलदे' नन्दन जायउ, सूरिज जिम तेज सवायउ॥१६॥

दूहा — बइसाखा सुदि (सातमा!) दिन सोलहसय सइंताल।
श्रवण नक्षत्र सुहामणउ, बुधवार (इ) सुविशाल॥१॥
पंच ग्रंह मद आविया छत्र जोग सुखकार।
कुसवेला सुत जन्मयिउ, वरत्यउ जय जयकार॥२॥
चन्द्र वदन सूरिज यकी, सुत मउ अधिकउ तेज।
रतनपूत जिमि दीपतउ, सोहइ माता सेज॥३॥

ढाल चौथी, वधावारी —

दासी भावि वोइवि प, जिण (हो ?) छइ 'धरमसी' साह।
वधाइ पुत्रनी ए-वीधी मन उमाह॥ १॥
फली आसा सहू ए आयउ पुत्र रतन। फलि०।
कीजइ कोडि जतन० फली 'धरमसी' साह धन धन्न०॥फली०॥
उदयउ पूरब पुन्य फली आस्या मह ए। फली०।
सुन दीठइ सुख थीमर्या ए, वाजइ ताल कंसाल॥
दमामा दुडवडी ए, वाजइ अनर माल॥ २॥ फली०॥
वाजइ थाली अति भली ए, वाजइ भंगरी ढोल।
हुवइ उच्छव घणार, गीतों ना रमझोल॥ ३॥ फली०।

कुंकुं हाथा दीजीयइ ए, सूहव द्यइ आसीस ।
कुमर परमसी तणतए, जीवउ कोडि वरीस ॥४॥ फळी० ।
गलिए फूल विखेरिया ए, नाटक पडइ बत्रीस ।
कुमर भलउ जनमियउ ए, हरख धणउ निसदीस ॥५॥फळी० ।
जन्म महोछव इम करइ ए, खरचइ परघल दाम ।
सजन सख्यार पाइ ए, न गिणइ ठाम कुठाम ॥ ६ ॥फळी०॥
याचक जय-जय उचरइ, सगा करइ सनमान ।
सयण संतोषिया ए, सखियां करइ गुणगान ॥ ७ ॥ फळी०।
दिन दिन दसमइ आवियइ ए, करइ वसुरूण प्रेम ।
सगा सहि नितरइ ए, मसुचि उतारइ एम ॥ ८ ॥फळी० ।
सवर मन भोजन भला ए, सालि दालि घृत घोळ ।
सहू संतोषिया ए, उपरि सरस तंबोळ ॥ ६ ॥ फळी ।
एम अमारि शुगतसुं ए, दिया माहेर सरूप ।
भलउ सहुको मणइ ए उछव कियउ अनूप ॥१०॥ फळी० ।
अन्न 'पारकद' मायडी ए, अन्न २ 'परमसी साह ।
कियउ उच्छव भलउ ए, लियउ जसमीरउ लाह ॥ ११ ॥ फळी० ।

दूहा'—श्री उच्छव रलियामणउ, पुत्र तणउ मुख जोय ।
श्री खेतसी नामउ दियउ, दीठां दुख्यति होय ॥ १ ॥
सहुको लोक इमउ कहइ सपणां तणउ समरूप (अ)।
'परमसी' साह प्रगट हुयउ, परमेसर परतख्य ॥ २ ॥
कुलदीपक सुत जनमियउ, करिस्यइ कुल उद्धार ।
इणि मन्दन जाया पछइ, उदय हुअउ संसार ॥ ३ ॥

मनत वधई इम जाणियइ, सास्त्र तणइ बलि न्याय ।
सहको राणा राजवी, परिहस्यइ पहनइ पाय ॥ ४ ॥
पगे पगम इसकइ भवन, छत्रण भंगि बत्रीस ।
कइ गजपति कइ गच्छपति' हुइस्यइ विसवावीस ॥ ५ ॥

ढाल ५—सुगुण सनेही मेरे लाला । इण जाति ।

बीज तणउ जिम वाधइ चन्द, तिम वाधइ 'भारमल' नन्द ।
मात पिता लमहइ आणंद, देवलोक नउ जिम माकन्द ॥१॥
माता सुत नइ ले थवराबइ, बेटा-बेटा कहिय बुलावइ ।
नन्हइ नीर लेइ न्हवरावइ, इम माता मनि आणंद पावइ ॥२॥
माइ मेरा नन्दन गोदि खिलावुं, बंगू कदद्दु तुम्ह भणावुं ।
वेखवि कनक पावइ मखियां खोलइ ले खेलावइ सखियां ॥३॥
कानि मकरगनिया पाइ पनडइयां, घमकइ पगि घूघरियां बनियां ।
चंद्रका करि वागउ पहिरावइ, सिरिकसबीकी पाग बनावइ ॥४॥
कइयई माता कंठइ लागई, कइयइ खोटइ माता मागई ।
कइयइ घडा ना पाणी ढोलइ, कइयइ हसि माता मन मोहइ ॥५॥
कइयइ दूधनी दोहणी ढोलइ, कइयइ ठीयइ चढि हींडोलइ ।
कइयइ साथइ मारत्तण वरतइ, कइयइ छिपइ माता थी डरतउ ॥६॥
कइयइ मा भउ कंकूमउ तापइ, कइयइ कांपइ चढिय पसमणइ ।
कइयइ हसि मा साम्हउ जोवइ, कइयई रूसण मांडी रोवइ ॥७॥
देरली कुंवर कहइ इम माता इणि सुत दीठां थायइ साता ।
मति को पापी नजरि लगावइ, गुणी काठिकउ गलइ बंधावइ ॥८॥
माऊ २ करतउ पासइ आवइ, कोइ पूत मां मम बुलावइ ।
प्रेम मजरि मां साम्ही मेलइ, धूप मांहि लाग साकर मेलइ ॥९॥

मचमच्या चोळ बोल ममोल, पहिरवउ वागो रातउ चोळ ।
अंगि सृङ्गार करावइ सोल, माता सू इम करइ रंगरोल ॥१०॥
फेरइ चकरडी माता प्रेरइ, वाछूडा वछिहारी तेरइ ।
रगू मगू फेरइ चंगा, हाथइ गोटा ल्यइ पंचरंगा ॥११॥
ऊंचउ उपाडइ ले वांहडियां, माता कहइ म्हारा मेरा नान्हडियां ।
हाथे मालइ सोवन कडियां, गूंथी शिर फूलनी छडियां ॥१२॥
मइ सोळ्ही पासा सारइ, रमइ पंचेटे विविध प्रकारइ ।
बीजा बालक सहको हारइ, जीपइ कुमर भाग्य अनुसारइ ॥१३॥
इम उच्छव सु नव-नव केळइ, 'धारळदे' रउ घोटउ खेळइ ।
रूपइ मयण तणउ अवतार, सात बरस नउ थयउ कुमार ॥१४॥
मुहर्त्त बीजउ वयर (अभय?) कुमार, मावइ सहु सुणियउ इक वार ।
मात पिता चित्तइ उल्हासइ, कुमर भणावउ पंडित पासइ ॥१५॥

दूहा—पुत्र भणइवा मांडियइ, पण्डित गुरुनइ पास ।
विद्याभावी तेहनइ, सरसति मात पसाय ॥ १ ॥
भली परइ भावी भणै, सिद्धौ मनइ समान ।
"चाणाइक" भावइ भला नीतिशास्त्र असमान ॥ २ ॥
तेह कला कोइ नहीं, शास्त्र नहीं वलि तेह ।
विद्या ते दीसइ नहीं कुमरं नइ नावइ जेह ॥ ३ ॥
कला 'बहुत्तरि पुरुषनी जाणइ राग 'छत्तीस' ।
कला देखि सहु को कहइ जीवो कोडिवरीस ॥ ४ ॥
"षड भाषा" भाषइ भली "चवदह विद्या" लाघ ।
लिखइ 'अढारह लिपी सदा, सिगळे गुणे अगाध ॥ ५ ॥

ढाल सखिनी छट्ठी—पणमिय पास जिणेसर केरा। इणजाति।

कुमर दिवस जोवन वय आयउ दिन दिन दिपइ तेज सवायउ।
गुणमउ धम्म त्रिभुवन गायउ, धन धन 'धारलदे' उ(उ)र जायउ ॥१॥
सूरिज जिम तेजइ करि सोहइ, मेरु तणी परि महियल मोहइ।
'श्रीसण' तणा पर सूर सवाइ, दानइ 'करण' थकी अधिकाइ ॥२॥

रूपइ 'मनमथ' नउ मद गाल्यउ, काम क्रोध विषयारस टाल्यउ ॥३॥
सायर जिम सोहइ गंभीर, मेरु महीधर नी परि धीर।
कल्पवृक्ष जिम इच्छा पूरइ, चिंतामणी जिम चिंता चूरइ ॥४॥
'विक्रमादित्य' जिसउ उपगारी, अहनिसि सेवक नइ सुखकारी।
पांच 'पंडव' जिम बलवंत, सीह तणी परि साहसवंत ॥५॥
नयन कमल नी परि अणियाली, सोहइ भमर जाणइ परवाली।
करइ हाव सुं झल्का मल्का, बोलइ वचन अमी रा गल्का ॥६॥
काया सोहइ कंचण वरणी, सोहइ हामे सदा समरणी।
छत्रवर्ती मोहण वेलि, हंस हरावइ गजगेतिगेली ॥७॥
मस्तक सुंदर तिलक विराजइ, दरसण दीठां भावठि भाजइ।
पहिरइ नित २ नवरं बागइ, वेगडार मांहि अधिकउ लागइ ॥८॥
चयराण्या सहुको तइ मान, धरमध्यान करिवा सावधान।
न करइ परनिन्दा परवाद, कहा कहा कहुं अवदात ॥९॥
वैरि दिन दिन अधिक प्रतापई बाल्यां वयरी थरथर कांपइ।
महीयलि सिगलइ वासइ पूरइ, इणपरि विचरइ कुमर मनूरइ ॥१०॥
दिव इणि अवसर थी। 'श्रीकरणइ अकबर' मेहनइ आप पसाउइ।
खरतरगच्छ मांहि प्रवल पहूर, आव्या गुरु 'श्रीजिनसिंह'सूर ॥११॥

मुनिवर साधु तणइ परिवारइं, दे उपदेश भविक निस्तारइं ।
  विचरइ मरुस्थल कम विदारइ, आप तरइ औरां नइ तारइ ॥१२॥
पुण्य सबल तिहां पासारइ, जिनशासनि रो वान वधारइ ।
  कलिकालइ गोतम अवतारइ, पूजजी 'बीकानयर' पधारइ ॥१३॥
हरखित हुआ सहूको लोक, जिम रवि दंसणि चाकइ कोक ।
  बड़ा बड़ा श्रावक सुणइ मलेय, पूजजी पइयड धइ उपदेश ॥१४॥

दोहा —ए सागर गाजइ सजल, अथवा गाजइ मेह ।
  वाणी सांभलतां थकां, पइयड धमक संदेह ॥१॥
पोषइ 'नव रस' परगड़ा, करइ 'राग छत्तीस' ।
  सरस वखाण सुणी करी, सहु को द्यइ आसीस ॥२॥

ढाल सातमी —मेघमुनि कांइ डमडोलइरे । एहनी ।
सहूको श्रावक सांभलउजी, लोक सुणइ सब गान ।
  "लोहसी' कुमर पधारियाजी, इणपरि सुणइ वखाण ॥१॥
भविकजन परम सराइ रे, जीवनइ सुखदाइ रे ।
  धीमइ चित्त लाइ रे, भविकजन परम सराइ रे ॥आंकणी०॥
सद्गुरुनी संगति लहीजी, आयो आरिज क्षेत्र ।
  मानव भव आधर अकउजी, पत सचइ तउ पत ॥२॥ भविक० ॥
इण जगि सरव अथाणउजी दीसइ थिरतारी जोय ।
  इम जाणिरे प्राणियाजी, ममता मो करउ कोय ॥३॥भविक०॥
माया मोहइ मानवीजी धन संचइ दिन राति ।
  वयरी जम पूठइ पड़इजी जीव न जाणइ घात ॥४॥भविक०॥
दस दृष्टंते दोहिलउजी, आवइ नर भव सार ।
  तिहां पणि पुण्यइ पामियइ जी, उत्तम कुल अवतार ॥५॥भविक०॥

बत्रीस लख विमान नउ जी, साहिब छइ जे इन्द्र ।
तं पणि श्रावक कुल सदा, वंछइ धरि आणंद ॥६॥भविक०॥
बरजीजइ श्रावक कुलई जी अनंतकाय बत्रीस ।
मधु मांसम वरजइ सदाजी तिम अभक्ष बावीस ॥७॥भविक०॥
सामायिक बे टाळयइजी, बीम बनइ दुइ दोप ।
परनिंदा नवि कीजियइजी मन धरियइ संतोष ॥८॥भविक०॥
इक दिन दिक्षा पाळीयइजी आणी भाव प्रधान ।
तउ सिवपुर मा सुरा लहइजी निश्चय दव विमान ॥९॥भविक०॥
इणि भवि सरव भशाश्वतोजी, स्वारथ नउ सहु कोय ।
निज स्वारथ भणपूजतइजी सुत फिरी बयरी होय ॥१०॥भविक०॥
चिंतामणी सुरतरू समउजी, जिनवर भाषित धर्म ।
जउ मन शुद्धई कालियइजी, तउ त्रूटइ सही कर्म ॥११॥भविक०॥

दोहा —धीतसी कुमरई संभल्यउ, जिनसिंह सूरि वखाण ।
वाणी मनमांहि बसी मिट्ठी अमिय समाण ॥१॥
करजोड़ी पहवउ कहइ, माणि हरख अपार ।
तुम्ह वपदसइ जाणियउ, मइ संसार असार ॥२॥
तिणि कारण सुमन्द दिवउ, दीजइ संजमभार ।
कृपा करि मो उपरइ, इणि भविपी निस्तार ॥३॥
बल्लउ गुरू इणि परि कहइ मकरउ प्रतिबंध ।
मात पिता पूछउ जइ करउ परम सम्बन्ध ॥४॥

ढाल आठमी—मांहरै वेद रंगीली चूनरी—एहनी ।
महा गुरु वांदी मइ उठियउ, आव्यउ माता मइ पास हो ।
कर जोड़िनइ इमि परि कहइ आणी मन मांहि उल्लास हो ॥१॥

मोनइ अनुमति दीजइ मातजी, हुं लेइस संजमभार हो ।
आगि स्वारथ नउ सहु को सगउ, मिळीयो एह परिवार हो ॥२॥ मो०॥
सद्गुरु नी देसणा सुणी, मन मांहि धरी अनुराग हो ।
हिव इणिभवथी मन ऊभगउ, मुझ मइ आण्यउ वयराग हो ॥३॥ मो०॥
अहो देस विदेस फिरी करी आटीजइ परिघल आथि हो ।
पणि परलोकइ जातां थकां, तो नावइ प्राणी साथि हो ॥४॥ मो०॥
अहो इणभवि परभवि जीवनइ, सुख कारण श्रीजिनधर्म हो ।
जिणथी सुख सम्पति सम्पजइ, छीजइ तेहिज कर्म हो ॥५॥ मो०॥
अहो डाभ अणि-जल ओइयउ, जेहवउ चंचल नर (इणी) वग हो ।
माता अथिर तिसउ ए आउखउ, आण्यउ इम आपि संवेग हो ॥६॥ मो०॥
अहो इणि भगि को केहनउ नहीं, परिजन नइ वलि परिवार हो ।
भवअन्तरइ जातां जीवनइ, इक धर्म अछइ आधार हो ॥७॥ मो०॥
अहो जीव तणइ पूठइ वहइ सर सान्ध्यउ वयरी काल हो ।
तिण कारण करसुं मातजी, पामी आव्या पइखइ पाळ हो ॥८॥ मो०॥
अहो ए सुख भोगवतां थकां, दुख आय पडइ असमान हो ।
ते सोनउ केहवउ कीजियइ, जे पहिरयइ तोडइ कान हो ॥९॥ मो० ।
अहो जेह घडा सुखिया अछइ वलि दुखिया सुखिया जेह हो ।
ते सहु को पुण्य पसाउलइ इहां कोइ नहीं सन्देह हो ॥१० ॥ मो० ।
वेरागी वचनइ करी, माता मुझ सात घात हो ।
मुनिवर नउ मारग आकरउ, छिमलइ वसियउ दिनरात हो ॥११ मो० ।

दोहा —सुत वयण इम सम्भली संजम मति सुविशाल ।
मूर्छागत माता पइ, पड़ी धरणी तत्काल ॥ १ ॥

गंगोदक सुं छांटियउ, बींझणा शीतल वाय ।
सावधान हुइ तदा, इणि परि जम्पइ माय ॥ २ ॥
तुं नान्हडियउ माहरउ, तुं मुझ जीवनप्राण ।
एक घड़ी पिण विन तुम्ही, तोरउ विरह सुजाण ॥ ३ ॥
तुं सुकमाल सोहामणउ, दोहिलउ संजम भार ।
लोह चिणारी चोखियइ, संजम दुक्करकार ॥ ४ ॥
धन धन यौवन छाहो करी, विलसउ नवनव भोग ।
वलि वलि सहतां दोहिला पड़वा भोग संजोग ॥ ५ ॥

वेलि (९) —इसी पड़वा भोग संजोग, विलसीजइ मनवंछभोग ।
तुं "वाहिगरउ" कुल दीवउ, तिणि कोडि वरस चिरजीवउ ॥१॥
सुन तुं सुकमाल सदाइ तुं सिगलानइ सुखदाइ ।
जिनवर भाखित है दीक्षा तुं किणी परि मागिसी भिक्षा ॥२॥
तु पडित चतुर सुजाण तु बोलइ अमृत-वाणि ।
तुझ गुण गावइ सहु काइ, तुझ सरिखउ पुरिस न कोइ ॥३॥

दोहा —सांभळनां पिण दोहिली, सुत संजमनी वात ।
भावक परम ममावरउ, तुं सुकमाल सुगात ॥ १ ॥

वेलि —सुन तुं सुकमाल सुगात मत कहिजो संजम वात ।
इणि परमइ संजम भारइ, विचरेवउ गइढा धारइ ॥१॥
पदुष्य मुनिवर भागइ ऊका छइ बारिन छेड़ ॥
तिणी बात इसी मत कहिजो, दाकरपणि वारित लहयो ॥२॥
इणि जावनवय तु आयउ, तुं मन्दन पुण्यइ पायउ ।
धना दुरित दीन सधारउ, 'वाहिय कुल धान वधारउ ॥३॥

दोहा —वचन एहवउ सांभलि, इणि परि कहइ कुमार।
कायर कापुरिसां भणी, दुहिलउ संजम भार ॥ १ ॥
वेलि —माता दुहिलउ संजम भार, जे कायर हवइ नर-नारि
जो सूर वीर सरदार, तिण्नइ स्यु दुक्करकार ॥ १ ॥
गाथा —ता(उ)सु गोमेरु गिरी मयरहरो(सायरो)ताव होइ दुत्तारो।
ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति ॥ १ ॥
वेलि —जे कुल मा जाया होवइ, ते कुलवटि साम्हउ जोवइ।
तिण कारण ढील न कीजइ, माताजी अनुमति दीजइ ॥२॥
दोहा —संजम उपर आणियउ, सुत नउ निवड सनेह।
हिव जिम जांणो तिम करउ, दीधी अनुमति एह ॥ १ ॥
वेलि —हिव दीधी अनुमति एह, संयम सु निबड सनेह।
दिक्षा मउ वच्छव कीजइ, मुंह मांग्या धन दारपीजइ ॥१॥
घरि रूड़ 'धरमसी' शाह इम उच्छव करइ उच्छाह।
घरि मंगल वाजित्र वाजइ तिणि नादइ अम्बर गाजइ ॥२॥
बाजइ भुंगल नइ भेरी बाजइ नवरंग नफेरी।
बाजइ ढोल दमामा ताली, शुभ गावइ अबलावाली ॥३॥
बाजइ सुन्दर सरणाइ सुण्तां श्रवण सुखदाइ।
बाजइ झल्लरि ना झणकार पडइ मादल ना धोंकार ॥४॥
बाजइ ताल गिन्गिड़ो रंग, विच विच बाजइ मुख चंग।
गन्धर्व बजावइ वीणा सुणइ लोक मृदु मिट्ठी वीणा ॥५॥
बाजइ त्रिवडी नाम कंसाल, गीत गावइ बाल-गोपाल
आलापइ राग छत्तीस इम उच्छ(व) थाय जगीस ॥६॥

दोहा —उण्णोदक सुं कुमर नइ मजन करायउ स्नान।
मजि शृङ्गार कीया सहु बणियउ वेष प्रधान ॥ १ ॥

वेलि —हिव बणियउ वेस प्रधान, गंगोदक सुं कीया स्नान।
मोतीयडे कुमर बधायउ, आभरणे अंग वधायउ ॥ १ ॥
मस्तकि मउड़ मुकुट बिराजइ, दोइ कानइ कुण्डल छाजइ।
बिहुं बांहे बहरखा सोभ, करि मोहइ बाजूबन्ध ॥२॥
उर ऊपर मोतिन कउ हार, पाइ घुघरिया घमकार
गज ऊपरि थयउ असवार, याचक करइ जयजयकार ॥३॥
बाजां नेजां गमगइ सोहइ वरनोलइ इम मनमोहइ।
... . ॥४॥

दोहा—हिव गुरु पासइ आवियइ, मिलीया माणस थाट।
कुमर तणउ अस ऊचरइ 'धारण' 'मोलिग' 'माट' ॥ १ ॥

वेलि—हिव 'धारण' 'मोलिग माट', "धरमसी" साह करउ गहगाट
"खेतसी गुरु पायइ लागइ, गुरु वांदी आदेश मांगइ ॥१॥
इम पभणइ "धरमसी" साह, ए कुमर बहुत गज गाह।
पूजजो हिव कृपा करीजइ, ए मांहरि थापण लीजइ ॥ २ ॥
हिव कुमर सुणे बालुड़ा छे दिक्षा अछिसे रूड़ा।
गुरुजीनो कह्यउ करजो, सूधउ संजम पालजो ॥ ३ ॥
जिम दीपइ 'बोहिथ' वंश तिम करिजो सुण अवतंश।
क्रोधादिक वयरी दूरे, महियलो बहुलउ जस पूरे ॥ ४ ॥
सुणनइ सिखी सीख मीठांवा सयुं दांत मइ जीम मलावा।
जिम सहुको कहइ धन धन्न तिम करिज्यो पुत्र रतन्न ॥५॥

दोहा —'सोलहसय छपन्न' मई संवत्सर सुखकार।
'मिगसर सुदी तेरसि' दीनइ, छीयउ संजम भार ॥१॥
माणक मोती माल सहु, हय गय रथ परिवार।
छंडी संजम आदर्यों, माण्यो अथिर संसार ॥२॥
दे दिक्षा नामउ कीयउ, 'राजसिंह' अणगार।
हिव 'श्रीजिनसिंहसूरि' गुरु, करइ अनेक विहार ॥३॥
बेलि —हिव करइ अनेक विहार 'राजसिंह' मुनी अणगार।
छीयउ पंच महाव्रत भार, षट जीव तउ रखवार ॥१॥
पंच सुमति भली परि पालइ, विषयारस दूरइं टालइ।
करइ धरम दस परकारइ, पाटोधर वान वधारइ ॥२॥
ग्रहणा सेवन दुइ शिक्षा सीखी संजम नी रिक्षा।
मंडलि तप वहा जाणि, 'श्रीजिनचन्दसूरि' जिनाणी ॥३॥
दीधी दीक्षा बडइ बिरद नामउ दीयउ 'राजसमुद्र'।
हिव शास्त्र भण्यां असमान, ते गिणतां नावइ गान ॥४॥
उपधान वहा मन रंग 'उत्तराध्ययन मइ 'आचारंग'।
तप कल्प तणउ आदरइ, छम्मासी तप पिण वहइ ॥५॥
वयसइं बहु पढिन आगइ, लुखि लुखि सहि पाये लागइ।
इम लोक कहइ गुणरागी जयउ 'राजसमुद्र' सउभागी ॥६॥

दोहा —भावइ 'आठ व्याकरण' 'भट्टारक-नाममाल'।
छन्द-तर्क मतिमा भला, 'राग छत्रीस रसाल ॥ १ ॥
भलइ मेली भणिया वलि, 'आगम पैंतालीस।
साँमुन्न श्री 'जिनसिंह' गुरु, सीरि दीयइ निशदीस ॥२॥

महियलि वादि बड बड़ा, ताता (तां लग?) गरव करंति।
जां लगि 'राजसमुद्र' गणि, गरुआ नवि पुहचंति ॥ ३ ॥
मोटइ मुनिवर महिमलइ, 'राजसमुद्र' अणगार।
जे जे विद्या जोइयइ तिणि नहु लामइ पार ॥ ४ ॥
'वाचनाचारिज' पद दीयउ, 'श्रीजिनचंद्र सूरिंद'।
पाटोधर प्रतिपउ सदा रलिय रंग आणंद ॥ ५ ॥
बड बखती सुप्रसन्न वदन जागयो पुण्य अंकूर।
परतखी देवी अम्बिका', हुइ हाजरा हजूर ॥ ६ ॥
परतखि परतउ दिठ प, 'अम्बा' मइ आधार।
खिपि चाली 'घंघाणीयइ' जाणइ सहू संसार ॥ ७ ॥
'जेसलमेर' दुरंग गढि राउल 'भीम' हजूर।
वादइ 'तपा' हराविया विद्या प्रबल पडूर ॥ ८ ॥
इम अनेक विद्या बलइ, राटया बडा विरुद।
विद्यावंत बडउ जती, सोहइ 'राजसमुद्र' ॥ ६ ॥

ढाल दसमी—ख्याल जाति।
दिन श्री शाहि सलेम 'मानसिंघ सू परि प्रेम।
बड बडा साहस धीर मुकइ अपणा वजीर ॥ १ ॥
तुम्ह 'बीकाणइ' जावउ, 'मानसिंघजी' कू बुलावउ।
इक वर 'मानसिंघ' आवइ, तउ मुझ मन (अति) सुख पावइ ॥ २ ॥
ते 'बीकाणइ' आया प्रणमइ 'मानसिंघ' पाया।
दीधा मन महिराण 'पतिसाही-फुरमाण' ॥ ३ ॥

दोहा —'सोलहसय छपन्न' मई, संवछर सुखकार।
'मिगसर सुदी तेरसि' दीन्ह छोपड संजम भार ॥१॥
माणक मोती माल सहु, हय गय रथ परिवार।
छंडी संजम आदर्यो जाण्यो अथिर संसार ॥२॥
दे दिक्षा नामड कीयउ, 'राजसिंह अणगार।
दिव 'श्रीजिनसिंहसूरि' गुरु, करइ अनय विहार ॥३॥

वेलि —दिव करइ अनेय विहार, 'राजसिंह हुआ अणगार।
छोपइ पंच महाव्रत भार पग जोव नइ सामग्रहार ॥१॥
पंच सुमति भली परि पालइ, त्रिगुप्तारस दूरइं टालइ।
करइ परम दस परकारइ, पाटोधर वान बधारइ ॥२॥
महणा रोवन दुइ शिक्षा सोखी संजम नी रिक्षा।
मंडलि तप बहु जाणि, 'श्रीजिनचन्दसूरि' विनाणी ॥३॥
वीभी दीक्षा बड़इ विरद, नामड दीयड 'राजसमुद्र'।
दिव शास्त्र भण्यों असमाल ते गिणतां नावइ गान ॥४॥
वणधार सूटा मन रंग 'उत्तराध्यन नइ 'आचारंग।
तप कल्प तणउ आराहइ, छम्मासी तप पिण साहइ ॥५॥
बनाई बहु पंडित आगइ सुणि सुणि सहि पाये लागइ।
इम लोक कहइ गुणरागी, जयउ 'राजसमुद्र' सउभागी ॥६॥

दोहा —भावइ 'आठे व्याकरण 'महारह-नाममाल'।
'तप-तर्क' भणिया भला, 'राग छत्रीस रसाल ॥ १ ॥
[illegible] भेद्री भणिया वलि, 'आगम पैंतालीस।
श्रीगुरु श्री 'जिनसिंह' गुरु, छोलि दीपइ निसदीस ॥२॥

महियलि वाजि वड वडा, ताता (तां लगा?) गरव वहंति।
जां लगि 'राजसमुद्र' गणि, गहमा नवि सुण ति ॥ ३ ॥
मोटइ मुनिवर महियलइ, 'राजसमुद्र' अणगार।
जे जे विद्या ओइयइ तिणि महु लामइ पार ॥ ४ ॥
'वाचनाचारिज' पद दीयउ, 'श्रीजिनचन्द्र सूरिंद'।
पाटोधर प्रतिपउ सदा, रलिय रंग आणंद ॥ ५ ॥
वड वखती सुपसन्न वदन जाग्यो पुण्य अंकूर।
परतखी देवी 'अम्बिका, हुइ हाजरा हजूर ॥ ६ ॥
परतखि परतउ दिठ प, 'अम्बा' नइ आधार।
खिपि बांधी 'पंचाणीयइ जाणइ सहू संसार ॥ ७ ॥
'जेसलमेरु' दुरंग गढि, रावल 'भीम हजूर।
पावई 'तपा' हराविया विद्या प्रबल पडूर ॥ ८ ॥
इम अनेक विद्या बलइ, राटया वडा बिरद।
विद्यावंत वडउ जतो, सोहइ 'राजसमुद्र' ॥ ६ ॥

ढाल दसमी—त्रयास जाति।
हिव श्री शाहि सलेम 'मानसिंघ सूं धरि प्रेम।
वड वडा साहस धीर मूकइ अपणा वजीर ॥ १ ॥
तुम्हे 'बीकानेर जावउ, 'मानसिंघ' नइ तू बुलावउ।
इक वेर 'मानसिंघ आवइ तउ मुझ मन (मति) सुख पावइ ॥ २ ॥
त 'बीकाणइ आया प्रणमइ मानसिंघ पाया।
दीधा मन महिराम, 'पतिसाही फुरमाण ॥ ३ ॥

मिळियइ संघ सुजाण, वाच्या ते फुरमांण।
तेडावा (था?) 'पतिसाह', साधु को घरइ उच्छाह ॥ ४ ॥
हिव श्री 'जिनसिंघ सूर साहसवंत सनूर।
चिंतइ मन उल्हासइ जाइवउ 'पतिसाह' पासइ ॥ ५ ॥
'बीकानेर' थी चलिया, मनह मनोरथ फलिया।
साधु तणइ परिवारइ, मेडतइ' नयरि पधारइ ॥ ६ ॥
श्रावक लोक प्रमान उच्छव हुआ असमान।
श्री गच्छनायक आयइ, सिगले आनंद पायइ ॥ ७ ॥
तिहां रह्या मास एक, दिन ७ चपलइ विवेक।
चलिवा उद्यम कीधउ, 'एक—पयाणउ' दीधउ ॥ ८ ॥
काल धरम तिहां मेटइ सिरजत संत कुण मेटइ।
'श्री जिनसिंघ गुरुराया, पाछा 'मेडतइ' आया ॥ ९ ॥
सह मुनि लीधउ संथारउ कीधउ सफल अमारो।
शुद्ध मनइ गहगहता 'पहिलइ देवलोक पहुता ॥ १० ॥
संवत 'सोल चिहुत्तरइ' 'पोषसुदि 'तेरस वरतइ।
सोग करइ सहु लोक, पूज पहुंता परलोक ॥ ११ ॥
दिव देही संसकार, कीधउ लोक आचार।
बीजइ दिन थरि प्रेम लोक विमासइ एम ॥ १२ ॥
आगम गुमे अगाध मिलीया बहु बड़ा साध।
संघ मिल्यउ गहगाट, कुमनइ [श्री]जिणइ पाट ॥ १३ ॥
तब बोल्या सही लोग राजसमुद्र' पाट जोग।
दीजइ एहनइ पाट, जिम थायइ गहगाट ॥ १४ ॥

'धनपुर जिया' निधान, मुनिवर मांहि प्रधान।
पइ इक्क गच्छइसर, तउ वूठउ परमेसर ॥ १५ ॥
सायर जेम गंभीर, मेरु महीधर धीर।
दीठां दालिद्र जायइ, पांचा नवनिधि थायइ ॥ १६ ॥
'राजसमुद्र' इण राजा, 'सिद्धसेन' इण युवराजा।
तउ खरतरगच्छ सोहइ, संघ तणा मन मोहइ ॥ १७ ॥

दोहा—इम आलोच करि हियइ, सहु श्रीसंघ जाम।
'मानकरण' भाखइ तिसइ, 'संघवी' पद अभिराम ॥ १ ॥
कुलदीपक श्री 'चोपड़ा' पइ जोइउ विस्तार।
धनमी रो आइउ छोरुय संघ मांहि सिरदार ॥ २ ॥
श्री संघ आगलि इम कहइ ए मोरी अरदास।
'पद ठवणो करिवा तणउ, यो आदेश उलास ॥ ३ ॥
इम अनुमति छे संघनी, धरइ चित्त उच्छरंग।
पद ठवणउ संघवी करइ आणो उच्छव अंग ॥ ४ ॥
संवत 'सोलचिहुत्तरइ', सोमवार सिरताज।
'फागुणसुदि' सातम दिनइ थाप्या श्री जिनराज ॥ ५ ॥
भट्टारक साहइ मउड, 'श्री जिनराज सूरिंद'।
मनिपइ तां लगि भवियण जां लगि ध्रू रवि चंद ॥ ६ ॥
मइ इण 'श्री जिनराज' गुरु, थाप्या प्रबल पडूर।
आचारिज चहुनी कन्य, 'श्री जिनसागरसूरि' ॥ ७ ॥
सूरिज जिम सोहइ सदा 'श्री जि(न?)राज सुरिंद।
श्री 'जिनसागर सूरि गुरु, प्रगपइ पूनिम चंद ॥ ८ ॥

हिव श्री 'जिनराज सूरिश्वर', महियल करइ विहार।
 आवइ उच्छव अति घना, वरत्यउ जय जयकार ॥ ९ ॥
'जेसलमेर' दुरंग गढ़ि, 'सहसफणउ-श्रीपास'।
 थाप्यउ श्री जिनराज गुरु, समर्या पूरइ आस ॥ १० ॥
श्री 'विमलाचल' ऊपरइ जे आठमउ उद्धार।
 कीधी तहनी थापना, जाणइ सहु संसार ॥ ११ ॥
परतिख पास 'अमीझरउ' थाप्यउ 'भाणवड' मांहि।
इम अकबरात किता कहूं, मोटउ गुरु गच्छनाह ॥ १२ ॥
परतिख देवी 'अम्बिका', परतिखि 'बावन वीर'।
'पंचनदी' साधी जिणइ, साध्या 'पांच पीर' ॥ १३ ॥
श्री खरतरगच्छ सेहरउ, महियलि सुजस प्रधान।
प्रतपउ श्री 'जिनराज गुरु, दिन २ चढ़तइ वान ॥ १४ ॥

ढाल इग्यारहमी—आयो आयउरी समरंता दादा आयउ।
गायउ गायउ री जिनराजसूरि गुरु गायउ ॥
'श्री जिनसिंह सूरि' पाटोधर प्रतपइ तेज सवायउरी ।जि०।१।आ०।
पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर चिहुं दिसी सुजस सुहायउ।
रंगी रंगीली छयल छबीली मोती (स) वधि वधायउरी ॥२॥जि०॥
धन धन 'धर्मसी' साह मो नंदन धन 'धारलदे' जायउ।
तू साहिब मैं तेरउसेवक, तुम चरण(रा)णे चित्त लायउ री ।३।जि०।
'सिंधु' देस विहार करीनइ, पांच पीर वर ध्यायउ।
चउद हजार तिणि वसइ अधिकउ जिणि दिसि पूज गवायउरी ।४।जि०।
श्री 'ठाणांग' नी वृति करिनइ, विषमउ अरथ बतायउ।
सूरि मंत्रधारी परउपगारी इंदु नउ बीजउ मायउरी ॥५॥जिन ॥

सह को श्रावक रंजी 'नव खंड', निज नामउ वरतायउ।
विद्यावंत बड़उ गच्छ नायक, सहुको पाय नमायउरी ॥६॥जिन०॥
सोहइ सहर सदा 'सेत्रावड' 'मरुधर' मांहि मल्हायउ।
संवत 'सोल इक्यासी' वरसइ एह प्रबंध बणायउरी ॥७॥जिन०॥
'आसाढ़ा वदि तेरसि' दिवसइ, सुरगुरु वार कहायउ।
श्री गच्छनायक गुण गावतां 'मेह' पिण सबलउ आयउ'री ॥८॥जि०॥
'रत्नहर्ष' वाचक मन मोहइ, 'खेम' वंश दीपायउ।
'हेमकीर्त्ति मुनिवर मन हरखइ, एह प्रबंध करायउरी ॥९॥जिन०॥
श्री 'जिनराजसूरि' गुरु सुरतरु मइ निज चित्ति वसायउ।
मुनि 'श्रीसार' साहिब सुपसायइ, मनवांछित फल पायउरी॥१०॥जि०॥

इति श्री खरतरगच्छाधिराज सकल साधुसमाज वृंद वंदित पादपद्म निउरा सदनेक मंगलमय श्री जिनराजसूरि सूरिश्वराणां प्रबंध शुभ बंध बंधुरतरो लिखितोय श्री कालू ग्राम ॥ शुभं भूयात पठक पाठकना महाउमनसां ॥ श्राविका पुण्यप्रभाविका धारां पठनार्थं ॥ श्री प्रथम दूहा २१ प्रथम ढाल गाथा १६ दूहा ५, बीजी ढाल गाथा १७ दूहा ५ तीजी ढाल गा० १६ दूहा ३ चौथी ढालगा ११ दूहा ५ पांचमी ढाल गाथा १५ दूहा ५, छट्ठी ढाल गाथा १४ दूहा २ सातमी ढाल गाथा ११ दूहा ४, आठमी ढाल गाथा ११ दूहा ५ नवमी ढाल गाथा १७ दूहा ६ दशमी ढालगाथा १७ दूहा १४ इगारमी ढालगाथा १० सर्व गाथा २५४ सर्व श्लोक ३४ सर्व ढाल ११ (पत्र २ में ६, प्रत्यक पत्रमें १८ साइनें सुन्दर अक्षर, ज्ञानभंडार, दानसागर भंडार नं० १३ तत्कालीन लि०)

———

॥ श्री जिनराज सूरि गीतम् ॥

(१)

श्री जिनराज सूरीश्वर' गच्छ धणी, भुरि साधु नउ परिवार।
गामागुगामइ विहरता सखि, वरसता हे देसण जल धार ॥१॥
कवयइ सुगुरु पधा रिस्यइजी, इण नयरइ हे सखि पुण्य पडूर।
-सूहवि मोती वधारि (वि?) स्ये जी ॥ आं ॥
जेहनइ वंसइ वडवड़ा, गच्छपति हुआ निरदोष।
देवता जिहनी सानि धै सखि तिण मु हे कुण करइ मन रोष ॥२॥
श्री अभयदेवसूरि' जिहां हुआ सखि नव अंग विवरणकार।
चउसठि योगिनी जिण जीतली, 'जिनदत्तसूरि' हे जिहां सुखकार ॥३॥
जेहनी महिमा मउ नहीं सखि पार एइ निहाल।
'श्री जिनकुशल सूरीश्वर' सखि दीपइ हे इणि जगि चउसाल ॥४॥क०
पतिसाहि अकबर भूपम्यउ जिणि मयण चाणि सुप्यारि।
श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वर' हुमउ सखि, इणि गच्छि हे अग अधिक प्रमाण ॥५॥क०
लाहोरि' दीधी जेहनइ, गुण देखि आप हजूर।
श्रीयुगप्रधान पदवी सखी सखि, छाजइ ह रहै जिम जगि सूर ॥६॥ क०
तेहनइ पाटइ प्रगटियउ सखि, 'श्री जिनसिंहसुरिन्द'।
तसु पाटि परतखि थप्पियउ सखि, ए गुरु सोहगनउ कन्द ॥७॥ क०
निर्मल वंश(इ) ऊपनउ जम्बू स्वामि सारिख साहूर।
श्री'गुणविनय मधुगुरु इसउ सखि, चाहिवा द सुख हर्ष अपार ॥८॥क०

(२) श्री जिनराजसूरि सवैया ।

'जिनदत्त (सूर) अरु 'कुशल' सूरि मुनिंद

वंछित दायक जाकुं हाजरा हजूर जु ।
चारित पात (विख्यात) जीते (है) मोह मिथ्यात

और जो अशुभ कर्म किये जिन दूर जु
'जिनसिंघ सूर' पाट सोहै मुनिवर थाट

भणत सुजाण राय विद्या भरपूर जु ।
नछत्रन (नक्षत्र?) मांझ जैसे राजत निछत्रपति,

सूरिन में राजे ऐसे 'जिनराज सूर' जु ॥१॥
जैसे बोध वारण(?)के गंगके तरंग मानो

कोट सुखदायक भविक सुख साजको ।
गगन मना ""नकी प्रभा वेद विचरत

सब रस सरस सकल रीझ काजकी ।
गाजत गंभीर ज (घ?) न घार सुघ सीर वृद

भवण सुभत धुन (ध्वनि?) ऐन मेघ गाज की ।
'जिनसिंघ सूर' पाट विपना सो पढी (घ) धान,

अमृत प्रवाह वांनी(णी?) सूर 'जिनराज' की ।२।
'साहिजहां' पातिसाह प्रबल प्रताप जाको,

अति ही करूर नूर को न सरदारनी (?)है ।
असी चउ गढ मन घहरावे जाके मन

ऐसो जोर चढ्यो दुजो न कोउ भारी है।

मीय 'जिनसिंघ' पाट मिल्येउ साहि सनमुख,
'परमसो' नैवन सकल अग साखी है।
कहै 'कविदास' पदद्रसन कुं ध्यारे,
शासनकी टेक 'जिणराज सूरि' राखी है।३।
"आगरे' हसत आये सबहीके मन भाये,
विविध बधाये संघ सकल उछाह कुं।
राजा 'गजसंघ' 'सूरसंघ' 'असरफखान',
'आलम' 'दीवान सदा सुगुरु सराह कुं।
कहै 'कविदास' जिणसिंघ पाट धुर तेज,
अगम सुगम कीने शासन सुठाह कुं।
"मिगसर वदु (वदि?)बीच' 'रविवार शुभ दिन,
मिले 'जिनराज' 'शाहिजहां' पतिशाह कुं।४।

॥ श्री गच्छाधीश जिनराजसूरि गुरु गीतम् ॥

(१) ॥ ढाल अलबेल्यानी जाति मांहि ॥

आज सफल सुरतरु फल्यउ रे लाल, आज सफल थयउ दीस। सुरंगाइ
गच्छ-नायक भेट्यो सखरे लाल, 'श्रीजिनराज सूरीस' ॥१॥सु
सोभागी सवि सूरि मइ रे लाल, ममता छीन शरीर। सु०।
दिनकर नी परि दीपतउ रे लाल धरणीधर वर (परि?)धीर।सु॥२॥
तूठी जेहनइ 'अंबिका' रे लाल अविचल दीधो वाच। सु०।
लिपि वांची 'पंचासियइ' रे लाल, सहुको मानइ साच सु०॥३॥सो०॥

राउल 'भीम' समा भणी रे लाल, 'जेसलमेर' मझार । सु० ।
परवासी जीता जिणइ रे लाल, पाम्यउ जय-जयकार । सु०॥४॥सो०
'श्री जिनधर्म' सोमस्यउ रे लाल, कठिन क्रिया प्रतिपाल । सु० ।
इण जगि परतखि पेखियइ रे लाल, 'श्रीजिनराज'कृपाल ।सु०॥५॥सो०
प्रतिपइ पुण्य पराक्रमइ रे लाल, मानइ सहुको आण । सु ।
पिशुन थया सहु पाधरा रे लाल, दूरइ तजि अभिमान ।सु०॥६॥सो०
मइ गछ जिम गुरु माल्हतउ रे लाल, मोटा साधि मुणिंद । सु० ।
जन मन मोहइ चालतां रे लाल, पामइ परमाणंद । सु०॥७॥ सो०॥
क्रोध तज्यउ थया थकी रे लाल, दूरि कियउ अहंकार । सु ।
मायानइ मानइ नहीं रे लाल लोभ न चित्त लिगार । सु०॥८॥ सो०॥
श्री संघ सोभ वधारतउ रे लाल श्रीजिनराज मुनीश । सु० ।
प्रतिपउ गुरु महिमंडलइ रे लाल, 'सहजकीरति' आसीस ।सु०॥९॥सो०

॥ इति श्री गच्छाधीश गुरु गीतम् ॥

---

(४) ॥ ढाल, पद्मिनीनी जाति मांहि ॥

गच्छपति सदा गहगहइ निरुउ, पंच सुमति गुपति त्रयास ।
सुविहित सिरोमणि साचियउ पंच महाव्रत पास ॥ १ ॥
सद्गुरु वंदियइ, 'श्रीजिनराजसुरिन्द' ।
दरसन अधिकमानंद जंगम सुरतरु कन्द ॥ आंकणी
संघपति सिरोमणि संघवी, श्री 'आसकरण महन्त ।
पद ठवणउ जिहनउ कियउ खरची धन बहु भांति ॥ २ ॥ स०॥

पहिरावियउ निज गच्छ सहुप, भविकी करणी कीध ।
'श्रीजिनसिंह' पटोधर, जग महिं जस लीध ॥ ३ ॥ स०॥
'बोहित्थ' वंस श्रावकउ श्री 'धर्मसी' धन धन्न ।
'धारलदे' घरणी घरउ, जायउ पुत्र रतन्न ॥ ४ ॥ स०॥
जसु वखि साधुपणउ मसउ, हरखि दियउ बहुमान ।
साबासि तुम्ह करणी भली, कहइ श्री 'सुरताण' ॥ ५ ॥ स०॥
श्री संघ करइ वधामणा, जसु देखि करणी सार ।
गुणवंत सगला ही कहै, पूजा विविध प्रकार ॥ ६ ॥ स०॥
जिण माहि बहु गुण सूरिना, देखियइ प्रकट प्रमाण ।
वरणवी हुं नवि सकूं, जसु किया तपइ गाण ॥ ७ ॥ स ॥
श्री गच्छ खरतर चिरजयउ, जिहां पहुवा गच्छराय ।
सोइ मनइ वलि पालयँउ, कहु किम श्रीपूज्य जाय ॥८॥ स०॥
जिहां लग मेरु महीधरु, जिहां लगइ शशि दिनकार ।
प्रतिपउ तिहां लगि गच्छपणी 'सहजकीरति सुखकार ॥९॥स ॥

(५)

श्री जिनराजसूरि गुरु राजइ, सिरि जैन तणउ छत्र छाजइ ।
सद्गुरु प्रतपउ जी ॥
दिन दिन तेज सवायो भविक लोक मनि भावउ ॥ १ ॥ श्री ॥
गजगति गछ चालइ, पञ्च महाव्रत पालइ । स० । श्री ॥
मुनिवर मुनि परवारइ, कुमति कदाग्रह वारइ ॥ २ ॥ स०।श्री ॥
श्रीजिनसिंह सूरि पाटइ, पूज्य सोहइ मुनि (वर)थाटइ ।स०। श्री ॥
महिमा मेरु समानइ, दिन-दिन चढ़ती वानइ ॥३॥ स० । श्री०॥

'धरमसी' शाह मल्हार, छरि 'धारलदे' मल्हार । स० । श्री०
रूपइ मयणकुमार, विद्या तणउ भण्डार ॥ ४ ॥ स० । श्री०
वाद करी 'जेसाणइ' सत्त श्रीधर सहुको जाणइ । स० श्री०
पास वरइ जिण नामी लिपि बांची 'भंडारी'॥ ५ ॥ स०। श्री०
बोलइ अमृत वाणी, सुरनर कइ मन माणी । स० । श्री० ।
सुलक्षित करिय पसाय रीझविया रायराय ॥ ६ ॥ स० । श्री०
कोडिवरस वंसइ दीवउ, कोडि वरस चिरजीवउ ॥स०।श्री०
जा लगि सूरज चन्द, 'आनन्द'प्रमु चिरनन्द ॥ ७ ॥ स० श्री०

(६)

आवउजी माहरउ पूज इणि देसडइरे, वीनवइ श्री 'करण' नरेस रे ।
वीनवइ नरनारि नरेश ।
सुम सुख श्री पंचीड़ा वीनवे रे, मारई जिण छइ पूज लिप देश र ॥१॥
तीन प्रदिक्षण तू देइ करीरे, श्री जी रे तु आगे पाय रे ।
कहि मुवराजा 'रंगविजइ' भणी रे,इतरउ करिज्यो पसाय रे॥२॥आ०
जसु दरसनि दीठइ तन उल्लसइ रे,मेह तणी पर पूजजी धीर रे ।
मिहर करि पूज माहरइ देसडइ रे आवउ पुहपां(?) केरा नीर र ॥३॥
सवैम्यां माहि सिर सहरउ रे, कलि मइ गौतम मइ अवतार र ।
जंगम तीरथ तारक जगतमइ रे जिण बीतउ बलि मदन विकाररे॥४॥
पूजजी जे किम मुझ मइ बीसरइ रे जिणसुं परम तणउ मुझ राग रे ।
ते गुरु बीसार्यां नवि बीसरइ रे, मोहनउ साचउ जस सोभाग र ॥५॥
'श्री जिनराजसूरीसर' गच्छ धणी रे, मानी महजनी ए अरदास र ।
'सुमतिविजय' कहि चतुर्विध संघनी रे पूजजी सफल करउ हिव
आशा ॥ ६ ॥ आ

——x§x——

कवि धर्मकीर्त्ति कृत

॥ श्री जिनसागर सूरि रास ॥

दूहा—श्री 'थंभणपुर' नउ धणी, पणमी पास जिणंद।
श्री 'जिनसागर सूरि' ना गुण गाउं आणंदि ॥ १ ॥
सरसति मति मुझ निरमली, आपउ करिय पसाय।
आचारज गुण गांवतां, अविहड़ वर द्यो माय ॥ २ ॥
वीर जिणिंद परम्परा 'उद्योतन' 'वर्द्धमान'।
सूरि 'जिणेसर' पाटवी 'जिनचन्द्र' सूरि गुणजाण ॥३॥
'अभयदेव' 'वल्लभ' गुरु, पाटइ श्री 'जिनदत्त'।
'जिनचंद सूरीसर' जयउ, सूरिसर 'जिनपत्ति' ॥ ४ ॥
'जिणेसर सूरि' 'प्रबोध' गुरु, 'चंद्र सूरि' सिरताज।
'कुशलसूरि' गुरु सेवतां, आपइ अवमी राज ॥ ५ ॥
'पदमसूरि' तेजइ अधिक, 'लबधि सूरि' 'जिनचंद'।
पाटि 'जिनोदय' तसु पटइ, श्री 'जिनराज' मुणिंद ॥ ६ ॥
'जिनभद्र' श्री जिनचंद' पटि 'जिनसमुद्र' जिनहंस'।
मानइ नव निधि संपजइ, धन धन 'चोपड़' वंश ॥ ७ ॥
मनवंछित सुरतरु पूरवइ 'माणिक सूरि' मुणिंद।
'रीहड़' वंशइ गरुअड़, युग प्रधान 'जिणचंद' ॥८॥

श्री 'अकबर' प्रतिबोधीयो, वचने अमृत धार ।
श्री 'खरतर' गच्छराज नी, कीरति समुद्रौं पार ॥ ६ ॥
'युगप्रधान' पद आपीयो 'अकबर' साहि सुजाण ।
निज हाथि श्री 'जिनसिंह' नइ, पदवी दीध प्रधान ॥१०॥
तिण अवसर बहु भाव सुं, देइ 'सवा कोडि' दान ।
'बच्छावत' चित चावउ, 'करमचंद' मंत्रि प्रधान ॥११॥
युगवर 'जंबू' सेहरउ, रूपइ 'मार-कुमार' ।
'पंच नदी' साधी जिणइ, शुभ ध्यान शुभ सार ॥१२॥
सेवत 'सोल गुणहरउ', सूरति साहि 'सलेम' ।
'जिनशासनि सुलतान' कर्यो, 'खरतर' गच्छ मइ खेम ॥१३॥
तासु पाटि जिनसिंह गुरु, तासु सीस सिरताज ।
'राजसमुद्र' सिद्धसेनजी', दरसणि सीझइ काज ॥१४॥
युगवर श्री 'जिनसिंह' नइ पाटइ श्री 'जिनराज' ।
'जिनसागरसूरि' पाटवी आचारिज तसु काज ॥१५॥
जनम पिता कुण मात तसु, जनम नगर अभिधाण ।
कुण नगरइ पद थापना, 'धरमकीरति' कहइ वाणि ॥१६॥

ढाल— तिमरीरइ

'जंबू' दीपइ थाल समाण 'लख जोयण' जहनो परिमाण ।
'दक्षिण' 'भरतइ' आरिज देस 'मरुधरि' 'अंगडि' देस निवेस ॥१७॥
तिहां कणि राजइ 'रायसिंघ' राज, 'बीकानयर' वसइ शुभकाज ।
ठाम ठाम सोहइ हट सेरी वाजित्र वाजइ गावइ गोरी ॥१८॥

नगर मांहि बहुला व्यवहारी (व्यापारी), दानशील तप भावि वधारी।
वसइ तिहां पुण्यइ बहु वित, साह 'कडुआ' नामइ थिर चित ॥१६॥

राग —रामगिरी।

दोहा—रयणी सोहइ चंद शु दिनकर सोहइ दीस।
तिम 'कडुआ' 'बोहिथ' कुलइ पूरव मनइ जगीस ॥२०॥

ढाल'— पाछली

तासु घरणि 'मिरगा दे' सती रूपइ रंभा नु ओपति।
'चउसठि' कला तणी जे खाण मुखि बोलइ सा अमृत वाणि ॥२१॥
प्रिय सुं प्रेम धरइ मनि घणउ, 'दसरथ' सुत जिम 'सीता' सुणउ।
चंद्र चकोर मनइ जिम प्रीति, पालइ पतिव्रत धरम नी रीति ॥२२॥
पांचे इंद्री विषय संयोग निति निति नवला बहुविध भोग।
मद यौवन काया मद मची, इंद्र संघातइ जांणे सची ॥२३॥

राग'— आसावरी

दूहा—सुखभरि सूती सुंदरि, पेखि सुपन सब राति।
एगल चोल रतावली, पिउ नें कहइ ए वात ॥ २४ ॥
सुणी वचन निज नारि ना मेघ घटा जिम मोर।
हरख भणइ सुत थाइस्यइ, थासइ चतुर चकोर ॥२५॥

ढाल—आस फली माहरी मन मोरी कुलह कुमर निधान रे।
मनवंछित दोहला मनि पूरइ पामइ अधिकउ मान रे ।२६।भा।
संवत 'सोल बाक्न्ना वरषइ 'फागी सुदी' 'रविवार रे।
'चउदसि'ने दिनि असिणि रिखइ(नक्षत्रइ) जनम थयो सुखकारेॆ॥२७

निव निव कुमर वाधइ बहु लक्खणि, सुरतरु नउ जिम कंद रे।
नयणी अनोपम निलवट सोहइ, वदन पूनम नउ चंद रे ॥२८॥
सहुम सजन मगनाबो मगलइ, मेळि बहु परिवार रे।
'चोळउ' नाम दियउ मन रंगइ, सुपन तणइ अनुसारि रे ॥२६॥
सहिम समाण मिळि मात पासइ, साह 'वछराज' कुळि दीव रे।
'सामळ' नाम धरि हुलरावइ, सुणि बोलइ चिरजीव रे ॥३०॥

राग — मारू

दोहा—रमइ कुमर निज हरखसुं मात 'मृगा दे' पुत्र।
गजगति गेलइ चालतउ कुलमंडण अवधूत ॥ ३१ ॥
मीठा बोलइ बोलडा काय कनक नइ वान।
बालक 'बत्रीस लखणो', मात पिता धइ मान ॥ ३२ ॥

ढाल — पाछली

माइडी मनोरथ पूरइ सुन्दर मुंलडी आपइ रे।
बड़ा वचन नवि लोपीयइ, मन सुधि सील समापइ रे ॥३३॥
भाषा माषी माइडी सेवइ सुरतरु जेमो रे।
पोसइ कुमर नइ बहु परइ 'शालिभद्र' जिम प्रेमो रे ॥३४॥
इम अवसरि तिहां आवीया, 'जिनसिंह सूरि' सुजाणो रे।
श्री संघ वंदइ भावसुं उछव अधिक मंडाणो रे ॥३५॥
मात 'मृगाद' सुत सहू निसुणइ धरम विचारो रे।
मन मइ वैराग उपनो, जांणी अथिर संसारो ॥ ३६ ॥
दोहा—'गजसुकमाल' जिम 'मघ मुनि' 'अइमतो' तिण काल।
'सामळ' ते करणी करइ, जाणइ बाळ गोपाल ॥३७॥

ढाल —केदारा गौडी

सांभली वचन सद्गुरु केरा, जीवादिक नवतत्व भलेरा ।
उपशम रस भ(भ?)र कामकलेसी, संजम सेवा बुद्धि निवेसी ॥३८॥
मात पासे आइ कुमर सोभागी, पभणइ संजमि प्रीत मनरागी ।
अनुमति मोहि दीयउ मोरी माइ, नवि कीजइ चारित्र अंतराइ ॥३९॥
मात भणइ वछ सांभलि साचुं इण वचनइ पुत्र हुं नवि राचुं ।
लोह चणा मयण दांति चबावइ, तेहथी संजम कठिन कहावइ ॥४०॥
कुमर भणइ माता किं सूर परचारइ, कायर पुरुष ते हीयडुं हारइ ।
संजम लेवा वात करेवी, मइ पिण निश्चइ दिक्षा लेवी ॥ ४१ ॥

राग —देसाख

दोहा —वहमाइ 'विक्रम' सहित, 'मात भण्इ सु(सु?)खसाथि ।
करिसुं आतमाराधना, जिनसिंह सूरि' गुरु हाथि ॥४२॥
दूध मांहि साकर मिली पीतां आनंद होइ ।
वचन सुणि निज मातना हरख्यउ कुमर मनि सोइ ॥४३॥
'विक्रमपुर' थी अनुक्रमइ, सद्गुरु करइ (अ) विहार ।
अमरसरइ' पउधारिया 'श्रीजिनसिंह' उदार ॥४४॥
सामाइक पोसउ करइ, पडिकमणउ गुरु पासि ।
संजम लेवा कारणइ, कुमर मनइ उल्लासि ॥४५॥
श्री'अमरसर' संघ तिहां, हरखित थयउ अपार ।
वाजित्र वाजइ नवनवा, वरतउ जय जयकार ॥४६॥
'श्रीमाल' वंशि सुहामणउ, थानसिंह' थिर चित्त ।
संजम उछव कारणइ, खरचइ तिहां बहु वित्त ॥४७॥

संवत 'सोल इकसठइ' 'माह' मासि सुभ मासि ।
माल सहित दिक्षा लीयइ, पहुती मन नी आसि ॥४८॥
विहोथी चारित्र लेइ नइ, सद्गुरु साथि विहार ।
विद्या सीखइ अति घणी, धरता हर्ष अपार ॥४९॥
अनुक्रमि देस वंदावतां, आया 'जिनसिंह' राया ।
'राजनगर' 'जिनचंद' ने, आगह सुगवर पाया ॥५०॥
पांच समिती तीन गुप्ति से, पालइ प्रवचन मात ।
छ जीवनी रक्षा करइ, न करइ पर नी तांति ॥५१॥
सामाचारि सूत्र अरथ, जाणइ सरब प्रकार ।
'सतावीस' गुणे करी, सोहइ 'सामछ' सार ॥५२॥
तप मूहा मांडलि तणा वड दिक्षा तिहां दीध ।
'श्रीजिनचंद्र सूरि' सहइयइ 'सिद्धसेन' मुनि कीध ॥५३॥
मूहा उपधान उछटइ, आगम ना वलि जाग ।
'छ मासी' 'विक्रमपुरइ' सरिया सफल संयोग ॥५४॥
सुगुरु भणावइ चाह सुं उत्तम वचम विलास ।
युगप्रधान बहु हित धरइ, पहुंचइ वंछित आस ॥५५॥

चउपइ —पमणइ शास्त्र सिद्धांत विचार मुनिवर'सिद्धसेन'सिरदार
गुरु मउ विनय साचवइ सकइ, 'सिद्धसेन' विद्या गुण निलइ ॥५६॥
'अंग इग्यारह' 'बार उपंग', पयन्ना-रस भणइ मन चंग ।
'छ छेद' मन्थ मूल सूत्रइ 'च्यारि',
'नन्दी' अनइ अनुयोगदुआर' ॥५७॥

नगर मांहि बहुला व्यवहारी (व्यापारी), दानसील तप भावि व्हारी।
वसइ तिहां पुण्यइ बहु वित्त, साह 'वछा' नामइ थिर चित्त ॥१६॥

राग —रामगिरी।

दोहा—रयणी सोहइ चंद सु दिनकर सोहइ दीस।
तिम 'वछा 'बोहिय' कुलइ पूरउ मनह जगीस ॥२०॥

ढाल— पाछली

तासु घरणि 'मिरगा दे' सती, रूपइ रंभा नु ओपति।
'वइसठि' कला तणी जे जाण, मुखि बोलइ सा अमृत वाणि ॥२१॥
प्रिय सुं प्रेम घरइ मनि घणउ 'दसरथ' सुत जिम 'सीता' सुणउ।
चंद्र चकोर मनइ जिम प्रीति, पालइ पतिव्रत धरम नी रीति ॥२२॥
पांचे इंद्री विषय संयोग नित नित नवला बहुविध भोग।
नव यौवन काया मद मची, इंद्र संघातइ जाणे सची ॥२३॥

राग:— आसावरी

दूहा—सुखभरि सूती सुंदरि पेखि सुपन सच राति।
रयण पोल रजावली प्रिय सैं कहइ ए बात ॥ २४ ॥
सुणी वचन निज नारि ना मेघ घना जिम मोर।
, हरख्यउ मनइ सुन साहइ थासइ चतुर चकोर ॥२५॥

ढाल—आस फली माहरी मन मोरी कुलइ कुमर निधान रे।
मनवंछित डोहला मनि पूरइ पामइ अधिकउ मान रे ॥२६॥मा०
संवत 'सोल बावन्ना वरषइ 'काती सुदी' 'रविवार' रे।
'चउद्दसि'ने दिनि ससिसि रिरक्ष(नक्षत्र?) जनम थयो सुखकारे॥२७

निंत निंत कुमर वाधइ बहु लक्षणि, सुरतरु नउ जिम कंद रे ।
नमणी अनोपम निलवट सोहइ, वदन पूनम नउ चंद रे ॥२८॥
सहुअ सजन मगतावी मगतइ मेलि बहु परिवार रे ।
'चोळउ' नाम दियइ मन रंगइ, सुपन तणइ अनुसारि रे ॥२६॥
सदिअ समाण मिछि मात पासइ, साह 'वछराज' कुखि दीव रे ।
'सामल' नाम भरि दुलरावइ, सुखि चोळउ चिरजीव रे ॥३०॥

राग—मारु

दोहा—रमइ कुमर निज हरखसुं मात 'सुगा दे' पुत्र ।
गजगति गेलइ चालता कुलमंडण अदभूत ॥ ३१ ॥
मीठा बोलइ बोलड़ा काय कनक मइ वान ।
बालक बत्रीस लक्षणो, मात पिता वइ मान ॥ ३२ ॥

ढाल—पाछली

माइडी मनोरथ पूरइ सुन्दर सुंखड़ी आपइ रे ।
बड़ा वचन नवि लोपीयइ, मन सुधि सीरउ समापइ रे ॥३३॥
आसा वांधी माइड़ी सेवइ सुरतरु जेमो रे ।
पोसइ कुमर नइ बहु परइ, 'शालिभद्र' जिम प्रेमो रे ॥३४॥
इंग अवसरि तिहां आवीया 'जिनसिंह सूरि' सुजाणो रे ।
श्री संघ वंदइ भावसुं उछव अधिक मंडाणा रे ॥३५॥
मात 'सुगादे' सुत सहू निसुणइ अरथ विचारो रे ।
मन मइ वैराग ऊपनो, जांणी अथिर संसारो रे ॥ ३६ ॥
दोहा—गजसुकमाल जिम 'मेघ मुनि' 'अइमतो तिण काल ।
'सामल' ते करणी करइ, जाणइ बाल गोपाल ॥३७॥

ढाल —केदारा गौडी

सांभली वचन सद्गुरु केरा, जीवादिक नवतत्त्व भलेरा ।
उपसम रस प(म?)र कायकलेसी, संजम लेवा बुद्धि निवेसी ॥३८॥
मात पासे कहइ कुमर सोभागी, पभणइ संजमि जीव मनरागी ।
अनुमति मोहि दीयउ मोरी माइ, नवि कीजइ चारित्र अंतराइ ॥३९॥
मात भणइ वछ सांभलि सार्चु, इण वचनइ पुत्र हु नवि राचुं ।
जोइ घणा मयण दांति चवाया, तेहवी संजम कठिन कहाया ॥४०॥
कुमर भणइ माता कि सूरे परचारइ, कायर हुइ ते हीयडुं हारइ ।
संजम लेवा मात कहावो, मइ पिण निश्चइ दिक्षा लेवी ॥ ४१ ॥

राग —वैराडी

दोहा —अडमाइ 'विक्रम' सहित, 'मात' भणइ सु(तु?)खसाथि ।
करिसुं आत्मआराधना, 'जिनसिंह सूरि' गुरु हाथि ॥४२॥
दूध मांहि साकर मिली पीतां आणंद होइ ।
वचन सुणि निज मातना, हरखउ कुमर मनि सोइ ॥४३॥
विक्रमपुर' श्री अनुक्रमइ, सद्गुरु करइ (म) विहार ।
अमरसरइ पधारिया 'श्रीजिनसिंह' उदार ॥४४॥
सामायक पोसउ करइ पडिक्कमणउ गुरु पासि ।
संजम लेवा कारणइ, कुमर मनइ उल्लासि ॥४५॥
श्री'अमरसर' संघ तिहां, हरखित थयउ अपार ।
वाजित्र वाजइ मधुरसा वरतउ जय जयकार ॥४६॥
'भीमास' वंसि सुहामणउ, 'थानसिंह' थिर चित्त ।
संजम मछव कारणइ, खरचइ तिहां बहु वित्त ॥४७॥

संवत 'सोल इकसठइ' 'माह' मासि शुभ मासि ।
माय सहित दिक्षा लीयइ, पहुती मन नी आसि ॥४८॥
विहांथी चारित लेइ नइ, सद्गुरु साथि विहार ।
विद्या मीखइ अति घणी, करता हर्ष अपार ॥४६॥
अनुक्रमि देस वंदावतां, आया 'जिनसिंह' राया ।
'राजनगर' 'जिनचंद्र' ने, आगइ सुगुरु पाया ॥५०॥
पांच समिती तीन गुप्ति से, पालइ प्रवचन मात ।
छ जीवनी रक्षा करइ, न करइ पर नी ताति ॥५१॥
समाचारि सूत्र अरथ, जाणइ सरव प्रकार ।
'सतावीस' गुणे करी सोहइ 'सामल' सार ॥५२॥
तप वडा मांडलि तणा करइ दिक्षा तिहां दीध ।
'श्रीजिनचंद्र सूरि' सईहथ 'सिद्धसेन' मुनि कीध ॥५३॥
मूल उपधान उलटइ, आगम ना वलि जोग ।
'छ मासी 'विक्रमपुरइ' सरिया सकल संयोग ॥५४॥
सुगुरु भणावइ चाह सुं उत्तम वचन विलास ।
पुण्यप्रधान बहु दिन परइ, पहुंचइ वंछित आस ॥५५॥

चउपइ —पभणइ शास्त्र सिद्धांत विचार, मुनिवर 'सिद्धसेन' सिरदार
गुरु सउ विनय करावइ भलउ, सिद्धसेन' विद्या गुण निलउ ॥५६॥
'अंग इग्यारह 'बार-उपंग', 'पयन्ना-दस भणइ मन चंग ।
'छ छेद' ग्रन्थ मूल सूत्रइ 'च्यारि',
'नन्दी', भणइ 'अनुयोगदुआर' ॥५७॥

'षउइद' विया तणउ निहाण, सद्गुरु उत्तम करइ बखाण ।
उदयवंत अवसर नइ जाण निज गुरु तणइ जे मानइ आण ॥५८॥
दमावंत महि पदवी लीह, सोहइ गुरु पासइ निसदीह ।
इस विध जतीधरम नउ धणी, तप जप संयम करुणा घणी ॥५९॥
यात्र करी 'सेत्रुजा' तणी, साथइ जिनसिंह सूरि' दिनमणी ।
संघवी 'आसकरण' विख्यात, संघ करावी कारिज आत ॥६०॥
'खभात' नइ 'अमदावाद', 'पाटण' मांहि धणउ जसवाद ।
'बडलो' वंदया 'जिनदत्तसूरि', भेटया पातक जायइ दूर ॥६१॥
इणि अनुक्रमि 'जिनसिंह सूरि', 'सीरोहीयइ' गुरु सक्ख पडूरि ।
करिअ पइसारो वंदइ संघ राजा मान दियइ 'राजसिंह' ॥६२॥
'माडउरइ' आवइ गच्छराज, वाजित्र वाजइ बहुत दिवाज ।
श्रीसंघ सुं वंदइ कामिनी रूपइ जीति सुर भामिनी ॥६३॥
'लंडप' नई 'द्र् णाडा' इम 'पंचाणी' भेटया बहु टेव ।
अनुक्रमि मन मइ धरिअ उलासि, आव्या'बीकानेर' चउमासि ॥६४॥
'बापमल' पइसारो करइ, नीसाणइ अंबर धरहरइ ।
कीधा भेजां पोखि पागार, वसतिई आर्या श्रीगजधार ॥६५॥
आनन्दइ चउमासउ करी(इ) आया 'मेडता' बहु हित धरी ।
तेडावइ श्रीसाहि सलेम , 'मेडता' आया कुशले खेम ॥६६॥

राग — वैराडी

दूहा — तिणि अवसर 'जिनसिंह' नउ परवसि भयउ सरीर ।
तेरमलइ छूटा नही पुरुष बडा बहु मीर ॥६७॥

अवसर जाणी तिण समइ, श्रीसंघ करइ विचारि ।
पोसइ सद्गुरु चित धरी, धइ जननी सिरदार ॥६८॥
मणभम आराधन करी पहुंता गुरु सुर लोग ।
धामित्र वाजइ तिहा घणा, मांडवी तणइ संजोगि ॥६९॥
सोग निवारो थापीया सम्वर महुरत कीध ।
भट्टारक गुरु 'राजसी', 'मामड आचारज कीध ।७०॥
'मालकरण' 'अमीपाल' वलि, 'कपूरचन्द' सुविश्रम ।
पद ठवणउ करइ रंग सुं, 'मरणमदास 'सूरदास' ॥७१॥

राग— आसावरी

तब जिणसासण पोसि पधारा, तंबू डेरा छबीयां ।
मस्तक ऊपरि मोती झुंबक,वहींबइ भारइ छबीयां ॥
तेह तस्य बहुल बहु लोग, भूमि माग नहिं माग ।
एक एकनइ बेस्हइ मेस्हइ मिल पडिवा नहीं लाग ॥७२॥
सबलो नांदि मंडाइ तिहां करिग वाजित्र विविध प्रकार ।
सूरी मंत्र आप्यइ तिण अवसरि, 'हेमसूरि' गणधार ॥
श्री 'जिनराज सूरिदवर नामइ, साधु तणा सिणगार ।
वासपगइ सूरि पद आपी, तेंव्याइ गच्छ भउ भार ॥ ७३ ॥
तैहिज मांहि आचारिज पदवी 'श्री जिनराज समीपइ ।
मन सुदइ सूरि मंत्र ज दइ जिनसागर सूरि थापइ ।
सजि सिणगारने कामिणी आवइ, भरि भरि मोतिन थाल ॥
सोवन पूछि बधावइ सद्गुरु, गावइ गीत रसाल ॥ ७४ ॥

ढाल —केदारा गौडी

सांभली वचन सद्गुरु केरा, जोवारिक नवतत्त्व भलेरा ।
उपशम रस भ(भी)र कायकलेसी, संजम लेवा बुद्धि निवेसी ॥३८॥
मात पासे कहइ कुमर सोभागी, घमण संजमि प्रीत मनरागी ।
अनुमति मोहि दीयउ मोरी माइ, मवि कोमइ चारित्र अंतराइ ॥३९॥
मात भणइ वछ सांभलि साचुं, इण वचनइ पुत्र हुं नवि राचुं ।
छोइ घणा मयण वांति चवावइ, तेहथी संजम कठिन कहावइ ॥४०॥
कुमर भणइ माता कि सूरे परचारइ, कायर हुइ ते हीमतुं हारइ ।
संजम छेवा वात कहेवां, मइ पिण निश्चइ दिसा अमी ॥ ४१ ॥

राग —वेसाख

दोहा —मइमाइ 'विक्रम' सहित 'मात भणइ सु(पु?)णसाथि ।
करिसुं आत्मआराधना, 'जिनसिंह सूरि' गुरु हाथि ॥४२॥
दूध मांहि साकर मिली पीतां आणंद होइ ।
वचन सुणि निज मातना हरख्यउ कुमर मनि सोइ ॥४३॥
'विक्रमपुर' थी अनुक्रमइ, सद्गुरु करइ (म) विहार ।
'अमरसरइ' पधारिया 'श्रीजिनसिंह' उदार ॥४४॥
सामाइक पोसउ करइ पडिक्कमणउ गुरु पासि ।
संजम लेवा कारणइ, कुमर मनइ उल्हासि ॥४५॥
श्री'अमरसर' संघ तिहां, हरखित थयउ अपार ।
वाजित्र वाजइ नवनवा बरतइयां जयकार ॥४६॥
'श्रीमाल' वंशि सुशोभणउ, 'थानसिंह' थिर चित्त ।
संजम वछन कारणइ खरचइ तिहां बहु वित्त ॥४७॥

संवत 'सोल इकसठइ' 'माह' मासि सुभ मासि ।
मात सहित दिक्षा लीयइ, पहुती मन नी आसि ॥४८॥
विहांथी चारित लेइ नइ, सद्गुरु सामि विहार ।
विद्या सीखइ अति घणी करता हर्ष अपार ॥४६॥
अनुक्रमि देस मंडावतां, आव्या 'जिनसिंह' राया ।
'राजनगर' 'जिनचंद' ने, आगइ सुगरवर पाया ॥५०॥
पांच समिती तीन गुप्ति जे, पालइ प्रवचन मात ।
छ जीवनी रक्षा करइ न करइ पर नी ताति ॥५१॥
सामाचारि सूत्र भरय, जाणइ सरव प्रकार ।
'सत्तावीस' गुणे करी, सोहइ 'सामछ' सार ॥५२॥
तप बहु मांडलि तणा वड दिक्षा तिहां दीघ ।
'श्रीजिनचंद्र सूरि' सहइथइ 'सिद्धसेन' मुनि कीध ॥५३॥
बहुत उपधान ऊजवइ, आगम ना वलि जोग ।
'छ मासी' 'विक्रमपुरइ' सरिया सफल संयोग ॥५४॥
सुगुर मयाथइ थाइ मुं उत्तम वचन विलास ।
युगप्रधान बहु हित धरइ, पहुंचइ वंछित आस ॥५५॥

चउपइ —पमणइ शास्त्र सिद्धांत विचार मुनिवर'सिद्धसेन मिरदार
गुरु नउ विनय साचवइ सकइ, 'सिद्धसेन' विद्या गुण सिकइ ॥५६॥
'अंग इग्यारह' 'बार उपंग', 'पयन्ना-दस भण्यइ मन चंग ।
'छ छेद' मन्य मूल सूत्रइ 'च्यारि',
'नन्दी , अनइ 'अनुयोगदुआर' ॥५७॥

'बउवइ' विद्या तणउ निहाण, सद्गुरु उत्तम करइ बखाण ।
अवसर मउ आण निम गुरु तणइ से मानइ भाण ॥५८॥
सामावंत महि परखी ठीह, सोइइ गुरु पासइ निसदीह ।
इस विध अतीपरम मउ घणी, तप जप संयम करणा घणी ॥५ ॥
यात्र करी 'सेत्रुजा' तणी सावइ जिनसिंह सूरि दिनमणी ।
संभवी 'आसकरण' विख्यात, संघ करावी आरिम जात ॥६०॥
'कमात' नइ 'अमदावाद', 'पाटण' मांहि घणउ जसवाद ।
'बरडो' वंदया 'जिनदत्तसूरि', मेल्या पातक जायइ दूर ॥६१॥
इणि अनुक्रमि 'जिनसिंह सूरि', 'सीरोहीयइ' गुरु सपउ पहूरि ।
करिम पइसारो वंदइ संघ, राजा मान दियइ 'राजसिंह' ॥६२॥
'जाडउरइ' आवइ गच्छराज, बाजित्र बाजइ बहुत दिवाज ।
श्रीसंघ मुं वंदइ कामिनी, रूपइ जीति सुर भामिनी ॥६३॥
'खेडप नइ 'त्र्' वाडा इव 'भेषाणी' भेटया बहु देव ।
अनुक्रमि मन मइ धरिम उल्लासि, आव्या 'बीकानेर' चउमासि ॥६४॥
'थापमल पइसारो करइ, नीसाणइ अंबर थरहरइ ।
कोथा नेजा पोषि पागार बसविई आर्या श्रीगणधार ॥६५॥
आनन्दइ चउमासउ करी(इ) आया मेवडा' बहु दिल घरी ।
वैशाखइ श्रीशाहि सप्रेम 'मेडता' आया कुसल खेम ॥६६॥

राग — वैराडी

दूहा — तिणि अवसर 'जिनसिंह' नइ, परवसि थयउ सरीर ।
दैवगतइ छूटा नहीं, पुरुष बडा बहु मीर ॥६७॥

अवसर जाणी तिण समइ, श्रीसंघ कहइ विचारि ।
बोलइ सद्गुरु चित धरी, वड वसतौ सिरदार ॥६८॥
अणसण आराधन करी पहुंता गुरु सुर लाग ।
वाजित्र वाजइ तिहां घणा, मांडवी तणइ संजोगि ॥६९॥
सोग निवारी थापीया, सबर महुरत कीध ।
भट्टारक गुरु 'राजसी', 'सामल' आचारज कीध ।७०
'मालकरण' 'अमीपाल' वलि, 'कपूरचन्द' सुविलास ।
पद ठवणउ करइ रंग सुं, 'मरधमदास' 'सूरदास' ।।७१

राग— आसावरी

तब सिणगाया पोळि पगारा, तंबू तेषा तणीयो ।
मस्तक ऊपरि मोती झुबइ,वहींवइ भारउ तणीयो ।।
तेह तणइ बहुला बहु लोग भूमि माग नहिं माग ।
एक एकनइ पेल्हइ मेल्हइ तिल पडिवा नहीं लाग ।।७२।
सबको मांहि मंडाइ तिहां कणि वाजित्र विविध प्रकार ।
सूरी मंत्र आप्या तिण अवसरि, हेमसूरि गणधार।
श्री 'जिनराज सूरिस्वर मामइ साधु तणा सिणगार ।
वाळपणइ सूरि पद आपी मुंम्यउ गच्छ मउ भार ।। ७३ ।
तेहिज मांहि आचारिज पदवी 'श्री जिनराज' समोपइ ।
मन सुदइ सूरि मंत्र ज देइ 'जिनसागर सूरि' थापइ ।
मंजि सिणगारने कामिगी आवइ भरि भरि मोतिन थाल ।।
सौवन फूलि वधावइ सद्गुरु, गावइ गीत रसाल ।। ७४ ।

संवत 'सोल बहुत्तरि' वरसइ, 'फागुण सुदि 'सनिवार'।
सुभ वेला सुभ महूरत योगइ, 'सातमि' दिवस उदार ॥
संघ सहु हरखित थइ वंदइ, थइ बहुलउ बहुमान।
'मासकरण' संघवी तिण अवसरि, आपइ वांछित दान ॥७५॥
भट्टारक 'जिनराजसूरि', वर्त्तमान गणधार।
पाटइ 'जिनसागर' भलइ, आचारिज अधिकार ॥७६॥

ढाल —तेहिज

विहिरिय 'राणपुरइ' 'वरकाणइ', 'विमिरि' मेल्या पास।
'नोइल' 'घंघाणी' यात्र करीनइ, 'मेडतइ' करिय चउमास।
तिहांथी उच्छव कीघ 'जेसाणइ', 'भगसाली' 'थीवराज'।
'राजा 'कल्याण' सुं थो संघ वंदइ सीधा सगला काज ॥७७॥
अमृत वाणि सुणइ तिहां श्रीसंघ पंच्या इग्यारइ अंग।
मिश्री सहित रुपइया साइद, साह 'कुसला' मन रंग ॥
सतुपुर्ष पाउधारइ सद्गुरु, श्रोसंघ सामइ आवइ।
माहमोवड़ा कराइ साह 'मादइ', 'श्रीमल' सुन चित्त भावइ ॥७८॥
तिहांथी विहार करि जिनसागर' आचारज हितकार।
'फलवद्धीयइ' आवइ ततखिण, मांडइ बहुय प्रकार ॥
उच्छव घरिय तिहां कनि वांदइ श्रीसंघ थइ बहुमान।
पदमारइ करी श्रावक 'मानइ' दीघइ पापक दान ॥७९॥
श्रीगरतर गच्छ मोड़ गइयइ तिहांथी करिय विहार।
'कारणुंमइ' आया बहु रंगइ संघ वंदइ गणधार ॥

वीकानयर वंदीइ पहुंचइ, 'श्रीजिनसागर सूरि'।

'पासणीए' करयुं पइसारउ, रंगइ बहुत पडूरि ॥८०॥

राग —सामेरी

पासाणी बहु वित वावइ, पइसारउ सामही आवइ।

'मोल्हइ मिणयारे' मारी, सिरि(श्री?) कलश धरि बहु नारी ॥८१॥

सिरि 'भागचंद' सुत आवउ 'मणुहरदास' निज दावइ।

वलि संघ सहगुरु वंदइ, श्रीखरतरगच्छ चिरनंदइ ॥८२॥

तिहां वाजइ ढोल नीसाण, सरव सालतउ मंडाण।

बहु घटवि वसनइ आयां श्रीसंघ तणइ मनिभाया ॥८३॥

सुख मिली निर्उछण कीजइ निज जन्म तणउ फल लीजइ।

तंबोल सखी पर दीधा, मन वंछित कारिज सीधा ॥८४॥

राग —धन्याश्री

'विक्रमपुर' थी संचरी ए 'सर मांहि करिय चउमास।

दिन दिन रंग वधामणाए पुरइ मननीआस ॥मां०॥

वधावउ सहगुरु ए,'जिनसागरसूरि वधावइ।मा०।खरतरगच्छपडूर।व०।

तिहां थी रंगइ आवियाए 'जालपसर' सुखवास।व०।

चउपउ सुगुरु वांदिमाए, मंत्री 'भगरंग दास' ॥८५॥व०॥

विचरिय तिहां थी आवसुं ए टोडवासउ वंदावि ॥ व० ॥

'सुरपुर' संघ सुहामणउ, मेटइ बहुमइ मावि। व० ॥ ८६ ॥

माउगुरइ महिमा घइ ए, छोपइ सप्प विनोद ॥ व० ॥

श्री संघ वंदइ चाह सुं सहगमि मयण पेमि ॥ व० ॥ ८७ ॥

यर 'बीलाडइ' चित धरी य चतुर करइ चउमास ॥ व ॥
उच्छव करइ 'कटारिया' य, पासी पारण खास ॥ व ॥ ८८ ॥
अनुक्रमि सद्‌गुरु पांगुरइ य, 'मेदनीव्टइ' निहाली ॥ व ॥
'रायमल' सुत रूगि परिगहइय, 'गोखरू' 'अमीपाल' ॥८६॥व॥
भिव गेहनइ अति मझत्य चढ यलती 'नेतसीह' ॥ व० ॥
बहु परिवारइ दीपताय, मात्रीजइ 'राजसीह' ॥ व० ॥ ६० ॥
नयली नांदइ मांडयौ य, व्रत उचार सबर ॥ व ॥
रूपइय लहण करिय, तंबोलइ नारेर ॥ व ॥ ६१ ॥
रंगायत चित चावरइ य, 'सीरीमाल' 'वीरदास' ॥ व० ॥
'मादण' 'तेजा' रंगसुं य, 'रीहड' 'दुरजा' खास ॥ व ॥ ६२ ॥
जुंवर गुरु सोहामणउ य, मानइ कीजइ सब ॥ व ॥
तिहाथी विहरी अनुक्रमि य मंधा 'राणपुर' देव ॥ व० ॥ ६३ ॥
'कुंभलमेरइ' जिन थुणी य 'मेवाडइ' गुणगान ॥ व० ॥
'उदयपुरा' नउ राणीयउ य, राणउ 'करण' दइ मान ॥६४॥व ॥
'अमीचंद' सुत परगडाय रामचंद 'रघुनाथ' ॥ व ॥
चित धरि वंदइ प्रहसमइय अजाइवद' सुत साथि ॥६५॥व ॥
मापु विहारइ पग भरइ य, 'सोनगिरइ' अहिठाण ॥ व ॥
श्री संघ उच्छव नित करइ य अवसर मउ जे जाण ॥६६॥व ॥
भावधार संघ बहु मिली य, मामइ हे हाथिसाह ॥ व ॥
चउमासइ गुरु राखीयाय, जिनसागर' गजगाह ॥ ६७ ॥ व० ॥
वर्धमान गच्छराजजो य, जिनसागर सूरि' सुखकार ॥व ॥
श्री जिनसागर चिरजयउ आचारिज पद धार ॥६८॥व ॥

पुण्यवर खरतर गच्छ धणीय, 'जिनचंद सूरि' गुरुराय ॥व०॥
ओस सिरोमणी मतिमत्साए, 'धरमनिधान' उवझाय ॥९९॥व०॥
रास रचीस मति रंगसु ए 'धरमकीरति' गुण गाइ ॥ व० ॥
संवत 'सोलइक्यासीमइए, 'पोस वदि' 'पंचमि माइ ॥१००॥
श्री जिनसागरसूरि गुरु ए, रास रच्यु सुखकंद ॥ व० ॥
सुणतां भवनिय संपजइ ए, गातां परमाणंद ॥ १०१ ॥ व० ॥
तां प्रतपउ गुरु महियलइ, जां गयणइ दिनईस ॥ व० ॥
'धरमकीरति'' गणि इम कहइ ए, पूर मनोरथ जगीस ॥१०२॥व०

इति भट्टारक जिनसागर सूरिणाम् रास
(बीकानेर स्टेट लायब्रेरीमें पत्र ४)

श्रीजिनसागर सूरि सवैया

पुरा देस मरुधरा सहर 'बीकानर' मंडाण
'साहिब' हरे सिर इम वसइ 'वच्छ' वरदाइ ।
'मृगा' मात मोहदिम्म, सुपन सूचित सुत सुन्दर
आठ वरस अधिकार कह्या मन्माण कुम्पोपर ।
वैराग जोग मां रमगइ स्वामी भली भाइ छत्रे,
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इमरे आगर ॥१॥
पुण्यधान जिनसिंह वस पापडा विसरउ,
मानक महूवर सादि छीप धमच्छम अम्मरइ ।
सद इय तैन गुरु पासि सुगुरु करि माना मंगल
अमरगरइ उमति आप धनरागि आगइ ॥

संभयो साधु मारग सरस, पूरण गुण पूरण मले,
सूरीस श्री 'जिनसागर' सुगुरु, उपम इसड़े आरले ॥२॥
विनय विवेक विचार वाणि सरसती विराजइ,
'किया चकद निधान, सुजस जगि बाजा बाजइ।
विषम वाणि विसवाद, विसयरस अंगि न वाधइ
वखतवंत वर विबुध वान दिन प्रति वाधइ ॥
वाजणी वाट वागी विपइ परि परि पूगउ पारखे।
सूरीस श्री जिनसागर' सुगुरु, उपम इसड़े आरखे ॥३॥
उछव रंग बधाइ विवाहत, सुंदर मंगल गीत सुहावत
मोतीन थाल विसाल भरि भरि भामिनी भावसु आपि वधावत।
गच्छ नायक सायक समल गुणी, गुण गावत बंछित ते फल पावत।
श्री 'जिनसागरसूरि' बड़रागर, नागर रंगि देखन गुरुआवत ॥४॥
प्रगट सोभाग्य भाग विकट बइराग माग,
राग हु कउ त्याग दोप दूरि हीर हीयउ हइ।
तनु तुम दृढ़धार अमृत ज्ञान भण्डार
कठिन क्रिया प्रकार काम शु बाहीयउइ।
खमित समाट नूर तपति प्रताप मूर
'सागर सुरिंद गुरु गौतम कहायउ इइ ॥५॥
सवाया छंद (उपरोक्त बिकानेर स्टेट लायब्रेरी की
प्रति में तत्कालीन लि०)

——×✱×——

ढाल १ (पुरन्दरनी चौपाइनी)

'मरुधर' देसि मझार 'मेड़तो' सहर भलोरी ।
'आसकरण' 'ओसवाल', 'चोपड़ा' वंस तिलोरी ॥ १ ॥
पद ठवणो करि पूज्य अवसर एह लह्यो री ।
खरचे द्रव्य अनेक, सुकृत ठाम सही री ॥ २ ॥
सूरि मंत्र लह्यो शुद्ध, सद्गुरु तेणि समै री ।
श्री 'जिनसागर सूरि' इन्द्रिय पांच दमे री ॥ ३ ॥
मोटो साधु महन्त, करणी कठिन करे री ।
श्री 'जिनसिंह' के पाट, खरतर गच्छ खरेरी ॥ ४ ॥
पालि पंच आचार, तारण तरण तरी री ।
५च सुमति प्रतिपाल, तप संयम की खरी री ॥ ५ ॥
पृथिवी करिय पवित्र साथि साधु भला री ।
अप्रतिबद्ध विहार दिन दिन अधिक कला री ॥ ६ ॥
'चौरासी गच्छ' माहि जाकी शोभ भली री ।
चतुर्विध संघ सनूर, संपद गच्छ मिली री ॥ ७ ॥

ढाल २ (मनड़ो मान्यो रे गौड़ी पासजी रे)

मनडु र मोह्यु माहरू पूजजी रे श्री जिनसागर सूरि' ।
बड़ भागी भट्टारक ए भला जी, दिन दिन गच्छ पडूरि ॥ १ ॥
सरस गीतारथ साधु भला भलाजी, मानइ मानइ पूज्य नी आण ।
समयसुन्दर जो पाठक परगड़ाजी पाठक 'पुण्य प्रधान' रे ॥ २ ॥

'जिनचन्द्र सूरि ना' शिष्य माने सहुजी, वडा वडा श्रावक तेम ।
पत्नवंत पीथा पूज्य तणइ पक्षइजी, बहुमानी गुरु एम ॥ ३ ॥म०
संघ व्यापकन्ठ 'अहमदाबाद' नो जी, 'बीकानेर' विशेष ।
'पाटण' मइ 'खंभायत' श्रावक दीपताजी,'मुहताणी'राखी रेख॥४॥म०
'जेसलमेरी' श्रावक पूज्य ना परगड़ाजी संघनायक 'संखवाल' ।
'मड़ता मई 'गोलवच्छा' गड़ गहैजी 'आगरा'में 'ओसवाल' ॥५॥म०
'लोधवा मई संघवी 'कन्गरिया' जी 'जइतारणि 'जालोर' ।
'पचियाख'पाल्हणपुर''मुल्ज''सूरत'मई जी,'दिल्ली' नइ 'लाहोर' ।६॥म०
'लूणकरणसर' 'रव' 'मरोट' मई जी नगर 'वन' माँहि तेम ।
'डरा' में सामग्री भावती जी 'फलउधी 'पोकरण' एम॥७॥ म०
'सागरसूरि' ना श्रावक सहु सुखीजी अधिकारी 'ओसवाल' ।
देश प्रदेश श्रावक दीपताजी भर संयम भूपाल ॥ ८ ॥ म०

ढाल ३ (फागुआनी)

'करमसी' शाह संवत्सरी पोषिनै 'अहमद विह मति सुजस लेवै ।
सुपुत्र 'आसचन्द'इर वरस संवत्सरी,पालि ने संघमुं श्रीफल दवै॥१॥
धन्य हो धन्य 'सागरइ सूरिन्द' गुरु, जेहनो गच्छ दीपै सवायो ।
बड़ बड़ा श्रावक परगड़ा नवरंग़े,पूज्य नो सुयश त्रिहुंलोक गायो॥२॥
शाह 'आसचन्द नी, धन्य बड़ी भावड़ी,जे विद्यमान 'धनाई' कहीजइ ।
'पूठाया' उपरा रूडना 'पीठणी , मरुर समरावितइ काम कीजइ॥३॥
कुसुम 'कपूर दे' जेहनो जाण(, सुपुत्र 'धर्मसेन' मी जद मात्ता ।
खरतरवइ आगाम गच्छ ना काम नइ,धर्म ना रागिया अधिक दाता॥४॥

साह'शान्तिदास'सहोदर कपूरचन्द सुं, पेखिया हेम ना घड़ मापे।
'सहस दोय रूपिया पाच सत' मागला, खरचिने सुजस निज सुथिर थापै ॥५॥

मास 'मासखमण' लंड इक पीरुपी करीय उपासरइ(में)सुजस लीधा।
वरस ना वरस आसाढ़ चोमास ना,पोसीता पोखिया मोछ कीधा॥६॥
साह 'मनजी' तणो कुटुंब अति दीपतो जिहुं वंशे वंद नामो चढायो।
साह 'वच्छराज' 'हाथी' वरो 'हाथियो, जेठमल 'सोमजी' तिम सवायो ॥७॥

धरम करणी करै'शाह हाथो'अधिक,राम'नन्दी'ओसनो विरुद राखै।
जीव प्रतिपाल उपगार सहु ने करै सुपुत्र'पनजी'भल सुजस दाखै॥८॥
'मूलजी संघजी' पुत्र 'वीरजी 'परास सोनपाल 'सूरजी' वखाणो।
पालीयां'पोस नइ च्यारि' सीमाडिने पुण्य नो वाहद जे कमाणो ॥९॥
'परीख''वन्नमाण''आतु सदा दीपता, अमरसी'शाह मिरनाम जाणो।
'संघवी 'कचरमल परीख' अरज अधिक, बाउडा 'देवकर्ण' तिम बखाणो ॥ १० ॥

साह 'गुणराजना' सुपुत्र अति सखरा 'रायचन्द गुलालचन्द' साह दाखो।
एम ओसेष उत्पत्ति'राजनगर'नो मड भल श्रावक एम जाणो ॥११॥
तेम 'रतनाग्नी संघ श्रावक वड़ो 'मेंदमाजी 'वधू' सुतन कहीई।
वड़ वड़ी धरम करणी घणी ज करी,अमन मोजां'भगवनदास'लहिए॥१२॥

दोहा—श्री 'जिनसागरसूरि' नो वधपरूप परिवार।
चेला गीतारथ सहु पालइ पंच आचार॥ १ ॥

सुगुरु जो धन्य-धन्य तुम अवतार,

ए माणस भव सु सार ॥ आंकणी ॥

आनुपूरवी पदवी रे पयसम्यो पूरव रोग ।

श्री संघ 'अहमदावाद' नो रे, गीतारथ संयोग ॥२॥

'मास्तातीज' नइ चाइङि रे, शिष्यादिक नइ सार ।

मीलामणि सद्गुरु दि(य)ई र, गुरु गच्छ सुं व्यवहार ॥३॥

चारित फेरी ऊचरि र, गच्छ भार सहु छोड़ि ।

उत्तम मारग आदरि रे, अशुभ कर्म दल तोड़ि ॥ ४ ॥

'सुदि आठम वैसाख नो र, अणसण नो उच्चार ।

श्रीसंघ नी साखि करइ रे,त्रिविधि त्रिविध विविहार ॥५॥

पास गीतारथ मति रे, श्री 'रामसोम उवझाय ।

'राजसार'पाठक भला श्री, 'सुमतिजी गणि नी सहाय ॥६॥

'दयाकुशल वाचक वलि रे, 'धर्ममन्दिर' मुनि एम ।

समयनिधान' वाचक वह र 'ज्ञानधर्म' मुनि तेम ॥ ७ ॥

"सुमतिवल्लभ सावधान थ्रु रे, आठ पुहर सीम तेम ।

दाह 'हाथी धर्म हाथियो र निजरावि गुरु एम ॥ ८ ॥

ढाल (८) चिणआरानी

मोरा सद्गुरुजो तुम्हे करज्यो शरणा च्यार । सद्गुरु जी करज्यो०

अरिहन्त सिद्ध सुसाधुनो मो० केवलि भाषित धर्म

ए फल नरभव आप नो ॥ १ ॥ मो०

जीव 'चुरासी' लख, त्रिकरण शुद्ध खमा वज्यो । मो० ।

पाप अढारह थान, परिहरि अरिहन्त ध्यावज्यो ॥ २ ॥ मो०

परिहरि सगला दोष बितालीस आहार ना । मो०
जिन धर्म पक्ष आधार, टालि दुःख संसार ना ॥ ३ ॥ मो०
ए संसार असार, स्वारथ ना सहुको सगो । मो० ।
अथिर कुटुम्ब परिवार धर्म जागरिया शुभ जगो ॥ ४ ॥ मो०
अथिर छत्र पुत्र कलत्र अथिर मात्र घर परिग्रहो । मो० ।
अथिर विभव अधिकार अथिर काया तिमि ए कही ॥५॥ मो०
तुम्हें भावज्यो भावन बार मन समाधि मांहि राखज्यो । मो० ।
अथिर मान नइ दान, अथिर शिष्यादिक नइ माखज्यो ॥ ६ ॥ मो०
जीवन हाथ मई मात्र राखी को न सकइ सही । मो० ।
जेहवो संध्या वान, तहवी संपद ए कही ॥ ७ ॥ मो०
एकलो आवइ जीव, जाइ एकलो प्राणियो । मो० ।
पुण्य पाप दोइ साथ भगवन्त एम वखाणियो ॥ ८ ॥ मो०
बाल मरण करी जीव ठामि ठामि हुओ दुखी ।मो०।
पंडित मरण ए जाणि जिण थी जीव हुवइ सुखी ॥९॥मो०
इम भावना एकांत भाव, अरिहन्त धर्म आराधना ।मो०।
पुंहता मरण मझारि आतम कारिज साधना ॥१०॥मो०॥

दोहा —'सतर(इ) सइ बाणोंम मई मास 'जेठ' वदि तीज ।
'सुगुरु सागरसूरि' जी, मरण मा पाम्या चीज ॥ १ ॥

ढाल ६—*प्रथम जिनो मी राग र ताल पहनी ।*

अवसर आणीजा सहीरे, माइ हायी सर्व जाण ।मर पूजजी०।
महिमा मोटी इम करइ रे खास, पूज्य नगर निर्वाण ॥ १ ॥
पामइ रहि भिजराशिवार दिन 'इग्यारह' सोम । मै० ।
सुभ सबइ व्रत आदरी रे खास, मानो विधि ना नाम ॥२॥म०

चोवा चदन अरगजा रे सहगुरु तणइ सरीर । मे० ।
करि अरथा पहिराविया रे साळ, पांमरी पादू चीर ।।मे०।।३।।
देव विमान जिसो करो रे, मांडवी अति श्रीकार । मे० ।
बाजे गाजे वाजता रे साळ, करि नीहरण विचार ।।मे०।।४।।
बयरचि सूकडि अगर सुं रे छाळ, कस्तूरी घनसार । मे० ।
दहन दीइ घृत सींचता रे छाळ, श्री पूज्य नुं तिणवार ।।मे०।।५।।
जीव छुड़ावी (वे?)मुगति सुं रे श्री संघ मेळो होइ । मे० ।
गायां' 'पाडा' 'बाकरी' र छाळ रुपइया सत 'दोइ' ।।मे०।।६।।
'शान्तिनाथ' नइ देहरइ र छाळ, थांठी देव विशेष । मे० ।
वचन सांमळि वीतराग ना र छाळ, मूंकी सोग अशेष ।।मे०।।७।।

(ढाल ८) धन्याश्री—कुंअर भलइ आविया एहनी ।

श्री जिनसागर सूरि' श्री प, पाटि प्रभाकर तेम ।
सुगुरु भलो गाइयइ, श्री'जिनधर्म सुरीसरु, जयवंता जग एम ।।१।।
देस प्रदेस विहरता ए भविक जीव प्रतिबोह । स० ।
खरतर गच्छ जइनो ए, महियल मोटो मोह ।। स० ।। २ ।।
गुण गाता सगुरु तणा ए, पूग्यइ मन नी खांति । स० ।
मन वंछित सहु ना फलि ए भांजि मन नी भ्रांति ।। स० ।। ३ ।।
संवत 'सतर बोमोत्तरइ ए 'सुमतिवल्लभ ए रास । स० ।
'भावनगरि पुनम दिनि ए कीधो मनइ उल्लास ।। स ।। ४ ।।
श्री जिनधर्म्म सुरीन्द्र नो ए मांथि छै शुभ हाथ । स ।
'सुमतिवल्लभ मुनि इम कहइ ए, 'सुमतिसमुद्र शिष्य साथ ।स०।५।

।। इति श्रीनिर्वाणरास संपूर्ण ।।

(हमारे संग्रह में, तत्कालीन लि०)

श्री जिनसागरसूरि अष्टकम्

(१)

श्री मज्जसलमेरुदुर्ग नगरे, श्री विक्रमे गुर्जरे ।
यद्वाया मदनेर मेदिनितटे श्री मरुपाटे स्फुटम् ॥
श्री आगाक्षुर च योधनगर, श्री नागपुर्यां पुन ।
श्रीमल्लमपुरे च श्रीरमपुरे श्री सत्यपुर्यामपि ॥१॥
मुल्तान पुरं मरोट नगर, दराउरे, पुगले ।
श्री लच्च किराड़ार सिद्धनगरे, श्रीगोटके संकले ॥
श्री लाहोरपुरे महाजन रिणी श्री आगराख्ये पुरे ।
सांगानेरपुरे सुपर्व सरसि, श्री मालपुर्यां पुन ॥२॥
श्री मल्पत्तन नाम्नि राजनगर श्री स्थंभतार्थे तथा ।
द्वीपे श्री भृगुकच्छ वृद्धनगरे, सौराष्ट्रके सर्वत ।
श्री बाराणपुरे च राधनपुरे श्री गूर्जरे मालवे ।
.. .. ॥३॥
सर्वत्र प्रसरी मरीचि सदृशं सौभाग्यमाबाल्यत ।
वैराग्यं विमला मति सुमगता भाग्याधिकत्वं मृदम् ।
नैपुण्यं च कलाकला सुजनता येषां यशोवासता ।
सूरि श्री जिनसागरा विजयिनो भूयासुरते चिरम् ॥४॥
आचार्या सन्तसदन सति शतशो गच्छेषु नाम्नापरम् ।
सर्वे स्वाचार्य पदार्थयुग् गुणवर, मौक प्रतापाकर ॥

भव्यानां भव सागर प्रतरणे, पोतायमानो भुवि ।
श्री मच्छ्री जिनसागर: सुखकर:, सर्वत्र शोभा कर: ॥५॥
सौम्यत्वो हिम दीधि तो सुर गुरो, बुद्धि र्धरायां क्षमा ।
तेज भा स्करतो परापकृति धीः, श्री विक्रमे भूपतौ ॥
सिद्धि गोरखनाथ योगिनि पटु,र्लाभश्च लम्बोदरे ।
संत्येवं विविधाश्रया गुण गणा सर्वेमिता त्वां प्रभो ॥६॥
श्री बोहित्य कुलांबुधि प्रविकसत्पाक्षय रोचि प्रभा ।
भास्वन्मातृ मृगांसु कुक्षि सरसि, श्री राजहंसोपमा ॥
श्री मद्विक्रम वासि विश्व विदिता, श्री वस्तराजां गजा ।
संतु श्री जिनसागरा, खरतर गच्छे चिरंजीविन: ॥७॥
इत्थं काव्य चतुष्क प्रवरकं, पुण्यपुर प्राभृतम् ।
विज्ञप्तं समयादिसुन्दर गणिर्भक्त्या विपत्तेसुसम् ॥
पुण्यस्तौ मितम प्रताप तपनो देदीप्यतां सत्वर ।
यूयं पूरयत स्व भक्त यतिनां, क्षीप्रं मनोवांछितम् ॥ ८ ॥

(बिकानेर स्टेट लायब्रेरी)

॥ जिनसागरसूरि अवदात गीत ॥

(१)

पूरव पच्छिम पूछीयउ रे सामिणि आप समाचरे। जोमीड़ा।
खालो टीपणा देखिनै, मांहि छगन उपाय रे॥ १॥ जो०
'श्रीजिनसागरसूरिजी' रे, आज काल किण गाम रे। जो०।
मो मन चांदण उमह्यो रे, सुणि अवदात नइ नाम रे। जो०।
श्रीजिनसागरसूरिजी रे जो०। आ०।
'श्रीजिनकुशल पटोदयउ रे छो सुपन दिखाड्यो माय रे। जो०
जन्म थकी यश विस्तर्यो रे निकलंक थाउ नइ थाप रे।२। जो०
राउल 'सोम मस्मरउ रे हो निरागी गुरु सुर नूर। जो०।
कमर चन्दन चरची मइ रे, पामिमि फरची पहूर रे।३। जो०
ग्रम दिखाड्यो अम्बिका रे छो श्री जिनशासन देव र। जो०
युगप्रधान 'जिनचन्द्रजी' रे आ करइ कृपा नित मेव रे।४। जो०
मन मान्या पंडित कम्या रे पूज्य पधाया आप रे। जो०।
दर्शनम्दन करइ सबदा र छो बाधउ अधिक प्रताप र।५। जो०

(२)

गाम नगर पुर विचरता पूजजी, 'श्रीजिनसागरसूरि'।
कठिन क्रिया गुरु आदरी पूजजो पहुँचि सुजस पडूरि॥ १॥
पूजजी पधारउ मूरजी मेड़तइ रे, श्रावक अति अविवेक।
श्रावक पिगारइ नित प्रति पाए सुं बावद आस अनेक।
श्रीरूप श्रीसंघ बांदी हा, दरसिन चाहइ। आ

खरतर गच्छ शोभा दीयउ, पूजजी साहिब वरदान ।
साहिब 'सुकुलकल्याणजी,' पूजजी पग लाग थइ मान ॥ २ ॥पू०॥
रूप कला पण्डित कलम, पू० वचन कला गुण वेख ।
राम रांणी मानइ घणु, पूजजी थोइ माहे विसेष ॥ ३ ॥पू०॥
कामण मोहन नबि करो पू० लोक सहु वसि थाय ।
ए परमारथ प्रीछवउ पू० पूरव पुन्य पसाय ॥ ४ ॥पू०॥
चित चाहतां आविया, पू० श्रीसंघ मानी वचन ।
रंग महोच्छव दिन प्रतइ 'हरषनन्दन' कहइ धन ॥ ५ ॥पू०॥

(४)

॥ जाति फूलडानी ॥

श्री संघ आज वधावजी दिन आज अधिक सुरंगो रे ।
आचारज पद पामियउ, 'जिनसागरसूरि' सुचंगो रे ॥ १ ॥श्री०॥
खरतरगच्छ उन्नति थइ दिन कीधा अनुपम कामो रे ।
दुरजण मुहडा सामला, दिन साजन वाधी मामो रे ॥२॥श्री ॥
धन पिता 'वच्छराज' जो 'मृगा' पिण माता धनो रे ।
वंश धन 'बोहिथरा' जिहां उत्तम पुत्र रतनो रे ॥ ३ ॥ श्री०
वाजा वाज्या रूयड़ा वलि दान मान सन्मानो ।
सूहव गावइ सोहला, जिहां याचक पामइ दानो रे ॥ ४ ॥ श्री०
नयण सलूणा पूजजी दिन हुं बलिहारी जामइ रे ।
मोहनगारा मानवी दिन'हरषनन्दन'सुख पामइ रे ॥ ५ ॥ श्री०

(५)

चतुर मानस चित्त उल्लसइ रे दखी पूज्य सरूप रे। हो पूज्यजी॥
मानवीय गुण माटका रे ऊपजइ भाव अनूप रे॥१॥
ए परमारथ प्रीछज्यो रे।

मान सरोवर अनुसार, राजहंस सवइ तीर रे।
छत्रगागर मोटउ घणुं रे पंखी न चाखइ नीर रे॥२॥

चंदा केर चांदुणे, उदुको बासइ पास रे।
सूर (सूय?) तपइ जो आकरो, जावइ सहुको नासि रे॥३॥

ऊंचो ऊंबो अति घणउ, सरखउ पिंड खजूर रे।
नान्ही केलि कहावनो छाया फल भरपूर रे॥४॥

मोटा मयगल मद झरइ, विलसइ ठा गर (ठाम?) राम।
सींहणि केरा छावडा गाजइ नाहा बन मांहि॥५॥

मान्हा मोटा कर्मु नहीं गुण अवगुण वंषाण।
जिणसागर सूरि चिर जयउ रे हर्षनन्दन गुण जाण॥६॥

श्री करमसी संथारा गीतम् ।

सदगुरु चरण नमी करी, गाइसु भाअरषिराइ ।
करमसीह' करणी करो, सांभलीयइ चितु लाइ ॥
चितु लाइ संभलीयइ चरित, तिम भाअस्युं चारित लियउ ।
धन वदा 'कूकड चोपड़ा' नउ सुयश प्रगट जिणइ कियउ ॥
तप करी काया प्रथम शोधी विषय षट् रस परिहरी ।
'करमसी' सुपरि कियउ संथारउ, सुगुरु चरण नमी करी ॥१॥
रीहड़ गुरु कुल वास मी मनि आणी संवेग ।
जाणी काया कारमी, करि निश्चल मन एक ॥
मन एक निश्चल करी आपइ, अन्न सर्मुलइ परिहरीउ ।
आहार त्रिविध त्रिविध संयोगइ गुरु मुखइ अणसण वरीउ ॥
आराधना करि संघ खामण, धरी विविध उल्हास नी ।
करमसी' तिणि विधि कियउ संथारउ रीति गुरुकुल-वास नी ॥२॥
चउदइ संथारइ तिणि परइ जिणि विधि पूरव साधु ।
करम सोसिवा सिंह हुवउ, भलइ 'करमसी' साधु ॥
करमसी साधु भलइ दीपायउ, गच्छ खरतर संघनइ ।
परभावना सम्मारि वरतो उच्छव होई दिन दिनइ ॥
सिद्धान्त गीतारथ सुभावइ, साधु बयावच करइ ।
धन कर्म करमट तिय रापाबइ, चउदइ संथारइ तिणि परइ ॥३॥

जन्म 'जेसाणइ' जेहनउ, 'बापा शाह' मल्हार ।
'बांपव्रवि' घरि धयउ 'ओसवंश' नउ सिणगार ॥
'ओसवंश' नउ सिणगार ए मुनि दुक्कर करणी जिणि करी ।
अन्नेक आसन मरण हुंती छुटउ अणसण उच्चरी ॥
'करमसी मुनि मन कीरयउ करतउ नेह माण्यउ देहनउ ।
मन मउन करइ अन्न जीरयइ, जन्म 'जेसाणइ' जेह नउ ॥ ४ ॥
जेहनी प्रशंसा सुर करइ, मानव कहो मात्र ।
साम मुनीश्वर इम कहइ धन धन एह सुपात्र ॥
धन एह पात्र सुसाधु सुन्दर, परतखि मुनि पंचम अरइ ।
धन जन्म जीवित आणि एहनउ परगवठी महिमा करइ ॥
मास की संलखण करि नइ, अधिक दिन बीस ऊपरइ ।
ए अमर मग मई हुमउ इणि परि, प्रशंसा सुर नर करइ ॥५॥
'बइमासइ संतोरस्यु 'सातमि वदि रववार ।
कियउ संथारउ करमसी कलि मई धन अणगार ॥
अणगार धन्ना शालिभद्र जिम तप अनेक जिण्यइ किया ।
'सइ गाडी मेख निवी आमिल' करी जिम अणसण लिया ॥
चारित्र पंचे बरस पाळी सुख्यासइ मोक्ष स्युं ।
मार्णद खरतर गच्छ बाल्यउ, बइमासइ संतोष स्युं ॥ ६ ॥

॥ इति गीतम् ॥

——*×*——

कवि ललितकीर्त्ति कृत

॥ श्री लब्धिकल्लोल सुगुरु गीतम् ॥

गुरु 'लब्धिकल्लोल' मुणिन्द जयउ, जाणे पूरब दिसि रवि उदयउ ।
मन चिन्तित कारिज सिद्धि थयउ दुःख दोहग दूरइं जाइ गयउ ॥
मोहन सब इम स्वामी चर वरसइ, भवियण लोयण देखण हरसइ ।
गच्छपति आदेशइं 'सुज' आया चउमास रह्या श्री संघ भाया ॥२॥
'काती वदि छट्ठि' अणसण लीधो मानव भव सफल जिणे कीधो ।
के परभव ना संबल बहुला पहुंता सुर सुवरस(?) सुगन वहिला ॥३॥
आवी सुरपति नरपति निरखइ 'मगसर वदि सातम' बहु हरखइ ।
पगला थाप्या चडतइ दिवसइ, निरखी तन वदन नयन विकसइ ॥४॥
थिर थान भले सुभ मंडं सोहइ, सुर नर किन्नर ना मन मोहइ ।
सद्गुरु परतिख परचा पूरइ, सहु संकट विकट विघन चूरइ ॥५॥
'श्रीमाली' कुल कैरव चंदा साह 'छाजड' 'आदिम' दे नंदा ।
वडमति धायक सुरनर चंदा प्रणमइ पद पंकज भर वृन्दा ॥६॥
श्री 'कीरतिरतन सूरीश' तणी शाखा मइ अद्भुत देव मणी ।
वाचक 'लब्धिकल्लोल' गणी दिन प्रति प्रणमउ जिम दिवस मणी ॥७॥
गणि 'विमलरंग' पाटइ छाजइ अभिनव दिनकर जिम जगि राजइ ।
जसु नामइ अखिप विघन भाजइ जसु अतिशय करि महियलि गाजइ ॥
मम सुंदर कीजइ गुरु सेवा अति मीठी दीठी जिम मेवा ।
निज गुरु पद सव करण देवा दिन प्रति वांछइ जिम गज-रेवा ॥८॥

तुम्ह दम देसन्तरि कांइ भमउ, गुरु सेव थकी दालिद्र गमउ।
इति मनोति कुनाति दमउ, धर बइठा सिवसमो पामि रमउ ॥१०॥
साइ 'पीमइ' 'हाथो' 'रायसिंघइ' 'मोहण' आवइ करि 'मुज' संपइ।
उधम करि सुंम तणइ रंगइ, थाप्या पूरब दिसि मन संगइ ॥११॥
निज सेवक नइ दरसण आपइ पगि पगि सानिध करि दुःख कापइ।
गाभि 'अभित कीर्ति' वडवइ दावइ, वंदइ गुरु चरण अधिक दावइ ॥१२॥

॥ इति गुरु गीतम् ॥

सुगुरु वंशावली

भट्टारक 'जिनभद्र' सूरउ, गच्छ नायक खरतर।
तसु पट्टि 'जिनचन्द्र' सूरि, तप तेज दिवाकर ॥
सद्गुरु श्री'जिनसमुद्र' तासु पट्टहि श्रुत सागर।
तसु पट्टहि सुविमल सूरि 'जिनहंस' सूरीस्वर ॥
अभिनवउ इन्द्र रूपइ अधिक, संजम रमणी सिर तिलउ।
गच्छपति तास पट्टहि गुहिर 'जिनमाणिक्य' महिमा निलउ ॥१॥
'पारिख' वंश प्रसिद्ध, सुगति जिनधर्म सु ओरी।
कबु तसु पट्टि 'कल्याणधीर' वाचक पम मोरी ॥
'भण्साली' कुल माण धीस, तसु पट्टहि सुरतरु।
वाचक श्री'कल्याणलाभ' वाणी अनुपम वरु।
पाठक 'कुशलधीर' तासु सिसु, कहइ एम वंशावली।
गुरु मगन शिष्य गुरु गुण चढ़े सख्या करउ रमतावली ॥२॥

(P O गुटका नं० १०)

॥ श्रीविमलकीर्त्ति गुरु गीतम् ॥

(१)

प्रह ऊठी नित प्रणमियइ हो, 'विमलकीर्ति' गणि चंद ।
तेज प्रताप दीपता हो प्रणमै सहु नर वृन्द ॥ १ ॥
भविक जन वंदियइ हो, नामे पाप पुलाय ॥ भ० ॥ आंकणी ॥
खरतरगच्छ मे दीपता हो, सब कला गुण जाण ।
जइनइ मुखि भारती बसइ हो जाणइ ज्ञान विज्ञान ॥ २ ॥ भ० ॥
हुबड़' गोत्रे परगड़ा हो 'श्रीचंद' साह मल्हार ।
मात 'गवरा' जनमिया हो, शुभ मूरति(महूरत) सुखकार ॥३॥भ०॥
संवत् 'सोलह चउप्पनइ' हो लीधी दीक्षा सार ।
'साह मुनि सातम' दिनइ हो, पालइ निरतिचार ॥ ४ ॥ भ० ॥
'साधुसुन्दर' पाठक भला हो, सकल कला प्रवीण ।
सईहथ दीक्षा जेण दीधी हो ध्यान दया गुण लीण ॥५॥भ०॥
चउरासी गच्छ सहरो हो, श्री 'जिनराज सुरिन्द' ।
वाचक पद सइ हथ दियो हो सब करइ मन वृन्द ॥६॥भ ॥
सोलइमइ बाणू समइ हो, श्री किरहोर' सुठाम ।
आराधन अणसण करी हो, पहुंता स्वर्ग सुधाम ॥ ७ ॥ भ ॥
विमलकीर्ति गुरु नाम थी हो, जायइ पातक दूर ।
विमलरत्न गुरु सानिधा हो, प्रगटै पुण्य पडूर ॥ ८ ॥ भ० ॥

(२)

राग—धन्याश्री ॥

वाचक 'विमलकीर्ति' गुरुराया, प्रणमो भविषण पाया रे।
दुरजन दुरित सवनिधि थाइ, सुगुरु संपत्ति कीत्ति सवाइ रे ॥ १॥वा०
संवत 'मोल चउपन्ना' वरसे चतुर चारित्र गहइ हरषइ से।
'साधुसुन्दर' तसु गुरु सुपसीना वाणी गंग सगु भीना रे ॥२॥स
तासु शिष्य गुरु कमल दिणन्दा भविक चकोर जिन चंदा रे।
मनुक्रम 'वाचक पदवी पाइ गुरु सौभाग्य सवाइ रे ॥३॥वा०॥
मूल थाट 'मुलताण' कहावइ, जिहां चउमासइ आवइ से।
दान पुण्य (जिहाँ) भविका थावइ, श्री संघ वधावइ रावइ रे॥४॥वा०॥
सिन्धु नगर 'कहिरोड' आया वर चौरासी गमाया रे।
अणसण पाली स्वर्ग सिधाया गीत ज्ञान बहु गाया रे ॥५॥वा०॥
शिष्य आणंद प्रणपइ रवि चंदा मा जगि मेरु ध्रू चंदा रे।
मार्गशविजय' इम गुण गावइ चतुरो दुवणि पावइ रे ॥६॥वा

साध्वी हेमसिद्धि कृत
॥ लावण्यसिद्धि पहुतणी गीतम् ॥

राग —सोरठ

दूहा—आदि जिणेसर पय नमी, समरी सरसति मात ।
गुण गाइसु गुरुणी तणा, त्रिभुवन मांहि विख्यात ॥ १ ॥

वेलि ढाल— जे त्रिभुवन माहि विख्यात, 'अकलसिद्धि' गुण अवदात
'वीकराज' मात की धीया, बहु रागइ चारित्र लीया ॥२॥

'गूजर दे' माता रतन्न, सहू लोक कहइ धन धन ।
सीलादिक गुण करि सोता, सहु दुनीया मांहि वदीता ॥३॥

जिण माया मोह निवार्या, भवियण भव-जलनिधि तार्या ।
सूधा पंच महाव्रत पालइ, त्रिणइ गुप्ति सदा रखवालइ ॥ ४ ॥

दूहा—अढार सहस सीलंगधर टालइ सगला दोस ।
सुन्दर संजम पालती, न करइ माया मोस ॥ ५ ॥

न करइ तिहां माया मोस वलि जिण घट नाण्यउ रोस ।
धन धन ते श्रावक श्रावी गुरुणी नइ प्रणमे आवी ॥ ६ ॥

मीठी जिहां अमीय समाणी सुन्दर गुरुणी नी वाणी ।
सुणि सुणि सूझइ भवि लोक, दिनकर देखणि जिम कोक ॥ ७ ॥

पहुतणी 'रतसिद्धि पाटइ, दिन प्रति जस कीरति खाटइ ।
मनशुद्ध गुरुणी मई भामइ, मनवंछित मनोरथ पामइ ॥८॥

दूहा—संग सपाग मद्द तणा, आणइ अरय विचार।
श्री 'लावण्यसिद्धि' पहुतणी किया गुण भंडार ॥९॥
सब विया गुण भंडार, महिमंडलि करइ विहार।
तप करि काया उजवाल, 'चन्दनबाला' इणि काले ॥१०॥
'जिनचंद्' सुगुरु आदेस, परमाण करइ सुविशेष।
अनुक्रमि 'विक्रमपुरि' आवी निज अंत समय परभावी ॥११॥
सवि जीवइ रासि खमावी उत्तम भावना मन भावी।
अणसण आदरियउ रंगइ, सुर व(प्र?)णमइ परमइ संगइ ॥१२॥
दूहा—समकित सूधउ पालती करती सरणा च्यारि।
इम परि संथारो कीयउ, माया मोह निवारि ॥ १३ ॥
माया मोह निवारी करइ संथ प्रभावन भारी।
बाजइ पंच शब्द तिहां भरी नीमाण पुरंदि नफेरी ॥१४॥
अक्खर आराधीय च्यारि, जिन शासन महिम वधारी।
जिनवर नो ध्यान धरंतो, नवकार विमइ समरंतो ॥ १५ ॥
दूहा—संवत 'मोख्हसय बासट्टि, पहुती सरग मंझारि।
जय जय रव सुर गण करइ, धन गुरणी अवतार ॥ १६ ॥
धन धन गुरणी अवतार भविषण जन नइ सुखकार।
थिर थान 'विक्रमपुरि' थुंभ देखि मनि धरइ अचंभ ॥१७॥
परता पूरण मन करो कल्पतरु श्री अधिकेरी।
इमसिद्धि' सगति गुण गावइ, ते सुख संपति निनु पावइ ॥१८॥
(तत्कालीन लि० हमार संग्रह में)

पद्मतणी हेमसिद्धि कृत

सोमसिद्धि(साध्वी)निर्वाण गीतम्।

राग —मल्हार

सरस वचन मुझ आपिज्यो, सारद करि सुपसायो रे।
सद्गुरुणी गुण गावसुं मन धरि अधिक उमाहो रे ॥१॥
सोभागिनि गुरुणी वंदीयइ, भाव धरी विशेषो रे ।सो० आंकणी।
गीतारथ गुरुणी आस्मीयइ, गुणवंती सुविचारो रे।
करुणा रस पूरी सदा, सब जन कुं सुखकारो रे ॥२॥सो०।
शीलइ सीता सारखी सामइ चंद्र समानो रे।
धम विचारइ तप करइ महिमा सहित प्रधानो रे ॥३॥सो०॥
'नाहर कुल मांहि चंदलउ, नरपाल' सु गुण ठामो रे।
तेहनी नारी आणियइ, शील करी अभिरामो रे ॥४॥सो ॥
'सिंघा दे' गुण आगली तास पुत्री गुणवंतो रे।
रूप करी अति शोभती संगारी नाम कहंतार ॥५॥सो ॥
यौवन वय जब आवीयउ, पिता मन मांहि चिंतइ रे।
'मांधरा' वंश दीपतउ, 'जेठ माह सुखदाइ रे ॥६॥ सा० ॥
तास पुत्र राजसी कहीजइ परणावइ मन रंगो रे।
वरस अग्यार हुआ जब(त?)लउ उपन्यउ सुणी मन चंगो रे ॥७॥सो ॥
वइराग उपनउ देहमइ, अनुमति मागी तेमा रे।
साधु हयमरा हम कहइ हुएया तुम मइ रांमा रे ॥ ८ ॥सो०॥

चारित्र पाळणां दोहिला, सुकुमाल छु तुम्ह देहो रे।
मन कहिज्यो करड तुम्ह तणी, मुझ चारित्र ऊपर नेहो रे ॥९॥सो०
उच्छव महोत्सव कीया घणा, दीक्षा लीधी सारो रे।
'साध्यसिद्धि' कन्हइ रहइ सूत्र भण ना स्यइ विचारो रे ॥१०॥सो०
'सोमसिद्धि' नाम जु थापीयउ, गुणे करी निधानो रे।
आपणइ पद थापो सही चारित्र पाळइ प्रधानो रे ॥११॥सो०॥
'सैत्रुंज प्रमुख यात्रा करी तिम वलि तीर्थ उदारो रे।
कीधी माकइ सत्रा सही, तप उपमा भारो रे ॥ १२ ॥सो०॥
'श्रावण वदि चउदसि' दीनइ, 'बृहस्पतिवार' प्रधानो रे।
अणसण लीधउ भावसु सब कह्या गुण निधानो रे ।१३॥सो०।
देव आनक पहुंता सही भी गुरुणी गुणवंतो रे।
गुरुणी आस्या पूरी करउ, मुझ मन घणो खंतो रे ॥१४॥सो०॥
विरह पामइ मेहहउ, तुम मु (लो?) प्राण आधारो रे।
तुम्ह बिना हुं क्युंकर रहुं, दुःखीया नुं आधारो रे ।१५॥सो ।
मोरा नइ वलि दादुरा बाबीहा नइ मेहो रे
चकवा चिंतवन रहइ चंदा ऊपरि नेहो रे ॥ १६ ॥ सो० ॥
दुःखीयां दुःख भांजीयइ तुम्ह बिना अवर न कोइ रे।
सहगुरुणी गुण गावीयइ चाहउ दिन दिन मोइ रे ॥ १७ ॥सो०॥
चंद्र सूरज उपमा दीजइ (अधिक) माणंदो रे।
पहुंणीजो 'हेमसिद्धि' इम भणइ, दरजो परमानंदो रे ॥१८॥सो ॥

॥ इति निर्वाण गीतम् ॥

(तत्कालीन लि हमारे संग्रहमें)

साध्वी विद्या सिद्धि कृत

॥ गुरुणी गीतम् ॥

~ ~करि आगली, सुमति गुपति भंडार ॥ प्र० ॥२॥

गोत्रज 'साउसखा' आखियइ, 'करमचंद' सह मल्हार।

भाव भविक परिणामइ भावस्यौ लीधउ संजम भार ॥प्र०॥३॥

सफरी (आगीनी ?) गछ माँहि पहुतणी, क्रिया पात्र सुविचार।

अहनिस जपतां नाम सुहामणउ सुख संपति सुखकार ॥४ प्र०॥

श्री 'जिनसिंह सूरीसर' आपीयउ, 'पहुतणी' पद सुविशाल।

तप जप संजम रूडी परि रालती, जिम माता नइ बाल ॥५प्र॥

साध्वी माहि सिरोमणि साध्वी भणिव गुणिय सुजाण।

राति दिवस जे समरण करइ, प्रणमइ चतुर सुजाण। ॥६ प्र०॥

'सोलहसइ निमायू' वरस मई 'भाद्रव वीज' अपार।

इम बोलइ विद्यासिद्धि साध्वी संपति हुवइ सुखकार ॥प्र॥७॥

(सं० १६६६ भा० व ३ दि०)

(१) श्रीगुर्वावली फाग

पणमवि कमल रुचिर वरं, चउवीसमउ जिणंदो ।
गासु 'खरतर' गुण पवर, आणिसु मनि आणंदो ॥१॥
भइ पहिलउ गुणधर जगि भयउ ए श्री 'सोहमसामि' ।
वीर जिणंदह तणउ पाटि सो शिवपुर गामी ॥
मोह महाभड तणउ माण, हणि निरदलीयउ ।
'जंबूस्वामी' सुस्वामि मारु, केवलसिरि वरीयउ ॥२॥
सुयकेवलि सिरि 'प्रभवसूरि', 'सिज्जंभव गणधर ।
दस पूर्वधर 'वयरस्वामि' तमणु नमि मुणिवर ॥
तसु सीसि दिणयर जिमउय तव तय फुरन्तु ।
सिरि 'उज्जोयणसूरि' भूरि गुण गणहि वहीतउ ॥३॥
आबूयगिरि सिहरि जेम तप कीयउ छम्मासी ।
पयडीकय सिरि सुरि मंत्र तसु महिम पयासी ॥
'पउमाकर' 'वरजिन्द' जासु, पय कम(य) मल नमंसिय ।
मंडउ सा सिव 'वद्धमाण', मुणि लोय पसंसिय ॥४॥

भास

'जणसिरसुरि' महापत्ति (जीपी) जग थापी मुणिवर वासो ।
रायगय 'सुगइ तणउं' पामी जिन्द पयासो ॥५॥
भइ 'खरतर' बिरुद पयासु जा(सु) दीघउ अक्माओ ।
निम्मल संयम गुणहि जासु, रंजिय भूपालो ॥

वारिय चेइयवास वास, थापिय मुणिवर कम्र ।
सूरि 'जिणेसर' गुरुराय, दीपइ अधिवेस ॥६॥
'श्रीजिणचंद' मुणिन्द चंद, जिम सोहइ सप्पइ ।
विवरिय जण नवंग चंग, पयडी भंमण पइ ॥
निय वयणिहि गुण कहइ जासु सीमंधर जिणवर ।
सलहिज्जइ सिरि 'अभयदेव' सो सूरि पुरन्दर ॥७॥
'वागड़िया' 'दस स(ह)स' सार सावइ पडिबोहिय ।
'चित्रोडी' 'चामंड' कड, असु दरसणि मोहिय ॥
'पिण्डविसोही' विचार सार, पयरण निम्मावियं ।
'जिणवल्लह' सो जाणीयइ ए, जण नयण सुहाविय ॥८॥

भास

'अंबा एवि पयास करि वाणी जुगहपहाणो ।
'नागदेवि (व?) सो मुणिपवर वाणी अमिय समाणो ॥६॥
जाहं अमी समाण वखाण जासु सुणिवा सु(र) आवइ ।
चउसठि जोगणि जासु नामि नहु लगु (किंपि?) संतावइ ॥
जुगवर श्री जिणदत्तसूरि महियलि जाणीजइं ।
निम्मल मणि दीपंति भाल, 'जिणचंद' नमिज्जइ ॥१ ॥
रामसमा छत्तीस वार किवउ जइ जइ कारो ।
नवरंक पद ठवण जासु, सुप्रसिद्ध अपारो ॥
सद्गुरु श्री'जिनपतिसूरि गाजइ भवसर ।
सूरि 'जिणेसर जिणपबोह, 'जणचंद' मईसर ॥११॥

चंपक जिम वणराय मांहि, परिमल भरि महकइ ।
कस्तूरी घनसार कमल, केतकइ बहकइ ॥
तिम साहइ 'जिनकुशल सूरि' महिमा गुण मणहर ।
तयणंतरि 'जिनपद्मसूरि', जिणशासणि गणहर ॥१२॥

भास

सतपिवन्त जिनलबधि गुरु, पाटिहिं सिरि 'जिणचंदो' ।
उदय करण जिण शासनह, श्री'जिणराज'मुणिन्दो ॥१३॥
भद्र श्री जिनराज मुणिन्द पाटि, गच्छगंगणि चंदो ।
खरतरगण सिंगार हार जण नयणानंदो ॥
सायर जिम गंभीर धीर आगम संपन्नइ ।
महिगुरु श्री जिनभद्रसूरि' कलि गोयम मन्नउ ॥१४॥
तसु पाटि'जिणचंद सूरि जिनसमुद्र सूरिन्दो ।
तसु पाटिहिं 'जिनहंस सूरि' किरि पूनम चन्दो ॥
श्री'जिनमाणिक सूरि तासु पाटिहि गुण भरियउ ।
चिरं जीवउ जगि विजयवन्त संघहि परिवरियउ ॥१५॥
जडमंडलि अवतरइ मरू, जिणवर हूं पंचइ ।
गिरुउ खरतर संघ एह, तां जगि जयवंतउ ॥
आगागमि सिरि 'सोमहंस', गणिवर सुपसाइ ।
ए स्वारेसा फाग बंधि, महगुरु गुण गाइइ ॥१६॥
॥ इति गुर्वावली फाग संपूर्ण ॥

चारित्रसिंह कृत

(२) गुर्वावली

सिव सुखकर रे, पास जिणसर पय नमउ
गोयम गुरु रे, चरण कमल मधुकर रमउ।
कवि जननी रे दिउ मुझ शुभ मति निरमली,
रंगि गाइसुं रे, सुविहित गच्छ गुरावली॥
सुविहित गच्छ गुरावली फिर जेम भवियण गाइयइ।
बहु सिद्धि रिद्धि निधान उत्तम, हेलि सिवपुर पाइयइ।
जे नाण दर्शन चरण उज्जल, 'चउदसमवसरण' वली।
गणधार सवि ते भावि वंदो एह निर्मल मनि रली॥१॥
सिव रमणी रे वर सिरि वीर जिणेसरु
गुण गण निधि रे, 'गोयम' स्वामी गणहरु।
उपगारी रे सुरकारा भवियण तणइ,
इक जीहा रे, तहना गुण बहु किम भणइ॥
किम भणइ तहना गुण महोदधि कवहि पार न पावए।
जिसु मधुर ध्वनि कर देव दानव किन्नरी गुण गावए॥
जसु नाम जिहा अछइ अमृत परम मंगल कारणो
सो वीर जिनवर पढम गणधर भयो दुख निवारणो॥२॥
गच्छाधिप रे सोहम सामी गुण निलो,
तसु पाटहि रे 'जंबू सामी' जग तिलो।
वर कंचण रे कोडि नवाणू परिहरी
सुभ भावइ रे, परणी जिह संयम सिरी॥

संयमश्री जिहि हलि परणी, चरण करण सु धारओ।
मय अट्ठ वारण मान गंजण भविय दुत्तर तारओ।
सोभाग सुन्दर सुगुण मन्दिर, मुक्ति कमला कामिनी।
जिहि नाथ पामी भवलनै? छइ, अन्य शुभ गुण गामिनी ॥३॥
तम्मन्तर रे, 'प्रभव स्वामि श्रुतकेवली
सिव पद्धति रे, भविजह भाखी भलि भली।
'सिज्जंभव' रे, सामी गुण गणधार ए,
मिथ्या मत रे पाप तिमिर भर वार ए॥
वार ए कुमत कुसंग दूषण भाव भय दिखायरो।
'जसभद्द' गणहर नाण दसण, चरण गुणगण सायरो।
'संभूतिविजय' प्रधान मुनिपती प्रबल कलिमल खंडणो।
श्री 'भद्रबाहु' सुबाहु संयम जैन शासन मंडणो॥ ४ ॥
श्री 'थूलिभद्र' रे काम कामगड भंजणो
उपसम रस रे सागर मुनि गण रंजणो।
जसु उत्तम रे सुजस पडह जगि बाज ए,
भनि निरमल रे शील सबल दल गाज ए॥
गाजए दुक्कर सुविधि-कारी जासु गुण पूरी मही।
रवि चन्द्र तलि धर मीत्र सुभ वसि, जइ मम मरिस्यो नहीं।
प्रतिबोधि कोश्या मधुर वयणिहि जिन्द उत्तम साविया।
सा प्रवचनारा सुदृढ-धारी, साधि प्रणमो भाविया॥ ५॥
तसु अनुक्रमि रे, 'अज्जमहागिरि' जगि जया
जिणकप्पोत्तर रे सुप्रगाचारी सा भयउ।

तसु सविनय रे, 'भव्य सुहथी' आणिये,

'सप्रति नृप र सावय जासु वखाणिये।

वखाणिये जगि जासु उत्तम, लब्धि महिमा अति घणी।
श्री अज्जसंती थिवर कहियइ, तासु पाटिइ गच्छ धणी।
'हरिभद्र आरिज सुमति वासिग नाम भव्य' मुणीसरो।
'पन्नवण सुत्त' उद्दार कारी जयो सो जगि जुगवरो॥६॥
तिम आरिजर 'संडिल'नाम अइसरु,श्री'रेवइ रे मित्र'मुणिंद जुगवरू।
धर्मागिर रे धर्माचारिज सोहए,वर संजम रे सील सुगुण जग मोहए।
मोह ए रत्नत्रय विभूसित 'अज्जगुत्त मुणीसरा
गुण रयण रोहण भविय मोहण, 'अज्जसमुद्द' गभीरा।
सिर 'अज्जमंगु सुधम्म पयडण पवर त्रिभुवन दीप ए।
सिरि 'अज्ज सोहम' थविर हरिवल, मोह कुंजर जीप ए॥७॥
गुण समार रे 'भद्दगुत्त मुनि नामगा

भवियण जण रे, समकित सुरतरु धामगो।

'सीहगिरि' गुरु रे अंतेवासी राज ए,

जा ईसर रे देस पूरव-घर छाज ए॥

छाज ए बाला मयणमल्ला ज्य हंसणि मनि वल्लहो।
वर कणय कोडि ईहि छोडी मयण मव भड जिणि मल्हउ।
सिरि 'वयर स्वामी' सिद्धि पामी जिणि जिम सुह आगमो।
निकलंक चारित्र पवड निर्मल, सिव सुग पउगगमो॥८॥
श्री आरिज र रखिन जिणमय भाम ए,

सब पूरब रे साधिक इम मनि वामय।

जे सुहगुरु रे, क्रम विहार विहरता,
'अणहिल्लपुर' र पाटणि पहुता विहरता ॥
चियवासी, रे महिमा खंडण तिह कियउ,
'दुर्लभ' नृप रे 'खरतर' बिरुद तिहां दीयउ ॥
तिह दियउ खरतर बिरुद उत्तम, नाम जग मांहि बिस्तरउ,
आदरइ जिनमत साधि भवियण, सुविहि मारग बिस्तरउ ॥
चियवासी मयगल सकल दल छल, केसरी पद पाव ए
श्री 'जैनईसर सूरि' सुविहित, सुजस रेह रहावए ॥१२॥
हिव सुविहतरे चाल चतुर चिन्तामणी,
मिथ्यामर रे, तिमिर विहंडन दिनमणी ॥
जिन प्रवचन रे वचन विलास रसालय,
वन मधुकर रे अति संवेग रसालय ॥
'संवेगरंग विसाल शास्त्र', नाम प्रकरण जिह कह्यो,
भव पाप पंक पखालि निरमल, नीर संयम तप धरयो ॥
'जिनचंद्र सूरि' नवांग विवरण, रयण कोस पमास(ए)णो,
श्री अभयदेव सुणिंद जिनपति परम गुण गण भासणो ॥१३॥
हिव तप जप रे, ध्यान ध्यान गुण उजला,
आगम जय रे चरणु सुधारसु निरमला ।
'जिनवल्लभ' रे सुविहित मारग दाख ए,
विधि मापक रे, कुमति कलुष वि टाल ए ॥
धमन ए गंग तरंग सुवचन अविधि तरु भंजण करी
संवेग रंग तरंग सागर सकल आगम गुणभरी ।
तसु पाटि श्री जिनदत्त सूरि गुरु, 'युगप्रधान' सुहामरा ।

मोह ए मयिषण जणइ मानस, पइ परम मगीसरु,
वर ध्यान सुमति निधान सुन्दर, नवल करुणा रस भरु।
पग विषय विषम विकार गंजण, माव भड भय जीप ए।
सो सुविधचारी शीलधारी, जैन शासन दीप ए ॥१७॥
गंभीरिम र, उपमा सागर गुरु तणी,
किम पाषइ रे जिह तई महिमा अति घणी।
मइ मूछिक र रत्नत्रय जिह आणीयइ
सम दम रम रे निरमल नीर वखाणियै॥
वखाणियै जिह सकल संयम, रंग लहरी गहगहइ
सुध्यान वडवानल सुगुण मय, नदी पूर जिहां वहै।
पऊ इह अचरिज मयउ इम मति, सुगुरु कविजन इम कहइ।
'जिनचंद्रसूरि' सुरिन्द मुनिवर, कहउ जलनिधि किम लहइ ॥१८॥
इह सुहगुरु रे, गुण गण वरनन किम सके,
बहु आगम रे, पाठी तउ पुणि त थके।
इह कारणि रे, श्री गुरु सम को किम हुवइ,
किह पीतलि र कंचन सम सरि किम हुवइ॥
किम मुखइ रयणी दिन समाणी बहुय सरवर सागरा,
नक्षत्र ससहर सूर कातर वलर भू रयणागरा।
सामाता रंग सुरंग वंदिम चरण गुण गण निरमला
'जिनचन्द्र सूरि' प्रताप अविचल दिन दिनइ चढ़ती कला ॥१९॥
तिणि मंडलि रे 'सत्तक नगर सोहामणो
तिहां श्री संघ रे सोहइ अति रलियामणो।

उमाहो र निवसइ गुरु दंसण तणो
मन माहि जिम र, चातक घन जिम अति घणो ॥
अति घणो भाव उल्हास उच्छव मघन घन सो अवसरो,
सा धन्न वस्स सु धन मासा जत्थ दीसइ सुहगुरो ।
जे भाविं वंदइ तेह नन्दइ दुरय छन्दइ बहु परे,
संभवइ समकित शुद्ध मोचन सुगुरु उच्छव जे करइ ॥२०॥
मन मोहन र, गुण रोहण धरणी धर
पूर्व मयणि र उगवाय जगदीसरू ।
चिर प्रतपो र, श्री 'जिनचंद्र' मुनीसरू,
जा दिनकर रे ससहर सुर वर भूधर ॥
सुर भूधर जा जगइ मवियण, खीरसागर महियले
जयवन्त गुरु गच्छपति गणधर, प्रबल तेजइ इणि कलइ ।
'मतिभद्र' वाचक सीस 'चारित्र सिंह' गणि इम भणे ए ।
गुरु नाम सुणतां भावि भगतां हुइ सिव सुख संपए ॥२१॥

गुर्वावली नं० ३

ढाल—गीना छन्द नी ।

सारदि भगवति रे तुं दमि मुझ वचन भैरउ,
सद्गुरु सुरतरु र, गाइसुं सुगम मवरउ ।
सद्गुरु गाइसुं सुविहित यति पति, सिरि 'उद्योतनसूरि' वरो ।
तसु पाट पुरन्दर मोहन सुन्दर 'वर्द्धमानसूरि' युग प्रवरो ।
अणहिल्लपुर 'दुल्लभ राय' सभागहि, जिणि मठपत्त घण जीतउ ।
क्रिया कठार 'जिनेश्वरसूरि' 'खरतर' बिरुद वदीतउ ॥१॥

विधि सु विरचित र, भिमि 'संवेगरंगशाला ।
गुरु 'जिनचन्द्र सूरि' रे, तस तरणि सुविसाल ।
सुविशाल सुर्वमण पास प्रकाशक, नव अंग विवरण करण म(व?)रो ।
श्री 'अभयदेव सूरि' वर तसु पाटइ, श्री 'जिनवल्लभ सूरि गुरो ॥
'अंबिका दवो' देसित युगवर, 'जिनदत्त सूरि' मझोणा ।
नरमणि मंडित जिनचद्' पदि 'जिनपति' सूरि प्रवीणो ॥२॥
'नेमिचन्द्' नन्दन र, सूरि 'जिनेसर' सारा,
सूरि सिरोमणि रे जिन प्रबोध उदारा ।
सुविचार उदारा 'जिनचन्द्सूरि', 'जिनकुशल सूरि' 'जिनपद्म' मुणी
श्री जिनलब्धि सूरि' जिणचन्द्', 'सुगुरु जिणोदय सूरि मुणो ।
'जिनराज मुनिप (ति) 'जिनभद्र' यतीसर,
श्री 'जिणचन्द सूरि' 'जिनसमुद्र वसी ।
श्री जिनहंस सूरि' मुनि पुंगव श्री 'जिनमाणिक सूरि' शशी ॥३॥
तसु पदि परिगहइ रे गुण मणि रोहण मोहइ ।
'रीहड़ कुलतिलउ र, सकल सुजन मन मोहइ ।
मोहइ वचन विलास अमृत रस 'श्रीवंत' माह जनेता ।
'सिरियादे' वरि रत्न अमूलक, श्री खरतर गच्छ नेता ।
"नवरंग' मनइ विमइ विधि पेषी रूप मदिन निरइंसी ।
श्री जिनचन्द' सूरि सूरीश्वर चिर नन्दउ आणन्दी ॥ ४ ॥

—*—

कविवर समयसुन्दर कृत

(४) खरतर गुरु पट्टावली

प्रणमी वीर जिणेसर देव, सारइ सुरनर किन्नर सेव।
श्री 'खरतर' गुरु पट्टावली, नाम मात्र प्रभणु मन रली ॥ १ ॥
उद्योतन श्री 'उद्योतन सूरि' 'वर्द्धमान' विद्या भर पूरि।
सूरि 'जिणेसर' सुरितरु समो, श्री 'जिनचन्द्र सूरीश्वर' नमो ॥२॥
अभयदेव सूरि सुखकार श्री 'जिनवल्लभ' किरिया सार।
युगप्रधान 'जिनदत्त सूरिंद', नरमणि मंडित श्री 'जिनचंद' ॥३॥
श्री 'जिनपति सूरिश्वर' राय सूरि जिणेसर प्रणमुं पाय।
'जिनप्रबोध' गुरु समरूं सदा श्री 'जिनचन्द' मुनीश्वर मुदा ॥४॥
कुशल करण श्री 'कुशल' मुर्णिद श्री जिनपद्म सूरि सुखकंद।
लब्धिवंत श्री 'लब्धि सूरीस' श्री 'जिनचंद नमुं निसदीस ॥५॥
सूरि 'जिनोदय' उदयस्थाण, श्री 'जिनराज' नमुं सुविहाण।
श्री 'जिनभद्र' सूरिश्वर भलउ, श्री 'जिनचंद सकल गुण निलउ ॥६॥
श्री 'जिनसमुद्र सूरि गच्छपती श्री 'जिनहंस सूरिश्वर यती।
'जिनमाणक्यसूरि पाटे प्रवरु, श्री 'जिनचंद सूरिश्वर जयो ॥७॥
ए चउवीसे खरतर पाट, जे समरइ नर नारी थाट।
ते पामइ मनवंछित कोडि, 'समयसुंदर' पभणइ करजोडी ॥८॥

इति श्री खरतर २४ गुरु पट्टावली समाप्ता लिखितास्च पं समयसुंदरेण ॥ सुन्दर बड़ बड़ अक्षरों में लिखित।

(जय० भं० नं० २८ गुटका)

कविवर गुणविनय कृत

(५) खरतरगच्छ गुर्वावली

प्रणमुं पहिली श्री 'वर्द्धमान', बीजो श्री 'गौतम' शुभ ध्यान ।
त्रीजो श्री 'सुधरम' गणधार, चोथो 'जंबू स्वामि' विचार ॥१॥
पंचम श्री 'प्रभव' प्रभु थुणुं, श्री शय्यंभव छठो भणुं ।
'यशोभद्र' सत्तम गणधार श्री 'संभूतिविजय' सुखकार ॥२॥
'कोसा' वेश्या वश नवि पड्यो, 'थूलभद्र' शुभ मनमें चड्यो ।
दसम 'सुहस्तिसूरि' उदार, 'संपति' नृप प्रतिबोधनहार ॥३॥
श्री 'सुस्थित' मुनि इग्यारमो 'इन्द्रदिन्न' बारम नितु नमो ।
तेरम दिन्नसूरि दीपतो, 'सींहगिरी' सुर गुरु जीपतो ॥४॥
पनरम नरम वाणि जेहनी रूप कनक मोहइ देहनी ।
दस पूर्व धर धोरी जिस्यो, 'वयरिस्वामि' शुभ हीयडे वस्यो ॥५॥
सोलम चउथय जिण मत कीध, 'वज्रसेन' स्वामि सुप्रसिद्ध ।
सतरम 'चन्द्रसूरि' मुणि चन्द, 'सामन्तभद्र सूरि' सुखकन्द ॥६॥
देवसूरि प्रणमुं सुपवित्र कुमरचन्द्र वादे जिण जित्त ।
बीसमो श्री 'प्रद्योतनसूरि जगि उद्योत कियो जिणि भूरि ॥७॥
सप्तमाय 'शान्तिस्तव' कारि मानदेव गुरु महिमा धारी ।
श्री'देव प्रभसूरि'गुण निलउ, सिव पद जिण हेलाइयो मलै ॥८॥
'भक्तामर' 'भयहर' हित धरी स्तवन कीयो जिण करुणा करी ।
ते श्री 'मानतुंगसूरीश' 'वीरसूरि राजे निसदीस ॥९॥

ढाल—श्री 'अभयदेवसूरीसर', पंचवीसम प्रभ जाणि रे।
'देवानन्द' वखाणियइ छावीसम मनि आणी रे॥ १०॥प०
एहवा सद्गुरु गाइये, मन शुद्धि करीय त्रिकाला रे।
संयम सरवरि झीलता, षट्काया प्रतिपालो रे॥११॥ प०
'विक्रमसूरि' दिवाकरू, तसु पाटि 'नरसिंह सूरि' रे।
श्री 'समुद्र सूरीश्वरू' महिमा सुजस कपूर रे॥ १२ ॥ प०
'मानदेव' त्रीसम हुयो, श्री 'विबुधप्रभसूरि' रे।
'जयानन्द' बत्रीसमो राजइ सुगुण पडूरि रे॥ १३॥ प०
श्री 'रविप्रभ' रवि सारखो तजइ करि 'मणिभद्र' रे।
'यशोभद्र' चउत्रीसमो पांत्रीसम 'जिनभद्र रे'॥ १४॥ प०
श्री 'हरिभद्र' छत्रीसमो सइत्रीसम 'देवचन्द्र' रे।
'नेमिचन्द्र' अडत्रीसमा उदया जाणि जिणन्द रे॥ १५॥ प०
ढाल—श्री 'उद्योतन मुनिवरू, श्री वर्द्धमान महन्तो रे।
'विमल दण्डनायक जिण प्रतिबोध्या जयवन्ता रे॥१६॥
युगप्रधान गुरु जाणिवा॥
'खरतर बिरुद जिणइ लह्या 'दुर्लभ राज श्री साखइ रे।
सूरि जिनेसर जगि जयो कीरति सवि जसु साखइ रे॥१७॥यु
श्री जिनचन्द्र' यतीसर 'अभयदेव' गणधारो रे।
नव अंग विवरण जिणि कीया, जिन शासन सिणगारो रे॥१८॥यु
ढाल—चामुंडा जिणि पूजता श्रुतसागर जसु पासइ रे।
श्री 'जिनवल्लभ' गुरु थया महोत्सव सासइ पासइ रे॥१९॥ यु०॥
जोगा चोसठ योगिनी जिणि श्री' जिनदत्तसूरि रे।
नाम मंत्र जेहना जपइ, विघन संकट सवि चूरइ रे॥२०॥यु०॥

श्री 'जिनचन्द्र सूरीसर' नामसो, नरमणि मण्डित माळोजी।
तेहनइ पाटइ श्री'जिनपति'थया सकळ साधु भूपाळ जी॥२१॥धन०॥
धन धन खाखरतर गच्छ विराजयो, जिहां एहवा मुनिराजो रे।
शुद्ध क्रिया आगम में जे कही, त मारगइ सिव काजो जी।२२॥धन०।
सूरि 'जिणेसर' सरस्वति मुख बसइ, जसु महिमा नो निवासो जी।
'जिनप्रबोध' प्रतिबोधन जे करइ,अमृत वचन विलासोजी॥२३॥धन०
'श्रीजिनचन्द्र' यतीसर तेहपो 'श्रीजिनकुशल' प्रधानोजी।
जसु अतिशय करि त्रिभुवन पूरियो,कुण हुवइ एह समानोजी॥२४॥ध
'बाल धवल सरस्वती' बिरुदइ करी ख्याती जिण विस्यातो जी।
'पद्म सूरीसर' तसु पाटइ थयो, छनवि सूरि सुबक्खतो जो॥२५॥धन
श्री 'जिनचन्द्र' 'जिनोदय' यतीवरु, धीरम धर 'जिनराजो' जी।
श्री 'जिनभद्र' थयो सुविहित धणी भवसागर वर पाजा जी॥२६॥ध
'जिनचन्द्र' 'समुद्र सूरीसर' मारिखो,कुण हुवइ जापि गुण पूरि जी।
श्री 'जिनहंस' मुनीसर नामीयइ श्री जिनमाणिक्य' सूरि जी॥२७॥
पातिसाहि अकबर प्रतिबोधीयो अमर पडह जागि दिद्धो जी।
पचनदी जिणि साधी साहसइ, चन्द्र धवल जस सिद्धोजी॥२८॥ध०
'युगप्रधान' पद साहइ जसु दीयो श्री जिनचन्द' सूरिंदो।
च्यारी 'खंमायत माळ्की विरजयो जां रवि चन्दो जी॥२९॥धन०
वीर थकी अनुक्रमि पाट हुआ जे से श्री गच्छ धारो जी।
नाम ग्रही ते प्रमण्या पहना कुण पामइ गुण पारो जो॥३ ॥धन०॥
'जेसलमेर' विभूषण पास जी सुप्रसादइ अभिरामो जी।
श्री 'जयसोम सुगुरु सीसइ सुरा 'गुणविनय गणि शुभ कामो जी॥३१॥

॥ इति ॥

(२)

खरतर गच्छ युवराजियउ, थाप्यउ श्री जिनराज न रे।
पाठक रंगविजय जयउ, सब गच्छपति सिरताज न रे ॥ १ ॥
भविषण वांदउ भावस्यूं जिम पावउ सुख सार न रे।
रूप कला गुण आगलउ, निर्मल सुजस भंडार न रे ॥२॥ भ०॥
सरस सुकोमल देसना, मोहइ सहु संसार न रे।
कूड़ कपट दीसइ नहीं घणुको नइ हितकार न रे ॥३॥ भ०॥
हाथि करइ गुरु नी भिके, ते आयइ इह चोड़ि न रे।
सुख पावइ ते सासता,जे सेव करइ कर जोड़ि न रे ॥४॥ भ०॥
गुरु गुण गावइ मन सुधइ नाम जपइ निसि दीस न रे।
ज्ञानकुसल कहइ तेहनी, पूजइ मनह जगीस न रे ॥५॥ भ ॥

॥ युगप्रधान पद गीतम् ॥

(३)

'जिनराजसूरि पाटोधरू, वसभ्यार किया आण।
वचन सुधारस वरसतो माने मनुको आण ॥ १ ॥
मोरी सही ए वांदोनो जिनरंग आणी मनमें रंग।
वाजी गंग तरंग। मो
पातिसाह परख्यो तेहने दीधो करि फुरमाण।
मान मोद (सुधा ?) मल्हरो करज्यो वचन प्रमाण ॥२॥ मो ॥
तसु पुत्र दीधे पाटवी 'दारा म को सुलताण।
युगप्रधान पदवी तणो करि दीधो निसाण ॥३॥ मो ॥

मीवास' 'सोघड़' जाणीजइ, 'श्रीमाली' जाति सुजाण ।
मा(मा?)इ पंचायण अति भलउ, गुरु रागी गुण जाण ॥४॥मो०॥
मारो महिमांति सु, कीयो निहाण र काज ।
हाथी सिणगार्या भला, घोड़ा सुखमली साज ॥५॥मो०॥
जा बजाया तरा (?), नगा बणाया तूर ।
दान देइ याचक भणि, दाखामी र हजूर ॥ ६ ॥मो०॥
गीपूम माथा रुपासरे, श्री संघ सगले साथ ।
मन रंग महाजन लोकमें मालेर दीधा हाथि ॥७॥ मो ॥
तूव वधावे मोतीये गुहली गावे गीत ।
कड़ उवारे कापड़ा राखे कुल गे रीत ॥८॥ मो०॥
ावन 'सम्मरप्राहोतर श्री संघ आणंद आण ।
'युगप्रधान पद थापीया मालपुरे' मंडाण ॥६॥ मो०॥
गरी तणा मद जीपनौं महिमा तणो भंडार ।
दूर कीया दुरजन जिणइ, खरतर गछ सिणगार ॥१०॥मो०॥
न मान जस 'सिंदूर दे धन पिता 'सांकरमीह ।
धन गोत्र सिंधुड़ परगडो धन मातो प जीह ॥११॥मो०॥
'कमसरस इम बीनवे मुनि आज अधिक आणंद ।
चिरजीवो गुरु ए सही जांलगि धू रवि चन्द ॥१२॥मो०॥

॥ श्री कमलहर्ष कवि कृत ॥

श्रीजिनरतनसूरि निर्वाण रास

सरसति सामणि चरण कमल नमी दीयकर सुगुरु पसेवि ।
श्री 'जिनरतन सूरीसर' गुरु तणा गुण गाऊं संखेवि ॥ १ ॥
'श्रीजिनरतनसूरीसर' समरियें ॥
मरुधर मोटउ 'मरुधर' देस मइ 'सुम सेरुणा' गाम ।
पुना(घनो?)छोक वसइ सुखीयां जिहां,परमी अति अभिराम ॥२॥श्री०॥
वसइ तिहां वर शाह 'तिलोकसी' चावउ चतुर सुजाण ।
'ओसवाल' वंश उन्नति करइ, जुगति करइ वखाण ॥ ३ ॥श्री ॥
तासु घरणि 'तारा दे' (दो) सती सीलवती सुचंग ।
रूपवन्त सोभा में आगली सरस सुकोमल अङ्ग ॥ ४ ॥श्री०॥
रतन अमोलक जिणइ जनमियो, कुल मण्डण कुल भाण ।
मात पिता बन्धव सहु हरखिया आणइ रागो रग ॥ ५ ॥श्री०॥
'आठ बरस नइ मन माहि' चपनो लघु वय पिण वैराग ।
माया ममता सगली छांडिनै दिन २ चढ़तइ वान (भाग?) ॥६॥श्री०॥
श्री 'जिनराज सूरिश्वर गुरु कन्हे, आणी मन आणन्द ।
निज 'बान्धव माता' सीने मिली लेखी दीक्ष मुणिन्द ॥ ७ ॥श्री०॥
शास्त्र अनेक भण्या थोड़इ दिनइ, बुद्धि तणइ विस्तार ।
चउद बरस नइ संयम आदर्यो सफल गिणी अवतार ॥ ८ ॥श्री०॥

निज बपवूसइ भवियण सूझवइ, करइ अनेक विहार।
पाछ (इ) मम सुमइ मुनिवर मळइ, चारित्र निरतीचार ॥ ६ ॥श्री०॥
गुण अनेक सुणी श्री पूजजी, तेडावि निज पास।
'अहमदाबाद' नगर महि आपियउ, 'पाठिक पद' उल्हास ॥१०॥श्री०॥
जुगते भक्तिपर 'जयमल' 'तेजसी', अवसर लही एकन्त।
आनंद सुं उच्छव कीयउ तिहाँ, खरच्यउ धन धरि खंत ॥११॥श्री०॥
'पाटण' नगरइ पूज्य पधारिया चतुर रह्या चउमास।
सूत्र सिद्धांत अनेक सुणावतो सहु नी पूरइ आस ॥ १२ ॥ श्री०॥
संवत 'सतरइ सय वरसइ मळइ, श्री जिनराज सूरिस'।
सर्वइय'रतन सूरीसर वापीया मनि धरि अधिक जगीस ॥१३॥श्री०॥
'असाढा सुदि नवमी' शुभ दिनइ, थिर निज पाटइ थापि।
श्री 'जिनराज सरगि पधारिया, त्रिविधि खमावि पाप ॥१४॥श्री०॥
श्री जिनरतन' तणी माती सहु देस प्रदेसइ आण।
ठामि २ सिंघइ तेडावीया गणिता कल्प प्रमाण ॥ १५ ॥ श्री० ॥

ढाल'—तू गीया गिर शिखर सोहइ, एहनी।
चउमासि पारण करी सद्गुरु, कीयो तेथी विहार र।
आविया 'पाल्हणपुर' पूजजी, कीयउ उच्छव सार र ॥ १ ॥
आज धन 'जिनरतन' वांद्या, गया पातक दूर र।
श्रीसंघ सगळउ मनि हरख्यउ, प्रगट पुण्य पडूर र ॥२॥ आ०॥
'सोवनगिरी' श्री संघ आग्रहि, आवीया गणधार रे।
पइसार उच्छव सबल कीयउ, सीठ (सेठ?)'पीमइ' सार र ॥३॥आ०॥

संघ सह वांदिवि गुरुराइ पूज्यजी पांगुरया रे।
विपरला 'मस्गार' देस महि, साधु सह परिवार रे ॥५॥ मा०॥
संघ सामह आविया हिव पूज्य 'बीकानेर' रे।
'नयमल वेगड़' उच्छव कीयड, खरचीया धन ढेर रे ॥६॥मा०॥
उपशम निज प्रतिबोध श्रावक करता पत्र विहार रे।
'वीरमपुरइ' चउमास आव्या, संघ सामह सार रे ॥६॥ मा०॥
चउमास पारण आविया हिव 'बाड़मेर' सुजाण रे।
चउमास राख्या संघ मिलकर, पूज्यजी परमाण रे ॥७॥ मा०॥
तिहां थी विचरी कोटड़इ मइ चतुर करी चउमास रे।
पारणइ 'जेसलमेर' श्रावक तेडीया उल्लास रे ॥८॥ मा ॥
पइसार उच्छव 'गोप' कीधो कीयउ सगसी साह रे।
याचकां बहुलउ दान दीधउ, मन धरी उच्छाह रे ॥९॥ मा ॥
संघ सामह च्यारि कीधा पूजजी चउमास रे।
धन-धन'जेसलमेरि'श्रावक,लोक मय (नइ?)सावास रे॥१०॥मा०॥
आगरा नइ संघ सामह घणा कीध विसाप रे।
आगरइ गच्छराज आव्या भाविकां मन उल्हास रे ॥११॥मा ॥
हुकम 'पेसम लणउ पामी 'मानसिंह' महिराज रे।
पइसार उच्छव अधिक कीधउ मेलीया रायराय रे ॥ १२ ॥मा
हरखीया मन माहि सहु भाविक बरतीया जयकार रे।
याचकां वांछित दान दीधउ प्रबल पुन्य प्रकार रे ॥१३॥ मा०॥
तप नियम प्रत पचखाण करतां धारतां धर्म ध्यान रे।
निज गुणे सगळे श्रावकां मन रंजीया असमान रे ॥१४॥मा ॥

संवत 'सतरह सय मसइ, इग्यार' हो 'श्रावणि वदि सार' ।
'सोमवार' 'मागम' दिनइ, सोभागी हो पहल पहर मंझार ॥६॥सु०।
'चउरासी' लक्ष जीवनइ, खमावी हो आलोइ पाप ।
इरपवास'नइ इरसस्युं निज पाटइ हो भविचल थिर थाप ॥१०॥सु०॥
निरमल चित नवकार नइ, मुनि करतां हा धरता सुमध्यान ।
श्रीपूज्यजी संवेगी हो, पहुंता अमर विमान ॥ ११ ॥ सु०॥
कर अनोपम कोरणी मांहीं मुलमल हो बहु सूक्ष्म किमय ।
चोया चन्दन अरगजा, कस्तूरी हो केसर घरखाय ॥१२॥ सु०॥
विधि विधि वाजित्र वाजता, बइसारी हो जाणे देव विमान ।
इसवर गमवर होसर्ता सहु लोकड़ (हो)करता गुण गान ॥१३॥सु ॥

ढाल—वाल्हेसर मुझ वीनती गोडीचा राय पहूनी ।

कहो आमण दुमणो सोभागी,ए ताहरउ परिवार हो । सोभागी० ।
परदेसो जिमि छांडिने सो०, जइये किम गणधार हो । सो० । १ ।
हरमण थो गुरु माहरां सो०
सहु श्रावक श्राविका । सो० । जोवइ तुमची वाट हो । सो ।
ए वेला नहीं ढील नी सो०, सुन्दर रूप सुघाट हो । सो० । २ ।
वडा वड वखाणनी सो , मिलीया सहु रायराज हो । सो० ।
आवी वइसो पूठीयइ सो , वार म स्यावो आप हो । सो० । ३ ।
आवी वइठा एकठा सो० पंडित पूछण काज हो । सो ।
वगड उत्तर घउ तुमे सो० गछमा मो गच्छराज हो । सो० । ४ ।
एक वेली सुविचार नइ, बोलउ बोल रसाल हो । सो० ।
वाट आवइ जिम मेह नी सो० तमा वाल गोपाल हो । सो० । ५ ।

गच्छपति तो आगइ हुआ सो० हास्यइ वलि छइ जेह हो ।सो ।
पिण तो सम संसार मइ सो०,नवि दीसइ गुण गेह हो ।सो०।१७
परमावर विद्यानिलउ सो० सूत्र सिद्धांत प्रवीण हो । सो० ।
कलियुग माहे गुणनो सो० अधिको परम धुरीण हो ।सो०।१८।
तई तउ ताहरउ निरवाहीयउ सो०, जगम जुगप्रध समान हो ।सो०।
तीक्षण पण व्रत आदर्यो सो०,पाल्यउ सीह समान हो ।सो०।१९।
त्रिभुवन मइ ताहरी क्षमा सो०, सारइ संसार हो० । सो० ।
कलि माहे इक तुं हूआ सो०, निरलोभी गणधार हो ।सो ।२०।
महियल मइ यश ताहरो सो०, कहतां नावै पार हो । सो० ।
गुण अधिका गच्छराज ना सो०, केता करूं वखाण हो ।सो ।२१।
रास सरस इम आदिस्यइ सो पूज्य तणउ निरवाण हो ।सो०।
माव धणइ परमोद सु सो०, करज्यो खेम कल्याण हो ।सो०।२२।
'भाद्रव सुदि इग्यारसइ' सो , थिर शुभ थावर वार हो । सो० ।
'मानविजय' सीस इम भणइ सो 'कमलहरष'सुखकार हो ।सो ।२३।
भाति अधर्वतउ 'आगरइ सो , खरतर संघ सुखकार हो । सो ।
सुख संपत देज्यो सदा सो० वरि मन शुद्ध विचार हो ।सो ।२४।
भणता गुणता भावस्यु सो रास सरस इक चित्त सो० ।
नवनिधि सिद्धि महिमा घणइ सो ,था(य)इ जन्म पवित्र हो ।सो ।२५।

॥ इति श्री श्री जिनरत्नसूरि निर्वाण रास समाप्तम् ॥

सं १७११ वर्षे कार्तिक सुदि ७ दिने सोम वासरे लिखितं पाटण मध्ये मालजी कामसी कस्य लिखितं ॥ साध्वी विद्यासिद्धि साध्वी-समर्थसिद्धि पठनार्थं । पत्र ३

(बीकानेर बृहद्-ज्ञानभंडार)

श्री जिनरतनसूरि गीतानि

(१)

काल अनन्तानन्त एहनो ढाल—

'श्री जिनरत्न सूरीश', पूज्य पाटवी हो मुझ मन रंग सही।
देखण हुंस दीदार, माहरइ चतुर्विध हो श्रीसंघ आनउ उमही ॥ १ ॥
गुरुया श्री गच्छराजा, खरतर गच्छ मई पूज दीपइ सदा।
जगपइ अधिक पडूर, जिण गुण दीठइ हो सुख होवइ मुदा ॥ २ ॥
'लूणिया' वंश विख्यात साह 'तिलोकसी' हो कुल सिर सेहरउ।
तासु देवि मल्हार हंस तणी परि हो सद्गुरु अवतरयउ ॥ ३ ॥
'पाटण नयर प्रसिद्ध श्री 'जिनराजइ' हो मई दीख आपीयइ।
संवेगी सिरदार अधिकउ जाणी हो गुरु पद थापियउ ॥ ४ ॥
गुण जिसउ पूनिमचंद वाणि सुधारस हो निज गुण बरसतउ।
करतउ उग्र विहार, भव्य जीवानइ हो नित प्रतिबोधतउ ॥ ५ ॥
जाहरो त्रिभुवन माहि सम्यक आगम हो मन सूधी धरइ।
गुणधर वीर जिणन्द तेह तणी परि हो उपदेशो करइ ॥ ६ ॥
(ग्रम) मइ भविजन मांक, गुरु मुख देख्यां हो पाप सवे टल्या।
'रामविजय' गुरु शिष्य, 'रूपहर्ष' भणि हो वंछित सुख फल्या ॥ ७ ॥

(२) राग—ढाल—नायकारो

श्री गच्छ नायक सविषइ रे श्री जिनरत्न सूरिंद रे। सुगुणनी।
पूरब मइ बपाइ माविया रे इम, जाणो मन आणंद रे सुगुणनी॥१॥

भावउ तुम्ह गुण वेस मइ रे भाव० । भा०
'छाजिया' वंसइ छत्रपती रे, विशोकसी' साह मल्हार रे ।सु०।
'तारादे' उरि हंसलउ रे लाल, कामगवी अनुहार रे । सु० ।२। भा०।
श्री 'जिनराज सूरीसरु' रे, सोहइ दीपइ पाट रे । स० ।
चढ़ भलवी बइरागीयउ रे लाल, कलि गौतम नउ भाट रे ।स०।३।भा०।
सौख्य करि भूमण्डल समउ रे, रूपइ वइर कुमार रे ।स०।
पालइ पंच महाव्रत रे लाल, खेम वत नहीय लिगार रे ।स०।४।भा०।
वाणी सुधारस वरसतउ रे, उपगइ भवि मनुहार रे । स० ।
आगम सूत्र भरव भरयउ रे लाल, श्री खरतर गणधार रे ।स०।५।भा
श्री संघ हरष मउछव घणउ रे, वंदिवा तुम्हारा पाय रे । स० ।
सुख सुख कमल निहालिवा रे लाल, चाहइ घणउ राणाराय रे ।स ।६।
'जिनराज' पाटइ थिर जयउ रे सुगुरु एक आसीस रे । स० ।
'खेमहरष' मुनि इम भणइ रे, लाख जीवउ कोडि वरीस रे ।स०।७।भा

(६) राग—मल्हार, ढाल व दुलो री

'श्री जिनरतन सूरिंदा, दीपइ सुख पूनिम चंदा। सद्गुरु वंदउ पै ।१।
'लूणीया' वंस विराजइ दिन २ प अधिक दिवाजइ । स० । २ ।
'पाल्ण' मई पद पायउ, सब श्रावक जन मन भायउ । स । ३ ।
'तिलोकसी साह मल्हारा 'तारादे' उरि अवतारा । स० । ४ ।
गुणे गौतम गणधारा गुरु रूपइ वइरकुमारा । स । ५ ।
सीमइ तउ थूलभद्र सोहइ, छत्रीस गुण मन मोहइ । स० । ६ ।
आगम अरथ भंडारा, जिण शासण मइ सिणगारा । स० । ७ ।

कर दाहिण सिर थापइ गहनइ रे,ते नर पामइ वंछित भाथि रे ।२।श्री०
इंदि उपद्रव कोम हुवइ किहां रे जिहां जिनि विचरइ श्री गछराज रे।
घरि २ मंगल होवइ नवनवा रे भावइ भावठि सगली भाज रे ।३।श्री०
धन-धन श्रावक नइ वलि भाविका रे भावइ भावि सुणइ उपदेस रे।
पामी धरमलाभ गुरु मासिका रे,थाता सुखनइ भाणि निवेस रे ।४।श्री०
ओसा नयणे बीजा गच्छपति रे, ते नावइ जुगवर तोहरी जोडि रे।
दमूया कोडि मिल्इ जउ एकठा रे,तउकिम भायइ सूरिज होडि रे।५।श्री०
श्री'जिनरतन' भावेमइ भाविया रे, रंगइ 'राजनगर' चउमास रे।
कमणे-* सगुरु तणे पदवी लही रे विद्यु विधि प्रासादमउ पुण्य प्रकास रे ।६।
'नाहटा'वंसइ भइमल'"तेजसी"रे,देव गुरु भगती माता तास रे।
हरखई 'कमतूरां' उछव करी रे, सोभा वधारी जगमई खास रे।७।श्री०
कुल उजवालक 'गणधर' गोतमइ रे 'सहस करण' सुपीयार दे' नंद रे।
सुप्रसन्न हुइ ओलइ जिण सासुहुउ रे तइसा जाणइ तोहरा वंद रे ।८।
भ्रू शशि गिर अविचल जांलगइ रे तां लगि प्रतपउ गच्छाधीश रे।
वाचक'रूपहरख'सुपसाउले रे 'हरखचन्द' पमणइ अधिक जगीस रे।९।

इति श्री गुरु गीतम् (सं० १७१ भासू वदि ८ बीकानेर लि०
पत्र २ हमारे संग्रहमें)

(३)

जीहो पंथी कहि संदेसडउ जीहो पूज्यजी नइ पाइ लागि । जीहो० ।
गुरु दरसन तू दरसतां जीहो जागस्यइ पुरा भागि । १ ।

---

*मानजीकृत गीतमें भी
चतसुख (इ)मीयुम्ली रे जपत पदवी वाणि ।
वाइड़ वड़त वापमो रे, करेज्यो वचन प्रमाण । ४ । मे ।

सगुरु मर वंदु श्री 'जिनचन्द्र'
जीहो अमृत सारणी सम ना जोहो सांभळ्या दुख जाय।
जीहो तिण कारणि तू जाइ नइ जाह। करेज्यो वचन प्रमाण ।२।जी०।
वचन प्रमाण कीधा हुंता जी, घर माहि नवि निधि थाइ। जी०।
गुरु प्रणम्यां सुख संपजइ, जीहो कुमति कदाग्रह जाइ। ३। जी०
'बीकानयरइ' जाणीयइ र जी० बहु रिधिनउ भंडार। जी०।
निगगाम मांहि दीपतउ जी 'महमकरण' सुखकार। ४। जी०।
'राजलदे' कुखि उपनउ जी हो नामइ 'श्री जिनचन्द'। जीहो।
बइरागि तिणि व्रत लीयउ, मनि धरि अधिक आणंद। ५। जी०।
विद्या सुरगुरु सारिखउ जी हो रूपइ वइरकुमार।
श्री 'जिनरत्न' पाटइ सही, बहु गुणवन्तउ दातार। ६। ब०। जी०।
चिर जीवउ गउ राजीयउ, खरतर गउ मउ इन्द्र। जी०।
पण्डित 'धरमसी' इम कहइ जी, प्रतपउ ज्यां रवि चन्द्र। ७।

---

(४)

सुगुरु वधावउ मुहव मोतियां, श्री 'जिणचंद' मुणिन्द।
मकरउ करम करि सामला, जाग कि पूनम चन्द ॥ १ ॥ सु० ॥
लघु वय संयम जिण लीयउ, मूल धरम मउ जाग।
पूज पद पायउ जिण परगड्उ, पूरव पुण्य प्रमाण ॥ २ ॥ सु० ॥
श्री जिनरतन सूरि सइ हथइ श्री संघ तणइ समक्ष।
पाटइ थाप्या द्रम सुं मति मम्न जाणि नइ मुख्य ॥ ३ ॥ सु० ॥
बापड़ा बंसइ थिर जयउ 'सहिमू' शाह सुजन।
मात सुपियार जनमियउ महुका चदइ धन धन्न ॥ ४ ॥ सु० ॥
थया 'जिन कुशल सूरि' सानिधइ प्रतिपउ कोडि वरीस।
वधपइ वास्य गुरु वधा 'कल्याणदत्त' दइ आसीस ॥ ५ ॥ सु० ॥

(५)

पंचनदी साधन कवित्त

उछली अल अकल बोल, कल्लोल दिखंतो।
वहती चढती वेल प्रगट अत्याग दिखंती।
ममरदे भयभीत ममकती तने मिढंती।
पड़ती जुड़ती पवन ना मनम मड रुसेंठती।
जप जाप आप परताप जप, सुरि मन्त्र साविध सकल।
'जिनरतन' पाट 'जिणचन्द्र' सुगन पंच नदी' साधी प्रबल। १।
॥ कवित्त पंचनदी साधी तिण समय रो (१८ वीं शताब्दी लि०)

वाचक अमरविजय गुण वर्णन

कवित्त

साच शील संतोष, साधु सज्जन सकजाह।
करण मधुर वचन विपुल विद्या वरदाह।
'उदयतिलक' गुरु आप हरष सुं दीधो बोध दिन।
पुन्य धान निज परमि, चोपटे कीधो विमल चित्त।
सज्जन सुभाव सुगुर सुं सदा ख्यात इन भूम सकल।
वाचक वड़ो वरसेन वर, 'अमरसिंह' सुप्र यश अचल ॥१॥
(जयचन्द्रजी के भण्डारस्थ उपरोक्त पत्र से)

श्री जिनसुखसूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहर के सौजन्य से)

जिन सुखसूरि गीतम्

(१)

ढाल'—रसोयानी

मदु मिलि सूख भावउ मन रली गावो गुरु गच्छराय । सोभागी० ।
जिधि सुं वंदो 'जिनसुख सूरि' नइ जसु प्रगम्या सुख थाय ।सो०।१।म
'बहरा' गोत्र विराजइ मनि भला, 'रूपचंद' शाह मल्हार । सो० ।
'रतनादे' माता उर ऊपनउ, खरतरगच्छ सिणगार ।२। सो० ।मदु०।
श्री 'जिनचंद्र सूरीसर' सोहमइ थाप्या अविचल पाट । सो० ।
'सूरत' विहर श्री संघ श्री सागइ, सुविहित मुनि जन थाट ।३।सो०।
चारित्र लपुवय मांहे आदरयउ, तप जप सु यहु लीन । सो० ।
आगम अरथ विचार समुद्र समउ, विद्या चउद प्रवीण ।४।सो०।।
सोभागी गुण रागो अति घणुं बहु बरणी गुण खाणि । सो० ।
कठिन क्रिया सुविहित गछ नायक, मीठी अमृत वाणि ।।५।।सो०।।
सोम वदन करि चंद सुहामणा प्रतपइ तेज दिणंद । सो० ।
रूप कला करि अधिक विराजतउ मोहइ भविजन वृन्द ।।६।।सो०।।
सूरि गुणे छत्रीसे शोभता बड बखतो बड मान । सो० ।
लोक महाजन माने बड बडा राउ राणा सुलतान ।।७।।सो०।सदु०।
दिन २ वधतो दउलति सु अपइ, कीरति देस प्रदेस । सो ।
सुगम चिहुं संघ चारड विसतरउ, भाग अधिक सुविशेष । ८ सदु०।

संघ मनोरथ पूरण सुरतरु, 'जिन सुखसूरि' महंत । सो० ।
इणपरि 'सुमतिविमल' असीस द्यइ, पूरवइ मननी रे खंति । ६सु०॥
॥ इति श्री 'जिनसुख सूरि' गीतम् , श्राविका कागीजी वाचनार्थं ॥
(तत्कालीन लि० पत्र २ हमारे संग्रहसे)

(२)

उदय थयो घन घन दिन आजनो, प्रगट्यउ पुण्य पडूरो जी ।
थया आचारिज चढ़ती कला, नामे 'जिनसुख सूरो' जी ॥उ ॥१॥
'सूरत' शहरे हो जिनचंद सूरिजी, थाप्यो आपणो पाटो जी ।
महोत्सव गाजे वाजे मांडिया, गीतांरा गहगाटो जी ॥ उ ॥ २
'पारिख' शाह भला पुण्यातमा, 'सामीदास' 'सुरदासोजी' ।
पद ठवणो कीधो मन प्रेम सुं वित्त खरच्या सुविलासो जी ॥उ ॥३॥
रूड़ी विध कीधा राती जुगा साहमी वत्सल सारो जी ।
पहरूं कीधी पहिरामणी सहु संघ मह जोकारो जी ॥ उ ॥ ४ ॥
संवत 'सतरै बासठे समे उच्छव बहु 'आसाढो' जी ।
'सुदि इग्यारस पद महोत्सव सख्यो चंद कल्प जस वाढो जी ॥उ५
'सहि धा' 'वहुरा जगि सलहिये, 'पीचो' मल परसंसो जी ।
मात पिता 'रूपचंद' 'सरूपदे' हेहनइ कुल अवतंसो जी ॥ उ० ॥६॥
प्रणपो पगु पमा शुग गच्छपति श्री जिनसुख सुरिन्दो जी ।
भो 'परमसी' कहै श्री संघ मइ, सदा अधिक करो आणंदो जी ॥ उ ॥७

——

जिनसुखसूरि निर्वाण गीतम्

(२)

ढाल—झूमकडानी

सहीयां वाछो गुरु वांदिवा, सजि करि सोल सिंगार ।
सहेली माव सुं केसर मरीय कचोलडी, महि मेली घनसार ।स०।१।
'सतरेसे असीये' समे 'जेठ विसन' जग जाण । स० ।
अणसण करि आराधना पाम्यौ पद निरवाण । स० । २ ।
'जिनचन्द सूरि' पाटाधरू, 'श्री जिनसुख सूरिन्द' । स० ।
दरसण दोलति संपजे, प्रणम्यां परमानंद । स० । ३ ।
पद थाप्यौ निज हाथ सुं, 'श्री जिनभक्ति' सूरीस । स० ।
सान्चे संघ घन साहि सुं इद कहै आसीस । स० । ४ ।
'रिणी' नगर रलीयामणो श्रावक सहु विधि जाण । स० ।
देस प्रदेसे दीपता मन मोटै महिराण । स० । ५ ।
थूंभ तणी थिर थापना मांडै करै महिराण । स० ।
हरष घणे संघ हुवु मु आमद अधिको आण । स० । ६ ।
'माह सुकल छठ' नै दिनें शुभ महूरत सोमवार । स० ।
'श्री जिनभक्ति' प्रतिष्टिया हरख्या सहु नर नार । स ।७।
सहीय सहस्रे सवि मिली पहिर पटम्बर चीर । स० ।
गुण गावो गछराय ना मेर तणी पर धीर । स० । ८ ।
मामे नवनिधि संपजे आरती अलगी थाय । स ।
कर जाड़ी 'वेलजी' कहै, दुति ? खग पाय ॥ सहेली माव सुं० ९ ॥

जिनभक्तिसूरि गीतम्

ढाल—मायाने मेंल्ह माने प वेरी।

'जिनभक्ति' जतीसर वंदो चढतो कळा दीपति चंदो रे। जि०।
खरतर गच्छ नायक राजे, छत्रीस गुणे करि छाजे रे। १। जिन०।
श्री 'जिनसुख सूरि' सनाथे, दीधो पद आपणे हाथे रे। जि०।
श्री 'रिणीपुर' संघ सवायो महोछव कीधो मन भायो रे। २ जि०।
'सेठीया' वंसे सुखदाई, श्री जिन धर्म सोम सवाई रे। जि०।
'हरिचन्द' पिता धर्मधोरी 'हरिसुखदे' जाये हीरो रे। ३। जि०।
कपुरचय जिण चारित लीधो, सद्गुरु नें सुप्रसन्न कीधो रे। जि०।
विद्या बहु हुइ वरदाइ पुन्ये गुरु पदवो पाई रे। ४। जि०।
प्रगन्यो जस देस प्रदेसे, बरते आग्या सुविसेसे रे। जि।
बांटे सहु देस बधाइ खरतर गच्छपति सुखदाई। ५। जिन०।
संवत 'सतरे अठ्यासी जेष्ट वदि बीज पुण्य प्रकासी रे। जि०।
साहु सुजस रिणी संघ साध्या, इम कहे 'धर्मसी' उपाध्या रे। ६ जि०

॥वाचनाचार्य सुखसागर गीतम्॥

राग —कखारी

वाचनाचार्य 'सुखसागर' वंदिये,
सुगुण सोभाग अमु अंगि सवायो ।
मह वच्छराज परि मारि नर नित नमै,
कठिन किरिया करण इलि कहायो ॥ १ ॥ वा० ॥

पूज्य आदेस वलि 'थंभणा' वांदिया,
नयरि 'खंभाइतै' अधिक सुख वास ।
संघ नी आप सुखमाग करि पड़िकम्मा,
चतुर चित रंग सूं चरम चौमास ॥२॥वा०॥

करिय चौमास अति ग्यान आणंद सूं,
निज वचन रंजव्या सकल नर नारी ।
ज्ञान परमाण निज आयु तुच्छ जाणिन
साधु मन भावना वलिय संभारि ॥ ३ ॥ वा० ॥

प्रथम पारसि मनै वलिय (सं० १७-५) 'मिगसर', तणी
कसिण चवदस' अनै 'माम' (शुभ) वार ।
ईंचा चहुं एहवा वचन सुण सुं कह्यो
रूप गण आगना एह आधार ॥ ४ ॥ वा० ॥

करिय अणसण अनै वलिय आराधना
सकल जीव राशि शुभ चित खमावी ।
मन वचन काय ए त्रिकरण शुद्ध सुं
साध परि भावना सार भावी ॥ ५ ॥ वा० ॥

एक मन भजन भगवंत नउ करतहिं,
सुणतहिं उत्तराध्ययन वाणि ।
सावधेत आप भो संघ बैठा थकां,
स्वर्ग गति लहिय पुण्यवन्त प्राणी ॥ ६ ॥ वा० ॥
वाजियां गंभजो सरूख मप रंभणो
प्रगट घन ज्ञान बहु भाण पूरो ।
दुःख दालिद्र हरि सुख संपत्ति करइ,
सुप्रसन्न संघनां हुइ सनूरो ॥ ७ ॥ वा० ॥
भाग बहु भेटयइ राग मन छाइ नइ
गाइ नइ सुगुण शोभा बढ़ाई ।
कुंकमे केसर पूजतां पादुका अधिक,
धरि ऋद्धि नव निद्धि आई ॥ ८ ॥ वा० ॥
सप सुखदाय मन भाय सुख सागरा,
सागरा नित्य समइ शीस नामी ।
गणि 'समयसुन्दर' नित सुगुरु गुण गावतां
सिद्धि नव निद्धि बहु वृद्धि पामी ॥ ६ ॥ वा ॥
॥ इति गुरु गीतम् ॥

हीरकीर्त्ति परम्परा

॥ कवित्त ॥
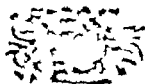
वा० हीरकीर्त्ति स्वर्गगमन गीतम्

श्री 'हीरकीरति' वाचक प्रणमो, सुर मणि सुरतरु सुरधेन समो।
भवियण दुख दोहग दूरि गमइ, घरि नवनिधि छिलमो रंग रमइ ।१।
सुख संपति दायक उपगारी सेवक जन नइ सानिध कारी।
इणभइ गुरु गोयम गणधारी, नित ध्यान धरूं हुं बलिहारी। २।
गुरु चरण करण बहु व्रत पालइ, तप जप करि असुभ करम टालइ।
पूरब मुनिवर मारग चालइ, निज व्रत सुगुरु मनि संभालइ। ३।
श्री 'गोलवछा' वंसइ दीपइ, तेजइ करि दिनकर नइ जीपइ।
महियल मंडल महिमा जागइ, सेवक लुछि पाये लागइ। ४।
सिद्धंत भरय गुण भंडार छ(ब) काय पखइ प्रति हितकार।
सुमिती समय मद्दव सार मुत्ती संजम तप निरधार। ५।
अणशीघइ न छीयइ साच धरइ, आकिंचन (वहा) विध सील हरइ।
आहार सभा दूरय टालइ बयालीस सुद्धि क्रिया पालइ। ६।
शास्या जगगुरु जिनचन्द्र तणइ, महिमा जस वाम संसार भणइ।
गणि 'दानराज' पाटे उदयो वाचक वर हीरकीरति जयो। ७।
संवत 'सतरइ गुणतीस' समइ रहिया चौमासउ अंत समय।
'श्रावण सुदि चउदस' जाणइ ध्यानइ करि आउखो आणइ। ८।
चोरासी योनि ख़मावि सदू छद्म पाप अठार आलोय सहू।
अपने सुगन मणशन आदरीयो निज चित्तमें ध्यान परम धरीयो।९।
नवकार महामंत्र संभाळ्यो गति असुभ करम दूरे टाळी।
अणशन पहुर बि आराधी, सुर झांणइ सुर पदवी साधी। १०।

सतरह 'गुणतीसइ' 'माह' मासइ, 'तरस' दिवसइ मन उल्हासइ ।
'वदि' मंगल सुधि शुभ वार, पगला 'थाप्या' जयजय कार । ११ ।
श्री 'पद्महेम' वाचक प्रवर, श्री 'दानराज' सोहाग कर ।
श्री 'निधानसुंदर' 'रूपराज' युग, प्रणमो श्री 'हीरकीरति' सदा ।१२।
पगले गुरुना पगला सोहइ (पंच) परमेसर जिम मन मोहै ।
ममता सेवक दरसण दीजे सुख संपति वले उन्नति कीजे । १३ ।
पांचे गुरुना पूज्यां ! पगला, सुख भारति रोग ! टलइ सगला ।
घरि पदार्थ आइ मिलइ कमला गुरु सूंपे थाक सहु सबला । १४ ।
पय पूजो गुरु हिय भाव करी कमर चन्दन सु चित धरी ।
सद्गुरु सुपसायइ रंगरली, छहे पुत्र कलत्र समृद्ध वली । १५ ।
दिन दिन आणंद सुमति दाता गुरु चरणे अहनिस जे राता ।
मनवंछित पूरण कामगवी, सेवक सुखदायक अधिक छबी । १६ ।
माचइ साहिब तुं हिज मरो हुं खिजमतगार सदा तरो ।
सुपसायइ गुरु नव निद्ध संपज्जइ, गणि 'राजधाम' सेवक जंपइ । १७।

॥ इति श्री ॥

उपा० भावप्रमोद स्वर्गगमन गीतम्

मं० १

जिसौ भाव योगी जती भोग तत्त जांणतौ, वैण वखाणतौ अमृत वाणि ।
सयणीयो तिसो भवसाय २ सिव, अंपे करिहिति मनि अति आणी ॥१॥
व्याकरण तर्क सिद्धंत वेदन्त री ओह घरतो सदा मद सुमो ।
भाव शिष 'भाव परमोद' यो भाव शुद्ध,
हु तो भाखो तिसो मरण सुमो ॥२॥
गछै चोरासीये म हो कोइ इये गुणि श्रमण मुनीयो न को एम सीधो ।
(भावपरमोद) जिम सुख समाधि मये,
कीधों अणसण साह स्वर्गलोक लीधो ॥३॥
वरसि 'जुग वेद मुनि इंद १७४४ 'शुक 'माह वदि',
पख मनिपात जुग सात वखिसी ।
वड पाठक तणी घणी महिमा वसु
रात दिन वडा कवि पास रचिसी ॥४॥

मं० २ कड़खामें

विरद वखाणी जे श्री 'भावपरमोद' गुरु रो भाग्य ।
जग मांहि जाणिजे जी परधान पुण्य प्रमाण । टेक
परधांन सुजस निधान प्रगट, आपने मुनि थान ।
असमान मान गुमान अमली, मांण दीयण सु दांन ।
उनपों नायमा नहम अनहा पूजतें निम मांप ।
दीपतो सरव गुण माण दीपे, दाखरे दीवांण ॥१॥वि ॥

व्याकरण वेद पुराण बहुतो, मक्ख जैन सिद्धन्त ।
प्रधान आगम धरम विद, उपधान जोग विधन्त ।
आगम पैंतालीस अरथे कथ कोइ न कोण ।
पाम्क पदवी धार प्रभि(वि) में, धरवे अहिनाण ॥ २ ॥ वि० ॥
सुरमद्र भारद जिसौ धारम, सील मय सरुप ।
'जिनरतन' सूरि पहूरि जैनु, हवे बुद्धि अनूप ।
तिम चंद रै पिण छंदि पथलो, बहिम भागवाण ॥
पाट पति छत्रपति पाव पूजें, रीझवे रावराण ॥ ३ ॥ वि० ॥
जिनराज सूरि' मिहाज जिन धरम भट्टारक मुनिमूप ।
शिष्य नाम 'भावविजे' समा भ्रम गच्छ चोरासी रूप ।
'भाव विनय' विणरे पाट अभिजे बहिम गुण वखाण ।
पनम वंस रागईम आपम महाहिजे सुविहाण ॥ ४ ॥ वि ॥
वांचना वाणि वखाणि अविरल, अमृत धारा गम ।
नव नवा नव रस वयन निरुपम जलहरा ध्वनि जम ।
जम सुजस चंदण वाम पसरी प्रसरी रे परिमाण ।
रवि चंद ने घ्रू(व) मेरु रहिसी सुजस रा सहिनांण ॥ ५ ॥ वि० ॥
जिम वास वय प्रह वाह चारित्र, छोयो अभी प्रम याग ।
वप नग्ग पम मन में न वंछ्या, भला पंडित भाग ।
मन पंच मावन मेम जन मन वाप रूड़ भलाय ।
मुखाया नहीं कारिहन सुर हूं अंत रै अनमाण ॥ ६ ॥ वि० ॥
मायावन्ता मोपैन उपरे, द्रढ़ मरमा प्यार ।
जनि भाव कपट मिथ्यात्मूक, ग्राम नहीम सिणगार ।

नहीं कोइ वैर विरोध किणसु, मोह नहीं अतिमांण।
परलोक इंद्रापुरि पहोतो पचविध भव (पद)माण ॥ ७ ॥ बि० ॥
संवत 'सतरेसे चमाळ' 'माह वदि' गुरुवार।
'पंचमि' तिथ वदि पहुर पिछले, सीख मति करि सार।
मरि वीस खमी चरम मव चवी, देवता जिम ठांण।
तप जप थे परताप पर-भवि पहुंचस्यै निरवाण ॥ ८ ॥ बि० ॥
इति श्री भावप्रमोदोपाध्यायनामस्थानस्यायामुपरि अष्टकं संपूर्ण।
(कृपाचंद्र सूरि ज्ञान भंडारस्थ गुटकेस)

जैनयती गुण वर्णन

पढ़े तो समस्त न्याय मन्थमें दुरस्त देखे
पारसीमें रस्त गुस्त पूरे छत्रपती है।
किस्त करे तपकी प्रशस्त धरे योग ध्यान
हस्त के विलोकने कुं सामुद्रिक मती है।
पूज के गृहस्थक बखत जु मदक है,
पुस्त है कलाम हस्त करामात रती है।
'लेतसी' कहत पद्मसमम सबरदार,
जैनमें अवर्यस्त ऐस मस्त 'जती' है।
(१८ वीं शताब्दी लि पत्र नय में)

कविवर जिनहर्षजीकी हस्तलिपि

(कविके स्वयं रचित स्तवनादि
संग्रहकी प्रतिका मध्य पत्र)

कविवर जिनहर्ष गीतम् ।

॥ दोहा ॥

सरसति चरण नमी करी, गास्यु श्री ऋषिराय ।
श्री 'जिनहरष' मोटो यति, समत अनुसार कहिवाय ॥१॥
मंद सलोने से थयो, उपगारी सिरदार ।
सरस जोडिकला करी, कर्यो ज्ञान विस्तार ॥२॥
उपगारी जगि एहवा गुणवंता ग्रन धार ।
तहना गुण गातां थकां हुं सफल अवतार ॥३॥

वाडी ते फुली गामनी ॥ देशी ॥

श्री जिनहरष मुनीश्वर गाईये पाइये वंछित सीद्ध ।
दुसम काल माहि पणि दीपती किरिया हुती कीध ॥१॥ श्रीजि० ॥
शुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता मायारे मोस ।
रोस घरइ नही चइस्यु मुनीवरु, सुंदर चित्तई नही सोस
॥२॥श्रीजि०॥
पंच महाव्रत पाळे प्रेमस्यु, न धरे द्वेष न राग ।
काम क्रोध थकी परिहरइ निरमल मन में वइराग ॥३॥श्री॥
सरल गुणे दूरि हठ जेहनें, ज्ञाने सळता (र) दूरि ।
ममता मान नही मनि जेहने समता साधु तु नूर ॥४॥श्री॥

मंदमती ने ज्ञान बंभावता, मापता ज्ञान नो पंथ ।
मोहिम्ब मांहि मन राखतो निरलोभी निर्ग्रंथ ॥५॥श्री॥
सत्रुंजयमहातम मादि मला, तेहना कीधा रे रास ।
जिन स्तुति छंद छप्पया चउपइ, कीधा मला मला मास ॥६॥श्री॥
निज शक्ति इम ज्ञान विस्तारीयु, अप्रमत्त गुणना निवास ।
इय सुमति मुनिवर चालता, मायासुमति स्यु माप ॥७॥श्री॥
एपगासुमति माहारई चित्त धरयु, नही किहांई प्रतिबंध ।
निरीह पणे मन सूलू जेहनु, नही को कदाग्रहनो पंथ ॥८॥श्री॥
गच्छनो ममत्व नही पण जेहनें, सदा निस्पृह वैन ।
शांतो दांत गुणे अलंकर्‍य, शोभागी सत्यवंत ॥९॥श्री॥

(२)

श्रीजिन्नहरप मुनीश्वर वंदीइ, गीतारथ गुणवंत ।
गच्छ चुरासीइ जाणइ जेहने, मानइ सहु जग संत ॥१॥
पंचाचार आचारइ चालता नव विध ब्रह्मचर्यधार ।
आवश्यककादिक करणी आमइ करता शक्ति विस्तारि ॥२॥
आज कालिनांर कपटी बगा मांडी हाक हमाल ।
निज पर आतमने पूतारता, पडो म परपोरे चाल ॥३॥
आज तो ज्ञान अभ्यास अधिकहैं किरिया तिहां अणगार ।
ते 'जिनहरप मांहि गुण पामीइ निंदे तेह गमार ॥४॥
आप मर्म अज्ञान क्रिया करी त्रा(स?)कूकइ जिम सांड ।
हुं गीतारथ इम मुख मालवता, सुखनु आइर पांड ॥५॥

कामिनि कांचन तजवा मोहियां, सोहतु तजवु गइ ।
पणि मन अनुमति तजवी दोहली 'जिनहरषई' तभी तेह ॥६॥
गोसाइायिक पणि सुम भावो मल्या, श्री'वृद्धिविजय' अणगार ।
म्यावि उपन्नइर सेवा बहु करी, पूरण पुण्य भण्डार ॥७॥
आराधना कराबइ साधुने, जिन आज्ञा परमाण ।
दश सुरासार योनि जीव भावना, ध्याता सकुंस ध्यान ॥८॥
पंच परमेष्टीर चित्तइ ध्याइतां गया स्वर्गे मुनिराय ।
मांडवी कोथोरे रुडा श्रावक, निहरण काम कराय ॥९॥
'पाटण' माहिर धन ए मुनिवर जिणया काळ विशाय ।
अर्हतपणे त्रण भव समइ ताइ, भरता शुभ मति रेल ॥१०॥
धन 'जिनहरष' नाम सुहामणु, धन २ ए मुनिराय ।
नाम सुणावा निस्तइ सायतु, 'कवीयण' इम गुणगाय ॥११॥

॥ कवियण कृत ॥

देव विलास।

(देवचंद्रजी महाराजनो रास)

सुरत्न प्रेमराजी बने,—प्रोल्लासन चिद्रूप
ते तेम रि(द्दि?)द्धये आस्ता 'आदिनाथ अवतंस ॥ १ ॥
'कुरु' देशें कल्याणनिधि, उत्पन्न 'श्रीजिनशान्ति',
शांति थइ सवि जनपदे कार्तस्वर जस कान्ति ॥ २ ॥
ब्रह्मचारीचूडामणि, योगीश्वरमें चंद
तारक राजुलनारिनो, प्रणमु 'नेमिजिणंद' ॥ ३ ॥
यशनामिक इत्य वाहर्त पुरीसादाणी विरुद,
वामाकुल वरसागरीयो 'पारसनाथ' मरद ॥ ४ ॥
जिनशासननो भूपति 'वर्द्धमान जिनभाण
दूसम पंचम आरके, सकल प्रवर्ते आण ॥ ५ ॥
पंच परमेष्ठि जिनवरा प्रणमु हुं त्रिणकाल,
अन्य एकोनविंशति जिना तस प्रणमुं सुविशाल ॥ ६ ॥
सरसती स(र)सती गुणकर्ने 'माघ' कविने साध्य,
'कालिदास मूरख प्रते कीधो कवि कीधा पद्य ॥ ७ ॥
'मल्लवादी गुरु सांनिधे जीत्या बौद्ध अनेक,
गुण हरिसणे पद अम्बिनी उत्पन्न थइ विवेक ॥ ८ ॥

तिम मातना सहाय्यथी, गाओ मर्त्र 'देवचंद्र',

'देवविलास रचु मई खरतरगच्छ दिणंद ॥ ९ ॥

कोइ देवाणुप्रिय कहे, ए स्तवना करे किम,

स्या ? गुण कोइ वरणवे दखुं ? बोल जिम तिम ॥ १० ॥

पंचमकाल 'देवचंद' मा, गुण वासिकर्ने यत्र,

यथार्थपणे (कहो) मुज प्रते तो सत्य मानु मत्र ॥ ११ ॥

सांभलि मूढशिरोमणि, भाख्या गुण कहे जेह,

प्रशंस किम कोविद करं, गुण कहुं सामलि तेह ॥ १२ ॥

'पंचमकाले देवचंद्रजी', गच्छहस्ति जे तुल्य

प्रभावक श्रीवीरनो, थयो अमुला बहुमूल्य ॥ १३ ॥

रत्नाकरसिंधु सदश, चतुर्विध संघ जिन भूप,

कह्यो गया ते सत्य छे सांभल ताम स्वरूप ॥ १४ ॥

ढाल—कपुर हाये अति उजलुंरे ए देशी ।

श्री देवचंद्रजीना गुण कहुंरे, सांभल ! चतुर सुजाण ।

षटद्रव्य गुणनी प्ररूपणार कहवाने सावधानर ।

भविक सांभळो मूकी प्रसाद । टक । ॥ १ ॥

प्रथम गुणे सत्य कल्पनार१ बीजे गुणे बुद्धिमान ।

त्रीजे गुणे ज्ञानवंततारे३, चोथे शास्त्रमें ध्यानरे ४ ।भविका०। सां ।२।

पंचम गुण सिद्धकम्पनारे५, गुण छट्ठे नहीं कोधद ।

संजम नो ते आपीयेरे मही भनंता भी योधर ।भवि०॥ सां० ॥३॥

मार्दवर नाही गुण सातमेरे ७ आठमे सूत्रनी व्यक्ति ८ ।

जीवद्रव्यनी प्ररूपणार जाण तेहनी युक्तिरे ॥ भ० ॥ सां० ॥४॥

रि वज्रय टाळीओ र, अम्नाशे गुणे जेह १८
ा वेसे गुण कीर्तिनी र प्रवर्त्त विख्यातनुं गेह र । म०। मां० १६ ।
कीर्तिस्तुति गुणगण र, आसानबाहु देवचंद्र १६ ।
या उद्दार वीसमे गुण र अवधि आण सुरन्द्र रे । म० ।सां० ।१७।
म प्रेक्षनागने शिरमणि र तेहना गुण छे अनन्त ।
मदवचंद्र मणि मंजुर,(मस्तकर)एकवीस गुण महंत र।म०।सां०।१८।
माधिक पुरुष आगे थयारे, अधुना तहने तुल्य ।
। गुण बावीस स्थूलकार सूक्ष्म गुण बहुमूल्य र । म० । सां० । १६ ।
म हाल ए गुणतणी र, कवियणे भाखी जेह ।
मत्यमती दस्ये ते मदहर पहुंचा पुरिस योद्धा जगरेहर ।म०।सां०।२०

दुहा—

मस्त हाल ए गुणतणी कवियण भाखी जेह,
विपक्षीने आणवा मनमें आणे तेह । ॥ १ ॥
गुणथी सर्वत्र प्रगट छे, देश विदेश विख्यात
कवियणनी अधिकाइता स्युं ? भाखे छे वात । ॥ २ ॥
कवियण कहे एक जीभथी किम गुणवर्णन थाय
सागरमें पाणी घणो गागरमें (म) समाय ॥ ३ ॥
क्षा कोइ भवि पुछस्ये कवण ज्ञाति कुण जाति
मातपिता किहां पहर्ता, ते संभळावो भांति ॥ ४ ॥
देस किहां किहां जन्मम् कुण गुरुना ए शिष्य
गुण श्रीपूज्य चारे हुवा, मस्रो सहुटे सीपि दीक्ष ॥ ५ ॥

विद्याविशारद तिहां थया, किम सरखती प्रसन्न,
किहां साधना कीधी भली गुणमां चित्त प्रसन्न ॥ ६॥
देवचन्द्रना वचनथी, किम ग्रन्थाभ्यासे रम्य,
किम भूपति पाये नम्या, ते विरतंत कहुं सम्य ॥ ७ ॥
सब गुण गणनी धारता, माये कविजण जेह,
सांभलजो भविजन तुमे, पावन थाये देह ॥ ८ ॥

देशी हमीरानी ।

पाली आकारे थिर सखी जंबुद्वीप विदीत । विवेकी ।
तेह में भरतक्षेत्र रम्यता, भारत देश सुप्रतीत ॥ वि० ॥ १ ॥
भविअण भाव धरो सुणो ॥ वि० ॥
मरुस्थल देश तिहां सुन्दर, तेह में विकानेर' दुंग ॥ वि ॥
तेहने निकट एक रम्यता ग्राम अछे शुभ चंग ॥ वि ॥ २ ॥ भा० ॥
रिद्धिवंत महाजन घणा रिद्धेकरी सस्मृद, ॥ वि० ॥
समारोहखुनी घोषणा सुशीला जन सुबुद्धि ॥ वि० ॥ ३ ॥ भा० ॥
'ओसवंश' ज्ञाति जाणीये 'लुणीयो' गोत्र सुजात ॥ वि ॥
साह श्री 'तुलसीदासजी' धर्मबुद्धि विख्यात ॥ वि० ॥ ४ ॥ भा ॥
'तुलसीदास नी भार्या 'धनबाई' पुन्यवंत । विवेकी ।
शील आचार सोभतो सरलस्वभाव गुणवंत ॥ वि ॥ ५ ॥ भा ॥
यथाशक्ति धर्म क्रियतां व्यवहारनु च धाम ॥ वि० ॥
दम्पती प्रीतिपरम्परा धर्मे खरचे दाम ॥ वि ॥ ६ ॥ भा ॥
सुविहितगच्छमें जाणजो वाचकमें सिरदार ॥ वि ॥
वाचक रामसागर सुधी जैन काशी मनोहार ॥ वि ॥ ७ ॥ भा ॥

अनुक्रमे गुरु तिहां आवीया, वांदवा वस्पति ताम ॥ वि० ॥
'मनसह' भो गुरुने कहे सुणो गुरु सुगुणनु धाम ॥ वि०॥ ८॥धा०॥
पुत्र हस्ये जेह माहरे बोहराबीस घरी भाव ॥ वि० ॥
यथार्थ वचन नी अल्पना, सुगुरुए आप्यो प्रस्ताव ॥ वि ॥६॥धा०॥
विहार कर गुरु तिहा थकी गर्भ वधे दिन दिन ॥ वि० ॥
शुभयोग शुभमुहूरते, सुपन लह्यु एक दिन ॥ वि ॥ १० ॥ धा० ॥
शय्यामें सुता थका किंचित् जागृत निंद ॥ वि० ॥
मेरु पर्वत उपरे, मिळी चौसठ इन्द्र ॥ वि० ॥
जिन पडिमानो ओच्छव करे, मिळीया देव ना वृन्द ॥वि० ।११ ।धा०।
भर्या करता प्रभुतणी पहेलु सुपने दीठ ॥ वि० ॥
ऐरावण पर बेसीने, वळता सहूमे वान ॥ वि० ॥ १२ ॥ धा० ॥
पहेलु सुपन ते देखीने थया जागृत तत्काळ ॥ वि० ॥
मरुणोदय थयो तरणिने, मनमें थयो उजमाळ ॥ वि० ॥१३॥ धा०॥
उत्तम सुपन जे देखीए, पण प्राकृतने पास ॥ वि० ॥
कहेवु मुजने नवि घटे, जे थोडे तेह फळे आस ॥ वि० ॥१४॥धा०॥
द्वितीय वळी 'गुरुदेव नो, सुपन लह्यु वळु चन्द्र ॥ वि ॥
मुखकजमें प्रवेसतां, ते थयो नरमो इन्द्र ॥ वि ॥ १५ ॥ धा० ॥
जनिक्ष पखे ते चंद्रमा, मुखमें करतो प्रवहा ॥ वि ॥
मूरखन फळ पुछता, भाजन थयु सुविवेक ॥ वि ॥ १६ ॥ धा० ॥
यादस तादस आगळ, सुपन तणो अवदात ॥ वि ॥
कहे (ते)मे पश्चात्ताप उपजे प शास्त्रे विख्यात । वि० । १७ । धा ।

अनुक्रमे विहार करतामका, श्री जिनचंद सूरीश। ॥वि०॥
तेह गामे पधारीया, जेहनी मवड जगीस। । वि० । १८ ।धा०।
विधिस्युं वांदे दपनि, 'धर्मनाद' कहे तास। । वि० ।
इस्त गुभो स्वामी तुम तणो, आगल सुलतुं धाम(बास?)वि । १९ धा०
एक पुत्र विद्यमान छे अन्य सगर्भा दीठ। । वि ।
जुनशाने आपीओ, पुत्र तुम्हे हसे इष्ट। । वि । २० ।धा०।
ए बीजा पुत्रने अम देज्यो पण याचकने दीधु वचन । वि० ।
बीजी ढाळमें कवि कहे, मन मां(न्या) नामु मन्न ।।वि०। २१।धा०।

दूहा—सोरठा

दंपती श्री गुरुपास, करजोडी करे विनती,
तुम उपर विश्वास, यथार्थ कहो श्रीस्वामीजी ॥ १ ॥
सुपनाध्यायना मन्त्र कह्या गुरुए तत्क्षिण
सत्य बोले निग्रन्थ शुभाशुभ ते जोइने ॥ २ ॥
श्री गुरु शिर धुणावीयु चमत्कृति थइ चित्त,
सामान्य नर ए सुपन स्युं ? पण इहां पइवि श्रीति ॥ ३॥
हे देवानुप्रिय ! सांभलो सुपन तणो जे मर्म,
शास्त्र अनुसारे हुं कहुं, नहि थासु अमे व्यर्थ ॥ ४ ॥

ढाळ—मनमोहना जिनराया

तुम घरणीये गजपति दीठो तेणे शास्त्रे कह्यो गरीठो रे।
कुंवर थास्ये भाग्यवंत हारे सुपनप्रमाणे वास्येरे।
गज पर बेसीने वात बलि अमसिर सवे विघमरे। ।१ ढुं ।

गुरु देखी हर्षित थया, सहुराम्यो पुत्र रतन,
धर्मध्यान गुरु तब दीये, करजो पुत्र जतन ॥ २ ॥
वाचक श्री 'राजसागर' कोविदमें शिरताज
दिन केतलायक गया पछी मन चिंत्यु शुभकाज ॥३॥
दीक्षा देवी शिष्यने, शुभ महुरत जोइ जोस,
शुभ चोघडीए देखीने तो थाये संतोष ॥ ४ ॥
संघ सकलने तेडीने दीक्षानी कही वात
वचन प्रमाण करे तिहां, उलस्यां सहुनां गात्र ॥ ५ ॥
शुभ ओछव महोछवे, दीक्षा दीये गुरुराय,
संवत 'छपने' जाणीये, प्रभु दीक्षा दीये गुरुराय ॥ ६ ॥
श्री 'जिनचंद्रसूरीश्वरे', वली दीक्षा दीधी सार
'राजविमल' अभिधा दीए, श्रीजीनो घणो प्यार ॥७॥
'राजसागरजी'ये हितधरी, सरस्वतीकेरो मंत्र
आपु शिष्य 'देवचंद्र ने' मनमें कीधो तंत्र ॥ ८ ॥
गाम 'बेलाडु' जाणीये 'वेणातट' सुरम्य
भूमिगृहमें राखीने साधन कर तारतम्य ॥ ६ ॥
तब प्रसन्न सरस्वती रसनामें कीधो वास
भगवानो उद्यम करे श्री गुरुसाह्मन्य उल्लास ॥ १ ॥

देशी—वारी म्हारा साहिबा

देवचंद्र अणगारने हो लाल, शुभ शास्त्र तणा अभ्यासरे
देखीने ठरे लोयणा ।
प्रथम षडावश्यक भणे हो लोल, के(ते?)पछी जैनसैद्धीनो वासरे । दे०॥१॥

सूत्र सिद्धान्त मणावीया हो०, चोरसिनजोए मारूया जोहरे। दे०
कर्मग्रंथ पोषक थया हो, टाल मिथ्यामतनुं गहर। २ दे०
अन्यदर्शनना शास्त्रनो हो०, मणवाने करता चयमरे। दे०
वैयाकरण पंचकाव्यना हो०, अर्थ कर करावे सुगम्यरे। ३ दे०
नैषध नाटक ज्योतिष क्षिस हो०, अन्यादृश जोया कोपर। दे०
कौमुदी महाभाष्य मनोरमा हो पिंगल स्वरोदय तोपर। ४ दे०
मास्या (भाष्य ?) मन्थ जे कठिणता हो०

तत्त्वारथ भाष्यप्रमुखवृत्ति हो। दे०
'हेमाचार्य'कृत शास्त्रनार, हो०, 'हरिभद्र' 'मस कृत मन्थ विस्तरे।५ दे०
षट्कर्मग्रन्थ अकाशता हो, कम्मपयडीये प्रकृति संबंधर। दे०
इत्यादिक शास्त्रे भला हो०, जैन आम्नाये कोष सुगंधर। ६ दे०
सकलशास्त्रे ज्ञायक थया हो० गहन थयु मद मुद्र ज्ञानरे। दे०
संवत् सतर चुमोतरे (१७७४) हो० वाचक 'रामसागर' देवजोकरे।७ दे०
संवत् सतर पंचोतरे (१७७५) हो पाठक ज्ञानधर(म) देवलोकर।
मरट '(मरोठ?) मामे गुरुये मलो हो आम 'आगमसार' कीधो मन्थर।
विमलदास पुत्री दोय भली हो० 'माणजी' 'अमाइजी शुभ पुन्यर।८ दे०
दाम पुत्रीने कारण हो०, कीधो मन्थ ते आगमसाररे। दे०
संवत् सतर सीतोतरे (१७७७) हो गुजरात आव्या देवचंदर। ९ दे०
पाटण मांहि पधारीया हो०, व्याख्याने मिल जनवृन्दर। १० दे०
कवियण कह चावी हाथर्म हो०, कहो पद पिरल त प्रमिदरे। दे०
आगल हवे मृदि मांमकारे हो धमकरणीनी वृद्धिर। ११ दे०

दूहा

पाटणमें देवचंदजी, जैनागमनी वाणि
माची मवीजन आगल, स्याद्वाद गुण बखाण ॥ १ ॥
'श्रीमाली' कुलसेहरो, नगरसेठ विख्यात,
राय राणा जस आग्या करे, प्रमाण सर्वे वात ॥ २ ॥
नामे 'तेजसी' 'दोसीजी', धन समृद्धे पूर,
श्रावक 'पूर्णिमागच्छ नो —जैनधरमनुं नूर ॥ ३ ॥
कोविदमें नमेसरो श्री 'भावप्रमसूरि'
पुस्तकनो संग्रह बहुल,—शास्त्र मण्या जिहां भूरि ॥४॥
ते गुरुना उपदेशथी, मराव्यो सहसकूट,
'तेजसी 'दोसीने' घर, कर्द्धि समृद्ध अखूट ॥ ५ ॥
ते सेठ 'तजसी' घरे, 'देवचन्द्र' मुनिराज,
तब तिहां शेठ प्रत्ये कहे, हे वैरागुप्रिय ताज ॥ ६ ॥
सहसकूटना सहस जिन, तेहना जे अभिधान
गुरु मुखे तमे सांभलया हस्ये के हवे धारस्यो कान ॥७॥
मीठे वयणे गुरु कहे, सांभलीयुं तब सेठ,
स्वामी हुं जाणुं नहीं चमत्कृति बह ग्रह ॥ ८ ॥
एहवे अवसरे तिहां हुता, संवेगी सिरदार
'ज्ञानविमल सूरिजी' तिहां गया सेठ उदार ॥ ६ ॥
विधिस्युं वांदी पुछीयुं सह(स)कूट सहस्त्रनाम
अमसमें श्री पूज्यकहा, निःसाहसो शुभधाम ॥ १० ॥

तब 'ज्ञानविमलजी' गुरुजी बोल्या, तुमे शास्त्र आगम नवा खोल्यार ।
तमे तो मरुस्थलीयाना वासी, तुमे वाक्य बोलोने विमासीर ॥स०८॥
शास्त्र अभ्यास कर्यो होय जेहने पूछीये वाक्य ते तेहनेरे ।स०।
तुमे एह वार्तामां नही गम्य, अमे कहीये ते तुम निसम्येरे । ॥स०६॥
इम परस्पर वाद करतां, तब सेठ बोल्या हर्ष भररिर ।स०।
स्वामी तमे अयथार्थ न बोल्य, एह वातनो करवो निचोडोर ॥स०१०॥
'ज्ञानविमल' कहे सुणो 'देवचंद', तुमने पर्यानो उपदेशरे ।स०।
जो तुमे बोलो छो तो तुमे लखो, सहस्रकूट जिन नाम संभलावोरे ॥११॥
तब 'देवचंद' कहे सुगुरु पसाये, सब शुचि हवे न वासायर ।स०।
तब 'देवचंदजी' शिष्यने सांहमुं,जोइ लाबो सहस्रजिननुं मांगुंरे।स०१२।
सुविनीत सूक्ष्मने विद्वान गुरुभक्तिमांही निधानरे ।स०।
मनरमणा रजोहरणबो, पत्र लावे गुरुजीने तत्पर । ॥स०१३॥
'ज्ञानविमलसूरि' तब वांची एह 'रात(त्रि) तर' मारो फांचीरे ।स ।
सदगुरुजुगनो एह छ शिष्य जाननी अगमांहि छे भक्तिकरर ॥स० १४॥
शास्त्रसमयारोये सहस्रनाम सारयुक्त ते माम सुक्षमरे ।स०।
मौन रहीने पुछ ज्ञान तुमे कहना शिष्य निधानरे ।स० १५।
'उपाध्याय राजसागरजीना शिष्य, मिठा वाणी जेहनो सुगुरु ।स०।
सघला गुण करी वाद शम 'देवचंद्र' ने भाव्या मानरे ।स० १६।
तुम वाचकनो जैनना कामी, तुमे जैनमा थंभ छो गाजीर ।स०।
बहिर पर छे ते(न?)मास मन्य।तुमे पण किम न होये कम्पर ।स०१७।
इणिपरे परस्पर युक्ति मिलीया, सह 'तेजसी' आ काज करीयार ।
सहस्रकूटनो नाम समक्रमिण(द्धि?)देवचंद्रे कीधा प्रमसिरे । (प्रसिद्धि)

तेहवे देसना सांभळो श्रावक श्राविका जेह।
वाणी जल आषाढ मय, वरसे ध्वनि घन गाह ॥ ९ ॥
पापस्थान अढार छ, ते सूणो मविमन्न,
जिनवरें भाख्यां जे अछे ते सुणीये एक मन्न ॥ १० ॥

ढाल—मनगी रहेनी ए देशी

वीर जिणेसर मुखथी प्रकास, पापस्थान अढार,
तेहथी दूर रहो भवि प्राणी, मु(मुं)गोये आगार अणगार ॥ १ ॥
जिनवर कहेजी, कहेजी २ जिनवर कहेजी । टेक ।
पापथानिक पहिलु तुमे जाणो जीवहिंसा नवि करीये,
बेंद्री तेंद्री चोरिद्री पंचंद्री अप मां मन नवी घरोये ॥ २ ॥ जि० ॥
एकेंद्रियादिक अनंतकायादिक तेहना करो पचखाण,
एकेंद्रीय तो ससारि नी करणो अनुमोदना नवि आण ॥३ ॥ जि०॥
अणगारी ने सर्वनी जयणा पञ्चखाणना त्राता,
कोइ जीवने दुःख नवि देवे उपजावे बहु साता ॥ ४ ॥ जि ॥
मरि कहेता दुःख उपजे बहु ने मारे किम नवि होय,
सुभूमने नरकगति पाम्यो ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ति जोय ॥ ५ ॥ जि ॥
मृषावाद पाप थानिक बीजुं जुठुं नवी बोलीजे
वैर विसावें (विरुधावे) मृषा वचन बोले, परतीवारो किम कीजे ।६ जि।
झुठ बोल्याथी वसु नृपतिनुं सिंहासन गुंई पडीयुं
काल करीने दुरगति पोहतो झुठ वचन ते नडीयुं ॥ ७ ॥ जि० ॥
झुठुं मिठु लागे जगने कडुयां फल छे तेह
आगारी अणगारि सुणजो झुठ न बोलस्यो रेह ॥ ८ ॥ जि० ॥

मिथ्यात्वशल्य काढीने प्राणी, समकितमांहि मलीये
जिनवर भाखित वचन स(र)द्दहीये, भव भव फेरा टलीए ॥२०॥जि०॥
नैगम संग्रह भाद देइ,—सप्तनयनी (ने?) (मत) भंगी,
तहनी रचना करता गुरुजी, अपवादने उत्सर्गी ॥ २१ ॥जि०॥
च्यार निखेपे सूत्र वाचना, नाम द्रव्य ठवण भाव,
कुमति ठवणादिकने उवखे, किम निक्षेप जमाव ॥ २२ ॥जि०॥
जीव अजीव पुण्य पाप आदे दइ, श्री नवतत्वनी' वाचा,
भइ भेद करीने भविने, समजावे अर्थ ते साचा ॥ २३ ॥जि ॥
गुणठाणां चतुर्दश कहीये मिथ्या सास(स्वाद?)न मीस्से,
ए आदि प्रकृतियो बधी, कर्मग्रन्थयो लहीस्ये ॥ २४ ॥जि०॥
देशना वाणी देवचंद्र भाखे भवियणने हितकारी,
छट्ठी ढाल ए कवियणे भाखी सुगुरु मल्या उपगारी ॥ २५ ॥जि०॥

दूहा

मगसइ सूत्रनी वाचना, सांभले जनना वृन्द
वाणी मिठी पियुष सम भाखे श्री देवचंद ॥ १ ॥
'माणिकलालजी' आदिमी, हुंइकमो मन पास
तेहमे गुरुए बुझव्यो टाली मिथ्यात्वनी वा(वा?)स ॥ २ ॥
नौ(मु?)तन चैत्य करावीने पवोमा थापी तासि(भावा)स,
देवचंद उपदेशथी ओछव हुवा उल्लास ॥ ३ ॥
श्री 'शांतिनाथनी पोल' में भूमिगृहमें बिंब,
सहसफणा आदे देइ, सहसकोट जिनबिंब ॥ ४ ॥

तहनी प्रतिष्ठा तिहां करी, धन खरचाणां पूर,

जैनधरम प्रकासीया, दिन दिन चढते नूर ॥ ५ ॥

संवत सतर ओगणीस (सत्यावीस?) १७२६ में, चातुमास खंभात,

तिहांना भविने सुखम्या, सेढ्ना (बहु) अवदात ॥६॥

ढाल—रसीयानी देशी

श्री देवचंद्र मुनींद्र ते जैन नो, सर्व सदृश थया सत्य । सुज्ञानी,

दीक्षा में श्री शत्रुंजय तीर्थनो, महिमा प्रकाश नित्य । मु० ।

तीर्थ महिमा शत्रुंजयनी सुणो ॥ १ ॥

श्री सिद्धाचल महिमा मोटको श्री ऋषभ जिणंदनी वाणी मु० ।

मुक्ति गमननुं तीरथ ए अछे शास्त्रने साथ प्रमाण ।मु० । २ ।तीरथ०।

दुःखम आरो पंचमा जिन कह्या, धर्मक्षमति महम वत । मु० ।

पार पामन श्री शत्रुंजयगिरि, एहनुं कुंण कहे रहस्य ॥३॥ ती० ॥

कांकर कांकरे साधु सिद्ध थया मरते कीयार उद्धार ॥ मु० ॥

क्रमाय (?)' आद दद्र जाणीए मास उद्धार उदार ॥ ४ ॥ ती० ॥

गर्भ माहात्म्यनी प्ररूपणा गुरु तणी सांभळ भावकजन । मु० ।

सिद्धाचल उपर नवनवा चैत्यनी जीर्णोद्धार कर सुदिन्न ।मु० ५ ती०

भावनाना तिहां सिद्धाचल उपरे, मंडाण्या महाजन्न । मु० ।

द्रव्य खरचाये अगणित गिरि उपर, धर्मीजन धायेरे मन्न । मु ।६ती०

संवत सतर(१७८१)एकासीये, कयासीय स्वामीये कारीगर काम । मु०

चित्रकार सुधला काम ते हद कराव्यारे नाम ।मु ॥७॥ ती० ॥

फिरीने श्री गुरु राजनगर मध्ये तिहां भविने उल्लास । मु० ।

जिनमो 'मुरति' पंदिर श्री मध्य भामामानोरे विलास ।मु० ८ ती० ।

श्री देवचंदजी 'सुरति' बंदिर, कीधा भविने उपगार । सु० ।
'पंचासिये' 'छयासीये' 'सतासीये', आणीये युक्तितणा जे भंडार ।सु०९
'पालीताणे' प्रतिष्ठा करी भली, दरव्यो द्रव्य भरपूर । सु० ।
'वसुमाय चैत्य 'शत्रुंजय'उपर, प्रतिष्ठ्या'देवचंद'भी सूरि ।सु०१०।ती०।
पुनरपि श्री गुरु 'राजनगर' प्रत्ये आव्या चोमासु रे सार । सु० ।
संवत 'सत्तर(८८)अठ्यासीय'मांहि, पंडित मांहि सरदार ।सु०।११ती०
वाचक श्री 'दीपचंदजी' प्रत्ये, वप(र)नी व्यापिनी (?)व्यापी । सु० ।
'आसाढ' सुदि बीज दोने ते आणीये पुहता स्वर्ग प्रधान ।सु०।१२ती०।
'तपगच्छ मांहि विनीत विचक्षण, श्री 'विवेकविजय मुनींद्र । सु० ।
मयका चयम करता विनयी घर्नु, धमने भणावे 'देवचंद्र' ।सु०।१३ती०
गुरुसरस मन आणे 'विवेकजी' सिद्धमतिमें निसदिन्न । सु ।
विनयादिक गुण श्री गुरु देखीने 'विवेकजी' उपर मन्न ।सु १४ती०।
अमदावाद मे एकसमे भलो, 'माणंदराम' साह श्रेष्ठ । सु० ।
'रतनभंडारी ना अमेस्वरी जेहना मनसेरे इष्ट । सु० । १५ ।ती ।
भागुरुने मली 'आणंदराम ने चर्चा वाचरे नित्य । सु० ।
चर्चाए ते जीत्या गुरुभीए, आणंदजी' गुरुपरि प्रीति ।सु०।१६ ती०।
'कलियुग मांही सातमी छाक ए, पंचम आरारेमांहि । सु० ।
एहवा पुरुष थोडा प्रभुमार्गना, प्रकाश करवाने उच्छाहि । सु०।१७ती ।

दूहा

साह श्री आणंदरामजी गुरुनी गुरुता देखि
भंडारी रत्नसिंघ आगले, प्रसंशा करी सुविशेष ॥ १ ॥

फिकर मत करो 'भंडारीजी', प्रभुजी माहरो करस्येरे ।
जीत बात थाहरो मत होस्ये, करणी पार उतरस्येरे ॥धन०॥१०॥
चमत्कार भी जिन आम्नायनो, गुरुजीये त दीघोरे ।
फतह करीने आम्यो वहिरम, थांको कारज सीधोरे ॥धन०॥११॥
रतनसंघजी' सैन्य लेइने, युद्ध करवाने सन्मोरे ।
'रणकुंभी' साथे तोपखाने, चाल्यो न करे दामोरे ॥धन०॥१२॥
परस्परे युद्धे 'रणकुंभी' हार्यो, थइ भंडारी नी जीतरे ।
ए सर्व 'देवचंद्र' गुरुपसाये, हमाचार्य कुमारपाल प्रीतरे ॥धन०॥१३॥
'घोलका' वासी सेठ 'जयचंद्रे' 'पुरिसोत्तम' योगीरे ।
गुरुने अभी पायो छगाव्या जैनधर्मनो भोगीरे ॥धन०॥१४॥
योगींद्र एक गिर 'पुरुषोत्तम ने, (नो?) मिथ्यात्व छल्यने काढ्योरे ।
कुमतिने जिनधर्म मार्गमां भुगतिये मन तस वाल्योरे ॥धन०॥१५॥
'पंचासुर' 'पालीताणे' आम्या, 'छनुंये' 'मथाणुंये' 'नवानगरे'रे ।
'ढूंढक टोला 'देवचंद्रे' जीत्यां चैत्य थाप्यां सर्व शहरेरे ॥धन०॥१६॥
'नवानगरे' चैत्य जे मोटां, ढुंढके जे हता लोप्यांरे ।
अथा पूजा निवारण कीधी त सपला फिरी थाप्यांरे ॥धन०॥१७॥
'परघरी' गाम में ठाकुर शुभम्यो गुरुनी आज्ञा मानेरे ।
'कविमण' भाठमी ढाळ ते रची, ए बात न जाणो छानेरे ॥धन०॥१८॥

दोहा ।

पुनरपि 'पालीताणे' गुरु, पुनरपि 'नुतन' गाम मांहि ।
संवत (१८ २ १) अढार 'दोय' त्रिगमा' राणावाव' चमांहि ॥ १ ॥

वज्रना मघोक्ते रोग मगंदर जेह ।

टाल्यो तत्क्षिण गुरुमिई, गुरु उपर बहु नेह ॥ २ ॥

संवत 'अष्टादश च्यार'में, 'भावनगर' मझार ।

मैता 'ठाकुरसी' मल्ले, हु अकन्ना बहु पास । (प्यार ?) ॥ ३ ॥

श्री 'देवचंद्रे' गुणवी, शुममार्गिनो वास,

वज्रना ठाकुर तणी, मत कीधी जैन पास ॥ ४ ।

संवत 'अष्टादश च्यार मे 'पालीताणो' गाम ।

मुगी टाली गुरुजीये श्रीगुरुजीने नाम । ॥ ५ ॥

संवत अष्टादश 'पंच' 'षष्ठ'में 'लींबडी' गाम उदार ।

'दोसी वोहोरो' साहा 'पारसी', अन्य श्रावक मनोहार ॥ ६ ॥

साहा श्री 'जयचंद' शाणोय साहा 'जेठा' बुद्धिवंत ।

'रहो कपासी आदि देइ मणाव्या गुरुइं ठत ॥ ७ ॥

गुरुइं सहु प्रतिबोधीया, जैनधर्ममें सत्य ।

गुरु उपगार न वीसारता धर्मे सर्वे चित्त ॥ ८ ॥

'लिंमडी' 'ध्रांगध्रा' गाम ए, अन्य 'चुडा' वली गाम

प्रतिष्ठा त्रिण थइ जिननी द्रव्य खरच्या अभिराम ॥ ६ ॥

'धांगध्र जिनबिंबनी थइ प्रतिष्ठासार

'सुखानंदजी तिहां मल्या 'देवचन्द्र'नो प्यार ॥ १ ॥

देशी — ललनामी छे ॥

संवत अढारने आठमें', गुजरातिथी आवयो संघ ललना ।

श्रीगुरुना गुण उपदेशथी शत्रुंजयना अभंग ॥ ०० ॥ १ ॥

गुरुचरणां ते सद्दहो ।।टेक।।
गिरि उपर चढ़ता थया, खरच्यां बहुलां द्रव्य ।
पूजा करता बहुविधि, अनुमोदे ते भव्य ।। छ० ।।२ गुरु०।।
वसी सोरठ जातरा, करता ते भविजन । छ० ।
'अढारश' 'नव' 'दशमें', श्री गुजराति चोमास ।। छ० ।।३ गुरु० ।।
संवत 'दश अढारहों', 'कचरासाहाजोई' संघ । छ० ।
श्री शत्रुंजय चीयनो, साथ पधार्या देवचन्द्र ।। छ० ।।४ गुरु० ।
साह 'मोतीया 'लालचंद', जाणीइ जैनमारगमें प्रवीण । छ० ।
श्राविका सबल ते भक्तिमां ज्ञानेश्वरीमां नहीं हीण ।।छ० ।।५ गुरु ।।
.. .. ।।६।।
संघमें श्री 'देवचन्द्रजी', अन्य व्यवहारीया साथ । छ० ।
श्री 'शत्रुंजय गिरि आवीया, लेवा धमनु पाथ ।। छ० ।।७ गुरु ।।
प्रतिष्ठा जिनबिंबनी गुरुविहु किधी तत्र । छ० ।
साठी सहस्त्र द्रव्य खरचीयो गुरु वचनें ते यत्र ।। छ० ।।८ गुरु०।।
संवत अढार इग्यार'में प्रतिष्ठा 'लींबडी' मध्य । छ ।
'कचराणे श्रावक ढुंकडी, कुशल्या खरची ऋद्धि ।। छ० ।।६ गुरु ।।
चैत्य कराव्यां सुंदर, जिन अर्चाना ठाठ । छ० ।
प्रभाविक पुरुष 'देवचन्द्रजी' भव्य पहुती मात ।।छ० ।।१० गुरु०।।
शिष्य सुविनीत पासे सदा, श्री 'मनरुप जी वृद्ध । छ० ।
विजयचन्द' बुद्धिये प्रवरता न्याय शास्त्रना पाठ ।।छ०।।११ गुरु०।।
वादी अनेक ते जीतीया गच्छ चोराशीना साथ । छ० ।
जाणे तर्कवादी सही, श्री 'देवचन्द्रनो' हाथ ।।छ० ।।१२ गुरु०।।

'मतरूपजी' ना शिष्य थाई 'वस्तुजी' 'रायचन्द' । छ० ।
गुरुभक्ति आज्ञा धरे सेवामें सुखचन्द ॥ छ० ॥ १३ गुरु० ॥
संवत 'अढार ना आरमें', गुरु आप्या 'राजरंग' । छ० ।
गच्छनायक वेदावीआ, महाछव कीधा अभंग ॥ छ० ॥१४ गुरु०॥
'वाचकपद' देवचन्द्रने, गच्छपति दीधे सार । छ० ।
महाजने द्रव्य खरच्यो बहु, एह संबंध उदार ।छ० ॥१५ गुरु०॥
नवमी ढाल सोहामणी, कवियण भाखी एह । छ० ।
एक त्रीस गुण वर्णवा कहिनों नाव छेह ॥ छ० ॥ १६ गुरु० ॥

॥ दूहा ॥

वाचक श्री 'देवचन्द्रजी', देशना पीयूष समान
जीव द्रव्यना सद्दहणु नय उपनय प्रमान ॥ १ ॥
ग्रंथ मध्य 'हरिभद्र' ना, वाचक 'जस' कृत जेह,
'गोमटसार दिगंबरो', वाचना करे दिन मेद ॥ २ ॥
'मुलताने' 'देवचन्द्रजी' आवी गच्छ 'बीकानेर'
चोमासा गुरु शिक्षा करी, ज्ञानगुणी समसर ॥ ३ ॥
नयचक्र गहने कथा, टीका सघन लेह शुद्ध
देसनासार नयचक्र, शुभ 'ज्ञानसार' नी भक्ति ॥ ४ ॥
महदटाक्ष सुविधी कमप्रय वर्षा वद
तेहनी टीका आदि देइ ग्रन्थ कथा बहुनेह ॥ ५ ॥
'राजनगरे' 'देवचन्द्रजी' 'दोसीवाडा' आदि
वाचा लोक व्याख्यानमें सामछता उत्साद ॥ ६ ॥

एकदिन वायुप्रकोपथी वमनादिकनो व्याधि,
अकस्मात उत्पन्न थइ शरीरे थइ असमाधि ॥ ७ ॥
शास्त्र मरण दोय कह्यां, पंडित मरण छे जेह
बाल मरण तो दुसरो, उत्तम पण्डित मृत्यु मेह ॥ ८ ॥
सब शरीरनि क्षीणता (क्षीणता?) शिथिल थयां अंगोपांग,
बुद्धि करीने जांणीई, अनित्य पदारथरंग ॥ ६ ॥
पुद्गल तो अनित्यता अनादिनो स्वभाव,
मूरख तेपरि रंग धरे पण्डित धरे विभाव ॥ १० ॥
निज शिष्योन तेडीने दे शिक्षा हितकार,
मुझ अवस्था क्षीण छे, ए पुद्गल व्यवहार ॥ ११ ॥

ढाल—निंदलडी वैरण हुय रही, ए देशी

शिष्य शिरोमणी जाणीई, 'मनरूपजी' हो वाचक गुणवंत,
चतुर चाणाक्य शिरोमणि गुरु उपर बहु भक्तिवंत,
धन धन ए गुरु वंदीए ॥ १ ॥
धन्य पहली चतुराइने गुरु बैठा हो श्रावक करे सेव,
पद्कज सवे जेहना, आज्ञा माने हो नित नित मेव ॥ २ ध० ॥
विनयी विचक्षणे पण्डिते,गुणार्द्रतन हो जेहनु अधु गात्र,
श्रीगुरु मनमें चितवें मुझ 'मनरूप' हो शिष्य पणु सुपात्र ।३। ध ।
'मनरूप' शिष्य विद्यमानता, 'रायचंदजी' हो गुरुका पूज्य
गुरुसवामें विनयी घणुं विद्याना हो जेह जाणे गुज्झ । ४ । ध० ।
श्री 'रूपचंद' शिष्य सुशीलता 'विजयचंदजी' हो पाठक गुणयुत
विद्या भरे हस्ति मदभरो मेघध्वनि सम हो चतुर्थोपमा छेत्र
द्वितीय शिष्य विजयचंदजी , तर्कवाद हो जीत्या वादीवृन्द । ५ ।ध०।

दशमी हाल सोहामणी, नाम धरीमु हो गायो देवविलास।
आसन्न सिद्धि के थया कोइक भवे होस्ये मुक्तिनो वास। १७ ध०

दुहा

सात आठ भव पहवा, आ धरसें एह जीव,
भाव वात्स्यकाळ विर्ध्वसमा धर्म योवनमें सहीव ॥१॥
अनुमाने करी जाणीये द्रव्यथकी विशुय,
सात आठ भव उर्ल्लघीने, शिव कमळाने पेख ।।२।।
प्रभु मारग विस्तारवा द्रव्य भावथी शुद्ध
विध आस्हादकारी थयो, जिनवाणीनी बुद्ध ॥३॥
श्री जिनबिंबनी थापना करवा निज सुबुद्धि,
च्यार निक्षेपा गुणस्युं, स्याद्वाद मान्ये शुद्ध ।।४।।
एक पाइय साथे सहस्र, तस थाके करामात
गाजी भई प जैननो, मिथ्यात्वी कीया मह्त ।।५।।

राग—धनाश्री पामी ते प्रतिबोध ए देशी

श्री देवचंद्र ऋषिराय रूपरे (२) पहोता ते सुम ध्यानधीरे ।१।
सूरय (सूर्य?)चंद्र ने इंद्र भवभिरे (२) दसी मन चिंते एहवुंरे ।२।
जिनशासमनो थंभ देवचंदर (२) अमरपुरीमें आवतारे ।३।
देस देसमां वात पोहोंतीर (२) मांभळी भवि विकसा थयारे ।४।
कल्पतरूसम एह देवचंदर (२) सरिसा पुरुष थोडा हस्येर ।५।
मस्तकें मणि इसी भेद गुरुनरे (२) वदन समय उज्ज्वी पडीरे ।६।
ते गद पुन्नी सम्य कोईलेरे (२) हाथे त आवी नहींर ।७।
महाजन शिल्य समुदाय भला थारे (२)स्तुप कराव्यो गुरुतणीर ।८।

कीधो देवविलास शुभविधेरे (२) जयपताका विस्तरी रे। ३१
संवत १८२५'अढार पचोस आसोसुदिरे'(२) अष्टमी' रविवारे रच्योरे
स्तोकमें देवविलास कोधोरे (२) किंचित् गुण ग्रहीने स्तव्योरे। ३३
थोड़ोओ छे अधिकार जो तरि (२) मंत्र आये मोटो धणोर। ३४
भणस्ये 'देवविलास' सांभलस (२) तस घरे कमला विस्तरैरे। ३५

कलस

श्री 'वीर' जिनवर 'सोहम' गणधर, 'जंबु मुनिवर अनुक्रमे,
'खरतरगच्छ उद्योतकारक, श्री 'जिनदत्त' सूर्योपम।
तास पाट 'जिनकुशल' सूरि, 'जिनचंद्र' (१) सूरि तसपट,
'युगप्रधान' नो बिरुद बेहनो मामथी दुःकृत कटे ॥ १ ॥
गच्छ सर्वभक्त उपाध्यायजी 'पुण्यप्रधान' (२) प्रधानता
सुमति धारी 'सुमति' (३) पाठक, 'साधुरंग'(४) वाचक भूता।
श्री 'राजसागर (५) उपाध्यायजी, 'ज्ञानधर्म' (६) पाठक सदा,
सुगुणी 'दीपचंद' (७) पाठकप, 'देवचंद्र (८) पाठक जय जया ॥२॥
मनरूप' वाचक (९) 'विजयचंदजी पाठकनो पद्‌ मानता,
'मनरूप पद्कज मेरुगिरिवर, 'रायचंद' (१) रवि उद्गता।
सुज्ञानवामें विनयवंत, बुद्धि युक्ति सुरगुरु
चंद्र सूर भू तार तारक, रहो अविचल जयकर ॥ ३ ॥
इति श्री देवचंद्रजीनो निर्वाण रास संपूर्ण

श्री जिनप्रभसूरिजी

॥ श्री जिनलाभ सूरि गीतानि ॥

ढाल—ऊंचो-नीची सरवरीयैरी पाल, एदेसी छइकलें ।

(१)

आज सुहावो जी दीह, आज नै बधावोजी अम्ह घर आंगणैजी ।
अंग उमाह्यो जो आज सद्गुरु हे आया आणन्द अति घणे जी ॥१॥
आवो हे सहियर साथ, सजि सजि हे सोल शृङ्गार सुहामणा जी ।
जंगम तीरथ एह वंदन कीजइ हो छीजइ दुख घणा जी ॥२॥
धन धन सोहज देस, धन धन गाम नयर ते जाणियइ जी ।
जिहां विचरै गच्छ राज, महा प्रतापी हे सुजस वखाणियइ जी ॥३॥
धन 'पंचायण' तात, धन 'पदमा दे' हो मात महीतलै जी ।
'बोहित्थ' वंस विख्यात कुल उजवालण पूज जी इण कलै जी ॥४॥
सवि सिणगार्या हे हाट, प्रोलि रचाई हो प्यार पाखती जी ।
पधारे सकोह जीह, श्री जिन-शासन महिमा दीपती जी ॥५॥
मिलिया हे महाजन लोक, उच्छव मंड्यो हो अति आडम्बरे जी ।
दै मन वांछित दान, याचकजन धन धन जस उचरे जी ॥६॥
गोरी गावै जी गीत, फरहर गयणंगणि धज फरहरइ जी ।
कोकिल वलि गज वाजि सूरिय वरंता हो आगल संचरे जो ॥७॥
दुन्दुभि ढोल दमाम भेरि भुंगल भेर नफेरीयां जी ।
वाजे वाजित्र सार फूलडे विधावई हो 'श्रीपूज' सेरिया जी ॥८॥
हीर भरे वलि चीर माणिक मोती हो चारोलै छना जी ।
पधारीजे पटकूल, मुनिपति आवे हो गज गति मलपन्ता जी ॥९॥

पूज पधार्या हे पाट अमिय समाणी हो वाणी वपदिसें जी।
सुणि सुणि श्रवण सनेह बहु नर नारी हे हियडइ हरसे जी ॥१०॥
जां शशि सायर सूर जां धुर मेरु महीधर थिर रहै जी।
श्री 'जिनलाभ' सूरीस, तां थिर प्रतपो हो मुनि'माणक'कहै जी ॥११॥

(२)

एक सन्देशो पंथी माहरो, आखें बीनतिजे करजोड़ । गछपति पूजजीहो
महिर करीनइ गच्छपति आविजें बांधणरो म्हांने कोड़ ।ग०॥१॥
बहिला पधारो 'चउकड़' देशमें श्री संघ जोवै थांरी वाट ग ।
ढोल म कीजै हो पूज इण बात री मानै सुणिवर थाट ।ग०॥२॥
'कच्छ' धरा सुं हो पूज्य पधारि नै, मारुधरा इण ठाह ग०।
म्हे दिण जाण्यो जिण थानै राखिया, विचही में विछमाह ।ग०॥३॥
'जेसलमेरा' श्रावक जोइनै, पूज रह्या चौमाह ग०।
मुंह मीठा सुं ममड़ो मोहियो जी, पूजा भावै दाह ।ग०॥४॥
म्हां तो कागल माहिला जी मोकल्या, किल किल करम सनेह ग०।
तो पिण पाछौ जा(व)ब न आवियो, पूज रहा निसनेह ॥ग०॥५॥
मनमें क्यामो गच्छपति हे धणुं सुणिवा थांहरी वाणि ।ग०।
नाम तुम्हीणो जिण नहीं वीसरु, थंदावो हित आणि ।ग ॥६॥
पाछोपर मानीजे माहरी वीनति श्री खरतर गच्छ ईश ग ।
चोकाणे चोमासा कीजिये श्री 'जिनलाभ' सूरीश ।ग०॥७॥
भरत मम्हीणी पूज्य जकपारिजो, सूरीसर सिरि ईद ग ।
बेकर जोड़ी त्रिकरण भाव सुं वंदे सुनि 'देवचंद' ।ग ॥८॥
॥इति श्री पूज्यजी री भास सम्पूर्णम् ॥ लिखितं पं० जीवन छांटे
स्याम मध्य काउरियां रै रास मध्ये ॥ शुभं भवतु कल्याण मस्तु ॥

(३)

जिन शासन शिणगारा वंदो खरतर गणधार हे ।

सहियों सद्गुरु वेग वधावो ।

सद्गुरु वेग वधावो, मिल मङ्गल भास मल्हावा हे ॥स०॥१॥

धन धन 'मारू' देश, धन 'बच्छ' मांडल वेश हे ॥स०॥

धन 'पंचायण' तात, धन धन 'पद्मादे' मात हे ॥स०॥२॥

'बोहित्थ' वंश सवाया जिहां पुण्य रत्न ए जायो हे ॥स०॥

'मांडवी' नगर मझार, हाय रया जय जयकार हे ॥स०॥३॥

पुरव निसाण छबह वाजे श्री संघ वधाए हे ॥स०॥

गावे मंगल गावें गोरयां भर थाल वधावें हे ॥स०॥४॥

श्री 'जिनभक्ति सुरिन्द्रा पाट थाप्या आणंद इन्दा हे ॥स०॥

निरुपम धन्ने नूर, जाणे ऊगो अभिनव सूर हे ॥स०॥५॥

प्रभु वय चारित छोनो गुण देखी गुरु पद दीनो हे ॥स०॥

सद्गुरु हूंतो सवायो, जिन खरतर गच्छ दीपायो हे ॥स०॥६॥

पूरबली पुण्याइ पामी मोटी पदवी पाइ हे ॥स०॥

पंच महाव्रत धारी, धोरी गच्छोरी वलिहारी हे ॥स०॥७॥

रूपे देवकुमार तरणा सवधि भगा भण्डार हे । स० ।

चाले पंचाचार, गुरु गोतम ॰ अवतार हे । स० ॥८॥

... ... ।

मीठी सद्गुरु वाणी, सांभलता मिले समाणी हे । स० ॥ ६ ॥

'श्री जिन लाभ' सुरिन्द प्रतपा जिम सूरिज चंद हे स०।

चिर प्रति अधिक आणंदा इम वमना हे आसीस हे ॥स० ॥१०॥

---

(४)

॥ श्री जिनलाभ सूरि निर्वाण गीतम् ॥

ढाल—आदि जिणिंद मया करो एहनी।

देस सकल सिर सोमतो अकबट सुथिर सुभाग्यो रे।

जिहां 'विक्रमपुर' परगडो तिहां प्रगट्या मुनि भाग्यो रे। १।

गुणवन्ता गुरु वंदीये। आंकडी०।

सुमती साह 'पंचायण', पदमादेवी' मन्दा रे।

'बोहिथ' वंश विभूषण, लाल अमोल अमंदा रे। २ गु।

श्री 'जिनभक्ति' सूरीसरु, श्री खरतर गछराया रे।

तासु संयोगे आदर्यो, संजम शोभ सवाया रे। ३। गु।

भरत सहित सद्गुरु दीयउ, 'लक्ष्मीलाभ' सुनामो रे।

बरस 'सढार चउडोत्तरे', पाम्यौ पाम्यौ पद आभिरामो रे। ४।

श्री 'जिनलाभ' सूरीसरू गच्छनायक गुणरागी रे।

पंचम काले परगडा, सुखधर सीम सोभागी रे। ५। गु०।

दैस विदेसे विचरता, बहु भविषण प्रतिबोधी रे।

सकल कलुसता टालता, आतम परम विरोधी रे। ६। गु,

नगर 'गुढे' गुरु आवीया 'बत्तीसे' चउमासे रे।

तिहां निज समय प्रकाशने पहुता सुर आवासे रे। ७। गु०।

चरण कमलकी थापना, मनिसरवंत विरामे रे।

दास 'क्षमाकल्याण' नौ बंदन हुमो सुभ काजे रे। ८। गु।

इति श्री जिनलाभ सूरि सद्गुरु गीतम (पत्र १ तत्कालीन संग्रहमें)

॥ जिनलाभसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीत ॥

(१)

ढाल—आज रो सुहानी स्वामी जोर बण्यो राज ।

'जिनचंद्र सूरि' गुरु वंदियै जी राज, वंदियै वंदियै वंदिय जी राज जि०
सहु गच्छपति सिर सहरोजी राज खरतर गच्छ सिणगार ।म्हांराराज।
श्री 'जिनलाभ' पटोधरुजी राज, 'ओस वंश' श्रृंगार ।म्हां।१।जि०।
लघु वय संयम आदर्योजी राज 'मरुधर' देश मझार । म्हांरा०।
अनुक्रम गुरु पद पामियाजी राज सूत्र सिद्धंत आधार ।म्हां०२।जि०
देश प्रदेश बन्दावताजी राज गया 'पूरब की देश' । म्हां०।
'समेत शिखर' पावापुरी जी राज, कीनी जात्र अशेष ।म्हां।३।जि०।
चौमासो कीनो तिहां जी राज मकसूदाबाद मझार ।म्हां०।
भव्य जन कूं प्रतिबोधताजी राज मोहो जगत उदार ।म्हां०जि०४।
आपरज पद सामता जी राज छत्तीस गुण अभिराम । म्हां०।
सुमत पांच कूं पालता जी राज, तीन गुपतिका धाम ।म्हां०।जि०५॥
छ काय का पीहर मळाजी राज सात महाभय वार । म्हां० ।
आठ प्रमाद महाबली जी राज दूर किया सुविचार । म्हां ।जि०।६॥
श्रावक बीकानेर का जी राज, वीनति करै वारा बार । म्हां ।
पूज्य जी इहां पधारियै जी राज महर करी गणधार । म्हां ।।जि० ७॥
वच्छावत कुल दीपताजी राज 'रूपचंद' जी को नंद । म्हां० ।
अमर कुमर परनाम्या जी राज गाज करा प्रभु चंद । म्हां ॥जि०।८॥
वरस अठार पचास में जी राज 'चद्र वसग' मझार । म्हां० ।
चारित्र नंदन वीनवइ जी राज आतम निधि गुणधार म्हां०जि०९।

(२)

ढाल-म्हारी सहियां हो अमर बधावो गज मोतियां॰

म्हांरा पूजजी हो, श्री 'जिनचन्द्र सूरि' राजियां खरतर गच्छरा भाण ।
म्हांरा पूजजी हो दिन दिन शुभ चढती कला प्रतपोजो कोड़ि कल्याण
श्री 'जिनचन्द्र' सूरि पटधर ॥ आंकणी ॥१॥
म्हां० धन धन धन वेला घड़ी धन भाग्य सुप्रमाण ।
दरसन सद्गुरु निरखस्यां सुणस्यां सुगुरु नी वाण ॥२॥म्हां॥श्री॥
म्हां० पूरब नैं पुण्ये पामियो श्री सद्गुरु नो पाट ।
शील गुण करि शोभता बरताये धर्म बाट ॥३॥म्हां॰॥श्री॰॥
'ओसवंश' अति दीपतो 'बच्छावत' बड़ि गोत्र ।
पिता 'रूपचंद' गुणनिलो, मात 'केसरदे' पुत्र ॥ ४ ॥ म्हां ॥ श्री ॥
म्हां मरुधर देश सुहामणो 'गुढा नगर' मझार ।
म्हां श्री 'जिनलाभ' सैंहथ दियो, सूरि मंत्र गणधार म्हां०॥श्री०॥
म्हां संघ सकल उच्छव कियो बरत्यो जय जयकार ।
म्हा० सुगुरु पधारे गाज मानियां माझि सजि मोल श्रृंगार म्हां०॥६॥
म्हां चंद चंद चढतो कला बाधग विशंद गच्छराज ।
म्हां गौतम ज्युं गुणनिध सदा प्रतपो अविचल राज ॥म्हां॰श्री॥७॥
म्हां बाणि सुधारस बरसतां हरखे भवि जन मोर ।
म्हां० यशगुरु दे धम देशना, मामें करम कठोर ॥म्हां॰॥श्री॰॥८॥
म्हा० वरतमान गुरु जिवरता 'श्री जिनचन्द्र सूरीश' ।
म्हा दरसन देज्यो आपजो पूरो मनह जगीश ॥म्हां॰॥श्री॰॥६॥

म्हा० सिन्धु देश में दीपतो 'द्वार्क्ष नगर' निमेष।
म्हां० शुद्ध मन श्रावक श्राविका वर सुगुरु करै सेव ॥म्हा०॥श्री०१०
म्हां० धन धन गाम नगर तिके, जिहां विचरै गच्छराण।
म्हां० धन श्रावक ने श्राविका श्री गुरु दंसणे वाण ॥म्हा०॥श्री०॥११
म्हा० मम मन हरस घणो अछै सद्गुरु सुणवा वाण।
म्हां० साधु समस्ते परिवर्या आवो श्री गच्छराण ॥म्हां०॥श्री०१२॥
म्हां० श्रीमुख कमल निहारवा, मम मन छै बहु आस।
म्हा० श्री सद्गुरु हिव पूरजो, आवैजो चउमास ॥म्हां ॥श्री०१३॥
धन दिन ते सफलो घड़ी गुरु नी सुणस्यां वाण।
म्हां सद्गुरु सेवा मारस्यां, जीवन जन्म प्रमाण ॥म्हां०॥श्री०॥१४॥
म्हा० संवत 'अढार चौतीस में 'माघव' मास मझार।
म्हां० वर्तमान सद्गुरु तणा, गुण गाया निस्तार ॥म्हां०॥१५॥श्री०॥
इम बहुविध वीनति करी अवधारो गच्छराय।
म्हा "कनकधर्म" कहै करुणा करधारो महाराय॥म्हां ॥१६॥श्री ॥

जिनहर्षसूरि गीतम्

ढाल —जाति सोहिलानी

पहिरी पोसाकां सखियां पांगुरी रे, सुन्दर सजि सिणगार ।
गिरुआजी गच्छपति आया इकढारे, वरतण हर्ष अपार ॥१॥
आओ हे सहेली पूजजी नै वांदस्यां हे, 'श्रीजिनहर्ष' सूरिन्द्र ।
चंद चकोपर गच्छ चौरासियां हे, दीपक खेमरविन्द ॥२॥आ०॥
पूज्य सामेळै श्रावक श्राविका हे, हय गय बहु परिवार ।
सिणगार्या सारा ग्हैली परे हे, मारग हाट बाजार ॥३॥आ०॥
कौतुक देखण बहु लेखा थया हे, अन्य मती पिण लोक ।
दर्शन देखत सहु राजी थया हे, रवि दर्शन जिम कोक ॥४॥आ ॥
बाहर धणी बीकानेरै चोहटै हे, लोक मिल्या छत्र कोड ।
अंग उमाहो पूजजी नै वांदवा हे, आग रह्यो मन कोड ॥५॥आ०॥
उत्सव देखी मन हर्षित थयो हे रतनस्यां ज्योतरविन्द (?)
शास्त्र पयोध गुणेश्वर मोसलभार, एगो धरम नरेन्द्र ॥६॥आ०॥
'बोहरा गोत्र जगतमें दीपता हे, सेठ 'तिलोकचन्द' धन्न ।
धन माताये 'तारादे जनमियार, अनुपम पुत्र रतन्न ॥७॥आ ॥
मावै बधावो माणक मोतियां हे, दे द प्रदिक्षण तीन ।
बार भावसे पूजजीन वन्दणा हे, क्रोधादिक दोष छीन ॥८॥आ ॥
पूज पधारो बीकानेरै पूठिये हे वांचो सूत्र बखाण ।
भाव बधारो ~ ~ हे ज्युं होय परम कल्याण ॥९॥आ ॥
वांदो देव 'बीकाणै दीपता ह, पूजो चिन्तामणि पास ।
आशीमर बाजो नित मन्दिरै हे ज्युं तुपजा दूर समाय ॥१ ॥आ०॥
सज्जन बधाय्यो पूज पधारता हे, दुर्जन हावा रे विलखाय ।
राज करो पूज म_ हम साहबना हे विनवै महिमाहंस ॥११॥आ ॥

श्री जिनहंससूरिजी

(बाबू विजय सिंहजी नाहरके सौजन्यसे)

श्रीजिन सौभाग्यसूरि भास ।

ढाल—पोढ़ी तो भाइ थांरा वनमें पद्मनी देसी

'करणा द' कूखे ऊपना, सद्गुरुजी पिता 'करमचंद' (वि)ख्यात हो ।
गच्छ नायक 'सौभाग्यसूरि' हो सद्गुरुजी ।आ० ॥१॥
श्री'जिनहर्ष' पाटोधर सद्गुरुजी, श्री'जिनसौभाग्य' सूर हो॥२॥ग०
वीनी पालण पालीया सद्गुरुजी, ये वचनां रा सूर हो ॥ग०॥३॥
ज्यां तो कूड़ कपट कियो सद्गुरुजी ये कूड़कपट सुं दूरा दूर हो॥ग०४
'बीकानेर पधारया सद्गुरुजी थाम कौल कियो 'रतनेश'हो॥ग ५
भाखा पुण्य थांके तने सद्गुरुजी, पुण्य प्रबल जग मांहि हो॥ग०॥६॥
'बीकानेर पधारिया सद्गुरुजी, थांसुं एकांत किया 'रतनेश' हो॥ग० ७
स्थिर विराजो पाटिये सद्गुरुजी थे म्हारा गुरुदेव हो ॥ग०॥८॥
वचन दियो गुरु वचन श्री सद्गुरुजी, श्रीसंघ लिख 'रतनेश' हो॥ग० ९
मोच्छवसाना मांडिया सद्गुरुजी बाज्या मङ्गल तूर हो ॥ग०॥१०॥
गाम 'राजानगी दीक्षा सद्गुरुजी 'सामचंद' सुपवान हो॥ग०॥११॥
महोच्छव कीनो अति भलो सद्गुरुजी दीनो अढलक दान हो॥ग०१२॥
कोइ बरस लगे पालयो सद्गुरुजी बड़ खरतर गच्छ राज हो॥ग०१३
'कोठारी' वंस दीपावस्या सद्गुरुजी ज्यों दिन सूरज चंद हो ॥ग१४
थोभाने थानां नहीं सद्गुरुजी थे म्हारा गच्छराज हो ॥ग०॥१५॥
संवत् अठारे बाणवे' सद्गुरुजी, 'सुरपालम' गुणधार हो॥ग ॥१६॥
'विगसर पाट विराजिया सद्गुरुजी, खूब थया गहगाट हो॥ग०॥१७॥

॥ इति श्री भास सम्पूर्णम् ॥

श्रीजिन महेन्द्रसूरि भास ।

(१)

ढाल—आज नो हजारी ढोलो पाहुणो ।

थारि आज पूज म्हांरो बीनति, सुगुरुजी अधिक भाव ।सुगुरु म्हांरा हो।
म्हां दिस म करज्यो मया, धरो पय सकोमल पाव ।।सु०॥१॥
पूजजी पधारो म्हांरा देशमें ।
अवधारोजी मुनिवर आगरा, सूरतवंत सज्योत
घण जाणीता गुण घणा, जिम रयण री ज्योत ।।सु०॥२॥
बाहड वंदू चंपा बागमें म्हेतो लहरा किया इण रात सु०।
धूप पड़े धरती तपे, गच्छपति गारे गात ।।सु ॥३॥
राज सभामें राजता नित नित चढत नूर ।सु०।
गावै पद्म पाचक घणा हिन्दूपति आप हजूर ।।सु ॥४॥
खिम परवानो आवले थाने 'उदयापुर की राणा' सु०।
कइ दिनां रो कोड़ छै म्हाने, मेल्ह 'खरतर' भाण ।।सु०॥५॥
हाथीड़ा तो मद राचे राचरा, घोड़ोला सज सिणगार सु०।
पग पग भेटु पूजजीनै पालखो पग पग रथ असवार ।।सु०॥६॥
मोटा भेपाली 'मरुधर' मेड़त, म पधा गढ़ 'अम्बर' ।सु ।
बीकानेरी आइ पूजजी ने वीनति हाजर है 'जेसलमेर' ।।सु ॥७॥
मुझ मुझ इसी थांरा थारणा, थरि घर पग करणा पैम ।सु ।
एकरस्युं म्हारे आइज्या घणो हमोनी 'आपाने' रो देश ।।सु०॥८॥

पाटोधर पाँव पधारिया, सूरीश्वर सिरताज मु०।
म्हारो गुमानी ज्ञानी गच्छपति, म्हांरो मानी भरम महाराज।।सु०६।।
आम्म 'खरतर' राजवी गुरु, साचो गच्छ सिणगार मु०।
मल्के हे महियां चंपो माझमें, मैं तो दीठो अजब दीदार ।।सु०।।१०।।
सूरज गच्छ चौरासिया, थानें मलाइ करै बड़ भाग मु०।
भाग सवाइ अभिमानमें, म्हारो रीझयो मन घणो राग ।।सु०।।११।।
अमीय रसायन आपरो, मीठी वाण मुणिन्द ।मु०।
तरुण तपै जिनह्य रे, श्री जिनमहेन्द्र' सुरिन्द ।।सु०।।१२।।
त्रिभुवन दर्शन करतने, सफल करे संसार मु०।
'राजकरण' निशराजरे, थाय सुणी हर्ष अपार ।।सु०।।१३।।

(२)

आज बधाइ आविया म्हारे मारू देश मझार हो राज।
दीपी बधाइ दोड़नें म्हारे पूजजी आप पधारो हो राज।।
आज बधावो हु मगी म्हारो गच्छपति गज मोतीड़ हो राज।।१ आ०
मोंत्या हूं बधावसी ताने पयोदा सागर पसाव हो राज।
चऊ संघ जोगां बाल्हो, थे तो आवो आज सुभाव हो राज।।२।।आ०।।
घर घर हरिया बागमें घणो भसहलीयो जहां माण हो राज।
आयो हु मरुधी आपे निरतरस्यां पधा खरतरगच्छ रा राणा हो राज।।३आ०
.... ।
परम मद्गुरु करम हाथमें ऐसा अंगी कोल पुराया हो राज ।।आ०।।४।।

महोपाध्याय राजसोमाष्टकम्

येषस्फारि सदा यशशु चरितं, सामोद्समाकर्णितं ।
कर्णाभ्यां सततं मतं मतिमता, सद्रूप भावान्वितम् ॥
विभाग्यस्तनन्त कांति कलिता कारुण्य लीलाचिता ।
श्रीमत्पाठक राजसोमगुरवस्त संतु मोदप्रदा ॥१॥
येषा चारु मुखोद्गता सुखकिरा वाणी निशम्योत्तम
रूपं वीक्ष्य पुनः प्रमोद जनकं लावण्य लीलागृहम् ॥
प्रज्ञानेन कर्ववेन मनसा स्वस्य श्रुतीना वशा-
मप्तानां विनिर्मितं फल पुर्णा मेने भृशं शाश्वत ॥२॥
चित्तं सर्वं सुपवण्यमपि विशद्मास्कवैभोपिनं ।
माधुर्येण तिरस्चकार महसा नवीनवं यत्च ॥
शासासत्यभिया सदैव सुधियां चेतश्चमत्कारकृत् ।
दुर्वादि प्रिरसोप दर्पं दमने शार्दूल विक्रीडितम् ॥३॥शा० छंद॥
प्राप्त प्रयोयोश्यमर्मक्रमार्ज्जित ? चंद्र वपञ्चाद तमैकमम्बरम् ।
आमोद संदाह मनारुठ मम चैतन्य मासा विमनोमि चेतसि
(यतिविरूप) ॥४॥
संमान्यन तन्मधुरं निराधर्म निस्वान्त तद्विमर्य विराजत ।
श्रीराजसामोत्तम नाम विश्रुत यत्रास्पदं किं क्रियतु तस्य वर्णनम ॥५॥
यैर् समभावयवानवपनो श्रीस्यानुरक्तै रिव पेशलैर्गुणै ।
दिस्वामिभा प्रपमर्दितान स्विवदीन् योगीन्द्र वंशाविनक्रमान्गुम्म ॥६॥
वंशस्थवृत्तम् ॥

विशद गुण निधानं साधुकर्म प्रधानं ।
कृत कुमत पिधानं सरस्वती सावधानम् ॥
भुवि रुचिर विधानं, सर्व विद्या वधानं ।
गुरुमनघ विधानं प्राप्यतं सन्निधानम् ॥७॥
पद्यार्थं ॥

प्रथमत गुरुमत्तया भव्यलोका निपुत्टे
रति निसृत यशोभि शोभमानं विमानम् ॥
विमित निखिल लोकोद्दाम कामस्य जेतु ।
स्फुट शुभ मति माला मालिनी यस्य वृत्ति ॥८॥युग्मं॥
मालिनीवृत्तम् ॥

इत्थं श्रीराजसोमाख्या महोपाध्याय पाठका ।
संस्तुता संतु विद्वान समा कल्याण कांक्षिणाम् ॥९॥

इति विद्यागुरूणामष्टकम् । पं० रायचंद्रजिद्धर्यचंद्र जिस्तवोऽष्टक मिदं लिखितं पं ज्ञानचंद्रेण (पत्र १ महिमा० वं नं० ७४)

वाचनाचार्य-अमृत धर्माष्टकम् ।

श्रीवाचनाचार्यपद प्रतिष्ठा गम्भीरता भूरिगुणैर्गरिष्ठा ।
सत्य प्रतिष्ठामृतधर्म संज्ञा जयन्तु त सद्गुरवो गुणज्ञा ॥ १ ॥
गच्छाधिप श्रीजिनभक्तिसूरि, प्रशिष्य संघात सुविश्रुतानाम् ।
येषा मति श्रीमति वृद्धशास्त्र स्वेश वंशेऽजनि कच्छदेशे ॥ २ ॥
भट्टारक श्री जिनलाभ सूरय श्रीपूज्य प्रीत्यादिम सागराश्च ये ।
भाग्यम् समोक्ष्यं किल तज्जिनपतामबात्म्य मे प्रासमर्णिदितं पदम् ॥३॥
शत्रुञ्जयाद्युत्तम तीर्थमात्रया सिद्धाद्रियोगोद्वहनेन धारिणा ।
सवेग रंगाढ्य चेतसा पुन पवित्रितं येनिजजन्म जीवितम् ॥ ४ ॥
जिनेन्द्र चैत्य प्रकरो मनोरमा वरण्य हन्त कच्छोर्विराजित ।
व्यधापि(चि?) संघेन च पूर्व मंडल येषा हितैषामुपदेशत स्फुटम् ॥५॥
प्रभूतजंतून् प्रतिबोध्य ये पुन स्वगगता जेसलमेरुसत्पुरे ।
समाधिना चंद्र शराष्टभूमिते संवत्सरे माघ सिताष्टमी तिथौ ॥ ६ ॥
स्थानाङ्ग सूत्रोक्त यथोऽनुसाराद्विज्ञायते वेदगतिस्तु येषाम् ।
मनो मुदाधाम विनिर्गमोऽभूदसावाप्तु विज्ञानमतो विदंति ॥ ७ ॥
एवं विधा श्रीगुरव सुनिर्मल कृपापरा सर्वजनेषु साम्प्रतम् ।
समाधि कल्याण गणि प्रति स्वयं प्रमाद्दृतरुग्णाग् ददतु स्वदर्शनम् ॥८॥
इति श्रीमदमृतधर्म गुरूणामष्टकम् ।

उपाध्याय क्षमा कल्याणाष्टकम् ।

(१)

चिदब्धे पारीण स्फुरदमल पङ्के रुह मुखो,
मुदानंद ध्यायी मुनि गणवरो मारशमन ।
सदा सिद्धांतार्थ प्रकटन परो वाक्पति समः
क्षमाकल्याणोऽसौ नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥
गुरो तवाभिदर्शनं मदीय मानसे मुद ।
भवेद्यथैव केकिनां गिरौ पयोद लोकनम् ॥२॥
महोक्षमयपीयगो निपीय कर्ण संपुटे ।
भवंति मोदसंयुता जना सुसम्र्म भागिन ॥३॥
तप पुंज मुमोऽजस्रं ध्यान संयम चेतस ।
क्षमाकल्याण सन्नाम्नो गुरुस्त्वत्वे गुरुघु तीन ॥४॥
गुरु ज्ञानप्रदं नौमि सद्धर्माचार चंचुरं ।
यत्कृपि करुणा दृष्टे पूतोऽपमी भवत्परं ॥५॥
विराम विपत्तां मन्दारस्मरतां भूमि मण्डल ।
मन्दार नर मन्दारमुपासे गुरु पत्कजं ॥६॥
मोह मात्सर्यसदा सम्मोहादक् संहर्तनेमया ।
धोर्य गांभीर्य धनाम मोऽनन्याद् दनोमिर ॥७॥
काम मोह राग रोप दुष्ट वाद वारिदस्य ।
दर्शनं जनापहारि भस्तुम सुपाठकस्य ॥८॥

गिराणी गुरुमाप्नोति कवितां, पूतात्मनां नित्यशः ।
सद्बौद्धं यदशाश्विनः सुरसरित्तीरानुमा सन्ततं ॥
योगाख्य मुनीन्द्र मानस सरो भासं विभाय स्थिता ।
तां पीत्वा जलदाम्बु चातक इवानन्दे यमाप्स्यति ॥८॥

❀ परलोक गतानां श्री गुरूणां स्तवः ❀

(२)

सर्वं शास्त्रार्थ वक्तृणां, गुरूणां गुरु तेजसाम् ।
क्षमा कल्याण साधूनां, विरहोमे समागतः ॥१॥
तेनाहं दुःखितोऽत्यर्थं विचरामि महीतले ।
संस्मृत्य तद्गिरोगुर्वीं धैर्यं माश्रय संस्थितः ॥२॥
बीकानेर पुर रम्ये चातुर्वर्ण्य विभूषिते ।
क्षमाकल्याण विद्वांसो, ध्यान दीप्तास्तपस्विनः ॥३॥
भान्यद्रि करि भू वर्षे, (१८७३) पौष मासादिमे दले* ।
चतुर्दशो दिन प्रात सुरलोक गतिंगता ॥४॥युग्मं ॥
वन्देहं श्रीगुरुन्नित्यं भक्ति नम्रेण वर्ष्मणा ।
मदुपकार कृताः श्रेण्यः स्मर्यन्ते सततं मया ॥५॥
एष पवित्रो कुसुम दयालो गुरो सदापाद सरोजन्यासे ।
स्तुतोहि जाड्य मतमिस्थित मैं संस्कारवत्या च गिरा समाप्तं
श्री स्वान सर्वा सदा ॥६॥

कृष्ण (अन्य) चतुर्दशी प्रति ।

सेवक सरूपचन्दरो कह्यो

उपाध्याय जयमाणिक्यजीरो छन्द

दोहा

सरस सगुण दिये शारदा, सुंदरता मतसार(दा?) ।
गुण गाऊं 'धर्मसी' तणा सुध समपो वरदान ॥ १ ॥
चैत्य प्रसाद जिणालिया कर जिन इकता कोइ ।
बहु कूटा कपट नाम धरइ हुवे न जिण सु होइ ॥ २ ॥
जैन धरम धारण सुगण साधन सील सनाह ।
'हरखचंद' पाट 'भीखण जी' हुवा, सिष बहु करै सराह ॥३॥
खरतर वंश ओपम खरा बांचे सकल बखाण ।
पद धारी 'जीवणदास' पट, साचो 'धर्मसी' सुप्रमाण ॥ ४ ॥

॥ छंद जाति रामचंद ॥

पण धारीय 'जीवणदास' तणे पट पाट धणे 'धर्मसी' जती ।
सरसत सकल शकत समापण, नीत पत दीयण सुमत नीती ॥
जस बाण सबाण सबाय सहबावे परदेस प्रवेस कीरत केती ।
नर नार वखाण करै सबो नारद वारद ज्युं इणकार मती ॥५ ॥
संवत् 'अढार बरस पचीस री' मास वैसाख सुद छठ' मीती ।
परवाण माराम पदस्था हो पुरत पेख रह बस देस पती ॥
नीरख परख करै बहु नाईक, नायक पदै बखरत मती ॥ ५० ॥

पूजा मरवा मंड पाट पटंबर, पाजत झालर संख घनी ।
परजो प्रेम स कोई पयये, न्यात करै घन घन नोती ॥
बड़वा रस कीमें सार वखाणों, जस मोर हुवो चहुं कूंट जेती ॥५०॥
कर कोड सहोड करै कव कोरत, ध्यान धरै को ग्यान घनी ।
दीयै दान घणा सनमान सदवाही, पुज गणेसुर पाइ बनी ॥
उपकार करै ओणवार सुजाणे आण न कोईण इड हणी ॥ ५० ॥

॥ कवित्त ॥

खरतर गच्छ जस खटण, पाट वजवाल बडे प्रव(ण?) ।
'हरखचंद' हरा हेत बरा 'जीवण' जी खाटण ॥
'सुन्दरदास सपूत वडे 'अखैपाल' बखाणु ।
'दीपचंद' दरियाव ओपमा 'भरजन भाणु ॥
'जीवणदास' पुत खटण सुजस वड साखा जिम विस्तरो ।
परवार पुत 'पमडेस रो रवि जितरो अविचल रहो ॥१॥
॥ श्री ॥ श्र० ॥ श्री जयमाणिक्य जीरो ए कवित्त छै ॥

॥ जैन-न्याय ग्रन्थ पठन सम्बन्धी सवैया ॥

स्याद वाद मैं (मयी?) मंजरी 'नयचक्र' नैं (नयी?) रहस्य
'पंचास्तिका यं' रत्नाकरावतारिका' ।
क ठन 'प्रमेय कौंछ मार्तंड' 'सम्मति' सु
'अष्टसहस्री' वादि गजकी विदारिका ।
'न्याय कुसुमाञ्जलि सु तरकरहस्यदीपी(का)
स्याद्वाद-मंजरी' विचार युक्ति धारिका ।
चइ किरणावली' स तर्क शास्त्र जैन माहि
बहा नैयायिकादि पढो शास्त्र पारका ॥१॥

❀ ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह ❀

द्वितीय विभाग

(खरतरगच्छकी शाखाओं सम्बन्धी ऐतिहासिक काव्य)

वेगड खरतरगच्छ गुर्वावली

पणमिय वीर जिणंद चंद कय सुकय पवेसो ।
खरतर सुरतरु गच्छ स्वच्छ, गणहर पयएसो ।
तसु पय पंकय भमर सम रसणि गोयम गणहर ।
तिणि अनुक्कमि सिरि नेमिचंद सुणि सुणिगुण मुणिहर ॥ १ ॥
सिरि 'उद्योतन' 'वद्धमान' सिरि सूरि 'जिणेसर' ।
थंभणपुर सिरि 'अभयदेव', पयडिय परमेसर ।
'जिणवल्लह' जिनदत्त' सूरि 'जिणचंद' मुणीसर ।
'जिणपति' सूरि पसाय वास, पट्ट सूरि 'जिणेसर ॥ २ ॥
भवभय भंजण 'जिणप्रबोध', सूरिहिं सुपसंसिय ।
आगम छद प्रमाण जाण तप तेज दिवायर ।
सिरि 'जिन कुशल' सुणिंद चंद घोरिम गुण सायर ॥३॥
भाव(ठ)—भंजण कप्प रुक्ख 'जिन पद्म' सुणीसर ।
नव सिद्धि बुद्धि समिद्धि वृद्धि 'जिनलब्धि' अइसर ।
पाप ताप संताप वाप महयानिस आगर ।
सूरि शिरोमणि राजहंस 'जिणचंद' गुणागर ॥ ४ ॥

बोहिय श्रावक समरु साख सिव सुख सुख दायक ।
महियलि महिमामाय जाय तासइ नहु नायक ।
'साक्षण' पुत्त पवित्र चित्त, कि कित्तिहि कलि गंजण ।
सूरि 'जिणेसर' सूरि राउ, रायह मण रंजण ॥ ५ ॥
'भीम' नरवर राज काज, भाजन भइ सुंदर ।
वेगड़ नंदन चंद कुंद जसु महिमा मंदर ।
सिरि 'जिनसमुद्र सूरि' सूरि, पय नमइ नरेसर ।
काम कोह अरि भंग सँग अंगम अलवेसर ॥ ६ ॥
संपइ नवनिध सिद्धि हेतु विचरइ सुहि मंडलि ।
थापइ जिणवर धम्म कम्म उत्तइ मुणि मंडलि ।
जाँ गयणंगणि 'चंद सूरि' प्रतपइं थिर काज ।
ताँ लग सिरि 'जिणधम्म सूरि' नंदउ सुविसाल ॥ ७ ॥

॥ श्री जिनेश्वर सूरि गीत ॥

सूरि सिरोमणि गुण निलो गुरु गोयम अवतार हो ।
सद्गुरु तु कलियुग सुरतरु समो वांछित पूरणहार हो ॥ १ ॥
सद्गुरु पूरे मनोरथ संपदा, आपो आणंद पूर हो । सद्० ।
विघन निवारो वेगला चित चिंता चकचूर हो ॥ सद् ॥ २ ॥
तु 'वेगड' विरुद वडो 'छाजहड़' कुल छात्र हो ।
गच्छ खरतर नो राजियो, तु सिंगार वर गात्र हो ॥सद् ॥३॥
मइ पूर्यो 'माणू तणो गुरु मा दीधा पाठ हो ।
सम सरण ! छीपो महु दुरजन गया दह वाट हो ॥सद्०॥४॥
आराधी आणंद सु आराही त्रि राय हो ।
धरणेन्द्र प्रिय परगट कियो प्रगटी अति महिमाय हो ॥सद्०॥५॥
परगो पूर्यो 'खान नो 'अणहिल वाडइ' मांहि हो ।
महाजन बंद मुकावीयो मेल्यो संघ उछाह हो ॥सद्०॥६॥
राजनगर' मइ पाउर्या प्रतिबोध्यो महमद' हो ।
पद ठवणो परगट कियो दुख दुरजन गया रद हो ॥सद् ॥७॥
वीगड सौंग पधारिया, अति ऊंचा सनमान हो ।
वीगड माड पांचमइ पाछा दीधा दान हो ॥सद् ॥८॥
सवा कोडि धन खरचीयो हरख्या 'महमद शाह हो ।
विरुद लियो वेगड़ तणा प्रगट थया जग मांहि हो ॥सद्०॥९॥

गुरु मा (सा?) बक बहु वेगड़ा, वळि वेगड पतिसाह हो ।
विरुद थयौ गुरु ताहरो, तुम सम बड गुण थाय हो ॥सद०॥१०
श्री 'साचवर' पधारीया मु (पु)हता गच्छ उछरंग हो ।
'वेगड' 'बूरम' गोत्र वे मांहो मांहि सुरंग हो ॥सद०॥११॥
'राडद्रही' श्री मावीया 'अखममीह' मंत्रीस हो ।
संघ सहित गुरु वंदीया पहुंती मनह जगीस हो ॥सद ॥१२॥
'भरम' पुत्र सिहराओमो राखण कुल नी रीत हो ।
च्यार चोमासा राखीया, पाळी धर्म नी प्रीत हो ॥सद ॥१३॥
संवत 'चउद त्रीसा समै गुरु संथारो कीध हो ।
सरग थयो 'सकतीपुरे', वेगड मन वस कीध हो ॥सद ॥१४॥
पाटे थाप्यो 'भरम नें' कर अधिको गहगाट हो ।
धूम मंडाव्यो ताहिरो जा 'जोसा(धा?)ण' री वाट हो ॥सद ॥१५॥
लोक रलक आवे घणा वाता तुम्ह वीवाण हो० ।
जे जे आस्या चितवइ, ते ते चढइ प्रमाण हो ॥सद०॥१६॥
घर पुत्री उपर दियो 'तिलोकसी' नइ पुत्र हो ।
पूर्यो परतो मन तणो राख्यो घर नो सूत्र हो ॥सद०॥१७॥
तुं 'साहस सुन गुण निलो श्रवतु मात मल्हार हो ।
"जिनचंद्र सूरि पाटइ दिनकर, गच्छ वेगड सिणगार हो॥सद ॥१८॥
स(इ)गुरु जिणेसर सूरजी भरम पट अवतार हो ।
सद्गुरु उदय करेज्यो संघ मई बहु धन सुन परिवार हो ॥सद ॥१६॥
पास सुदि तैरस नइ दिनइ यात्रा कीधी उदार हो ।
श्री 'जिनसमुद्र सूरिंद नइ करज्यो जयजयकार हो ॥सद० २ ।

॥ श्री जिनचंद्र सूरि गीत ॥

राग—मारू

आज फल्या म्हारा ओंकार, परतक्ष सुरतरु आज ।
कामधेनु आवी घरे रे आज मले सुविहाण । पधार्या पूज्यजी रे
श्री 'जिणचंद सूरिंद' पधार्या पूज्यजी रे ।
श्री चंद कुलांबर चंद पधार्या श्री खरतर गच्छ नरिंद पू०॥१॥
श्री वेगड़ गच्छ इंद पधार्या पूज्यजी रे ।
ढोल दमामा वाजीया रे वाज्या भेर निसाण ।
सुमति मन हरषित थया रे कुमति पड़्या भंगाण ॥ प ॥२॥
घरि घरि गूडी ऊछलइ रे तलीया तोरण बार ।
पमरही करनई कीया रे वेगड़ गच्छ जयकार ।गच्छ खरतरपू
सूहव वधावो मोतीयइ रे भर भर थाल विशाल ।
खोटा कूड़ कदाग्रही रे ते नाठा तत्काल ॥ प० ॥ ४ ॥
बड़ई नगर 'साचोर' मई रे, श्री पूज आयो माम ।
सारा संघ हरख्या थया रे कोठा भ(ब)र मजाम ॥ प ॥ ५ ॥
पाटि बिराज्या पूजजी रे सुललित वाणि (वखाण) ।
अमृत सरपक मधमड़ा रे त्यानी मखीयों मांण ॥ प० ॥ ६ ॥
माफगा गात्र कुश निवारे साह 'रूपसी' मो नंद ।
"श्री जिन समुद्र सूरि पूज्यजी रे प्रतपो ज्यूं रविचंद ।प ।७।

॥ श्री जिनचंद्र सूरि गीत ॥

राग—मारू

आज फल्यो महारइ आंगणइ परतख सुरतरु जाण ।
कामधेनु आवी घर रे, आज भला सुविहाण । पधार्या पूज्यजी रे।
श्री जिणचंद सूरिंद पधार्या पूजजी रे ।
श्री चंद्र कुलम्बर चंद पधार्या, श्री खरतर गच्छ नरिंद ।पू ॥१॥
श्री वेगड़ गच्छ इंद पधार्या पूज्यजी रे ।
ढोल दमामा बाजीया रे बाज्या भेर निसांण ।
सुमति जन हरखित थया रे कुमति पड्यो भंडाण ॥ प० ॥२॥
घरि घरि गूडी ऊछलइ रे बंधीया तोरण बार ।
पाखाडी कांनइं कीया र वेगड़ गच्छ सणगार ।गच्छ खरतरगुरु रे
सूहव वधावो मोतीयइ रे, भर भर थाल विशाल ।
खोटा कूड कदाग्रही रे, ते नाठा तत्काल ॥ प० ॥ ४ ॥
बडई नगर सांचोर मई रे श्री पूज थयो मांण ।
तारा ज्युं शाखा थया र बोल्न भ(ड)र भगाण ॥ प ॥ ५ ॥
पाटि बिराज्या पूजजीरे सुलखिन वाण (वखाण) ।
अद्भुद प्रह्लपक मयगला रे त्यांना गच्छीयां मांण ॥ प ॥ ६ ॥
बाफणा गोत्र कला निलोरे शाह 'रूपसी जो नंद ।
श्री जिन समुद्र कहइ पूज्यजी र प्रतपो ज्युं रविचंद ।प ॥७॥

खरतरगच्छ पिप्पलक शाखा

॥ गुरु पट्टावली चउपइ ॥

समरूं सरसति गोतम पाय, प्रणमुं सहिगुरु खरतर राय ।
जसु नामइं हुयइ संपदा, समरंता नावइ आपदा ॥ १ ॥
पहिला प्रणमुं 'उद्योतन' सूरि, बीआ 'बद्धमान' पुन्य पूरि ।
जीरि उपशम आराहि हर्षी सूरि मंत्र आप्यो तसु हर्षि ॥२॥
वहिरमाण 'श्रीमंधर' स्वामि सोभागि आण्यउ शिर नामि ।
गोतम प्रवइ पीरइ वपदिस्यउ, सूरि मंत्र सुधउ जिन भाउ ॥३॥
श्री सीमंधर कहइ देवता सुणि जिन नाम कह्यो आपणो ।
नाम पट्टि जिनेश्वर सूरि नामइं दुरत गयो जाइ दूरि ॥४॥
'पाटण नयर 'दुर्लभ' राय यदा चाद हूआ मठपति स्यु तदा ।
मंत्रव 'दुर्लभ' ममायइ वक्षी खरतर विरुद दीयइ मनिरली ॥५॥
चउथइ पट्टि जिनचंद्र सूरिंद 'अभयदेव' पंचमइ मुणिंद ।
नवंगि वृत्ति पाम थंभणउ, प्रगट्यउ रोग गयु तनु तणउ ॥६॥
श्री जिनवल्लभ छट्ठइ जाणा क्रियावंत गुण अधिक पराणा ।
श्री 'जिनदत्त सूरि नामनउ, बावनि योगणी जसु पय नमइ ॥७॥
बावन वीर सगे वलि पंच माणभद्र स्युं थापी संघ ।
ध्यंगर घोल मनावी आण, धूंम अजमेर मोडइ जिम भाण ॥८॥
श्री 'जिनचंद्र सूरि आठमा' नरमणि धारक दिल्लो नयर ।
नाम नोम जिनपति सूरिंद नवमइ पट्टि मयु सुरचंद ॥९॥
जिन प्रताप जिनेश्वर सूरि श्री 'जिनचंद्र सूरि' गया पूरि ।
वंदु श्री जिनकुशल मुणिंद कामकुंभ सुरतरु मणिचंद ॥१०॥

पूज पद ठवण संघ पूज पर भावना
कर निज वंश 'छाजहड़' सुभायो।
गंग गुण वृत्त राजड़ मिला कृत करी,
चंद जग सुजस नामो चढ़ायो ॥ ५ ॥सु०॥
छहों दरणां दीयउ दान दानी छलो कलियुगइ करण सायो कहायो।
सगुरु जिनसमुद्र सूरिंद' गौतम जिसौ,
परमवंतइ सारइ चित ध्यायो ॥ ६ ॥
चतुर जिण चतुर विध संघ पहिरावीया
जगत मांहे सुजस पडहो वजायो।
मूल धर्म मूल फल चित मइ धारता
जैन शासन तणो जय जगायो ॥ ७ ॥
गुरु 'जिनसमुद्र सूरिंद साचो गुरु,
शाह 'छत्रराज सेठड़ सवायो।
मिले बह शाख ज्यों खेम वाधो सदा
गुणीय "भावदास" इम सुजस गायो ॥८॥सु ॥

शाह लाधा कृत

श्री जिन शिवचंद सूरि रास

(रचना संवत १७९५ आश्विन शुद्ध पंचमी, राजनगर)

दूहा —

शासन नायक समरीये, श्री 'वर्द्धमान जिणंद'।
प्रणमुं तेहना पद युगल, जिम लहुं परमाणंद ॥ १ ॥
'गोतम प्रमुख जे मुनिवरा, श्री (सोहम) गणराय।
'जंबू' 'प्रभवा प्रमुखने, प्रणमंता सुख थाय ॥ २ ॥
श्री वीर पटोधर परम्गुरु, युगप्रधान मुनिराय।
यावत् 'दुपसह सूरी' लगें प्रणमुं तेहना पाय ॥ ३ ॥
तास परंपर जाणीये, सुविहित गच्छ सिरदार।
'जिनदत्त' नै 'जिनकुशल' श्री सूरि हुआ सुखकार ॥ ४॥
तस पद अनुक्रमे जाणीये 'जिन बर्द्धमान सुरिंद'।
'जिन धम सूरी पाटोधर, 'जिनचंद सूरी' मुणिंद ॥ ५ ॥
'सिवचंद सूरि' जाणीये वेम प्रवर (पाठा० प्रसिद्ध) छे नाम।
खरतरगच्छ सिर सहरो, संवेगी गुणधाम ॥ ६ ॥
तस गुण गण नी वर्णना धुर थी उत्पति सार।
नाम ग्राम कही दाखवुं ते सुणज्यो नर नारि ॥ ७ ॥

पाटइसमइ 'जिनपद्म सूरिस', 'लब्धि सूरि' 'जिनचंद' मुणीस।
सतर(स)मइ जिनोदय सूरि, श्री 'जिनराज सूरि' गुण भूरि ।११।
पाटि प्रभाकर मुकुट समान, श्री 'जिनभद्र सूरि' सुजाण।
शीलइ सुदरसण संघू कुमार, जसु महिमा नवि लाभइ पार ।।१२।।
श्री 'जिनचंद सूरि' वीसमइ, समता समर (स) ईंद्रा नमइ।
भयो श्री जिनसागर सूरि , नाम पसाइ विघन सवि दूरि ।।१३।।
चउरासी प्रतिष्ठा कीद्ध महमदावाद भूमि सुप्रसिद्ध।
तासु पाइ 'जिनसुंदर सूरि , श्री 'जिनहर्ष सूरि' सुख पूरि ।।१४।।
पंचवीस मइ 'जिनचंद्र सूरिंद', तेज करि मइ जाणइ चंद।
श्री 'जिनशील सूरि' भावइ नमो, सौभट विकट भवी उपसमउ ।।१५।।
श्री 'जिनकीर्त्ति' सूरि सुरीश, जग भवड जसु करइ प्रसंस।
श्री 'जिनसिंह' सूरि तसु पट्टइ मणुं पन भावइ समरंता मणुं ।।१६।।
वत्तमान वंदो गुरुराय श्री 'जिनचंद' सूरिसर राय।
जिन शासन चउवद ए भाण वादी भंजण सिंह समाण ।।१७।।
ए खरतर गुरु पट्टावली कोपी चउपइ मन नी रली।
मोगस्यजोग ए गुरुना नाम, लेतो मनवंछित थाये काम ।।१८।।
प्रह ऊठी नरनारी जेह, भणइ गुणइ रिद्धि पामइ तेह।
'राजसुंदर मुनिवर इम भणइ, संघ सहु मइ मार्णद करइ ।।१६।।
इति श्री गुरु पट्टावली चउपइ समाप्त ॥ श्रा कीकाइ पठनार्थे ॥
मो द० ई ॥

यह पट्टावली श्री जिनचंदके शिष्य पं० राजसुंदरने देवकुल पाटनम सं० १६६६ वैसाख वदि ६ सोम श्रा० भामणदे के लिये लिखी है। (देवकुलपाटक तृतीयावृत्ति पृ० १६)

वाणी श्री जिनराज की मीठी अमीय समाण ।
दीधी सद्गुरु देशना, रीझ्या चतुर सुजाण ॥ २ ॥
साह 'पदमसी' कुंमरे, धर्म सुणी तिणि वार ।
पयराग्यें चित वासीयो, जाणी अथिर संसार ॥ ३ ॥
कुमर कहे श्री गुरु प्रते, करजोड़ी मनोहार ।
दीक्षा आपो मुझ भणी, उतारो भवपार ॥ ४ ॥
जिम सुख देवाणुप्रिये, तिम कीजे सुविचार ।
अनुमत लेई कुमरजी, हवे लेस संयम भार ॥ ५ ॥

ढाल बीजी—श्री र जो र स्वामी समोसर्या० । ए देशी० ।
अनुमति द्यो मुझ तातजी, लेसुं संजम भारो रे ।
ए संसार असार मा, सार धरम सुखकारो रे । अनु० । १ ।
वचन सुणी निज पुत्र नां मात पिता दुख पाय रे ।
संयम छे बहु दोहिलुं सु हाय नाम धराबे रे । अनु० । २ ।
अति आग्रह अनुमति द्यायइ मात पिता मन मार्गे रे ।
उच्छव सुं प्रभु आगरे, संघ चतुरविध मार्गे रे । अनु० । ३ ।
संवत 'सतर छहमठे, लीय दीक्षा मन भाव रे ।
वर धरम मा कुमर पगे, नरनारि गुण गावै रे । अनु० । ४ ।
मन वच काया वश करी रंग चारित्र लीधो रे ।
पाळ प्रत निरमल पगे मनह मनोरथ सीधो रे । अनु० । ५ ।
म महन्त गिरो किम रहा श्री पूज्य कीधा विहारो रे ।
गाम नगर प्रतिबोधता करता भवि उपगारो रे । अनु० । ६ ।
कुमर मन अति उच्छ्रं गुरु पासे मन गर्मे रे ।
ज्ञानावरणी क्षय उपशमे, भणीया सूत्र सिद्धान्ता रे । अनु० । ७ ।

संवत 'समर छीउतर', मास 'माधव हो सुदि सातम' सारके ।
राणा 'संग्राम' ना राज्य में, करे उछव हो श्रावकविध सार के ।श्र०।४।
श्री संघ भगति करे अति भली, बहु विधना हो मीठा पकवानके ।
साख द्राख घृत गोल सु बली आपे हो बहु फोफल पानके ।श्र०।५।
पहरामणी मन मोद सु 'कुशल' 'जोवे' हो कीधा गहगाट के ।
जस लीधो जगमें घणो, संतापीया हो बली चारण भाट के ।श्र०।६।
श्री 'जिनचंद्र' सूरीश्वरू, नित्य दीपे हो जसो अभिनव सूर के ।
वयरागी त्यागी पणु सोभागी हो सज्जन गुणे पूर क । श्र० । ७ ।
तिहा शिष्य 'हीरसागर' कीयो अति आग्रह हो तिहां रह्या चौमासक ।
श्री गुरु दीये धम दिशना सुणतां हाये हो सुख परम उल्लासक ।श्र० ८
धरम उद्योत थया घणा कर श्राविका हो तप प्रत पचखाण क ।
संघ भगति परभावना थया उछव हो हुआ परम कल्याण क ।श्र०।६।

दोहा—चातुमास पूरण थये विहार करे गुरु राय ।
'गुजर देश' पाउधारिया उछव अधिका थाय । १ ।
संघन मगर बडोदरा कर्यो क्रिया उद्धार ।
वयराग मन वासीयउ, काया गउ परिहार । २ ।
आगम साधन साधता देवा मति उपदेश ।
करता यात्रा जिणंदनी विचर देश विदेश । ३ ।
जस साथी 'सिवचंद' जी थापुं शिवं द नाम ।
सौभागी सिर सेहरो थीपा उत्तम काम । ४ ।

व्याकरण नाममाला भणया, वलि भण्या काव्य ना मर्मो रे।
न्याय तर्क सवि सोधीया भरता साधुना पेंमार। मनु० । ८ ।
गीतारथ गणधर थया, क्षामक चतुर सुजाणो रे।
वयरागें मन मावता पाछे श्री गुरु जाणो रे। मनु । ९ ।
दूहा—पाट योग जाणी करी श्री गुरु करे विचार।
पद आपुं 'सिवचंद'ने, तो होय जय जयकार ॥ १ ॥
तिण समय आवी करी, श्री गुरु कीध विहार।
'उदयपुर' पावधारीया उच्छव थया अपार ॥ २ ॥
निज देहे बाधा लही समय (पाठा० संवर्गे) थया सावधान।
अणशण आराधन करी, पाम्यां देव विमान ॥ ३ ॥
संवत 'सतर छहोतरे' 'वैशाख' मास मझार।
'सुदि सातम' शुभ योगे तिहां, आपुं (प्युं) पद श्रीकार ॥४॥
श्री 'जिनधर्म सूरिंद नें, पाटे प्रगट्यो भाण।
श्री 'जिनचंद सूरीसरु प्रतपे पुण्य प्रमाण ॥ ५ ॥
ढाल १—नीदलडी वयरण हुई रही। ए देशी०।
भावे हो भविमण सांभलो 'सिवचंदजी'नो हो (भलो) रास रसाल के।
जे निज गावे भाव सुं तस थावे हो घर मंगल माल के ॥ १ ॥
अवसर आयो कीजिये। आंकणी ।
श्रावक 'उदयापुर' तणा पद महोच्छव हो करवा मन रंग के।
समय लही निज गुरु तणो धन खरचे हो धरमे दृढ रंग के।अ०।२।
'दोसी भिमु सुत तिगे (तसे) करे, बीनति हो दुस्सह संघ एमक।
रे हरे श्रीगुरु नो अवसर कीहां अमो करस्युं हो पद महाउच्छव प्रेमशा।३।

'पावापुरी' में पाउधारीया, जिहां श्री वीर निर्वाण ।
'चंपापुरी' महि वांदीया, श्री वासपूज्य जिनमांण । २ ।
'राजगृही' वैभारगिरि, यात्रा करी संघ साथ ।
'हस्तीनापुर' जिन वांदीया शांति कुंथु अरनाथ । ३ ।
'दि(दि)ल्ली' चौमासु रही फरसी यात्र विशेष ।
विहार करतां पुनरपि, आव्या वली 'गुर्जर देश' । ४ ।

ढाल (८)—पाटोधर पाटीये पधारो । ए देशी ।

जिन यात्रा करी गुरु आव्या श्रावक श्राविका मन भाव्या ।
पाटोधर वांदाय गुरुराया जस प्रगमें रागाराया । प० । १ । आंo ।
'भममाल्यो' कपूर ने पास तिहां 'शिवचंद्र' जी चौमास । पाटो० ।
जस प्रगमें राणा राया पाटोधर वांदोने गुरुराया । आंकणी० ।
देशना दीये मधुरी वाणी सुणता सुख लहे भवि प्राणी । पाटो ।
वाच 'भगवती सूत्र' वखाणी समझ्या जिहां जाण सुजाण । प० । २ ।
ज्ञान भगति धइ अति सारी जिन वचन की भाई बलिहारी । प० ।
सधी श्राविका जिन गुण गावे भरी मोती ए थाल वधावे । प० । ३ ।
गहुंली कर गुरुजी नें आगे, शुद्ध भाव बीज फल मांगे । प० ।
भारक कर धम नो धरणा जिहां जिन पद नी धावे शरणा । प० ।४।
नव कल्पे कीधो विहार शुद्ध धरम तणा दातार । प० ।
इनि श्वदस दूरें काया शिवचंद्रजी व धन लीधो । प । ५ ।
पुनरपि मन मांह विचार धर्म यात्रा सिद्धाचल सार । प० ।
'राजनगर' थी कीधो विहार करी यात्रा सत्रुंज 'गिरनार' । प० ।६।

ढाल (४) —नयरी अयोध्या थी संचर्या ए देशी।

गुर्जर देश थी पधारीया ए, यात्रा करण मन थाय। मनोरथ सफल्या ए,
'शत्रुंजय गिरवर भणी ए, भेटवा आदि जिन पाय, मनो०। १।
चार मास ग्राहोरड़ा ए, रह्या विमल गिर' पास। मनो ।
नव्वाणु यात्रा करी ए, पोहोती मन तणी आस। मनो ।२।
तिहां थी 'गिरनारे' जइ ए, भेटीया नेमि जिणंद।
'जूनेगढ़' यात्रा करी ए, सूरी श्री 'जिनचंद'। म०। ३।
गामाणुगामे विहरता ए आवीया नयर 'खंभात'। म ।
चोमासुं तिहां किन रहा ए, यात्रा करी भली भांति। म०। ४।
चरण धर्म तणी करे ए, अरचे जिनवर देव। म ।
समकु श्रावक श्राविका ए, धरम सुणे नित्य मेव। म०।५।
तप पचखाण घणा थया ए उपनो हरख अपार। म ।
तिहां थी विचरता आवीया ए, 'अहमदाबाद' मझार। म ।६।
बिम्ब प्रतिष्ठा घणी थइ (पाठा० करी) ए थया जैन विहार। म०।
ते सवि गुरु उपदेश थी ए, समझ्या बहु नर नारि। म ।७।
तिहां थी 'मारवाड़' देश मां ए, कीधी 'मधुर' यात्र। म ।
'समेत सिखर' भणी संचर्या ए, करता निरमल गात्र। म ।८।
कल्याणक जिन वीसना ए वीसे टुंके तेम (पाठा० ताम)। म ।
यात्रा करी मन मोद सुं भाण्यो भक्ति घणो प्रेम। म ।६।

दोहा— समेतसिखर' थी यातरा कीधी अधिक उछाह।
श्री पार्श्वनाथ जिन भेटीया, नगरी 'बणारसी' मांह।१।

तिहां थी राजा 'वीवे' चोमासुं, जहनुं धरमें चित्त भासुं ।प०।
पुनरपि 'सिद्धाचल' आवे गिर फरस्या मन ने भावे । प० । ७ ।
मह यात्रा जिनेश्वर करी गुरु मुगति रमणी कीधी मरी । प० ।
जिनगुण निरख्या नित्य हेरो, टाली भव भ्रमण नी फेरी । प० । ८ ।
'घोघ' मन्दिर जिन वांदी, करी करम तणी गति मंदी ।प०।
'भावनगर' देव जुहार्या, दुख दालिद्र दूर निवार्या । प० । ६ ।

दोहा ।

संवत खतर चोराणुंयें', 'माह मास सुखकार ।
'भावनगर' थी आवीया नगर 'खम्भात' मंझार ॥ १ ॥
गुरु गुणरागी श्रावक, दीधो आदर मांन ।
गुरुजी दीये धर्म देसना तात्विक सुधा समान ॥ २ ॥
द्वेष करी (पाठा० धरि) कोइ दुष्ट नर कुमति कुर्मती कोइ ।
यवनाधिप आगल जइ, दुष्ट वचन कइ तेइ ॥ ३ ॥
सुणीय वचन नर मोकल्या, गुरुनें तेडी ताम ।
वचन कहै अम आपीये, तुम पासे छे दाम ॥ ४ ॥
दाम अमे राखुं नहीं, रटुं भगवंत नाम ।
कोप्यो यवनाधिप कहै, लीधो धातनी धाम ॥ ५ ॥
पूरव करम संयोग थी यवन करे मति घोर ।
ध्यान धरे अरिहंत नुं न करे मुख थी सोर ॥ ६ ॥
संचित कर्म विपाकना भ्रवागत अवधार ।
सहे परिसह 'शिवचन्द्रजी' ते सुणजो नरनार ॥ ७ ॥

ढाल (६) —वेचे सुमिवर विहरण पांगुर्याजी । एदेशी ।
जिनचन्द्र सूरी' मन माहे चिन्तवैरे हवे तुं रखे थाय कायर जीवरे ।

प्रथम पोहोर मांहे तिहां धरता जिननुं ध्यान।
काल करी प्रायें चतुर पाम्या देव विमान ॥६॥

ढाल ७ —माइ धन सुपन तुं ए धनजीवी तोरी मात। ए देशी०

धन श्रीदत्त इहता धन धन मन परिणाम।
जेणे परिसह सह्यो ने राख्युं जग मांहि नाम ॥१॥
बलिहारी तोरी बुद्धि ने बलिहारि तुम ज्ञान।
जेण आतम भावे, आराध्युं शुभ ध्यान ॥२॥
बलिहारी तुम कुल ने बलिहारी तुम वंश।
शासन अजुवाली अजुयालया निज हंस ॥३॥
गुरु कुमर पणे रह्या तर बरस घर वास।
शिष्य विनय पणें रह्या तर बरस गुरु पास॥
गच्छनायक पम्बो मागबी बरस अहार।
आयु पूरण पाली, बरस चुमालीस सार ॥४॥
धन धन शिवचन्द्रजी धन धन तुम अवतार।
इम थाक थाक, गुण गाव नर नार।
कर श्रावक मली तिहां मांडवी मांडे मंडाण।
कंचनमय कलसें जाणें अमर विमाण ॥५॥
तिहां जोवा मलीया हिन्दु मलेछ अपार।
गाव धवल मंगल, दीये ढोल तणा द्रमकार॥
जय जय नन्दा कह चौय डंडा रम सार।
नर भूगल साथ सरणाइ रणकार ॥६॥
वली अगर उखेवे माथन फूल बधावे।
इम उछव थान वन मांहि ल्इ आवे॥
सुखडने अगर सु चोया दही मंझार।
निरवाय महाधन इंगि पर चोथा उनार ॥७॥

कोपापुर यवने रमनी समे जी, कीधा दुःख अनेक प्रकार जो।
कोइ पग न चल्या निज ध्यान थी जो, सहेता नाठो दंड प्रहार जो॥११
दुस्म चरण मा नख दुरे कीधा जी, व्यापी वेदन तेण अनेक जो।
हार्यो यवन महादुष्टातमा जो, जो राख्यो पूरव मुनी मी टेक जो॥१२
जिम जिम वेदन व्यापे अति घणी जी तिम तिम वेदे आतमराम जा।
इम जे मुनिवर सम(ता) माने रमे जी, तेहने हाज्यो निज परणाम जो

दूहा —प्रात समय श्रावक सुणी, पास आव्या जाम।
यवन कहे शांत्यो यह, ए आइ निज धाम॥१॥
'रूपा वोहरा' ने घरे, तही आव्या ताम।
हाहाकार नगर थया, दुख मा मुख थया स्याम॥२॥
'मानसागर' नो सामना, नीरखि परिणिति शांति।
उत्तराध्ययन भावे बहु संभलावे सिद्धांत॥३॥
सकल जीव खमाविने सरणा कीधा च्यार।
सल्य निवारी मन थकी, पचख्या चार आहार॥४॥
अणसण आराधन करी चढ़ते मन परिणाम।
समताबंत धीरज गुणे साध्युं आतम काम॥५॥
चोवुं व्रत कोइ आदरे कोइ सीलव्रत परिहार।
अगती नाम केइ उचरे केइ श्रावक व्रत बार॥६॥
संघ मुख्य सिवचन्द जो वचन कहे सुप्रसिद्ध।
'हीरसागर' ने गछ धणी भली मलामण दीध॥७॥
संवत 'अवर चोराणुंये' वैसाख मास मझार।
पडिवा दिन रविवार तिहां सिद्ध योग सुखकार॥८॥

प्रथम पोहोर मांहे तिहां धरता जिनतुं ध्यान ।
काल करी प्रामें चतुर पाम्या देव विमान ।६।

ढाल ७ —माइ धन सम्प्रत ए, धनजीवो तोरी माय । ए देशी०

धन धीरज दृढता, धन धन सम परिणाम ।
जगे परिसह सही ने, रास्यु जग मांहे नाम ॥१॥

बलिहारी तोरी बुद्धि न बलिहारि तुम ज्ञान ।
जेण आतम भावे आराध्युं शुभ ध्यान ॥२॥

बलिहारी तुम कुल ने बलिहारी तुम वंश ।
शासन अजुआल्यो, अजुआल्यो निज हंस ॥३॥

गुरु कुमर पणे रह्या तेर वरस घर वास ।
शिष्य विनय पणे रह्या तेर वरस गुरु पास ॥

गच्छनायक पदवी भोगवी वरस अढार ।
आयु पूरण पाली, वरस चुमालीस सार ॥४॥

धन धन शिवचन्द्रजी धन धन तुम अवतार ।
इम थाक थोक, गुण गावे नर नार ।

कर श्रावक मली तिहा मांडवी मोटे मंडाण ।
कंचनमय कलस आगें अमर विमाण ॥५॥

तिहां जोवा मलाया हिन्दु मलेछ अपार ।
गाय धवल मंगल, होवे ढोल दमा दमकार ॥

जय जय नन्दा कहे छीट्रंटा रस सार ।
भर भूगल माथ मरणाइ रणकार ॥६॥

बली अगर ऊखेवे मावन धूम उपावे ।
इम उछव थाय वन मांहे सहु आवे ॥

सुकृत अगर सु कीधा दही संस्कार ।
निरवाण महोछव इणि पर कीधा उदार ॥७॥

पुरुषोत्तम पूरो सूरो सयल विवेक ।
जेणे गछ ममुयाली, राखी धर्मनी टेक ॥
तिहां धूम करावी भावके उछव कीधो ।
वली पगला सरावी 'रूप वोहरा' जस लीधो ॥८॥
तिम 'राजनगर' में, धूम करी अति सार ।
तिहां थाप्या पगला, 'बाहिरामपुर' मंझार ॥
अति उछव थाये भगति करे नर नार ।
इम गुरुगुण गावें तस घर जय जयकार ॥९॥
अति आग्रह कीधो 'हीरसागर' हित आणी ।
करी रासनी रचना साते ढाल प्रमाण ॥
'कल्याण मति' गछपति, भाइजी 'खापो' कविराय ।
तिणे रास रच्यो ए, सुणत सयल सुखदाय ॥१०॥

कलश —

इम रास कीधो सुजस लीधो आदि अन्त यथा सुणी ।
शिवचन्द्रजी गछपति केरो भाखियो अति गुणमणी ॥
संवत समरसें पंचाणु 'आसो मास सोहामणो ।
'सुदि पंचमी सुरगुरु वारे ए रच्यो रास रलीयामणो ॥
निरवाण माह उल्लास सायें 'राजनगर' मांहि कीयउ ।
कहे भाइजी 'खापा' हीर आग्रह थी रास एह करी दीयउ ॥११॥
इति श्री शिवचन्द्रजी नो रास समाप्त ॥छ॥ प० ५ नि० म ‥‥ ॥

प्रति नं० २ पुष्पिका यह—

संवत १८४० मा आसु वदि ४ दिन श्री मुजनगर मध्ये लिखित । गाथा १०९ लिखितं वैद्यचन्द गणिना लिखितं श्रीबृहत्खरतर गच्छ राम शाखायां श्रीकच्छदेश श्रीश्राविका समाइकृत् वाच्यमान हमके । मेरु महीधर जां लगे जां लग शशि सूर, तां लग ए पोथी सदा रह जो ए गुण पूर ॥ श्री रस्तु । कल्याणमस्तु ॥। श्री श्री

(पत्र ६ संभावत सिंहन मुनिरत्न खवित मुनि जी द्वारा प्राप्त)

लघु आचार्य शाखा

॥ श्री जिनसागर सूरि गीतम् ॥

श्री रूप करइ अरदास हो मेकर जोड़ी आपणै आवस्यु हो । पूज्यजी ।
पूरे मननी आस हो, एकरसउ वंदावउ आविनइ हो ॥ पू० ॥ १ ॥
तई आण्यउ अथिर संसार हो, संयम मारग 'जगुवय' आदर्यो हो ।पू.
आगम नउ भण्डार हो, आप प्रवीण क्रिया नी खप करइ हो ।पू ।२।
तुं साधु शिरोमणि दखियो पाट तणइ जोगि 'जिनचंद सूरि' थापीयो।
तई राख्यो जगमाई रंग हो, पाट बइसतां उपसम आदर्यो हो ।पू०॥३॥
पंचमकाल तणउ परमाव हो, गुण करतां पिण अवगुण ऊपजइ हो ।पू०।
सूध भजइ चित भाव हो, किमपर मुक्त किम मांहि जातां समो हो ।पू. ४
नगर 'अहमदावाद' हो दीपी मांगस दोप दिखाड़ियो हो । पू. ।
धरम तणउ परमाव हो निकलङ्क कनक तणी परि तुं थयो हो ।पू०।५।
बारउ सबला जस सोभाग हो चिहुं दिस कीरति पसरी चौगुणी हो।
तुम्ह उपरि अधिको राग हो चतुर विचक्षण धरमी मांणसां हो ।पू. ६।
जे बैयइ मगिका भाव हो ते सी कोमत जाणे पाथिनी हो । पू. ।
कड़ागमही मिथ्या बाथ हो, कुगुरु न छंडइ सुगुरु न आदरइ हो ।पू०।७।
तुं दीसयन्त निर्लोभ हो श्री 'जिनसागर सूरि' सुगुरु तणी हो ।पू०।
"जयकीरति करइ सुशोभ हो, अविचल मेरु तणी परि प्रतपज्यो हो ।८।

॥ श्री जिनधर्म सूरि गीतम् ॥

१ ढाल —सोहिलानी

आया श्री गुरु राय श्री खरतर गच्छ राजिया।
श्री जिन धर्म सुरिन्द, महुल बाजा बाजिया ॥१॥
पेसार मंडाण 'गिरधर' शाह उच्छव करइ।
बीकानेर मझार, इण विध पूज श्री पग धरइ ॥२॥
श्री संघ' सामहो जाइ, भावी मन उछट घणे।
सुणि सुणि वांदइ पाय सो दिन ते लेखे गिणे ॥३॥
सिर धर पूरण कुंभ सूहव आवे मलपती।
भर भर मोती थाल, बधावै गुरु गच्छपती ॥४॥
पग पग हुवे गहगाट, घर घर रंग बधामणा।
झल्लर ना झणकार, सबद शब्द सोहामणा ॥ ५ ॥
झीपी मोल बणाइ नर नारी मन मोहनी।
नाना विधि ना राग, तिण कर दीसइ सोहनी ॥६॥
सिणगार्या सब हाट ऊंची गुडी फरहरइ।
वूठे बूठा मेह, याचक जण यश वखरइ ॥७॥
प्रथम जिनेसर भेटि, आया पूज उपासरे।
सांभळि गुरु उपदेस सहुको पहुंता निज घर ॥८॥
सोहलानी ए ढाल मिळ मिळ गाव गोरडी।
'ज्ञान हर्ष' कहे एम०, सफळ फळे आश मोरडी ॥६॥

२ ढाल —पिछुमानी

मंदिर करो मुझ कसरे, गुरुमा श्री गणधार रे लाल।
'मणशाली' कुल सेहरो, मात 'सिरगा' सुतकार रे लाल ॥१॥म०॥
सुन्दर सूरति ताहरी दीठां आवे दाय रे लाल।
मधुकर मोह्यो मालती अवरन को सुहाय रे लाल ॥ २ ॥ म० ॥
सूर गुणे करि सोहता, पर जीव ना प्रतिपाल रे लाल।
रूप वयर तणी परे, कलि गौतम अवतार रे लाल ॥ ३ ॥ म० ॥
साधु संघाते परिवर्या, जिहां विचरै श्री गुरु राय रे लाल।
सुख सम्पदै आणन्द हुवइ, वरते जय जय कार रे लाल ॥४॥म०॥
श्री 'जिनसागर सूरि' जी सह गुरु पाम्या पाट रे लाल।
श्री 'जिन धम सूरीश्वर' दिन दिन हवइ गहगाट रे लाल ॥५॥म०॥
'राजनगर' रलियामणो पद महोछव कीधो सार रे लाल।
'विमला दे' ने 'देवकी', गुण गण मणि आधार रे लाल ॥ ६ ॥ म० ॥
गच्छ चौरासी निरखिया, तुम करें य गुर होड रे लाल।
'ज्ञानहर्ष' सिष्य वीनवै, 'माधव' बे कर जोड़ रे लाल ॥ ७ ॥ म० ॥

जिनधर्मसूरि पट्टधर जिनचन्द्रसूरि गीतम् ।

१—वेसी वरजणरा गोतरी ॥

सुणि सखियर मुझ मानड़ी, तुम्ह नै कहुं हित आणी । हे वहिनी ।
आचारज गच्छ रायनी, सुणिवा जइयइ वाणि । हे वहिनी ॥१॥
सूरतड़ी मन मोही रह्यउ ॥ आंकड़ी ॥
सद्गुरु वसी पाटियइ बांचे सूत्र सिद्धन्त । हे वहिनी ।
मोहन गारी मुंहपत्ति, सुन्दर मुख सोहन्त । हे वहिनी ॥२॥
गहूंली सद्गुरु आगले, करियै नवनवी भांति । हे वहिनी ।
सुगुरु वधावो मोतीये, मन मांहि धरि खांति । हे वहिनी ॥३॥
बैसी मन विहसी करो सांभलो सरस वखाण । हे वहिनी ।
भाव भेद सूधा कहै, पण्डित चतुर सुजाण । हे वहिनी ॥४॥
साधु तणी रहणी रहइ, पाले शुद्ध आचार । हे वहिनी ।
सूरि गुणे करि शोभतो श्री खरतर गच्छधार । हे वहिनी ॥ ५ ॥
'सुहरा' वंश विराजता 'सांवल' साह सुविख्यात । हे वहिनी ।
रतन अमूलिक उर धर्यो, साहिबदे प्रभु माता । हे वहिनी ॥ ६ ॥
श्री'जिनधर्मसूरि पाटवी श्री 'जिनचन्द्रसूरीश' । हे वहिनी ।
अविचल राज पालो सदा पभणे 'पुण्य' आसीस । हे वहिनी ॥ ७ ॥

लिखितं सम्वत् १७७६ वर्षे बैसाख सुदी १२ भौमे ।

जिन युक्ति सूरि पट्टधर जिनचन्द्र सूरि गीतम् ।

पूजना पधारा मारू देसमें सूर्य सुप्रजी महं । गुणवन्ता हो गच्छपति ।
ओसंभ वदि हो अधिक उच्छाह सुं मन धरि धम सनेह ॥१॥

गुणवन्ता हो गच्छपति, श्रीजिनचन्द्र सूरि सुखकन्द ॥ श्रांकडी ॥
मिलि मिली आवो हे म्हारा सहेलियां, भरि मो तियड़े थाल ।गु०।
वांदण आस्यां हे खरतर गच्छ धणी, जीव दया प्रतिपाल ॥२॥गु०॥
संघ सामेला हो साम्हा संचरे, मन धरि अधिक आणन्द ।गु०।
बाजा बाजे हो गाजे अम्बरे गच्छपति ना गुण वृन्द ॥ ३ ॥गु०॥
सुन्दियण गावे हो गुण पूजजी तणा, बोले मुख थी जे वाल ।गु०।
कीरति धारी हो गंगाजल जिसी, दस दिशि करे कलोल ॥४॥गु ॥
पग पग कीजे हो हरखे गूहली, दीजे वंछित दान ।गु ।
सूहव गावे हो मङ्गल सोहला, रिद्ध घुर्म घुरे निसाण ॥ ५ ॥ गु ॥
नर नारी ना हो परिकर बहु मिले, वैरूप मणी विरोप ।गु०।
भाग्य विराज्या हो पूजजी पाटिये, दे धर्मरा उपदेस ॥६॥गु०॥
नवरस सरस सुधारस बरसतो गरजतो जलद समान ।गु०।
सुणतां लागे हो श्रवण सुहामणो, इसी म्हारे पूजजी री वाण ॥७॥गु ॥
नित नित नवला हो हरख वधामणा, पूरव पुण्य प्रमाण ।गु ।
जिण दिसि वेसे हो पूज्य समोसरे, तिण दिशा नवे निधान ॥८॥गु ॥
पंचाचार हो पूज्य सदा धरे पूज्य सुमति गुपति साबन्त ।गु ।
गुण छत्तीसे हो अंग विराजता पूज भविजन मन मोहन्त ॥६॥गु ॥
चाद ज्युं दीसे हो निज चदनी कन्ध, जिन मुक्तिसूरि' जी रे पाट ।गु०।
श्री गौयम जिम बहु लब्धे भर्या सोहे मुनिवर थाट ॥१ ।गु ॥
मन 'चीसाद्दा हो संघ सराहिये पूज रख्या चोमास ।गु ।
जिन शासन सी हो धर्म प्रभावना सफल फली सहु आस ॥११॥गु ॥
मात "जसोदा हो नन्दन जाणिये, 'भागचन्द' सुत सुविचार ।गु०।
सुगणपान हो जगमें अवतर्या गोत्र 'रीहड़' सिणगार ।गु ।
पूज प्रतपो हो ज्यां रवि चन्द्रमा हो पूज जीवो कोड़ बरीस ।गु ।
इम निज मनमें हो हरख धरी घणो आखम चे असीम ॥१२॥गु०॥

॥ इति श्री पूज्यजी गीतम् ॥

मंडप मोटा मंडाणाए, तिहां बइसइ चतुर सुजाणुए ।
नाचइए निरुपम पात्रुए, जसु जोतां गहगहइ गात्रुए ॥१०॥
चउरी चउदिइ परि चमर ढळाइए, पोसाळमांना त्रिछि विस्तारइए ।
मंगल धवल महुत्सवइए, श्री'रत्नचूला महत्तर गायसिंए ॥११॥
ग्याउ मगध्य मार्गदपूर तहबै नाम दिया 'सोमसुन्दरसूर' ।
महत्तर उवझाय पदवीए, जिन विनय 'महा दे संघवीए ॥१२॥
सुमासु स्कुग र(रा?)सुए, गुण गाइए 'रत्नचूला महत्तरोए ।
'रत्नसार' वाचक वरुए, पन्यास गणीस मति विस्तरुए ॥१३॥
दीक्षा महोत्सव अपारुए जिहिं वरतइ जयजयकारुए ।
पंचशब्द तिहां वाजइए, जिमे माद् अम्बर गाजइए ॥१४॥
वन्दिय जन मय ऊचरइए, तिहिं मगलमन वाछित हरइए ।
छत्रीसा तोरण उच्छरइए तिहां चरचर गुडि विस्तरइए ॥१५॥
श्रीसंघ मन पुगि रुळीए गुणगाइ गोरडी सवि मिळिए ।
वहीण देव सिरि महुत्सवइए साह सुपत्र क्षेत्रे धन वावरइए ॥१६॥
एवहिं गुरुभक्ति सुणीए, दोत्र 'शाहपुर' आपणीए ।
दूरसणस्सुं गुणधारुए वस्तु पहिरावइ भगतिहिं अपारुए ॥१७॥
श्रीसंघ पंचंगि मळवीए साह महाने' इणिपर जस लीए ।
रंभिय मयण समा मणुए संतोषिय साहमि भगत मनुए ॥१८॥
करणी अनुपम ते करइए तस किरति वह विसि विस्तरीए ।
महत्तर नाम विसालुए, तस उपमा चन्दनबालुए ॥१९॥
द्र पदि तारा सुगाकस्तीए सीता य मन्दोदरी सरस्वतीए ।
सोळ सती सानिध करइए, मयणयाए (मन्नथामी?)
श्रीसंघ दुरिया हरइए ॥२ ॥

[इति श्री जिनकीर्ति सूरि महत्तरा श्रीरत्नचूला गणि प्रवर्तिनी
रामचन्द्रो गणिविमलसिन्धु श्राविका हीरवे योग्यं]

(खरतर गच्छीय प्रवर्तक मुनिवर्य सुखसागरजीसे प्राप्त)

'हीर' पाटि 'असिगजी', पाटि प्रगट जगीस ।
भो'विजयदेव सूरिसरु, जीवो कोडि वरीस ॥१०॥
तिणि निज पाटि थापीआ, कुमति मतंगज सीह ।
'विजयसिंह सूरीसरु', सकल सूरि सिर लीह ॥११॥
रास रच्युं रलीयामणो मनि आणी उल्लास ।
'विजयसिंह सूरि' तणो, सुणयो विजय प्रकाश' ॥१२॥
सावधान सज्जन सुणो, पहिला थिर दुइ कान ।
रोझानी पृथ्वी कही, विधाना छइ दान ॥१३॥

ढाल —राग देशाख ।

अढार कोडा कोडि सागर जेह,, युगला धरम निवारक जेह ।
'ऋषभदेव हुआ गुण गेह, प्रभुप पंचसइ सोवन देह ॥१४
'आदीस्वर' निं सुत शत एक 'भरतादिक' नामिं सुविवेक ।
आप पाट 'भरतेसर' थाप्यो, 'बहली देस' 'बाहूबलि थाप्यो ॥१५॥
'भरत तणा अठाणुं भाइ, तेमा एक'मरुदेव' सवाइ ।
तिणि निज नामि वसाप्यो देस तेह भणी भणिय्इ 'मरु देश ॥१६॥
ईति अनीति नहीं जसदेस धम तणो ते कहिइ देस ।
चोर चरड नी म पडइ धाडि " "॥१७॥
पद्मा अद्मा जिहां छइ व्यवहारी सतूकार करइ अनिवारी ।
मोवा सीरण मी जिहां सेवा, मोतीचूर मिठाइ मेवा ॥१८॥
राजा पिण जिहां धरम करावइ, परमेसर नी पूजा मंडावइ ।
सहजिं जीव अमारि पलावइ, मादेवा ऊपरि नवि आवइ ॥१९॥
सूर सुभट मांडी मुंछाला करि झलकइ करवाल कराला ।
व्यापारी दीसइ सु दाला, घरि घरि सुमिक्ष सुगाला ॥२०॥

देस मान्ये तिम मोटा कोस, मोल्प लोक नहीं मनि रोस ।
लोक माया प्राहिं मटारी, कहि नामइ बहु लोक कगारी ॥२१॥
लोक धरइ हाथि हथियार वाणिग पणि सूठा झुझार ।
रण भिडतां पणि पाछा पग नापइ, साहमो साहमणि नइ शिर थापइ॥२२
कपट विहूणी बोलइ गाढिइ गरढो पणि जिहां पुंघट काढइ ।
विधवा पणि पहरइ करि चूडि राव रमोइ रावइ रूडी ॥२३॥
भलो पाहुणई मवल सजाइ, राय रांणा नी परि मुंजाइ ।
पाटमक्त मनमां नहीं द्रोह, स्वामिभक्त स्युं अधिको मोह ॥२४॥
पुण्यवन्त प्राहिं महि खूंट, वाहण सबल चढवा ऊंट ।
जिहां जाइ तिहां लिइ विश्राम चोर चखार तणुं नहीं नाम ॥२५॥
लोक सकल लोकाइ पालइ, सोना रूपी (या) हाथि सझालइ ।
दुस्मन नइ सिर देवा दोट मोटा 'मारूआडि' नवकोट॥२६॥
प्रथम कोट 'मंडोवर' ए ठांम हव (र्गा) 'जोधनयर' अभिरांम ।
बीजो 'मयुद' गढ़ ते जाण्यो त्रीजो गढ़ 'जालोर' वखाण्यो ॥२७॥
चोथो गढ त 'बाडमेर' पांचमा 'पारकरो' नहीं फेर ।
'जेसलमेरि' छठो कोट त्रिणि आगइ नहिं बइरी चोट ॥२८॥
'कोटडइ' सातमो कोट वडेरो आठमो कोट कह्यो 'अजमेरो' ।
नमोइ 'पुष्कर' कोइ कहइ 'फलवद्धि' नवकोटी 'मारू माहि प्रसिद्धी ॥२९

दोहा

धन 'मंडोवर' मडवरा जिहां 'मंडोवर' 'पास ।
'गुणविजय' कहइ प्रभु पूजतां पूरइ मननी आस ॥१ ॥
आज सफल दिन मुझ हु(यो)उ, अजई हु(य)उ सनाथ ।
'गुणविजय' कहइ जब मुझ मल्यो 'फलवधि' 'पारसनाथ ॥११॥

ढाल —चौपाइ ।

'मरू' मण्डल मांहि 'मेड़तु', वाल्हि द्रुम दूरि फेड़तउ ।
तेहनी कीरति जग मां घणी, पहवी लोक वात मइ सुणी ॥३२॥

जिन शासन मांहि बोल्या बार चक्रवर्ती 'भरतादिक' उदार ।
तिम शिव सासनि चक्री होइ च्यार उपरि अधिका बलि दोइ ॥३३॥

तेमां धुरि 'मांनधाता' भण्यो, चक्रवर्ती ते मूंकि गण्यो ।
तव माता पहुती परलोक, राजलोक सघलइ तव शोक ॥३४॥

किम ए बाल वृद्धि पावस्यइ, इंद्र कहइ मुझ निधा(धा?) वसइ ।
तिण कारणि 'मांनधाता' कहउ चक्रवर्ती पहलिउ गहगह्यो ॥३५॥

दान देवा परि साम्हो जाय ते मोटो हुय महाराय ।
कोडा कोडि वरस तसु आय, प्रजा तणुं पोहर कहवाय ॥३६॥

कृत युग मां ते (हुयउ) प्रसिद्ध, इन्द्रइ राज्य थापना किद्ध ।
तिणि नगर वास्युं मड़तुं लोकाइ कहसी तेड़तुं ॥३७॥

'मेड़तु'ते 'मानधाता पुरी लेहयी लाजी अलकापुरि' ।
ज मांहि तिहां धनपति एक, इणि नगरि धनवन्त अनेक ॥३८॥

लोक वात पहवी सांभलि, माण्यु ते मानइ केवली ।
मेड़ता नी महिमा अति घणी, तिम देखउ 'मड़तीमा' धणी ॥३९॥

चउकट चहुटा केरि ओलो गढ़ मढ़ मन्दिर मांडी पोलि ।
घरि घरि रहरंग कल्लोल, वाजइ मादल मुगल ढोल ॥४०॥

चिहु दिसि भला सरोवर घणां, देराणी जेठाणी तणां ।
कुंडल सरवर सोहामणुं, आगे कुण्डल घरणी तणुं ॥४१॥

गामइ गयवर हय (थ)र घट्ट, व्यवहारीआं भणा गज घट्ट ।
वनवाडी ओपइ आराम, पासइ 'कलमपि' तीरथ ठाम ॥४२॥
देस देश ना आवइ लोक, दीठइ दीठइ नासइ सोक ।
परता पूरइ 'पास कुमार' राति दिवस उघाडा बार ॥४३॥
इस्युं तीरथ नहीं भूमीतलइ माणस आवइ एक जिहां मिलइ ।
पोस दसमी जिन जन्म कल्याण 'मेरुता' पासि इस्युं अहिनाण ॥४४॥
मेरुनुं दीठइ मन उल्लसइ, देवलोक त दूरि वसइ ।
'मरुनुं' दरी लंका खिसी पामी आणइ 'वाणारसी' ॥४५॥
सिखर घट ऊंचा प्रासाद नन्दीश्वर स्युं मोडइ वाद ।
सतरभेद पूजा मंडाण रसिया श्रावक सुणइ वखाण ॥४६॥
महाजन नि मनि मोटी दया रांक लोक उपरि बहु मया ।
ठामि ९ जिहां मनुहार, तिणि नगरी जिन हय दयकार ॥४७॥
तणि नगरि महाजन मां वडा 'बोरवेडिया' कुल मु दीवडो ।
'ओसवाल' अति भरडकमल साह 'मांडण' नन्दन 'नथमल' ॥४८॥
घर घरि लखमी वासो वसइ, रुपि रति पनि मइ ते हसइ ।
नापू नइ घर गज गामिणी नायक दे नामि कामिनी ॥४९॥
मणि माणक मोटा मानिया सोना रूपां नी थालियां ।
सालि दालि मनगमां सांकणां उपरि घट घट पा अनि घनो ॥५०॥
'कुंअरे' दाखी दिइ बहु दान, साहमी साहमणि मइ सन्मान ।
सापु साधवी परि आणी पासो मी परि घी निद्'नि ॥५१॥
मीटाइ मेवा भरपूर चोमा चन्दन अगर कपूर ।
'नायक दे' मनयौवन मारि', 'नापू सुख विउमइ संसारि ॥५ ॥

पुण्यइ पामी ऋद्धि अपार जग मण अपइ जै जैकार।
'साझिमझ' सम सुख भोगवइ, सुखि समाधि दिन ओगवइ ॥५३
'नामक द' नंदन हुइ जण्या सकल कला गुण सहजि भण्या।
'केसौ' नइ 'केसौ' तिस नाम, 'दशरथ' घरि जिम 'लखमण' 'राम'॥५४
बीजो सुत जायौ तिण बलि, मात तात पुहती मनरली।
'मेड़ता' मांहि हुआ आणंद 'कर्मचंद' नामइ कुल चंद ॥ ५५ ॥
'कपूरचंद' चोथा नुं नाम 'पंचायण' ते पंचम ठाम।
'नाम्रू' ना नंदण गुण भर्या, जाणिकि पोच पांडव अवतर्या ॥५६॥

दोहा—

पांडव पांचइ मांहि जिम विषसो गुण सिरदार।
तिम 'नाम्रू' नंदन विर्वि 'कमचद' सुविचार ॥५७॥
जिम्म 'संवत सोळमई उपरि 'वर्युमालीस।
शाके 'पनर मवात्तरइ पूरइ सजन जगीस ॥ ५८ ॥
वजइ पखि फागुण तणइ बीज दिवसि रविवार।
उत्तर भद्र पदा तणइ, चोथा चरण मझार ॥ ५९ ॥
राजयोग रलीयामणइ, फ्लग रमइ नर नारि।
'कर्मचंद' कुंवर जण्यो जगि हुआ जय जयकार ॥६०॥
कर्क लग्न मूरति भवनि तिहां गुरु बैठइ ठामि।
बल्को तिथि तूठा ग्रिहे, गुरु पदवी अभिराम ।६१॥
शीभइ राहु सु त्रीजीइ कन्या राशि निवास।
मार्ह शुक्र बळि दीपतो दुसमन थाइ दास ॥६२॥
रवि कवि बुध ए आठमइ कुंभि लग्न बइठ।
नवमइ भवनि वधु कुल पूरण चंद्र पइट्ठ ॥६३॥

मेरिसि द्वनि नीचउ कहाइ, दुसमइ भवनि उदार।
पणि फल छत्रा नुं दिई, केरडा ठामि सुखकार ॥६४॥
ए शुभ वेल्य भलयो 'कमचंद' सुखकंद।
सुखि समाधि वाधनु बीज थकी जिम चंद ॥६५॥

ढाल —राग गौडो।

इक दिन इम चिंतइ, नायक द भरतार,
सुख सेजिं सूतो जाग्यो रयणि मझार।
मई पूर्व भव कोइ, कीधां पुण्य अपार
तेणिं मही पाम्यां सुरा सपत्न संसार ॥ ६६ ॥
सुख मंदिर मइडी मणि माणक ना हार,
नित नवां पहरवा नित नवला आहार।
निशु २ घर आवइ, भरय गरय मझार
वलि पाम्या परिघल पुत्र कलत्र परिवार ॥ ६७ ॥
इणि भवि नवि कीधउ, सूधो श्री जिन धम
विष (य) रसि हुंसी कीधा कोड कुकर्म।
'धन्नो' 'कयवन्नो 'सालिभद्र सुकमाल
कोड धमिइ तरिया वलि अवंति सुकमाल ॥ ६८ ॥
ए विषय तणि रसि प्राणी नई बहु रंग
जिम नयण तणइ रसि दीवइ पडइ पतंग।
रामि करि वेध्यो बींध्यो काम कुरंग
अस्काणी पाछइ करिणी मद मातंग ॥ ६९ ॥

खारा नइ खाटा मीठा मधुरा सह,

कषा नइ फोरां कंद मूल अमह।

रमणि भोयण मण, परदारा गम(न) किद्ध,

ताहि नृपति मही सुख जिम बारइ अछि सिद्ध ॥७०॥

ए करा पूजारी पोढ़ वैस विदेस

किम साधू पाणी उज्जल करस्यइ केस।

तिणि विण आम्यइ जं मइ कीधा बहु पाप।

ते सुख मनि आणइ, जिम मा भाणइ बाप॥ ७१॥

कोइ सुगुरु मिलइ सुं निज पातिक आलोई,

गुरु वाणी गंगा पाप तणां मल धोऊ।

एहवइ 'मेहवा मां आम्या बहु अणगार।

श्री 'कमल विजय गुरु, सकल साख भंडार॥ ७२॥

साह 'नाथू हरख्या निरखी तस दीदार,

धन्न २ ए मुनिवर तपा गच्छ शृङ्गार।

जाव जीव लगिनि द्रव्य सात आहार।

मीठाइ मेवा विगइ पंच परिहार॥ ७३॥

ए गुरु संवेगी वैरागी धन धन्न।

ए मोटो पंडित ठाम पैंतालन्न।

आनी वंदी मद, कहा 'नायक दे बंन।

गुरुजी आलोयण आपा सुख ज्वंन॥ ७४॥

बकुला पंडित कहइ सुणि तु 'नायमाइ

आलोयण लेवो जब संघइ गउनाइ।

आलोयण नी विधि गीतारथ समझाइ ।
दिइं अगातार ग्रु, साम्हो पाप भराइ ॥ ७५ ॥
आलोयण काजि, बीस वरस पहलीमइ,
तिम ओगण मातसइ, गीतारथ खोषीजइ ।
तिणि कारणि तप गछ नायक गुरु निं पासि ।
लेयो आलोयण, अवसरि मनि उल्लासि ॥७६॥
वस्तु तब बोलइ, 'नायक' नु नाय ।
ते दूर देसान्तरि छइ तपगछ ना नाय ॥
तुम्हे पणि गछ मांहि, मोटा पण्डित राय ।
तुम्हा आलोयण लउ छोडुं तुम्ह पाय ॥७७॥
तव 'कमल विजय' गुरु शास्त्र शाखि सव जाणी ।
'नाथू' मनि थाठी धम राग रंगाणी ॥
आलोयण दीधी (मनधरी) बहु जगीस ।
उपवास छठ्ठ बहु अट्टम तिम एकवीस ॥७८॥
'नायक' दे 'नायक', जोडी दुइ निज पाणी ।
सब बालक करस्यु ए प्रमाण तुम्ह वाणी ॥
पछि तुम्ह पसायइं हु(ष)उ निमल प्राणी ।
आज थकी अभिग्रह, उमि भात नइ पाणी ॥७९॥
आलोयण करतो वेरयो चतुर सुजाण ।
पूरइ निज मारी तिम भाइ 'सुजाण' ॥
सुभ काम करी नइ छीजइ अशुभ जाग ।
तद्भी पामीजइ अजरामर सुर भाग ॥८० ॥

दोहा।

साह 'मालम' कुल जलधि सु, हस्तिमल 'नथमल'।
विमम विमय रमि नवि ग्रस्यो, बोलइ चित्त उमंग ॥८१॥
निज कुटम्ब तेडी करी, 'नापू' कहइ निरधार।
तुम्हे सहु(हु)व इकमना, लस्यु संयम भार ॥८२॥
'कर्मचन्द' कुमर प्रमुख सहु कहइ ए बात।
अम्ह प्रमाण छइ तातजी न करू धर्म विधात ॥८३॥
जिम आलोयण अवसरि, मिल्या सुगुरु निकलंक।
तिम इवि गछ नायक मिल्या, तो मन रुयुं निशंक ॥८४॥

ढाल राग तोडी—

इसा अवसरि चतुर सहरि करि गुरु चउमासि।
विजयसेन सूरि 'महतइ', आव्या चित्त उलासी ॥
'नापू' पोषइ पुत्र तब, गुरु तइ वंदावइ।
कर्मचन्द' गुरु चरण देखि गुरुजी बोलावइ ॥८५॥
गउपनि जैपति ए बहार बालक शुभ लक्षण।
ज चारित्र लस्यइ सही तो थास्यइ विचक्षण॥
'नापू साह' बोलइ भाव संमलि मुनि नाथ।
हरख्या चित्त मांहि ज्यं चडइ चिंतामणि हाथ ॥८६॥
गुरु वहइ नापू साह ! सुणो चौमासा मांहि।
'हीरजी' दत्त म तणइ हलु पहुंचु उगाहिं ॥
'कर्मचन्द' कुंमर कुटुम्ब सहु साथ समेला।
समय लेइ गुरु आवयो आयो आइ भेला ॥८७॥

सीरउ देइ 'मेड़ता' थकी, 'सादड़ी' पधारइ ।
पर्व पजूसण पारणइ 'राणपुर' जोहारइ ॥
जंगम थावर तीर्थ दोइ, मिळिआ नरकापद्द' ।
'आसोरउ' संघ वंदवा आव्यो मन आणइ॥८८॥
'कमल विजय' गुरु तिहां चउमासि पूज्यना पग वंदइ ।
'सीरोही' धातु संघ रंगि, नाचइ नव छंदइ ॥
तिहां थी गुरु 'जेसंघजी , 'सीरोही' आवइ ।
अनुक्रमि आव्यो संघ साथि, 'पाटण पधरावइ ॥८९॥
पुण्यवन्त 'पाटण प्रसिद्ध नगरी अभिराम ।
जिहां 'हीरजी' निर्वाण जाणी, रहइ 'तप गछ राज ॥
इण सुभट जे 'मेड़तइ हुआ मंडाण ।
चारित्र लेवा 'कर्मचन्द्र' उच्छव जग भाण ॥९०॥
जीमणवार जलेबी, बहु नाम जीमाडइ ।
'नायक वे' पनि पंक्ति रंगि, करि मोटी मांडइ ॥
सोना रूपा ना कचोळ, थाळी सुविशाळी ।
साकि दालि घृत सालणां पच पच पी नाखो ॥९१॥
नहीं करम्बउ घोळ झोळ, उपरि तम्बोळ ।
नागरवेलि सोपारी पारी, घसि कुंकम रोळ ॥
चन्दन केसर छांटणा भाषन सहर मिळोया ।
भागा भाव गुलाल जाणि चेसूदा फळिमा ॥९ ॥
मिल्या महाजन मांडवइ चढ़ा बहु टाला ।
चाळीमां त्रिवर्ग छगड़, दीपा झन्नाज्झा ॥

देव तणो घन भक्ति युक्ति, गुरु गुरुणी तेडया ।
साहमी साहमिणी संविभाग करि पातक फेड्या ॥६३॥
सणगाया सब हाट पाट चहुटा चउरासी ।
रूडो गूडो बहुल तेम, नेजा आकासी ॥
मेहलोमा' म हराण तेणि वीणा नीसाण ।
बाजइ महुर सुर पूर, पडइ कुमती प्राण ॥६४॥
धवल गीत गाइं अपार, गोरी गुण ग(भो?)री ।
'कमचन्द्र' मुखचन्द्र देखि मार्चति चकोरी ॥
भड (इ) मोभिग बहु भट्ट भट्ट, बोलइ बिरुदाली ।
छल मल रोलन्ति राम कर देता ताली ॥६५॥
कर्मचन्द्र कुंमर कुमार श्रृङ्गार कराबइ ।
तिम पिहु पांचव मात तात, 'सुरताण सुहावइ ॥
मायइ मउड बिमाल भाल, कुण्डल दुइ दीपइ ।
हियडइ मोती तण (उ) हार गंगाजल जीपइ ॥६६॥
बाजू बंधन पहरराजा कर कंकण जडोमा ।
वीरत्या बेबा काज सज, सिंधुर शिरि चढ़िभा ॥
बोलइ इम गुण लोक थोक परदेसा पायू ।
छत्रीस बरसे छपरा धन र प मायू ॥६७॥
धन २ कुमर कमचन्द्र धन २ म माइ ।
धन २ भाइ सुरताण' धन 'नायक दे माइ ॥
भुगण भरि नरोरी माइ थाजइ सरणाइ ।
पञ्च भगाइ ए 'वस्तुपाल ए'मोज मचाइ ॥६८॥

पानकि २ याचक, दीजइ जे मागइ ।
पच रण दुर्या भरी, वलि चालइ आगइ ।
कप्पड चोपा कोट चोट, दमाम दीघी ।
'ओसवाल' भूपाल धन, इम कीरति कीधी ॥९९॥
याचक नइं धन कण कनक दान देइ दालिद् खंडइ ।
इम आडम्बर परिवया, आव्या वन खंडइ ।
त्रिण प्रदक्षिण समोसरण दिसिस्युं गुरु वंदइ ।
'कमचंद' सकुटुम्ब सेइ, चारित्र आणंदइ ॥१००॥

दोहा—

'कर्मचंद' रवि ऊगतइ तप गण गयण उद्योत ।
दुरित तिमिर दूरिं किया, तिम कुमती खद्योत ॥ १ ॥
'मांडण' कुल मंडण करइ, 'मरुमंडलि' उल्लास ।
संवत 'सोलम बावनइ, बीज' दिवसि 'माह' मास ॥ २ ॥
'मेघो' पिर आपी घर, निम 'पंचायण' पुत्र ।
छठी भगिनि भली छिउं छ (६) मानसे चारित्र ॥ ३ ॥

ढाल राग धन्यासी—

तिहां थी ते मुनि चालइ विषम कषाय नइ पालइ ।
आव्या गूजर देस पाटणि कीधउ प्रवेस ॥ ४ ॥
'विजयसेन' सूरिराय प्रणमि पातक जाय ।
ते छ नई (६) दीधी दिक्षा ग्रहण्या सेवना शिक्षा ॥५॥
'नेमिविजय 'माधू' जाण, 'सूरविजय 'सुरताण ।
'कमचन्द मुनि नाम, 'कनकविजय' गुणधाम ॥ ६ ॥

'केसर'मुनि तणु नाम, 'कीर्त्ति विजय' अभिराम ।
'कपूरचन्द' ते कहि(य)इ, 'कुंमरविजय' मुनि कहि(य)इ ॥७॥
सपरूप नो सिरदार, 'कनक विजय' अणगार ।
ए मोटउ महाभाग, श्रीआचारज लाग ॥ ८ ॥
पोतानु पदधारी, 'विजयदेव' गणधारी ।
तेहनइ ते शिष्य दीनो, करिज कनक नगीनो ॥ ६ ॥
'कनक विजय' मुनि वेलो, कल्पवृक्ष तणु वेलो ।
'विजयदेवसूरि' पासि सघला शास्त्र अभ्यासि ॥ १० ॥
गुरु नुं पास न मुकइ, विनय बड़ा नो न चूकइ ।
नाममाला नइ व्याकरण, कीधा कंठ आभरण ॥ ११ ॥
जोतिष तर्क विचार आगम अंग इग्यार ।
'पण्डित' पदवी विशिष्टा, 'सोल सत्तरि' प्रतिष्टा ॥ १२ ॥
'विसा' 'वरो' चित लावइ, 'अमदावाद' सोहावइ ।
सरखी भति घणी आवि 'विजयसेन सूरि' हाथि ॥१३॥
'जेसिंग' नुं निरवांण, 'दोमाइथि' जग भाण ।
पाटि पटोधर पूरो, 'विजयदेव सूरि' सूरउ ॥ १४ ॥
'जेसिंगमी पाट दीपइ, तेजि सूरज जीपइ ।
पूरइ संघ जगीस 'श्रीविजयदेव सूरीस' ॥ १५ ॥
सकल भट्टारक आवइ, 'पाटणि' चउमासु आवइ ।
मोल निहुतरा वर्षे 'सामी आचिका हर्षी ॥ १६ ॥
प्रौढ़ प्रतिष्टा ते करइ दामि दामिइ नंदइ ।
पोस वदुत्र छठि सार महीं जिहां दोष अदार ॥१७॥

'श्रीविजयदेव' सूरिंदइ सकल संघजि आणंदइ ।
'कनकविजय' कविराय कीधा श्री उवझाय ॥ १८ ॥
इम जे गुरु नि आराधइ, ते सुख संपत्ति साधइ ।
'विजयदेव' गणधार, मूलगि करइ विहार ॥ १९ ॥
माहि 'मलेम' उद्धार, करवा सुगुरु दीदार ।
'मांडवगढ' गुरु तेड्या, कुमति ना मद फेड्या ॥ २० ॥
देखी 'तपगछ माहि' खूमी भयो पातिसाह ।
जगगुरु पदि पूरे बड 'विजय देव' सूर ॥ २१ ॥
शाहि 'महागीरी' आपइ, नाम 'महातपा' आपइ ।
चंद्रके गुरु मोटे, तोहि करइ तहु गोटे ॥ २२ ॥
गुहिरा निसाण गाजइ पातिशाही वाजा वाजइ ।
मिलीया 'मालवी' संघ, 'दखिणी' श्रावक संघ ॥ २३ ॥
पांभरी दाइ पग लागा बड केसरि मारिई वागा ।
मिमरू मखमल माहि, पगि पग्गूल बिछाइ ॥ २४ ॥
बींगे वेइ गांठाडा बलि दीपा घणा घोड़ा ।
श्रावक श्राविका आवइ मोती थाले वधावइ ॥ २५ ॥
वाक छत्र गुरु पूजइ तेहना पातिक धूजइ ।
गुरुजी मइ पटि दीवउ, विजयदेव चिरंजीवउ ॥ ६ ॥

दोहा

'विजय देव' गुरु गाजता 'गूजर' देसि विहार ।
मनुजमि करता आविया 'मारू' देस मझार ॥ ७ ॥
विमलाचल तीरथ वडउ गरुउ तीर्थ शृंगार ।
जिहां श्री ऋषभ समोसर्या, पूर्व नवाणु वार ॥२८॥

'गुण विजय' कहइ भो'सिद्धगिरि', ध्यान धरत गत्र पाप ।
बलकन्त कहठो सिहां धमी, 'बाहुबलि' नुं बाप ॥ २६ ॥
जे नर परि बइठा करइ, ओधार्नुजय जाप ।
'गुणविजय' कहइ तेहना टलइ, सहस पल्योपम पाप ॥ ३० ॥
'गुणविजय' कहइ शत्रुंज तणी, आसकी मोटो मर्म ।
लाख पल्योपम संचिया, टलइ निकाचित कर्म ॥ ३१ ॥
'गुणविजय' कहइ 'विमलाचलि' पंचकोडि परिवार ।
चैत्री दिन केवल लह्यउ, 'पुण्डरीक' गणधार ॥३२॥
'गुणविजय' कहइ जग मां बडा, 'शत्रुंजय' 'गिरिनारि' ।
इक शिरि 'आदिसर' चाढयउ, इक शिरि 'नेमि कुमार' ॥ ३३ ॥

ढाल—राग सामेरी

'शत्रुंजय' जिनवर वंदइ, गुरुकी निज पाप निकंदइ ।
हुइ 'वीच' करी चोमास पूरी 'सोरठनी' आस ॥ ३४ ॥
'हीरजी' नी परि पूजाणो तिहां 'तप गच्छ' केरो राणउ ।
'गिरनार' देखी(दुजल) मेटइ राजलि (पिउ) राजा जिन भेटइ ॥३५॥
वलि 'नवइ नगरि' गुरु आवइ, सामहियां संघ करावइ ।
नामी हुइ सहस नवाणी इक सामेहिं खरचाणी ॥ ३६ ॥
तिहां थी वलि (वलि?) पूज्य पधारइ, शत्रुंजय' देव जुहारइ ।
'दीवबंदि' वलि उल्लासि, तिहां थी आव्या चउमासइ ॥ ३७ ॥
तिहां जिण प्रतिष्ठा सार रुपइया चवद हजार ।
खरच्या 'दीवबंदर' माहि, मीसेप अधिक उच्छाहि ॥ ३८ ॥

तिहां थी भाग्यउ उल्लास, 'सारखी' नगरि 'माह' मासि ।
'मजुमाझी छट्टि' वखाणी, .. ॥३९॥
तीन मास लगइ गुरु मोनो अमारि पलावइ 'सोनी' ।
संघ मुख्य 'रतनमी साह, कीधो ब्रह्मसी नु छाह ॥ ४० ॥
श्रीकनक विजय उवझाय वखाण करइ मुनिराय ।
पाल्हइ निज गुरुनो भाण पाल्यइ त तपगछ माण ॥४१॥
गुरुभीइ विधानि बइठा पातक पाम्यासि पइठा ।
छट्ठ(अ)ट्ठम करइ अनेक उवपवम (उपवासी) घणा सुविवेक ॥ ४२ ॥
आंबिल करी पलवइ धानि पूरब दिसि बइसइ ध्यानि ।
पचखाण जणावा माटि आपइ अक्षर लिखी पाटि ॥ ४३ ॥
श्रावक तिहां अगर कपूर उगाहइ परिमल पूर ।
इण परि आचारय मंत्र आराधइ पूज्य पवित्र ॥ ४४ ॥
वैसाख मास जब आवइ सुरिपद सुर वात जणावइ ।
वाचक नि निजपद आपउ, गछ भार 'कनकजी' नइ आपउ ॥४५॥
ए वाणि सुणी गुरु हरख्या जिम चीतक जल थी तरस्या ।
मह(य)सि बहु मंगल कीजइ, गुरु आया 'भारगामीजइ' ॥४६॥
आवइ तिहां संघ अपार, अग पूजा ना अंबार ।
दुख दालिद दूरी गमाया याचक घर सुभर भराया ॥४७॥
माहको नइ 'इडरि' गुरु प्रासाद प्रतिष्ठा हुइ ।
'राय देगि शोभा कीधी गुरु ताइ चोमासी कीधी ॥४८॥
तब 'राजनगरि' गुरु आवइ चउमासं संघ करावइ ।
बीजुं 'वीरमपुर' मांहि, गुरु चतुर चउमासु त्यांहइ ॥४९॥

'पारणि पुभाव्य' आवइ, 'सीरोही' सोह चढ़ावइ ।
अभिनव च्युसो 'तेजपाल', प्रागवंश तिलक 'तेजपाल' ॥५०॥
राय 'अखयराज' बड़इ जोर, तेहनि घरि जेह पमार ।
ते आइ तिहां किणि आवा, गुरुनि वंदइ मनि भावइ ॥५१॥
करइ यात्र 'विमल गिरी' केरी, जिणि भाजइ भवनी फेरी ।
आवइ 'कमीपुर' फेरो, हमकावइ होस अफेरी ॥५२॥
पूज्य श्री मइ कहइ परधान, पनहुं विह सुमनि मान ।
करि मेल पधारो जानो, गुरुराज कह्युं ए मानो ॥५३॥
गुरु कहइ अम्ह मनि नहीं रोस, टालउ तुम्हे सघल किलेस ।
तिहां लिखित आपिन करि दीधा साहि सहू को नि कीधा ॥५४॥
ए लिखित सभी जे पूछइ तेहनि आसीसर सुच्छ ।
मोहा मांहि मेल कराव्यउ, पुण्यइ भंडार भराव्यउ ॥५५॥
आचारज 'विजयाणंदि' गुरु श्री वांदा आणंदइ ।
श्री 'नंदीविजय' उवझाय जेहनुं मोटउ महदाय ॥५६॥
'धनविजय 'धर्मविजय नाम, वाचक गुरु मति अभिराम ।
इत्यादिक मुनि जन आव्या पुणि गुरु चरणे आव्या ॥५७॥
माह कहइ 'सीरोही पधारइ, वलि पोनमि ग भवधारो ।
तेजपाल सीरोही आवइ 'श्रीविजय देव' गुण गावइ॥५८॥

दोहा

'राजनगर श्री विचरता. करता रूप कल्याण ।
गयरमि' गुरु आविया जिहां राजा 'कल्याण' ॥५९॥
विजयदेव सूरि' वड वयन वाचक पंच समक्षि ।
ईडरगिरि' शिर 'ऋषभ जिन , भेटयइ हुइ रंग रेखि ॥६०॥

'कुंअरजी' सुत मंडणउ, साहिब सुख दातार।
'गुणविजय' कहइ मंगल करउ, 'सुमंगला' भरतार ॥६१॥
'रायदेस' 'रत्नियामणउ' 'कुंअरजी' सिरदार।
घरि २ उत्सव अति घणा फाग रमइ नरनारि ॥६२॥

ढाल—फागनी

तपगच्छको गुरु राजीयो, रमइ पुण्यनु फाग सुलखना।
परणो समता सुन्दरी जिनआणा वर बाग। सुलखनी
पुण्य फाग गुरु जी रमइ ॥६३॥
पहिलुं पाप पखालवा नेम तप निर्मल नीर ।सु०।
सुभ संयम चित मलुं, छांटइ चारित्र चीर ॥सु०पु०।६४॥
परंपरा आगम वहइ, चढता तुंग तुरंग ।सु०।
ज्ञान ध्यान नेजा घणा खेला लहरि तरंग ॥सु०।६५॥
सकल संघ सेना मिली वाजइ भंग जस ढोल ।सु०।
वाचक पंडित बंदरा सुगुरु साधु मझोल ॥सु०। पु०।६६॥
इक दिनि गुरुनि बोनवइ, 'तपागछ' परिवार ।सु०।
एक भंडारी बोनवि, भवपारख गणधार ।सु०।पु। ६७॥
तपगछ मन सुन्द करी, कीधु उत्तम काज ।सु०।
हवइ एक इहां थापीइ, आचारिज युवराज ॥सु०पु०।६८॥
मास भला रायण कस्या आयउ मास बसंत।
चंपक कनक मालती वासंती विकसंत ॥सु पु०।६९॥
तिम मनइ भाग बलहो, भपन करउ मुनिराज ।सु०।
'कनकविजय' वाचक वड, करउ पटोधर आज ॥सु०पु०।७०॥

कछवा गछ गूपति सगह, जोय महुरत सुद्धि ।छ०।
आचारय वाचक बलि, वलि जोसी बहु बुद्धि ॥छ०पु०७१॥
मन मान्यु महूरत मल्यु, शकुनादिक नी शाखि ।छ०।
'अक्षुवाली छट्टि' मति भली, वलि मास वैशाखि' ॥छ०पु ।७२॥
गुरुजी नइ साहु मीनवइ ए छह दिवस पवित्र ।छ०।
सोमवार सुहामणा, रुडु पुष्य नक्षत्र ॥छ०पु०७३॥
'ईडर'संघ सिरोमणि, 'सोनपाल' सोमचन्द्र' ।
अधिकारी सा 'सूरजी , सुत 'सावूंळ आनंद ॥ छ० पु०७४॥
'सहसमल' 'सुन्दर' भला, 'सहजू सोमा' जोडि ।छ०।
'धन जी 'मनजी' 'ईडुजी 'अमीचंद' महि खोटि ।छ०पु०७५॥
वासी 'राजनगर तणा संघवी 'कमसीह' । छ० ।
'पारिख' अहमदपुर तणा, 'वेला' सुत 'थावसीह' ।छ०पुण्य०।७६।
'पारिख' 'देवजी' 'सूरजी', 'वानसींग 'रा(व)सींग' । छ ।
साह 'भामा' 'वोल्हा' भला, साह 'चतुर्भुज सिंघ' ।छ०पुण्य०।७७।
'जाणा' 'जसू' 'जळा' भला भाई गुरु ना होइ । छ ।
'कोठारी 'मंडण मुखो 'वउराज' रहिमा जोइ ।छ पुण्य०।७८।
'कर्मसीह' नइ 'धनसी , तेजपाळ' समरथ कोइ । छ ।
'मलयराज रावा वरू, मंत्री 'समरथ' सोइ ।छ०पुण्य०७९।
मंत्रि 'धनू' नइ 'भीमजी 'भामा 'भाजा' जोइ ।छ ।
'फडिआ 'माळजी माणजी 'धना' 'थाधिमा दोइ ।छ०पुण्य०।८०
'गांधी वीरजी मेघजी गिम बलि 'वारजी साह ।छ०।
देवकरण 'पारिख 'जसू उ करहि उछाह ।छ० पुण्य०।८१।

'माणजी' शाह 'सूरजी', तिम वली 'राजपाल' ।छ०।
इत्यादिक 'ईडर' तणउ, मिल्यउ संघ सुविशाल ।छ०।पुण्य०।८२।
'वाघड' संघ सहु मिल्यो, 'महिम नगर' नुं संघ ।
'साबली' नुं संघ सामठउ, 'पद्मसिंह' 'चांपसीह' ।छ०।पुण्य०।८३।
साह 'नाकर' सुत इवि तिहां, 'सहजू' साह उदार ।छ०।
दानि मानि आगलउ, 'ईडर' शोभाकार ।छ०।पुण्य०।८४।
सिणगारी निज घर पधुं तह्या 'तपगछ नाथ ।छ०।
पट्ट देवानि कारणि संघ बहुविध साथि ।छ०।पुण्य०।८५।
इण अवसरि पोतविमा 'धमविजय उवझाय ।छ०।
'भानुचन्द्रविजय' नामई वलि, भाल वाचक कहाय ।छ०।पुण्य०।८६।
वर चारित 'चारित्रविजय', वाचक कुम कोटीर ।छ०।
चोथा पण्डित परगडा 'कुशलविजय' वजीर ।छ०।पुण्य०।८७।
'कनकविजय' वाचक तुम्हो तेडउ पर्षि आवासि ।छ०।
तब ते च्यार मळपत्ता, पुहता वाचक पास ।छ०।पुण्य०।८८।
ऊठउ तुम्ह गुठउ गुरु, निज पद दिउ सुविवेक ।छ० ।
विजयवंत वाचक वदइ गुरुनि शिष्य अनेक ।छ पुण्य०।८९।
तुम्ह वदइ छउ ते सही, पणि तुम्ह पुण्य अपार । छ ।
सचि भावती वीजीई गुरुजी पद गउ भार ।छ०।पुण्य०।९०।
इम गुरु चरण आगिया माणस देउइ धार ।छ०।
'हीरद जिम जेसिंघजी तिम थाप्या गुरु पाटि ।छ०।पुण्य०।९१।
नाम थाउ तप आणीउ, सा० 'सहजू अभिराम ।छ ।
नाम ठवइ गुरुजी करइ 'विजयसिंह सूरि' नाम ।छ०।पुण्य०।९२

वच्छा गछ भूपति भगइ, ओछ महुरत सुद्धि ।छ०।
आचारय वाचक पछि, वलि जोसी बहु बुद्धि ।।छ०पु०।७१।।
मन मान्यु महूरत मल्युं, सकुनादिक नी शाखि ।छ०।
'अखुवाळी छट्ठि' अति भली, वलि मास वैशाखि' ।।छ०पु।७२।।
गुरुजी नइ सहु वीनवइ, ए छइ दिवस पवित्र ।छ०।
सोमवार सुहामणा, रूडु पुष्य नक्षत्र ।।छ०पु ।७३।।
'ईडर'संघ सिरोमणि 'सोमपाल' 'सोमचन्द' ।
अधिकारी सा 'सूरजी', सुत 'सावूं'ळ अमंद ।। छ० पु०।७४।।
'सहसमल' 'सुन्दर' भला सहजू' सोमा' जोडि ।छ०।
'धन जी 'मनजी 'इंद्रजी' 'अमीचंद' नहि खोडि ।छ०पु ।७५।।
वासी 'राजनगर' तणा, संघवी 'कमलसीह' । छ० ।
'पारिख अहमदपुर' तणा, 'वेळा' सुत 'चांपसीह' ।छ०पुण्य०।७६।
पारिख' 'देवजी' 'सूरजी 'वान सीग 'रा(ब)सींग' । छ० ।
साह 'मामा' 'तोल्हा भला साह 'चतुर्भुज सिंघ' ।छ०पुण्य०। ७७ ।
'नागज' 'मसू' 'मेठा' भला भाइ गुरु ना होइ । छ० ।
'कोठारी 'मंडण' सुधी 'बउराज रहिमा जोइ ।छ०पुण्य ।७८।
कर्मसीह भाइ 'धनजी' 'तेजपाल' समउ न कोइ । छ० ।
'अदयराज राचा वली, मंत्री 'समरथ' मोइ ।छ०पुण्य०७९।
मंत्रि 'छजू मइ 'भीमजी' 'मामा' भाभा जोइ ।छ ।
'पद्दिमा 'मानजी मागजी 'सवा 'वाघिमा' दाइ ।छ०पुण्य०।८०
गांधी 'वीरजी मेघजी, तिम वलि 'वारजी माद ।छ ।
देवकरण' पारिख 'जमू' ए करदि वडाइ ।छ पुण्य०।८१।

'कीरतिविजय' 'लावण्यविजय' वाचक पद दोइ दीद्ध ।
माठ विबुध पद थापीआ, मया सुगुरु इम कीद्ध ।छ०पुण्य०।९३।
श्रीफल करी प्रभावना, ओंमण वार मवार ।
महमूदी 'सहजू' तिहां, खरची पंच हजार ।छ०पुण्य०।९४।
'कल्याणमल्ल' राय राखिआ, 'इडर नगर' मझार ।छ०।
सा० 'सहजू' उत्सव करइ, वरत्यो जयजयकार ।छ०पुण्य०।९५।
वलि ज्येठ मांहि तिहां, बिम्ब प्रतिष्ठा एक । छ० ।
सा० 'रहीआ' उत्सव करइ, खरचइ द्रव्य अनेक ।छ०पुण्य०।९६।
बीजइ पखवाडइ वली अमराज्ज शाह किद्ध ।छ०।
पारिख 'देवजी' नो घरि, पून्य प्रतिष्ठा किद्ध ।छ०पुण्य०।९७।
संवत साठ इग्यासी(य)इ उत्सव हुआ मांणंद ।छ०।
विजय देव सूरि थापीआ 'विजयसिंह' सूरिंद ।छ०पुण्य०।९८।
पवन मंगल दिन शुभ घडू, थापइ होइ मीसाण ।छ०।
'विजय देव' गुरु पाटवी प्रगटिउ तप गछ भाण ।छ०पुण्य०।९९।
गुरु मालवेज मोकली, 'इडरगढ' चउमासि ।छ०।
राय 'कल्याणमल्ल' राखीआ पहुंचाडी मन आसि ।छ पुण्य०।१००।

दोहा —

महम्मद 'मीर (ही) मकी तेहइ मा तेजपाल ।
मांडू पुण्य पधारिइ चैत्र मास सुर साल ।।१।।
तेह बोलनि मन धरी गुरुजी करइ विहार ।
मग मांहि बहुला मिलइ, उत्सव करइ अपार ।।२।।
मालवा मांहइ मारजी, स्वामी शोभा जाहि ।
संघपती 'मेहाजल' मिली गुरु पूजइ कर आहि ।।३।।

ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह
चतुर्थ विभाग
(विभाग नं० १ की अनुपूर्ति)

कवि पल्ह विरचिता
जेसलमेर भाण्डागारे ताड़पत्रीय खरतर पट्टावली

॥ श्री जिनदत्त सूरि स्तुतिः ॥

जिम दिट्ठइं मायंदु१ फलइ मइर२ रसु भग्गगुसु ।
जिम दिट्ठइं सक्करह पाउ तणु निम्मल हुइ पुसु ॥
जिम दिट्ठइ सुहु होइ कहु पुष्फुष्फिउ मासइ ।
जिम दिट्ठइ हुइ रिद्धि सूरि हारिद् पणासइ३ ॥
जिम दिट्ठइ हुइ सुह४ पम्ममइ मणुहरु कालु कल्लहुप५ ।
पहु नव फणि मंडिउ 'पास' जिणु मल्लयमेरि' जिन पिक्खहु६ ॥१॥
सयण मझरि घरि मणुहु बाण पुणि पंच म पयडहि ।
रुविण७ पिम्म पयावि बंभ हरि हरु मन(त) फिलडहि ॥
रूउ८ पिम्मु ता बाण मयण ता कुरिसहि मणुहरु ।
नम(ब) फणि मंडिउ सीसि जाव महु पक्खहि जिणवरु ॥

---

१ माकंद, २ मदरस, ३ पनासइ, ४ सुख, ५ कर कमहु ६ पिक्खहु,
७ रुपिण, ८ रूप

सगुणसट्ठमि पाटि पुरन्दर, 'विजयसेन' गछ धोरीजी ।
पाटि साठिमइ 'विजयदेव' गुरु, गुण गायइ सुर गोरीजी ॥११॥
'हीर' 'जेसंगजी' पाट दीपावइ, 'विजयदेव सूरि' सोहाजी ।
पूजा नाम कर्म तप धर्मिइ, राखइ तप गछ शोभोजी ॥
तस पट दीपक रवि शशिजी, एक 'विजयसिंह' सूरीसोजी ।
इकसठमि पाटि पुरषोत्तम, पूरइ संघ जगीसोजी ॥१२॥
सोलसयासीमा वर्षि हर्षि, 'सीरोही' सुख पायउजी ।
'ऋषभदेव' प्रभु पाय पसायइं 'विजयसिंह सूरि' गायोजी ॥
'कमल विजय' बुध मंडित पंडित, 'विद्याविजय' गुरु चेलोजी ।
गुणविजय' पण्डित एम पयपइ, थायइ तपगछ वैलोजी ॥१३॥
इति श्रीविजयसिंह सूरि विजय प्रकाश नाम रासि (संपूर्ण)
(पत्र ११ श्री तत्कालीन लिखित, जयचंद भण्डार बं न° ६१)

तव तकम्न्ड मीसगइ धम्म सीग्मिसुरिम२६ सुविसालइ ।
संजम सिर मासुरह कुसहव(म)य वाड़ कराला ॥
नाण नयण दारणह नियम निदर७ नहर समिद्दह ।
कम्म कोय(व)निटुरहर८ विमलपड पुछ पसिद्दह ॥
उवसमण उमर२६ धर दुब्मिसह गुण गुंआरव भीसह ।
'जिणदत्तसूरि' अणुसरह पय पावक-रहि-मड-सीहह ॥६॥
जर जल-मरण-रउडु छोह-लहरिहिं गज्जंतउ ।
मोह मच्छ उच्छलिउ कोव कल्लोल वहंतउ ॥
मयमयरिहि परिवरिउ वंच वहु वढ दुसंचरु ।
गन्म३० गरुय गंभीरु असुह आवत्त भयंकरु ॥
संसार समुद्दु३१ जु परिमउ असु पुणु पिच्छिवि दरियइ ।
'जिणदत्तसूरि' ववएसु मुणि पर तरंडइ३३ तरियइ ॥७॥
सावय किवि कोयच्छि केवि खरइ३४ (य?) रिय पसिद्धिय ।
ठाइ ठाइ छक्किजइ३५ मूढ निय विधि विरुद्धिय ॥
तरहि न किंवि परत्त३६ वेविसु परुपरु जुज्झहि ।
सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पट्ठ तर बुज्झहि ॥
'जिणदत्तसूरि' जिन नमहि पय पउम मच्चु३७(गच्चु) नियमणि वहहि
संसार सवहि दुत्तरि पडिय 'विनडु ३८ तरंडइ चडि तरिहि ॥८॥
तव-संजम-सयनियम-धम्म-कंमिण वावरियउ ।
कोह कोह मय-मोह तहव मच्छिहि परिहरियउ ॥

२६ मूवि २७ समहर, २८ निट्ठ_रह २९ डमर । गंभ ३१ समुदु
३२ मुणिय, ३३ मुतरियइ ३४ तरतरिम ३५ छक्किजहि ३६ परत्त
३७ सच्चु ३८ विनडु

विसम दंसलक्खणिम सरय मस्थस्थ विसालइ ।
'जिणवल्लह' गुरुभत्तिवंतु पयडइ कठिकालइ ॥
अन्निहि वि गुणिहि संपुन्न तणु दीन दुहिय उद्धरणु पर ।
'जिणदत्तसूरि' 'पर पवरम(?)गु तसवंतु मज्झहियइ धर ॥६॥
चक्कवाणियइ त परम तत्तु जिण पाउ पणासइ ।
भारहियइ त 'वीरनाहु' कइ 'पत्तु' पयासइ ॥
धम्मु तु दय संजुत्तु अण्ण वरगइ पाविज्जइ ।
पाउ त अणलंडियउ सु वंदिणु सलहिज्जइ ॥
सइ ठाउ१ इह त उत्तिमु मुणिवरञमि (पवर वसहिहो चत्तर नर ।
तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर 'खरतर सिरि' 'जिणदत्त' वर ॥१०॥

१ इति श्री पट्टावली पद्यानि । संवत् ११७० वर्षे आश्व युगाय पचे ११ तिथौ श्री महाराजगर्या श्री खरतर गच्छे विधिमार्ग प्रकाशि वसतिवासि श्री जिणदत्त सूरीणां शिष्येण जिनरक्षित साधुना लिखितानि ।

२ इति श्री पट्टावली ॥ संवत् ११७१ वर्षे पत्तन महानगरे श्री जयसिंह देव विजयराज्ये श्री खरतरगच्छे योगीन्द्र युगप्रधान वसति वासि जिनदत्त सूरीणां शिष्येण ब्रह्मचंद्र गणिना लिखिता ॥ शुभं भवतु श्री मत्पार्श्वनाथाय नमः सिद्धिरस्तु ॥

---

१९ ठाइ ।

विद्वन् शिरोमणि जिन वल्लभसूरिजी

(जैसलमेर भाण्डागारीय प्राचीन ताड़
पत्रीय प्रतिके काष्ठफलक पर चित्रित)

परमप्पपय न केवि गुरु, निम्मल धम्मह दुवि ।
सम्म त्रिदस पुर मन्निवई जो जिणवयण मिलंति ॥९॥
गुरु गुरु गारवि रंजियई मूढा लोय अयाणु ।
न मुणइ जं जिण आण विणु, गुरु होइ सच्चु समाणु ॥१०॥
जिम सरुयाईम माणुसह, कोइ करइ शिरछिमा ।
न मुणइ जो जिण-भासियओ, तिम कुगुरुह संजोओ ॥११॥
दूंडा अवसप्पिणि असम गहु दूसम काल किलिट्ठु ।
जिणवल्लहसूरि मह नमहु, जण अमुणु न सिट्ठउ ॥१२॥
जो जिह कुगुरु माइयउ तहि ते भत्ति करंति ।
विरला कोइवि जिणवयणु जहि गुण तहि रच्चंति ॥१३॥
हाहा दूसम काल बलु, राल-मइलण जोइ ।
मामेश्व सुविहिय तण्ड मित्त वि वयरिमा होइ ॥ १४ ॥
तिहि चेडाहि विहरं नमओ, सुमुणिय परम वज्झाइ ।
हिययइ जिण विहित्र पर, असुसुहउ गुण जाइ ॥१५॥
जे जिणवर पहु होसिमइ, जणु रंजियइ इयासुं ।
सो वि सुगुरु पण्णत्तइ, कुटिल हियइ इयासु ॥ १६ ॥
मरिय मवे जिमो वीर जिणु इकि अमुत्त बवेणु ।
कोडाकोडि सागर भमिओ कि न सुणहु मोहेण ॥१७॥
तव संजम सुत्तेण मउ, सव्वावि सहलउ होइ ।
सो वि अमुत्तवेण सउ भव-दुह लक्खा देइ ॥ १८ ॥
माया मोह चपउ जण दुखहई जिण विहि-धम्मु ।
जो जिणवल्लह सूरि कहिओ जिणं देइ सिव-सम्मु ॥१९॥

संसमो कोइ न करइ मणि, संसइ हुइ मिच्छत्तु ।
जिणवल्लहसूरि सुगुरु पवरु, नमहु सु त्रिभुवन-पवित्तु ॥२०॥
मइ जिणवल्लहसूरि गुरु मय दिठओ नयणहिं ।
जुगपहाणउ विन्नाणियय, निछइ गुण-चरिएहिं ॥२१॥
ते धन्ना सुकयत्थ नरा ते संसार तरंति ।
जे जिणवल्लहसूरि तणिय, आणा सिर वहंति ॥ २२ ॥
तहिं न रोगा वाहरगु तह तह मंगल कल्लाणु ।
जे जिणवल्लहसूरि मुणिहि, निन्नि नमह सुविहाणु ॥२३॥
सुविहिय मुणि चूडा-रयणु जिणवल्लह गुरु गुणरासो ।
इस माइ किम संपुन्नउ ओवमा मक्खि सुहासो ॥ २४ ॥
संपइ तं मन्नामि गुरु, अगइ छागइ सूर ।
ज जिणवल्लह पउ कहहि गमइ ममगउ दूरि ॥ २५ ॥
इय जिणवल्लह जाणियइ सद्गुरु सुणियइ धम्मु ।
अनसुहु गुरु स व म नयइ, निरय जिम परइ सुरंसु ॥२६॥
इय जिणवल्लह थुइ भणिय, सुणियइ करइ कल्लाणु ।
देवो दोहि चउवीस जिण सासय-मोक्खु-निदाणु ॥ २७ ॥
जिणवल्लह भमि जाणियइ, हियमइ तसु सुणीसु ।
जिणदत्तसूरि गुरु जुगपवरो उद्धरियइ गुरुवंसो ॥२८॥
जिणि नियमइ पुग टाविपभा पासमा सीह किमार ।
पर समाल-घउ-दृसणु जिणदत्तसूरि सुणीसइ ॥ २९ ॥
नम गुरुहि दिए गुरु भयमा जिणदत्त सूरि मुणिरासो ।
जिणमय विहिरमाय करु, न्नियउ जिम विसरासा ॥३०॥

पारसंगुविहि विसयसुहु, वीरजिणमर मयणु।
जिणचंद सूरि गुरु ति पसाओ, मिच्छइ अन्नुन्न कमणु ॥३१॥
धन्न तउ पुरवर पट्टण, धन्न ति देस विचित्त।
जहिं विहरइ जिणचंदसुगुरु, देसण करइ पवित्त ॥३२॥
कवण सु होसइ दिवसडओ, कवण सु तिहि स मुहुत्त।
जहिं वंदिसु जिणचंद सुगुरु, निसुण सुधम्मह तत्त ॥३३॥
मल्हदार करसु हउ, पाविउ सुगुरुह सम्मत्तो।
नेमिचंद इम विनवइ सुगुरु-गुण-गाम-रत्त(त्तो) ॥३४॥
नंदउ विहि जिण मंदिरहिं, नन्दउ विहि समुदाओ।
नंदउ जिणपतिसूरि गुरु, विहि जिण धम्म पसाओ ॥३५॥

इति नेमिचंद भंडारि कृत गुरु गुणवर्णन ॥

अग्र आख्यान कवित्त ।

'मारवारि' मध देसि, सहिर 'पल्लीपुर' मक्खुं ।
तहां हुइ पुर नाह, बं(बं?)म 'जस्सोहर' दक्खुं ॥
'खेरनगर' 'महेस', 'गुहिल-बंसी' हुइ राजा ।
मारण 'पल्लीनगर', चढ्यउ सो करत दिवाजा ॥
तिनवार 'बंभ जस्सोहरू', कहइ कर्मुं हि 'पल्ली' रहइ ।
कोऊ रखुं आणि मापाइ सिधि, 'ग्यानहप' कवि यूं कहइ ॥२५॥
'पल्लिनगर' चउमास, रहे खरतर गच्छ मामक ।
तिन गुरु कउ जस बहुत सुण्यउ, विप(प्र ?) लोकां वाइक ॥
ताकउ नाम 'जिनदत्त सूरि', मंत्र धारी सूर बर ।
पंच नदी पंच पीर साधि सिद्धउ सुर कउ घर ॥
'मानभद्' जक्ख हाजर रहइ, हरख खरउ सेवा करइ ।
'ग्यानहप' कहइ गुरु किन्नु बहु पार न सुर गुरु महु करइ ॥२६॥
गुरु पहुंचे 'मुलतान', पीर पच आप नाम सुणि ।
पत्थर पार पीर, गुरु बरस कंचण मणि ॥
पीर मद्दे गुरु पाइ, मंप पहुमाउज कीनउ ।
मूपउ मुगल कउ पूत, जीउ गुरु पाछे दीनउ ॥
महु लोग देखि अचरिज भए, इन गुरुका अवदान बहु ।
'ग्यानहप' कहत 'जिणदत्त' की करत देव कीरत सहु ॥२७॥
गुरु करत बखाण घर धाती घरमहि गिणी ।
छोरेस पाटहे आइ बड़ी सिर्ग आगिणि ॥

'उज्जेनी' गुरु गए, देखि थांभउ गुरु हरखे।
अभ्याउ मन्त्र करि ध्यान लिट्ठ पोथी आकरखे॥
तिस विच सोवन सिद्ध, गुरु बहु विद्या पाइ।
'चित्रोर' कइ भण्डार तहाँ गुरु आइ रखाइ॥
इस पोथी की बात 'कुंमरपाल' राजा सुणी।
'ज्ञानहर्ष' कहइ 'पाटणनगर' नवमक्ख अमवारा घणी॥२२॥
'कुंमरपाल' जिनधर्म हुइ श्रावक पूनम गच्छ।
श्रावक सर्व बुलाइ संघ नायक खरतर गच्छ॥
गुरु पूछुं हम किसउ, हेम सिघ पायी आवइ।
कागद संघ दरहाल, भेज पोथी मंगावइ॥
गुरु लिख्यउ वचन पोथी परइ छोर न पोथी वांचनी।
'ज्ञानहर्ष' कहइ भण्डार विच रख कइ पोथी पूजनी॥२३॥
गुरु 'कुंमरपाल' कइ, 'हेम' नामइ आचारिज।
तिण पइ पोथी धरी छोरि बांचउ गुरु आरिज॥
कहत गुरु इम करइ भया छोरी नवि जावइ।
सापकी गुरु की मइन छोरितो आँख गमावइ॥
पुस्तकि कहि भण्डार विच 'जेसलमेरन' कइ परी।
'ज्ञानहर्ष' कहत तिस आइगा, रक्खइ बहु चउसठ सुरी॥२४॥
परकमण्ड विच बीज, परत रक्खी गुरु ततखिण।
'विक्रपुर' परी खगी गमी गुरु स्तोत्र संग्यउ भण॥
पगरतमइ गुरु तहाँ मईमरी आगा सुण्या।
परबोधे आवक, " " " ॥
१७वीं शताब्दी लि० (इस प्रतिका सातवाँ मध्य पत्र हमारे ...

श्री जिनेश्वर सूरिजी

(श्री जिनपति सूरि शिष्य)

वार पञ्चताल१८ विक्कम१९ संवच्छरे, मगसिर सुद्द एगारसीपर२० ।
'खम्माम'य कित्ति पुणु उपन्नु नेमिचंद गुरु रुवण्णरु [प+] ॥६॥
'अंबा'य विहि सुमिणउ२१ दिन्नु,२२
फल२३ समाजाउ२४ मणिर५ परिचिर२६ + ।
'अंबडु'२७ नामु२८ तसु किमउ२९ पियरेहि,
एंग मरि गरुय-नद्दावणाय३० ॥७॥
घात—अत्थि पुहविहि अत्थि पुहविहि नयरु 'मरुकोट्टु',३१
मंडारिय तहि३२ वसए, 'नेमिचंदु' गुण रयण सायरु ।
तसु मज्जा 'लखमिणि' पवर सील+[वंत] अबन्न मणहर ॥
तह३३ उप्पन्नउ पुणु वरो ३४ रुविणि३५ देवकुमारु ।
'अंबडु' नाउ३६ पयट्टियउ,३७ हूयउ सम जय कारु ॥८॥
मन्निउ३८ दिसहो अंबडु कुमरु, पमणइ३९ मायइ४० अम्माइ धीर ।
बहु संसारु दुरुह४१ मंडारु,
ता हउं४२ मैसिसुम४३ अतिहि४४ मसारु४५ ॥ ६ ॥
परिणेसु रजमश४६ सिरि वरनारी
माइ माइप४७ मम्मु४८ मम्माइ पियारो ।

१८b पंचेताल, १९b विकम a विक्रम २ b इग्यारसीए, २१b सुमिणए २२b दोजु, २३b o फलु २४b oसमाजाउ २५a मनु bमणि, २६b न्योरिहि २७b oअंबडो २८b नाम २९b किमउ ३ b oनद्दावणाए ।
३१o मरुकोट ३२a तह + ab मति, ३३o तसु उपन्न ३४a पुरुषवरु ३५a bरूविण ३६a नामु ३७a पयट्टिय, ३८b भणियारि दियसिहि अंबडु कुमर o भणियदियसिहुर अंबडु कुमरो ३९a पमणइ ४ b मायर माइय धीर (o धीर), ४१a b दुर ४२a o ता हउं, ४३a सिसिसु ४४a नवि, ४५o मसारो ४६o संयमसिरि ४७o माय b माय ४८b हुँ

'मंगलु' पमणइ माइ७५ सुणि परिणिसु संजम कन्ने ।
इम सुए पुहविहि७६ सल हुयउ, नामइ 'खसमिणि' कुक्खि७७ ॥१५॥
अभिनव ए माणिक्य जानउत्र, 'मंगलु' तणइ बोलाहि ।
मप्पुणु७८ ए पमणइ भाइयण ७९ हुयउ८० जानइ माहि ॥१६॥
आवहि आवहि रंगभरि पंच-महव्वय राय ।
गायहि गायहि मधुर सरि८१ मद्दप८२ पवमणमाय ॥१७॥
मढार८३ सहसइ८४ रहवरह,८५ जोगंयय८६ तहि सीलंग ।
बाजहि बाजहि रोति सुह,८७ भेगिनि८८ चंग तुरग ॥ १८ ॥
कारइ कारइ 'नेमिचंदु ८९ भंडारिउ उच्छाहु ।
वापइ वापइ जान९० वाजा 'खसमिणि' हरषु९१ अथाहु ॥ १९ ॥
कुसमिहि९२ सोमिहि९३ जानउत्र, पहुतिय९४ 'खेड' मझारि ।
उच्छवु हुयउ९५ अइ ९६पवरो नाचइ फरफर नारि ॥ २० ॥
'जिणवइ सूरिण सुणि९७ पवरो वेसण अमिय रसेण ।
कारिय मीमज्मवार९८ तहि, जानइ हरिस भरेण९९ ॥ २१ ॥
संति जिणेसर' वर सुयणि १० मांडिअ१ १ नंदि सुवेहि ।
वरिसहि मविय१ २ दाण जहि, जिम गज्जर्यगणि मेह ॥ २२ ॥

७५o म ब ७६a सुपमनिहि ७७b कुक्खि ७८b अप्पुणि. o माउलु ७ a वरुयाय a हुयप ८१a रयमरि ८२a मद्द ८३a मढार ८४a सहस, ८५a रहवर ८६a जोगिया ८७b.o सुह, ८८a वपहि ।

८ b नेमिचंद, ९ a वाजइ ९१a हर्ष ९२a कुसमहि ९३a सोमहि ९४a पहुतो ९५a हुयउ ९६a पवर, ९७a पवर b पवरि ९८b मीमज्म-वार ९ b भयो १ a सुयणि-१ १b.o मंडिय २b मांडिय a. भविया

मणसणु खवि५४ सुह झागु धरेवि अरिरि सुखन्तु इम माणिऊर्य ।
[विर इगतीस आसोअ५५ वदि छट्ठि 'जिणसरसूरि सग्गमि पत्तु ।।×]
'जिणेसर सूरि' सग्गमि संपत्तु५६ पूरउ संघ मण वंछियाई५७ ।।२२।।

पहु श्रीवाहडउ५८ पय पवह, जे रियहि लेश्म रोसो५९ रग भर६० ।
ताह जिणेसर सूरि सुपसन्नु६१,
इम मण्ड भविय गणि 'सोमसुत्ति'६२ ।। २३ ।।

।। इति श्री जिनेश्वर सूरि संयमश्री विवाह वर्णन रास समाप्त ।।

५४a खविय [x] ab३गि ५५b आसाप ५६b-c संपत्तआ ५७b वंछियाइ, ५८b श्रीवाहडइ c श्रीवाहडुर ५९ b c रासिय ६ b-c भरि ६१a पसन्न ६२b सामसूर्त्ति c सोमसुती ।

॥ कवि ज्ञानकलश कृत ॥

श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास

संति करणु सिरि संतिजिणह, पय कमल नमवी।
कासमीरह मंडणिय१ देवि, सरसति सुमरेवीर॥
सुगुरु सिरि 'जिणउदयसूरि' गुरु२ गुण गाएसु।
पाट महोच्छव४ रासु रंगि तसु हउं पभणेसु॥ १॥
चन्द्र गच्छि सिरि वयर ५साखि गुणमणि भंडारु।
'अभयदेवु'६ गुरु गहगहए गछधर७ गणधारु॥
सरसइ८ कंठाभरणु [त(नी)पय], मण नयणाणंदु।
जिणवल्लह' सूरि चरण कमल अनु नमइ सुरिंदु॥ २।
तासु पाटिहि९ जिणदत्तसूरि', विहि मग्गह मंडणु।
तउ 'जिणचंद' मुणिंद रूवि, मयणह मय खंडणु॥
वाइय१० मयगल११ कुंभ दलणु, कंठीर समाणु।
सिरि जिणपति' मुणिंदु१२ पयउ महियलि जिम भाणु॥ ३॥
तसु पय कमल मराल सरिसु१३ भवियण जण सुरतरु।
सूरि जिणेसर' पवरि पुण्य कण्ठी कमीहर।
निम्मल सयल कला कलाव पडमिणि वण दिणमणि।
सुगुरु सिरि 'जिणपबोह सूरि पंडियह सिरोमणि॥ ४॥

१b कसमीरह मंडणीय २a नमरवी ३a गुर ४a महोच्छव ५b साख ६a अभयदेव ७a प्रति ७a गुणधर ८a सर प ९b पाटि, १० b वाइय ११a मंगल, १२b मुणिंद, १३b सूरिह।

चंद चवड निय किति धार१४, धवलिमइ१५ वंमंडु ।
तयम सुगुरु 'जिणचंदसूरि', भवअणहि तरंडु ॥
सिधु देसि सुविहिय विहार जिण धम्म पयासणु ।
सुगुरु राउ 'जिणकुसलसूरि' जगि अक्खलिय सासणु ॥ ५ ॥

तासु सीसु 'जिणपद्मसूरि' सुरगुरु१६ अवतारु ।
न सहइ सरसति देवि जासु सिया गुण पारु ॥
तयणतर सिरि-सेय, नीरु-निहि१७ पुंनिमचंदु ।
जिम सासणि सिंगार हारु, 'जिणलबधि' मुणिंदु ॥ ६ ॥

तासु पाटि जिणचंदसूरि तव तेय फुरंतउ ।
जलहर जिम घणु नाण नीरु, पुरि पुरि वरिसंतउ१८ ॥
'रंभनयरि' संपत्तु तत्थ गुरु वयणु सरइ ।
गच्छ सिखरु मियपट्ट सिरुपर१९ आयरियइ तर ॥ ७ ॥

॥ घात ॥

गच्छ मंडणु गच्छ मंडणु सार सिंगार२० ।
जंगमु सिरि कप्पतरु भवियलोय संपत्ति कारणु२१ ।
तव संजम नाण निहि, सुगुरु रयणु संसार तारण ।
सुगुरु सिरि 'जिणलबधिसूरि' पट्ट कमल मायंडु२२ ।
झायहु २३सिरि जिणचन्दसूरि, जो भव तम पयंडु ॥८॥

१४b धार, १५b धवलिम १६b सगुरु १७b निमसिहि १८a वरसंतउ,
१९a सिम, २०b सिंगारउ, २१a कार २२b मायंडु २३a साथइ

महि मंडणि 'बीजिम नयरे',२४ कंचण रयणु विसालु२५ ।

तउ 'रयपाल'२६ 'भीवउ' 'सपरो', निवसइ तहि 'भीमसु' ॥९॥

तसु नंदणु बहु गुण कलिउ, संघवइ 'रतनउ' साधु ।

त×सयल महोच्छव पुरि मबळो, 'पूनिग' मनि उच्छाहु ॥१०॥

सुहगुरु२७ वंदण 'सोमपुरे', वीण दुहिय सापार ।

'रतनसीह' 'पूनिग' सहिय, भाबइ सपरिवार (ह) ॥११॥

वंदवि सुहगुरु विन्नविउ, 'तरुणप्पह' सूरि राउ ।

त×गुरु पय—ठवणइ२८ कारणिहि,२९ मिणि करउ सुपसाउ ॥१२॥

त×पाय ठवणि सुहगुरु३० तणए, भाबह विहि सहुवाउ ।

त नयर छोडउ३१ जोयण मिसय, पालउ विहि बहुभाव ॥१३॥

'आसाढ धनरोलरस, तेरसि पक्खिय पक्खि' ।

तउ३२ भंबि ठविय 'मजिमइ गुणगि', सच्छीजइ मर अक्खिल ॥१४॥

'तरुणप्पह' सुहगुर एप्पु, बामारिड सुविचारु ।

त ठविउ ३३पाटि गणि 'सोमप्पहो',३४ सयल गच्छ सिंगारु ॥१५॥

न दिन्नु नामु 'जिणउदयसूरि', सयण्ह अमिय पवाहु३५ ।

त+जय जयकार समुप्पज्जिय, हूअ३६ संघु सगाहु ॥१६॥

॥ घात ॥

मयण मन्दिर सयल मन्दिर कम्पिउ गोईमि ।

'रतम्भाइत ३७ वर नयरि,३८ अजियनाह मन्दिरी मणोहरि ।

तहि मिलिउ संघु पगु३९ पंच सम्मु४० बरजंति बहुपरि ॥

२४b सिरिजिमनयरे २५b विसालु, २६b a कस्तालु ×a मधि, २७b सुहगुर २८b पयठवणा २९a कारणहि ३ b सुहगुर ३१a नयरकोष ३२a व । ३३b ठविउ, ३४b सोमपहो ३५b पवाहु a×मधि ३६a हुअउ ३७a संभायत ३८a नयर, ३९b पमु ४ b सामर,

'रतनई' 'पूनइ' संघवइ, सुहगुरु४१ तणइ पसाइ ।

पाट महोच्छवु कारवइ४२, हियडइ हरषु न माइ ।।१७।।

रयणि४३ परि ए गुरु मायसि, सुहगुरु पाटिहिं४४ संठविउ ।

तिहुयणि ए मंगलचारु, जय जयकारु समुच्छलिउ ।।१८।।

वाजए४५ नंदिय तूर, मागण जण कलिरवु करए ।

सोकरि ए तणइ प्रमाणि,४६ नंदि मंडपु जण मणहरए ।।१९।।

नाचंए मच्छ विसाल, चंद वयणि मन रंग भरे ।

नव रंगिए रासु रमंति, खेला खेलिय४७ सुपरिपरे ।।२०।।

परि परिए वन्दरवाल,४८ गीतइ मुणि रलियावणिय ।

ठहि पुरिए हुयइ४९ समवाउ, करतर रीति सुहावणिय ।।२१।।

मयहिमु५० ए विहि समुदाय 'सम्मनपरि' बहु गुण कलिउ ।

कीसइ ए दाणु दीयंतु जंगमु सुरतरु करि५१ फलिउ ।।२२।।

संघवइ ए 'रतनउ'५२ साहु 'वस्तपाल'५३ 'पूनिग' सहिउ ।

धणु जिमए वंछिय धार, धनु वरिसन्तउ५४ गहगहिउ५५ ।।२३।।

अरिणु ए कियउ विवेकु, रंगिहिं५६ जीमणवार हुय ।

गरइ५७ मनहि माणहि वउविहि संघइ५८ पूय किय ।।२४।।

'रतनिगु' ए 'पूनिगु' बेवि दाणु दियंतउ नवि रिगमए ।

मानिक ए मोतिय दानि, कणय कापडु५९ छेयइ किमए ।।२५।।

४१b सुगुरु ४२b कारवइ ४३b हम, ४४a पाटहि ४५a वजए,
४६b वमाणि, २०b सकलिकिय ४८b वंदुरवाली, ४९a हुइ । ५०a मयहिमि
५१b करि, ५२a रतन ५३b वयपाल, ५४a वरसंतउ
५५a गहगहइ, ५६a रंगहि ५७b गरुवइ ५८b संघइ ५ a कापड,

'रतन्सिंहु' प 'पूनिगु'६० मति चंपक प्रीतिहि६१ ईसिखिम६२ ।
माणिकिहि६३ प संघह भारु, निय निम्म६४ पूरहि मनि रक्खिम ॥२६॥

॥ घात ॥

तहि६५ जि उच्छवि तहि जि उच्छवि, रण्ण घणसूर ।
वर मंगल धवलु६६ झुणि, कमल नयणि नच्चंतिइ६७ रस भरि ॥
तहि 'सालिगु' झुरि कलसु६८, दियइ दाणु 'गुणराजु' बहुपरि ।
मागण जण कलियलु करइ, चमकिय चित्ति सुरिंदु ।
पाट ठवणि सुहगुरु६९ तणए,७० संघि सयलि आणंदु ॥२७॥
संघु सयलि आणंदु, दंसण नाण चारित्त धरो ।
सिरि'जिणचंद' मुणिंदु, जउ दीठउ नयणिहि७१ सुगुरो ॥२८॥
घरि घरि मंगल चार, सविय कमल पडिबोह करो ।
संजमसिरि उरि हार, जयउ ७२ सुहगुरु सहसकरो ॥२९॥
'मालहूव'७३ साख सिंगार, 'रूपपाल' कुल मंडणउ ।
'भारहमेवि' मल्हार, सुहगुरु भव दुह खंडणउ ॥३०॥
जिम जिण बिम्ब विहारि नंदणवणि७४ जिम कप्पतरो ।
सुरगिरि गिरिहि मझारि, जिम चिंतामणि मणि पवरो ॥३१॥
जिम घणि पसु मंडारु, फलह माहि जिम अम्ब फलो ।
राज माहि गज सारु, कुसुम माहि जिम वर-कमलो ॥३२॥

---

६५ a धनिय, ६६a धीवरि ६७a संमिलम ६६b माणकहि ६४a निय निय, ६५a तउ ६६a धवलु ६७b नचंति, ६८a कलस, ६९b सुगुरु ७० b तणइ ७१a नयणहि । ७२b जयउ ७३b मालहूव ७४b विपिन

जिम माणससरि हंस, माहव पणु वासेसरह७५ ।

जिम गह मंडलि इंदु चंद७६ जम तारा—गणह७७ ॥३३॥

जिम ममराउरि इन्दु मूमंडलि जिम चक्रधरो ।

संघह माहि मुणिंदु तिम सोहइ 'जिणउदय' गुरो ॥३४॥

नवरस देसण वाणि, पणु७८ जिम गाजइ गुहिर सर ।

नाणु७९ नीर वरिसंतु८०, महिमंडलि विहरइ सुपरे ॥३५॥

नंदउ सिहि८१ समुद्राउ, नंदउ सिरि 'जिणउदयसूर' ।

नंदउ 'रतनउ' साहु, सपरिवार 'पूनिग' महिउ८२ ॥३६॥

सुगुरु गुण गायंतु, सयल लोय वंछिय सफल ।

रमउ रासु इहु रंगि "ज्ञान-कलश" मुनि इम कहए ॥३७॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि पट्टाभिषेक रास समाप्त ॥

७५b रामगाडु ७६b चांदु ७७ b तारागणहु ७८a पण, ७९a नाम, ८० b वासंतु, ८१b सिह ८२b महियउ ।

तासु कुच्छी सर पुन्न जस सुभमर,११

भवयरिउ कुमरवर १२ रायहंसो ।

'वर पंचहत्तरे' सुमिण संसूइउ,

मायव१३ पुत्तु निय कुल वयंसो ॥५॥

वरिय१४ गुरु उच्छवं सुणिय सय नयरहं

दिन्नु तसु नामु सोहग्ग घारं ।

'समरिगो' भमर जिम रमइ निय सयण-मणि,१५

कमलवणि दिणि रयणि १६ बहु पयारं ॥६॥

धाय खेयरा दुळे अमिउ वरसंतउ१७

वद्दए इन्दु१८ जिम बीय चंदो ।

निरखु१९ सब नव कला धरइ गुणनिम्मळ

ळलिय लावन्न सोहग्गकंदो ॥७॥

घात —

अत्थि गुज्जर' धरिय गुज्जर, देसु सुविसालु ।

तहि२० 'पल्हणपुर' नयरो जलहि जेम भर रयणि मंडिउ ।

तहिं निवसइ साहु—वरो २१, 'रूदपालु गुणमणि२२ आणंदिउ२३ ।

तसु मंदिरि 'धारल' उयर, उपन्नउ सुकुमाल ।

'समर' नामि सो समर जिम वद्दइ रूवि भपार२४ ॥८॥

११b सोभो १२b कुमरवर c. कुमरवरु, १३b आइव c.d आयव १४d वरिय १५b सयणमणि d. अंगणि १६b चोर १७b.c.d अमिय वरिसंतउ १८ वद्द । १९c.d. निय २०b तहिं २१b.c वारदवरो २२b गमा २३b अणंदिय २४.d रुवि भमर.

सुविहियाचारि१९ विहार२० करतंउ,

वाणारिउ गणि 'सोमप्पहो'२१ ।

बुद्धि सिक्खोर२२ सुगीयत्थु२३ संजायउ,

गच्छ गुरु भार धुरणर२४ सोहोर२५ ॥३२॥

तयणुर२६ 'जिणचंद सूरि' पट्टि, संठविउर२७

सिरि२८ 'तरुणप्पह' (आ) यरियराए२९ ।

'थम्भ पयरोतरे'३० 'समत्तिरथे पुर, मास 'असाढ वदि तेरसीए' ॥३३॥

सिरि 'जिणउदयसूरि' गुरुय नामेण, जयवउ भाग सोभाग निधि ।

विहरए 'गूजर' 'सिंधु' 'मेवाडि' ३१पमुह देससु रोपइ३२ सुविधि ॥३४॥

॥ घात ॥

नामु३३ निम्मिउ नामु निम्मिउ, नामु अभिरामु ।

'सोमप्पहु' मुणि रयणु३४ सुगुरु पास सो पढइ अहनिसि ।

वाणारिउ भमि (भमि३५ हुयउ,

गच्छ भार३६ धर३७ माग्गि गुण वसि३८ ।

सिरि 'तरुणप्पह' आयरिए३९ सिरि जिणचंदह पाटि ।

थापिउ सिरि जिणउदय', गुरुअ विहरइ मुनिवर थाटि४१ ॥३५॥

१९b.d सुविहि आचारि २ b विहार, २१a c d सोमपहो २२a सिक्ख २३b.c सुगियत्थ, २४b भार d भारधरण, २५a.c.d सहो २६b तयन, २७ d संठाविउ, २८d सिर २९b तरुणप्पह आयरिउ. d तरुणप्पहायरिय राए, ३ । पयातरे ३१d सिन्धु मेवाड गूंजर ३२b रोपिविहि ।

३३b नामु निमिउ (२) नामु अभिरामु c नामु निमय (२) नामु अभिरामु d नामु निम्मिउ (२) नामु अभिरामु ३४b रयण, ३५b d ३६c भार, ३७d धरि ३८d वसि ३९b आयरिय ४ d सूरि ४१b थाटि

सिर 'खोगड़ियमरि' पए५७ भप्पिय५८ निय पय५६ सिक्खय६० ।
संपत्तउ सुरलोयि६१ पहु, बोहेवा सुर कमलाइ६२ ॥४०॥

धन्न६३ सो वासरो पुन्न भर भासुरो,
साभि६४ बैठा माही अमिय ६५वैरय ।
अरय निय सुहगुरु माव कप्पतरू,
भत्ति गाइज्जए हरिस इस्य६६ ॥४१॥

मालुह६७ मणुपसर्ग वाग खोयाण, छहइ ते मुक्ख संपत्ति भूरि ।
सुद्ध६८ मन संठिय पुम६६ पडिमहिय
जीय झायंति 'जिणउदयसूरि' ॥४२॥

पहु सिरि 'जिणउदयसूरि' निय सामिणो
करिउ मइ चरिउ७० मइ मंद७१ बुद्धि ।
भमइ सो दिक्ख गुरु देउ सुपसन्नउ,
७२दंसण नाणउ चारित सुद्धि ॥४३॥

पहु गुरु राय बीवाहलउ ज पढइ,
जे सुणइ७३ जे सुणइ ज दियंति ।
तमय खोगवि ते छदइ७४ मणवंछियं,
"मेरुनंदन"७५ गणि इम भणति ॥४४॥

॥ इति श्री जिनोदय सूरि गच्छनायक वीवाहलउ समाप्त ॥

५७b खोम्मड आवरिय d खोगहि आवरिय ५८b आसिय ५६b निवेसिय d निवसय ६ b b सिक्ख ६१b सुरलोय d सुरलोइ ६२b c d कमल ६३a d धनु ६४b साम ६५a d बेड ६६a रह ६७b माइड d सुहड ६८d मुहमनि सठिय ६९d पत्ति ७०d चरिउ ७१b हय ७२d देसण ७३a ज सुणइ जे सुणंति d जे सुणइ जे सुणइ ज दियंति (d देयन्ति) ७४b छयइ ७५b मेरुनन्दन ।

॥श्रीजयसागरोपाध्याय प्रशस्तिः॥

संवत् १५११ वर्षे श्री जिनराजसूरि पट्टालङ्कार श्रीमज्जिनभद्र सूरि-पट्टालङ्कार राज्ये ॥

श्री उज्जयन्त शिखरे, लक्ष्मीतिलकाभिधो वर विहार ।
नरपाल' संघपतिना, यत्रादि कारयितुमारभे ॥ १ ॥

प्रशयति तत्राखर्वा, श्रीदेवी देवतां जन सम्भ्रम ।
अतिशय कल्पतरूणा 'जयसागर' वाचकेन्द्राणाम् ॥ २ ॥

'सेरीसकाभिधाने ग्रामे श्री पार्श्वनाथ जिन सद्मने ।
श्री संघ प्रत्यक्षो येषां पद्मावती सहित ॥ ३ ॥

श्री मेदपाट' देशे, 'नागद्रह' नामके शुभ निवेश ।
नवखण्ड पार्श्व चैत्ये सन्तुष्टा भारती येषाम् ॥ ४ ॥

तथा श्री जिन कुशल सूरि' प्रमुख सुप्रसन्न देवतानाम् पूर्व देशवर्त्ति राजगृह' नगरोद्दण्ड विहारादि । स्थानोत्तर दिग्वर्त्ति नगर कोट्यादि स्थान पश्चिम दिग्वर्त्ति स्थपाटक 'नागद्रहा दिषु । राज सभा समक्ष निर्जित पूर्व महत्तमानेक वादि सपितमानां । विरचित 'सन्देह दोलावली वृत्ति' प्रमुख 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' 'पंच पर्वी' प्रमुख रचनावली प्रमुख मेधा पुष्पनाथ स्तव' श्री 'जिन वल्लभ सूरि कृत 'भावारिवारण स्तव वृत्ति संस्कृत प्राकृत बन्ध स्तवन सहस्राणाम् स्थापितानेक संघपतीनां कवित्व कला निर्जित सुर गुरूणां पाठितानेक शिष्य वर्गाणाम् इत्यादि—

॥ भास ॥

'सिन्धु' देस 'पूरब' प्रमुह बहु विह देस विहार ।

करइ सुगुरु देसण इरस, वरिसइ सुह फल कार ॥ १३ ॥

आइ क्रमि क्रमि 'जेसलमेरु' नयरि, पहुतउ विहरन्तउ ।

जिनसिराय पयसाय चन्द तब तेउ फुरन्तउ ॥

सिरि 'जिनभद्रसूरि' सुणिय पात्र आचारिज कीघउ ।

मोटइ उच्छवि 'किरितिरयणसूरि', नाम प्रसिद्धउ ॥ १४ ॥

सो सिरि 'कीरतिरयण सूरि' भविअण पडिबोहइ ।

छत्रधिकन्व महिमानिवास, जिण सासनि सोहइ ॥

खरतर गच्छि सुरतरुह सेम, वंछिय दायसर ।

वाहिय मयगल मान तिमिर, भर भाण दिणेसर ॥ १५ ॥

परिस सुगुरुह तणउ नाम, नितु मनिहि धरीजइ ।

तिमि तिम नव निहि सयल सिद्धि, बहु बुद्धि लहीजइ ॥

ए फागु रङ्ग रंगि रमइ, जे मास वसन्ते ।

तिहि मणिनाण पहाण किति महियलि पसरन्त ॥ १६ ॥

॥ इति श्री कीर्त्ति रत्नसूरि वरायो फागु समाप्त ॥

॥ छ ॥ शुभ भवतु श्री रुपस्य ॥ छ ॥

॥ लिखितं जयध्वज गणिना ॥

ताप हीण दुरितिया मरणे, विपुत्ता कमला सब बर परणइ ।
असुम करम आरति हरणइ, ते छोल चतुर सद्गुरु चरणे ॥ ६ म०॥
कुटंब कछत्र सुम मर्यादा चाकर सुभ कारिज अप्रमादा ।
भोग संयोग सुमस वादा करि 'कीर्तिरत्न' सद्गुरु यादा ॥१०म०॥
मागं सुमाग सुमति संगइ, सुम दस सुवास बस रंगइ ।
पाप संताप न के अंगइ, न्हाओ गुरु ध्यान अहरि गंगइ ॥ ११ म०॥
थाट थपाट पवग भरी, ऊप (भूत?) पलीत आनोत बुरी ।
चावति कूड कलंक मरी, नासे तत्काल गुरु नाम करी ॥ १२ । म० ॥
मास विलास उल्हास सबहु, आनन्द विनोद प्रमोद सबु ।
सौगम्य सुर सम्पद्धि सबु, सुप्रसन्न सुदृष्टि सुगुरु यबु ॥१३ । म०॥
सुरगुरु य(स्त?)वना पद्म गुणइ, वार्त्ता आपण बचम(बचण?)सुणइ ।
कुशल मंगल तसु फ(पु?)ण्य घुणइ, भो 'साधुकीरति पाठक पमणइ॥१४॥

॥ इति श्री कीर्ति रत्न सूरि गीतं ॥

न०—३

'कीर्तिरत्न सूरि' वंदिये मूक महुवे धांम ।
संयमिया सिर सेहरो 'मंखवाल कुलभाण ॥ १ । की ॥
संवत् 'चवदे बयरे' 'भ्रुगुपयासे' वास ।
जन्म थयो 'दीपा घर, 'देवल दे' उल्हास ॥ २ । की० ॥
'देल्ह कुमर शिव नेम ज्युं मूकी निज घर वास ।
'तेसठे संयम लियो श्री जिनवर्द्धन' पास ॥ ३ । की ॥

वाचक पद दिव 'मतर', 'मसिये' पाठक भार ।
मानारम सतापर्ब 'मेसलमेर' मंझार ॥ ४ । की० ॥
सुर नर किन्नर कामिनी, गुण गावै सुविशाल ।
साधु गुणे करी सोहता, हार जिन्ये जिम बाल ॥ ५ की०॥
पालम 'अरबुद गिरि' भला, 'जोधपुर' जयकार ।
'राजनगर' राजे सदा शुभ सकल सुखकार ॥ ६ । की०॥
जसु माथे गुरु कर ठवे, ते श्रावक धनवंत ।
सीस सिद्धान्त सिरोमणी, 'राजसागर' गजजन्त ॥७ ।की ॥
मणसण देइ र मावस्युं, संवत् 'पमर पचोस ।
अमर विमाने मालया श्री 'कीरतिरत्न सूरीस' ॥ ८ ।की०॥
अमीय भरे भल लोयणे तुं मुझ दे दीदार ।
पाठक 'ललितकीर्त्ति' कहे, दिन प्रति जय जयकार ॥९॥

न०—४

श्री कीर्त्तिरत्न सूरिंद' तणी महिमा वाधइ जग मांहि घणी।
धरि ध्यानै धावइ भूमि-धणी, महियलमुनिजन सिर मुगट मणि ॥१॥
नाशे कर जिम दीपइ तरणी सद्गुरु सेवा चिन्ता हरणी ।
मंडार सुपन सुभर भरणी, कमला विमला कामिन करिणा ॥२॥
भइ बहोया संकट उद्धरणी वरदायक जसु नामा वाणी।
घर पावै नर सुघर घरणी, प्रेमइ अधिकइ नाम्नि परिणी ॥३॥
भव दाहण दूरइ म्हहरणी फोडक म हुवइ परिणी फिरणी ।
आग(स?)गी अटवी पांतक टरणी माथइ जिहां गुरु समरण करणी ॥४॥
आदि सरोमणि दप धरे, देवल है जनम्या उरि धरे ।

संवत 'गुणपंचास तरो', श्री 'संदवाल कुल सहसकरो ॥५॥
संवत पचवे त्रयसठि' वरसे, 'आसाढ इग्यारस' बहु हरसे ।
श्री 'जिनवरधन सूरि' गुरु पासे संयम लीधो मन उल्हासें ॥६॥
'मितरइ' वाचक पद गुरु पायउ, मसीयइ उवझायक पद भायउ ।
'सताणूयइ' वरसें लीधउ, आचारिज श्री जिनमद्र' कीयो ॥७॥
'सतरै' 'केल्हउ' तिहां मन थाइ, 'जेसलगिर' पुर तिहां किम जाइ ।
'मा(हो)प सुक्ल दसमी आइ महोछव करि पदवी दिवराइ ॥८॥
'पनरइ पचवीसइ' तिण वरसइ, आसाढ इग्यारस' बहु हरसें ।
अणसण लीधो मन नैं हरसें शुभगति पामी सुरवर सरसइ ॥९॥
'वीरमपुर' वचनें वासैं, थाप्यो थिर शुभ मन थानइ ।
महीयल सहु को नइ मन मांन', जस सोभा जग सगलो जांने ॥१०॥
समर्यो सदगुरु सांनिधकारी सकलाप सजन जन सामारी ।
नरवर सुर बे) वर नै नरनारी शुभ आवे जात्रा पारी ॥११॥
भूत प्रेत डर भय नासइ, जंजाल सब दूरइ जावइ ।
गणि 'चन्द्रकीर्ति गुरु गुण गावे श्री 'कीरतिरत्नसूरि' ध्यावइ ॥१२॥

॥ इति गुरु गीतं ॥

'रोहू' सुत होय भला रसीला 'भापमल्ल' 'देपमल्ल' भसीला ।
'देप' घरे 'देवलदे' बाला, च्यार सुत जनम्यां चौसाला ॥६॥

॥ छन्द मोतियदाम ॥

'रूपो' तिम 'भाखो' 'चेल्हो' साह 'देल्हो' चोथो गुणे अगाह ।
'रूपा' नैं सिवमी सूडी सह, परिया तिण सात तणो घर देह ॥१॥
'चोसडपुर' बसियो 'रूपो' धाम, 'जेसाणै' 'भाखो' करे विसरास ।
'मोहैवै' 'चेल्हो' मोटो माम, चोथा तिण चारित लीधा आम ॥२॥
पनरे गुण पचासैं' जन्म पन्यौ तिण बालक वय धो धम्म ।
हेरे वरसे जब हुयो देह, 'राजग्रह' मांग्यो राजम रह ॥३॥
'चवदेसे तेसठे चाल्या नृप विवाह करण जग राजम रूप ।
सीमज बल के पासे जान भाभी नै ठठरी तिण धाम ॥४॥
सरखी एक लेजड़ी देखी सोर, सुणांमे जानी मांड्यो जोर ।
इम ऊपर बरछो कारे कोय परणावुं पुत्री मेरी तोय ॥५॥
रजपूतैं एकण कहियो वाम 'चेळे' मैं सेवक कीधी ठाम ।
छवाळी बरछी मांरी धम तीर तणी पर काढ़ी तम ॥६॥
भोवरे मिंहां जोर आयो असमान, परलोक गयो ते छूटा प्राण ।
देल्हे सो देखी मन दिलगीर नर सब अथिर ज्युं बस्से नीर ॥७॥
'खेमकीरति' वर्षे मन (बैठो) [illegible] मांगी सहु मन(को)जन की भांत ।
साद भगा माहने समभाय 'जिनवर्द्धनसूरि' पास आय ॥८॥
दीक्षा तब लीधी 'देल्हे' आप पुराणो तोड़ण पाप सन्ताप ।
मांमां है पारख मोटे मन्न घरा सहु भाखै धन हो धन्न ॥९॥

नयाछ अंग पढ्या इण रीत, गोतम स्वामी ज्यूं वीर वनीत ।
कमारस कीयो गुरु गुरु बार, 'चवदेसैसत्तरे' चित्त विचार ॥१०॥
'मसामें' खेतरपाल को जोर, थापी मांड्यो बाहिर ठौर ।
माथारज क्षेत्रपाले मैळ, मट्टारक काढ्या गच्छ थी ठेळ ॥११॥
दोहा—'माल्हे' साह निकाळने, थाप्यो 'जिनमद्र सूरि' ।
दोस दियो को दवता, माखी मिटे न दूर ॥१२॥
'पींपळीयो' गच्छ थापीयो शुम मल शुम वार ।
'सागरण' सा सत करी वाद्यो वाद विचार ॥१३॥
'जिनवर्द्धन सूरि' थाप के, शिष्य सदा सुविनीत ।
आप दिसा आग्रह कियो गुरु गच्छ राखण रीत ॥१४॥
आपी रातें आवि के, वीर कही ए वात ।
आउखो गुरुनो अलप मास छ मास कहात ॥१५॥
'महेवे' में मांमठी प्यार करी चौमास ।
'जिनमद्रसूरि' बोलाबिया, आवो हमारे पास ॥१६॥
मनुमानें करि अटकल्यो, उदयवंत गच्छ एह ।
आवि मिल्या आदर सहित पाठक पदवी देह ॥१७॥
'चवदेस असी' वरस, पाठक पदवी पाय ।
जिनमद्रसूरि' 'जेसळनगर', वेहाम्या तिहां जाय ॥१८॥

॥ छन्द मारसी ॥

उत्पत्ति 'दरडो साह 'देल्हा 'महेवे थी आविया ।
'जेसळमें' करी बीनती पूज्य में विधि वंदिया ॥
'जिनमद्र सूरें' मया करके चवदसेमताणवे ।
'कीर्तिरत्नसूरि आचार्य दीप पदवी तिण दव ॥१॥का०॥

बहु प्रारथ कीया दान दीया, विविध स्वामी वाबरी ।
'संखवाल' साखा विरुद गाटे, धर्मराग हीयें धरी ॥
'सेत्रुज' संघ कराय सावें, संघ सहुको प्रम धवें ॥३॥की०॥
'संखेसरे' 'गिरनार' 'गोडी', वस 'सारठ' संचरी ।
चिन्ताय चैत्यप्रवाडी कीधी व्यक्तियां जिहां तिहां करी ।
घर माय धना धर्मह सेती संघ पूज करी छवें ॥३॥की०॥
आचारजां सुं अरज करिने, चतुरमासक राखिया ।
गोत्रजा कुलगुरु सूर कीधा मद आगम भाखिया ।
समझावीया सिद्धांत सुवचन, वांणि वाणी ममी मवें ॥४॥की०
माळवें 'भद्र 'सिंघ' सनमुख, 'संखवाळ(चा)'मत आवजो ।
पाग मगल हुकम्यो सुगुरु भाख्यो, गच्छ—पाट में लावजो ।
दीक्षा न लेस्यो संघ पद लिय, हुकम मोगव(म?)मत वदे ॥५॥की०॥
'कोरटे' 'जेसलमेर' देहरा करावजो गुरु इम भणें ।
नगर चोहटा चकी जिमणे, वास वसज्यो धन घणें ।
मीर साव माने साह सहुको सुखी हुइ इम परसवें ॥६॥की ॥
पचास एक शिष्य पंडित, 'कीरतिरतनसूरि'नें ।
गुरु गुण गौतम जेम गिणिये कुगति सुमति भगीसनें ।
वासक्षेप लेहने सीस उपरि करें लघु वासिद गमें ॥७॥की०॥
कलस—माळवा ने संवत मणसण पाली ने
संवत 'पनरपचीस मन वैराग वाळी ने ।
'वैसाख सुदी पंचमी' सुगुरु सुरलोक सिधाये ।
थण कीधे ज्योत हुवो जिनभवन्न महि ।
सुखकार सार शृंगार मणि, 'सुमतिरंग' सानिध सदा ।
रलियाळ वाल गोपाळ कूं, वाद चाद सदा तदा ॥८॥

न०—६

मोह गुरु नगर 'महेव' परचा पूरे नित मेव। सो०।
'संखवाल' कुले गुरु राजे, 'दीपचन्द' पिता घर छाजे हो ॥ १ सो०॥
'देवल दे' प्रभु वर माता, जनम्या वेखलम्य विख्याता हो। सो०।
'चउदैसय तम्ठ बरसे' 'मायम वदी' शुभ दिवसे हो। २। सो०।
'इग्यारमें' दीक्षा लीधी जिनवरधन सूरि दीधी हो। सो०।
तप जप कर करम खपाया, नवि राखी काइ माया हो। ३। सो०।
नामें प्रभु नासे रोगा, सुख संपत्त पामे भोगा हो। सो०।
जिनभद्र सूरि तहाया 'अनाण नगर' में आव्या हो। ४। सो०।
'चवदमे मनाणत्र बरसे' सुरि पद दीधो मन हरसे हो। सो०।
संवत पनरसे पचीस 'वैसाख पचम' शुभ दिवसे हो। ५। सो०।
स्वामी सद्गुरु पहुँता मनमें शुभ ध्यान स धरता हो। सो०।
मारग वाहण वेलाखा हो मूल प्रेम न भाख आंआख्या हो ६। सो०।
सद्गुरु गुण पार न पावे मुनिजन वर भावना भावे हो। सो०।
'जयकीर्ति' मद्रा गुण बोल, सद्गुरु गुण कोइ न तोल हो। ७। सो०

न०—७

कीर्ति रतन सुरीन्दा वंदे नरनारी ना वृन्दा हो। सद्गुरु महिरकरा॥
महिर करो गुरु मेरा हूँतो चरण न छोड़ू तेरा हो। स०। १।
नगर 'महेवे' राजे सबनो मन सुख साजे हो। स०। २।
वंछित पूरण दाता नित चरिता संपत्ति माता हो। ३। स०।
नव नव देसमं मोह पूरे परचा जन माह हो। ४। स०।

चोरारिक भय वारे, सेवक ना कारिज सारे हो। स०।५।
वंध्या पुत्र समापै, निरधनीयां धन बहु आपै हो। ६ स।
भक्ता थी यात्री आवे, देखतां चरण सुहावै हो। स०।७।
इम अनेक गुणधारी, प्रतिबोध्या नर ने नारी हो।८।स०।
सतरैसे गुणयासी', 'भणाइ वसम' परकासी हो। स०।६।
गांम 'गहाणव' थाप्या, सेवक ना संकट काप्या हो।१०स।
पासु प्रसाद करायो, देखां मैं सुजस सवायो हो। स०।११।
'जयकीरति' गुण गावै मन वंछित फल पावै हो।स०।१२।

म०—८

सद्गुरु चरण नमो चित्तलाय, जिण भेटयां दुख दालिद् जाय।
भाज करो रे उछाह सद्गुरु चरण कमल भावै। भा०।
नगर 'महवे' 'दीपमल्ल साह 'देवकदे' घरणी जनम्यां सुनाह।भा१।
संवत् 'चवदे गुणपचास' 'देल्ह नाम दियो शुभ आस। भा०।
योवन वय आव्यो तिण वार कीनी सगाई रूप अपार। भा।२
जान मजाय करी रे तैयार, चढतां आव्या 'राडद्रह' बार। भा०।
तिहां इक सोमस्थल सुविशाल, तो फिर सोहे समीप रसाल। ३।
तिण ही ठामे उतरी जान रंग रली कीना मन्मान। भा०।
तिण इक ठाकुर बाप्पा पोस, इण पर करकी कारे तोस। भा।४।
देखुं पुत्री तिम परणाय प्रमो चवन सुण्यो चितलाय। भा०।
पराहे रा सेवक कम्या नाम, कासी बरछी छूटा प्राण। भा।५।
देखे दीठो य विरमंत, सद्गुरु वचनै मागी भ्रन्त। भा।
'मैसद शुभ संयम लीद्ध, श्री 'जिनवरधन सूरे' दीध। भा ६।

नेम तणी परे छोडो रिद्ध जगमें सुजस हुवो परसिद्ध । आ० ।
इग्यार अंग हुया आप, तेजे करी प्रतपे जिम भांण । आ० । ७ ।
गौतम स्वामी ज्युं करय विहार प्रतिबोधे सहु नर ने नार । आ० ।
सिष तेड़ाव्या 'जेसलमेर' सद्गुरु आया सुर नर घर । आ० । ८ ।
'सगाणव' सूरि पदवी आस, श्री जिनभद्रे' दीधो वास । आ० ।
तप जप तीरथ क्रम विहार, करतां आव्या 'महेवे वार । आ० । ९ ।
सिष सघळ पसारो कीन गुरुँ पिण सखरी देशना दीन । आ० ।
संवत् पनरसे पच्चवीस, वदी वैशाख पंचमि शुभ दीस । आ । १० ।
अणसण कर पहुंतां सुरलोक, नर नारी सब देवे धोक । आ० ।
गुरु परचा जग सगळे पूर, दुखिया आपे सुख भरपूर । आ । ११ ।
बिरुद कहंता नावे पार, इण कळि में सुरगुरु अवतार । आ० ।
नगर 'महेवे मह्मो थान ठाम ठाम दीपे परधान । आ० । १२ ।
'कीर्त्तिरत्नसूरी गुरुराय महिर करो ज्युं संपति थाय । आ० ।
'अठारस गुणचालीये' वास, 'वदि वैशाख दसमी' परगास ।आ ।१३।
रच्यो प्रासाद 'गडाळय मांहि, दोय थान सोहे दोनू बांह । आ ।
सुगुरु चरण थाप्या धण प्रेम सुजस उपायो 'कांतिरतन' एम ।आ०१४
मळे विहाडो जग्यो आज, सरया सद्गुरु आया काज । आ० ।
'अमीविलास'री विनती एह, नित प्रति करजो आनंद अछेह ।आ०।१५

म०—०

पधारा कुळ देस, महिर मयमाळा मडे ।
बिच बादळ विस्तार, सुरत शाखिंद बिरडे ।
दामन कर दामिनी सुधाय संचारी ।
गुण गरजारव कर भर, सरवर नरनारी ।
चाहे सुगाळ तरकाळ कर, संतवाळ घर घर सही ।
'कीर्त्तिरत्नसूरि कीरतिय गरभ अरथ गुण गहगही ॥१॥

———

श्री जिनलाभ सूरि विहारानुक्रम

(सं० १८१५ से सं० १८३३)

॥ दोहा ॥

गच्छ नायक लायक गुण, सागर जेम गम्भीर ।
निज करणी कर निरमला, जाणे गंगा नीर ॥१॥
नपमी तामवर तणे, गच्छपति जिसी गरज ।
मार्सगापत आपना, इण परि करे अरज ॥२॥
पांच बरस रहिया प्रथम, दिन दिन बधते वाण ।
गच्छ नायक 'जिनलाभ' गुरु, पद पामी 'बीकाण' ॥३॥
'५बाण १चन्द्र ८वसु १शशि' बरस, सरस भलो भीकार ।
शुभ वेला 'बीकाण' सु , बार कियो विहार ॥४॥
सपन घर समझु सकल, पण भावक बसु वास ।
गुणवंतो 'गारब ढाहर', जिहां कीयो चोमास ॥५॥
आठ मास जिहां थी छठे, बंगाली भग देस ।
'जेसाणे' गुरु आय ने परगट कियो प्रवेस ॥६॥
च्यार बरस लगि चातुरसु निज निज नवले नेह ।
पद बरसी भावक जिके, जगने राखे जेह ॥७॥
जिहा तीरथ छै 'लोद्रवो', भलो जगाहि बदीत ।
जिहां प्रभु पारस परसिया सहसफणा शुभ रीत ॥८॥
मीरा करे जिहां थी सुगम, पुछिया पश्चिम देस ।
सुख विहार आया सुगुरु, प्रणमेवा पासेस ॥९॥

विधि सुं गोढ़ी—राय ने, पाछो कियो विहार ।
गच्छपति वलि आया गुडे, चोमासो चित धार ॥१०॥
गढ़ि चौमासो रंग सुं, पिछलो करै विहार ।
आवी धरा महेसची संग्रामी तिण वार ॥११॥
नगर 'महेवे' आय ने, नमिया नाकोडो पास ।
आये कीध 'भलोड' में, चित चोखे चोमास ॥१२॥
मिगसरमें वलि मलपिया गज ज्यूं श्री गुरुराज ।
आवै 'आबू' आरधिया, जगनायक जिनराज ॥१३॥
गम यहाँ थे पिसुन घर दुरगां पा दोष ।
'चोवाड़े' बहु रंग सु चातुर चोमासो कीध ॥१४॥
'राजद्रहे' ने 'वारिये', रहिया वलि 'रोहीठ ।
पिशुन किया बहु पापरा, घरमें होळा पोठ ॥१५॥
'मंडोवर महिमा घणी 'जोधाण' री जोड़ ।
मुनिपति आया 'मेड़ते', हिन सु तिमरी होड़ ॥१६॥
च्यार महीना चैन सुं प्रासा जलने जार ।
'जैपुर आया सुगति सुं, सहिर बड़े श्रीकार १७॥
मंदिर किमा माग सरग, इणमें अमियो आव ।
वरस घणो वामर मिलो, वासर घड़ी विहाय ॥१८॥
घड कीयो पग हन सुं पिण नवि रहिया पूज ।
मुनि-पति जाय 'मेवाड़ में, बरतावी मामूंज ॥१९॥
'उदयापुर' दुंनी अछा, कठिन भठारे कास ।
रिसहेस मे रंग सुं नमन कियो निरदाय ॥२०॥
अलगा 'उदयापुर' अज, गहिरा कर गहगाट ।
श्रीजति घणे बिराजिया 'पालीवाले' पाट ॥२१॥
पञ्चकल्पना आमो अबस, निरख विचे नागोर ।
चिम मन बमिया पूज रे, सहिर भलो 'साचोर' ॥२२॥

तिण वरस 'सूरेत' ना, असपति अवसर देख ।
तिहावै सद्गुरु तुरत, श्रावक मूकी लेख ॥२३॥

वृमा थाम देखी थयो ऊपजतो धन देस ।
सुमति गुपति समाचरता, पुर तिण कीय प्रवेश ॥२४॥

सरस बर मुग श्रावक, करतां नव नव कोड ।
सुपरै सेवा साचवी, हित सुं होडा होड ॥२५॥

कर राजी श्रावक सकल, अग सगळे जस खाट ।
'राजनगर' आया रहण बहता पगरुट बाट ॥२६॥

तिहां पिण वखेवर तुरत, उच्छव करै अपार ।
दोय बरस लगि राति दिन, सेवा कीधी सार ॥२७॥

मन थिर कर साथे धर्म, श्रावक सहु परिवार ।
सत्रुंजनी सेवा करै, गुरु चढ़िया गिरनार ॥२८॥

उत्तर तिहां थी आविया 'बेराउल' बंदाय ।
महिमा मोटी 'मांडवी', पूज्य सद्गुरु पाय ॥२९॥

फागे-पत्र निज नगर में असपति तणा संगार ।
सहु श्रावक सुखिया तिहां, वारधि सुं विवहार ॥३०॥

बरस लगे तिहां बावरो मन मन्निगण धर्म काज ।
थोरे दिन 'भुज' चालिया, राजी हुए गुरराज ॥३१॥

भुज नणे श्रावक भला सबा कीय सवाय ।
माग वळी तिहां संचरै मड मगळा तिहां थाय ॥३२॥

इण विधि महारै वरस तीन (दिन दिन?) नव नव खेम ।
परचिया श्रावक प्रवर पामी तणे विशय ॥३३॥

हिव वंदिवा विनती सुणी करिज्या पूज प्रयाण ।
'बीकानेर' पधारिज्या सवक अपना जाण ॥३४॥

श्री जिनराजसूरि गीतम्

ढाल'—कपूर होवइ अति ऊजलूंए।

गच्छपति वंदन मनरळी रे, गहगमो गुणह गंभीर ।

'श्रीजिनराजसूरीसरू' रे, सवि गछ कइ सिरि हीर रे ।१।

वंदउ श्री 'जिनराजसूरींद' । आंकणी ।

श्री 'जिनसिंघसूरि' पटोधरू रे, उपसमरस भंडार मईत ।

चारित्र चंगइं मन रमइ रे सेवइ भविजन संत रे ।२।वं०।

'जेसलमेर' जिनंद नी रे कीधी प्रतिष्ठा चंग ।

'भणसाली' 'थिरू' तिहां रे धन खरचइ मन रंग र ।३।वं।

'रूपजी' संघवी सत्रुंजइ रे, आठमउ कीध उद्धार ।

'मरुदेवीटुंकइ मंडण रे चउमुख आदि विहार ।४।वं०।

मोटी माडी माडणी रे देहरा प्रोलि प्राकार ।

सकल महोछव तिहां सही रे प्रतिष्ठा विधि विस्तार रे ।५।वं०।

चित चोखइ सा(ह) 'चांपसी रे 'आणवडइ भल भाव ।

सुगुरु प्रतिष्ठा तिहां करी रे जम बोलइ मन भावि र ।६।वं०।

संघपति 'आसकरण सही रे ममाणीमइ कीध प्रसाद ।

बिंब महोछव मांडीया र, मेडता' महा जस-वाद रे ।७।वं०।

धन 'खरतर' गछि दीपना रे श्रावक सब गुण जाण ।

आण मानइ गछराज नी रे तेजइ जाणे भाण रे ।८।वं।

'धरमसी' मम्पन दिन दिनइ रे दीपइ जिम रवि चंद्र ।

'हरषवल्लभ' वाचक कहइ र, आपइ परमानंद र ।९।वं०।

श्री जिनरतनसूरि गीतम्

ढाल—जिस्से चन्द्रि समृद्धि मिली।

श्री 'जिनरतनसूरिंद' तणी, महिमा जागइ जग मांहि घणी।
जसु सेवा सारइ स्वर्गधणी, मन वंछित पूरण सुर मणी।१।

जसु नामइ न डसइ दुष्टफणी, टलि जायइ अरियण दुक्ख्या मणी।
जाहिनिसि जे ध्यावइ सुगुरु भणी, तसु कीरत वाधइ सहस गुणी।२।

निरमल व्रत सील सदा धारी, जग काया तणौ उपगारी।
कलियुग मइ 'गोतम' अवतारो, गुण गावइ सहु को नरनारी।३।

घसि कस्सर चंदन सुविचारी, फल ढोयइ मेवउ सोपारी।
विधि जे वंदइ आगारी, ते उच्छिक तणा हुवइ अरतारी।४।

जसु जन्म नगर 'सेरुणाणं', जिहां वसइ 'तिलोकसी' सजाणं।
गोत्रइ अति निरमल लूणीयाणं, तसु घरिणी 'तारादे' विधि जाणं।५।

जसु ध्यार सरोवर हंसाणं, तिण जायउ पुत्ररतनाणं।
सोलह सइ सत्तरि वरसाणं, पुनवंत पुरुष वीधाणं।६।

चउरासीयइ चारित लीयउ गुरुमुख उपदेस अमीय पीयउ।
सुमभरित सतरासइ कीयउ सद्गुरु सईं हि निज पट दीयउ।७।

सतरासइ इग्यार सही, आवण वदि सातमि सुगति लही।
पग पूजण आवे जे उमही, गुरु आस्या पूरइ त्यां सबही।८।

'रूपसेनपुरइ सद्गुरु राजइ, जसु थूभ तणी महिमा छाजइ।
'खरतर' श्रो संघ सदा गाजइ, गुरु ध्यानइ दुक्खोहग भाजइ।९।

श्री 'जिनराजसूरीस तणउ, पाटोधर श्री 'जिनरतन भणउ।
महियल मई सुजस प्रताप घणउ, प्रहसमि उठी नित नाम थुणउ।१०।

एहवा सद्गुरु मन मइ ध्यावइ, चित चिंता दास सवे जावइ।
दिन-दिन चढती दउलति पावइ, 'जिनचंद' सगुरुना गुण गावइ।११।

इति श्री जिनरतनसूरि गीतं (संग्रहमें, ६३ प्रति नं० ११)

श्री दयातिलक गुरु गीतम्

राग—आसावरी

सरद समी सम सुहगुरु सोहइ, मयण मापु मन मोहइ ।
रमना वारिद जिम वरसइ, जन मयूर चित हरसइ रे ।१।
माव स्युं भवीयण जण पणमइ, 'श्री दयातिलक' रिपराया ।
दीपंता तपकरि दिणयर जिम नरवर प्रणमइ पाया रे ।१।भा०।
नवविध परिग्रह छंडि भली परि, संयम स्युं चित लाया ।
दोष बयाल निरंतर टालइ, मनमथ माण मनाया रे ।२। भा०।
पंच महाव्रत रंगइ पालइ, पंच प्रमाद निवारई ।
निशु निशु सील रयण संभालइ, भव सायर थी तारइ रे ।३।भा०।
चरण करण गुण सुहगुरु धारइ, आठ करम कुं वारइ ।
क्रोध मान मद तजइ मुनीसर, मुनिवर भम संभारइ ।४।भा०।
'श्री क्षेमराज' पाटइ अति दीपइ, वादि विबुध मन मोपइ ।
खमा भवनि सुहामी सभइ, खरतर गछि गुरु राजइ रे ।५।भा०।
मल्हार भरि मानसरोवर, राजहंस अवयरिया ।
'बच्छ' कुल मंडण प सुहगुरु,गुण गण रयणे भरिया रे ।६।भा०।
पूरव मुनि नी रीति भली पार आगम करिय विचारइ ।
आणि करी सूधीपरिय गुरु, गुरु गरुमाना धारइ रे ।७।भा०।

इति श्री गुरु गीतं । (पत्र १ संग्रहमें)

वा० पदमहेम गीतम्

ढाल—जिसमइ ऋद्धि समृद्धि मिली, ए ढाल ।
'पदमहेम वाचक वंदइ, ते भवियण दिन दिन चिरनंदइ ।
सुरतरु सम वछि गुरु कहियइ, मसु नामइ मन वंछित लहियइ ।।१।।भ०
'गोलछा' वंसइ आवइ, खरतर गछि सुरमणि जिम राजइ ।
आगम अरथ तणा जाण पासइ जिणवर केरी आण ।।२।।भ०
लघुवय से संयम लीणउ उपसम रस मधुकर जिम पीणउ ।
सुमति गुपति सहजइ पालइ,वलि दोष बयालिस नितु टालइ ।।३।।भ०
चरण करण सत्तरि सार, वलि धरइ महाव्रत ना भार ।
ध्यान विनय सिझाय करइ, इम असुभ करम मल दूरि हरइ ।।४।।भ०
(श्री) जिन वचनइ अनुसारइ दैसन करि भवियण नर तारइ ।
निरमल शील रयण पालइ, पूरव मुनि मारग उजवालइ ।।५।।भ०।
युगप्रधान 'जिणचंद' गुरू, विहरइ महियलि महिमा पवरु ।
धन त जिण सय-हथि दिख्या, सीखावी वलि संयम सिख्या ।।६।।भ०।
धन 'चांपा' मसु कुखि आयउ, धन धन 'तारासे' जिण जायउ ।
तिलककमल गुरु धन्न जयउ,जसु पाटइ दिनकर जिम उदयउ ।।७।।भ०।
प्रभ मइ तीस वरिस जोगइ, विहरी दिन दिन चढ़तइ जोगइ ।
ससि रस काम ससि वरिसइ,भाद्रवा 'वाकनेसर' चित हरिसइ ।।८।।भ०।
अन्त समय जाणि आगइ,वलि करी आराधन शुद्ध भागइ ।
पहर ८ अणसण पाली माया ममता दूरइ टाली ।।९।।भ०।

पंच परमेष्टि तणइ ध्यानइ, बिरुई गति मिगली करि कानइ ।
अम्मावसि भाद्रव मासइ, मध्यानइ पहुता सुर वासइ ।।१०।प०।
भाव भगति गुरु पय पूजइ, तसु आस्या रंग रली पूजइ ।
पुत्र कलत्र धन परिवार, गुरु नामइं दिन दिन जयकार ।।११।प०।
श्रुथ सदा उन्नति कीजइ, परतिख दरसन भगतां दीजइ ।
महियलि महिमा विस्तारउ, सेवकनइ साहिब संभारउ ।।१२।प०।
चित तणी चिंता चूरउ, सुख सम्पत्ति मन चिंतित पूरउ ।
'सेवकसुन्दर' इम बोल्इ, गुरु सेवा सुरतरु सम तोलइ ।।१३।प०।
इति श्री पद्ममहेम गणि वाचक गीतं, मं रेखों पठनार्थ ।।शुभं भवतु।।

चन्द्रकीर्त्ति कवित ।

पामीजै परमत्थ अत्थ पिण सयणा पावै,
पामीजै सब सिद्धि ऋद्धि फिर आफे आवै ।
पामै सीस मकज्ज मदार सुख सेज समाई,
पामे तेज पडूर वलि बल बुद्धि वडाई ।
कहि 'सुमतिरंग' सुण प्राणिया, अहि २ गुरु गुण गाइयै,
श्री 'चन्द्रकीर्त्ति' सद्गुरु जिसा, प्रभु इसा कद्र पाइये ।।१।।
संवत सतरे-साल पोष वदी पडिवा पहली ।
अणशण एह आप, वली उत्तम मति वहिली ।।
नगर 'बिलाड़े' मांहि, कांम गुरु अपणो कीधो ।
गीत गान गावतां, सुगुरु नो अणमग मीधो ।।
शुभ ध्यान ज्ञान समरण करि, गुरु सुलोक जइ संचरे ।
कहै 'सुमतिरंग' हियड़ा विचै, पड़ी घड़ी गुरु संभरे ।।२।।

विमल सिद्धि गुरुणी गीतम् ।

गुरुणी गुणवंत नमीजइ रे, जिम सुख सम्पत्ति पामीजइ रे ।
दुख दोहग दूरि गमीजइ रे, परभवि सुर सामि रमीजइ रे ॥१॥
जसु जन्म हुओ 'मुलताणइ' रे, प्रतिबूधा पिण तिण ठाणइ रे ।
महिमा सहु कोइ बखाणइ रे, दुक्कर किरिया सहिनाणइ रे ॥२॥
काकउ कलिमइ अवतारी रे, 'गोपो' अनुक्रम ब्रह्मचारी रे ।
तिणरइ प्रतिबोधइ दिख्या रे, मनमांहि धरी हित सिख्या रे ॥३॥
'विमल सिधि' बड वयरागइ रे, बालक वय रूपसम आगइ रे ।
'अकम्य सिधि' गुरुणी संगइ रे, चारित्र लीयउ मन रंगइ रे ॥४॥
आगम नइ अरथ विचारइ रे, परवीण चरण गुण धारइ रे ।
मिथ्या मत दूरि निवारइ रे, कुमती मन नइ पिण ठारइ रे ॥५॥
मद मच्छर मुं की माया रे जिम कीधी निरमल काया रे ।
तप जप संजम आराधी रे नरभव निज कारिज साधो रे ॥६॥
अणसण करि धरि सुह झाणइ रे, पहुता परभव 'बीकाणइ' रे ।
फागुण मति सुन्दर सोहइ र थाप्या थूंभइ मन मोहइ रे ॥७॥
श्री 'ललितकीरति' उवझायई रे, परतिष्ठ्या शुभ वेलाई रे ।
सुख साता परता पूरइर, सेवक ना संकट चूरइ रे ॥८॥
धन धन्न पिता जसु माया र 'जयतसी' 'सुगतादे' जाया रे ।
'माल्हू' वंसय सुविसाला र कलिकाल्ह चन्दनबाला र ॥९॥
मन सुद्धइ भावक भावो रे, बेगइ गुरुणी मइ आवो रे ।
तसु मन्दिर द्युय इयकारा रे नितु होवइ हरए अपारा र ॥१०॥
'विमलसिधि गुरुणी महीमइ र, जसु नामइ वंछित लहीयइ रे ।
दिन प्रति पूजइ नर नारी र विवेकसिद्धि' सुखकारी रे ॥११॥

इति विमलसिद्धि गुरुणी गीतं ॥ सम्पूर्ण ॥

(पत्र १ संग्रहमें)

द्वितीय विभागकी अनुपूर्त्ति ।

श्री गुणप्रभ सूरि प्रबन्ध

दूहा —

मन धरि सरस्वती स्वामिनी, प्रणमी 'गोयम' पाय ।
गुण गाइस सद्गुरु तणा, करिय 'प्रबन्ध' उपाय ॥१॥
'वीर' जिनेसर सासन पंचम गणि 'सोहम्म' ।
'जंबू' अन्तिम केवली तास पाटे अभिरम्म ॥२॥
तिण अनुक्रमे उद्योतकर 'श्री उद्योतन सूरि' ।
'वधमान' वयन गुरु वन्दो आणंद पूरि ॥३॥

ढाल फागनी —

'जिनेश्वर' जिनचन्द्र गुणागर 'अभय' मुणीन्द ।
'जिनवल्लभ' 'जिनदत्त', युगोत्तम नमे नरीन्द ॥
श्री जिनचन्द्र 'जिनपति' 'जिनेसर' संभारि
'जिनप्रबोध' 'जिनचन्द्र' 'कुशल गुरु, दिव सुखकार ॥४॥
श्री 'जिनपद्म' विशारद सारद करे वखाणि ।
श्री जिन लब्धि लब्धि गोयम सम अमृतवाणि ॥
श्री जिनचन्द्र जिनेसर जिनशेखर 'जिनधर्म' ।
श्री जिनचन्द्र गणधिर प्रगटित आगम मर्म ॥५॥
'श्री जिनमेरु' सूरीश्वर सागर सम गंभीर ।
संवत पनर त्रिहुत्तर, देवगणि वंदे धीर ॥६॥

ढाल—मदिपानी —

तव भाचारिज ईश 'मीजेसिंह मुणींद' हिवे विमासियो ए।
भट्टारक पद ठामि, 'छाजेडो कुलि काम,
बालक आपिस ए, गुरुपद थापिस्यांए ॥ ७ ॥

श्रावक जन सुविचार, मिलिया मन्त्री उदार,
बालक मोहये ए, परिजण मोहि (ये)ए।
'ओसवंस' शृङ्गार, 'भूठिअ' साख मझार
मन्त्री 'मोदेभल' ऐ, सयु देवागम्भर ॥ ८ ॥

सयु सुत बुद्धि निधान मन्त्री 'नगराज' प्रधान,
सासय जिनवरू ए, धर्मधुरन्धरू ए।
'नगराज' घरिणी नाम, 'नागळदे' अभिराम
'गणपति' साह तणी ए, पुत्रीसयु भणीय ॥ ६ ॥

सयु उरि जिस्या रतन्न मन्त्री 'वच्छागर' धन्न,
कुमर 'भामागरू' ए, चतुर हो सावरू ए।
मन भाणी उछाह, आणी परमह छाह,
संघ भागल रहे ए, 'वछराज' इम कहेए ॥१०॥

ढाल—उछाछामी —

महाजन सहित खमासमण, 'वछराज' करीम विमासण
उत्तम महूरत आणी वतीस खहणो जाणी ॥११॥
'जयसिंहसूरि उत्संगे आप्या आपणे रंगे
'मोज भाई विपसार हरख्या स्वजन अपार ॥१२॥

निपुण 'नेतसार' इम कहे तो म०, सुणज्यो श्री नरनाह ।
गुरुपद मह मंडिस्यां आ रे ! तो म०, मांगाह तुम पोसवाह ॥२१॥
पामी हसु आएस को, तो म , विधिविधि मोकली लेख ।
संघ लोक सहु आवीया तो म०, याचक बलीय विसेष ॥२२॥
सातक्षेत्र वित्त वावर्यो तो म आरिम कारिम रीत ।
कीधी विगति सोहामणी तो म० सुन्दर गावै गीत ॥२३॥
छगन दिवस सब आवियो तो म०, 'बड़गछि' 'पुण्यप्रभसूरि' ।
सूरि मन्त्र गुरु आपियो म०, बाजे मंगल तूर ॥ २४ ॥
'जिनमेरु सूरि' पाटे थयो तो म०, 'जिनगुणप्रभसूरि' नाम ।
गच्छ नायक पद थापियो तो म०, दिन दिन अधिको मांम ॥२५॥
संवत् (१५८२) पनरबियासीए तो म०, फागुण मास सुचंग ।
पक्ष बोध गुरु वासरे तो म , मान्या मन तणे रंग ॥२६॥
संघ पूज करि इम सु तो म मागणां दीधा दान ।
'रंगराय' भेटण करे तो भ० आपे तै बहुमान ॥२७॥

ढाल—धाइणरी —

संवत् पनर पंच्यासिमै ए संघसाथे ह्युसे सुरयात्रा करी ए ।
'जोध नयरे' आपूज मबिमण पूजवेरे ॥२८॥
चउमासा चारह कर्में ए हुआ अतिशय गच्छनाथ आकारण कमाय ।
वात करे मिली धम 'नेसमेर' मन्त्री घणा ए ॥२६॥
धन धन वत्सर मास धन धन ते दिनु ए ।
चरण कमल गुरुराय तणा, जिण दिन भेटसु ए ।
मामे हुए मन निद्धि, मम सब मेटीसु ए ॥१ ॥
मासे करतम सुकमरक सुगुरुनो देसणा ए ।
सुणर्ता सूत्र विचार, नहीं कीजे मर्ना ए ॥११॥

'देपाल' 'सदारंग' 'भीया' 'वस्ता' बरू ए ।
'रायमल्ल' 'धीरंग', मुगा 'भोजा' परू ए ।
इण परे बहु समवाय, साखे छेल आवियो ए ।
पठवायों 'जण पंच', सुजस तिहां व्यापियो ए ॥३२॥
विधि सु वंदी पाय, सुगुरु ने वीनती ए ।
करि आपी कर जल, मइति उल्लसी छवी ए ॥३३॥
मानसरे जिम हंस, पपीहा जलधरु ए ।
तिम समर तुम्ह नाम, वंसण सावय हरु ए ॥३४॥

ढाल—गीता छन्दनी —

तिवे सुभ दिन रे गच्छपति गजपति चालता,
पुर गामो रे वाधी गय मद गालता ।
मरुदेस रे 'जेसलमेरु' मांहि मालता
गुरु आण्या रे, पंच सुमति प्रतिपालता ॥३५॥
पाखता पंचाचार अनुपम धर्म सूणो आसीप ।
आषाढ वदि तेरसी गुरु दिनि, संवत् पनर सत्यासीए ।
परमद्दि विजय सुवेला आविश, गीत गायति आविया
नर नारि सु मोटे मंडाणे, पोषहशाले आविया ॥३६॥
नित नव नव रे, सरस सधा देसण ध्रवे,
सेवय जण रे वंछिय आशा पूरवे ।
राय राणा रे रूप रूप चारित्र गुण स्तवे,
गुरु इम परी रे चन्द्र गच्छ कुं सोभवे ॥३७॥
सोभवे पूनिमपक्ष परगट, वदन ताशा सुर गिरू ।
मरुदेश माम प्रसिद्ध मुनिमे तेज दीपे दिणयरू ।
कलिकाल लब्धि निधान गोयम जेम महिमा मंदिरू ।
मोतीयां थाल भरी वधावे, सूहव रंभा अणु सुंदरू ॥३८॥

ढाल —संवत् पनरे चउराणुंइ, 'लूणकर्ण' भूपाल रे।

जल प्रभावे जन सीदता, ऐकी कराणा रे ।३९।

संवत् पनर चउराणु ए, (मरुधरमंडलें) गच्छनायक बोलाया रे।

कर जोडी ने बीनवे वांदी पूजजीराय (पाया) रे। सं० ॥४०॥

श्री खरतरगच्छ राजिया तैरो सुजस अपार रे।

कृपा करो सहु जीव नी वरसावो जलधार रे। सं० ॥४१॥

मोटी वात मने मनी धर्मध्यान मालीसे रे।

उपाश्रये गुरु आवीने, श्रावक तणी अगीसे रे। सं० ॥४२॥

अद्भुत तप मंत्र साधना, आसन तप प्रकंपे रे।

मेघमालि सुर आवीयो कहे काज हम जंपे रे ॥४३॥

कारी घट अंबर छाइयो वरषि वरिष घन गाजे रे।

तामे चमके बीजली गरि जस पखही बाजे रे। सं० ॥४४॥

सर तलाव द्रह पूरीया, नीर निवाण न माई रे।

धर्मवृक्ष वधता हुआ, पापज पास सुकाई रे। सं ॥४५॥

साद्रव सित पडिवा दिने प्रथम पाहुर सर पूर्यो रे।

सुगुरु इण तप जप करी, काल निशाचर चूर्यो रे। सं ॥४६॥

दया धर्म दीपावता राय पास सुकाये रे।

मंत्री वणिक गुण पढयो, तिलक बंध संभावे रे। सं० ॥४७॥

भेरी नफेरी झल्लरी ढोल दमामा वाजे रे।

पंच शब्द जिम परवर्यां तयपि पटोधा राजे रे। सं ॥४८॥

रूपवती सूहव नारी, धवल मंगल मिली गावे रे।

संवत्सार दिहि पूरिमे उपासरे गुरु आवे रे। सं ॥४९॥

ढाल—अंग दुवालस जांण, आण माने सवे,मुनिवर मोटा गछपती ए।
गुरुगुण पर छत्रीस,खरो क्षमा गुणे, वदन कमल वसे सरसती ए।५०।
चारित्र चंगो देह, मोह महाभड, जे जग गंजण बस कीयमो ए।
यो कन्दर्प मद भड़, भवर अरि दल,संदी सुभस सदा लीयो ए।५१।
'जंबू' जेम सुसील, 'वयर स्वामी' जसी, तिण ओपमे कवियण कुखे ए।
आठ प्रभावक सूरि,जिनशासन क(ह)या,महिमा तसु समजण कहीया५२
सायम वायण वीर बावन अधिपति सूरि मंत्र वले साधिया ए।
प्रगट्यो सदगति पंथ, ढ चियो दुर्गति राह्र साह्र, संघ वाधिया ए।५३।

ढाल—कोडी आप पचखाण तप सदा रे, करि इंद्री वश पंच।
सारणारे २ सीस समापी गण मुदा रे ॥५४॥
क्षय ज्ञान अगे आगम वळे रे, जाण्यो जीविय अंत।
खांमे रे २ चोरासी लाख प्राणिया रे ॥५५॥
संवत सोलसे पंचावने रे, राध अट्ठमि वदी (सु)र।
चार रे २ आहार त्रय अणसण निय मने रे ॥५६॥
संघ साखि पचरवाण इग्यारसे र आराही आभा संथारे।
भाव र २ भरत तणी परिभावना रे ॥५७॥
पूजक निन्दक बिहुंपरि सम मने रे अरिहंत सिद्ध सुसाघ।
ध्यायर २ पनर दिवश, जिनधर्म संलिहने र ॥५८॥
सूत्र भरथ चिंतन चित्तमाइमो रे आलोइय पडिकंत।
सुहगुरु रे २ समममास इम पंचत्तु (त्व) पाइयो रे ॥५९॥

वस्तु—वरस नेऊ २ मास बलि पंच, एण दिन ऊपरि तिहां गमिय।
सुदि नवमी वैशाख मासे प्रढवि, इसीय? अमृत घटिय सोमवार।
सुरलोक वासे भय २ कार करैति भण, गुण गावै सुर नारि।
'श्रीजिनगुणप्रभसूरि' गुरु, सयल संघ सुहकार ॥१०॥
इम गच्छ नायक कला गुणगण रयण रोहण भूधरो।
संघार धारो संगवारण रंगवास म चोवरो।
'श्रीजिनमेरु सूरींद्र' पाटे, 'जिनगुणप्रभु सूरि' गुरो।
तसु पक्क 'जिनेसर सूरि' संघ, ऋद्धि-वृद्धि सुमंकरो ॥११॥

श्री जिनचन्द्रसूरि गीतम्

ढाल—सकल भविक जिन सांभलो रे।
'मरुधर' देशे मंडणो रे, श्रीपुर 'बीकानेर'।
'रूपजी साह' वसे तिहां रे, धनकर जेम कुबेर
धनकर जेम कुबेर रे साचो, 'रूपा दे' तसु भाजी वाचो।
जायो पुत्र रतन्न जिण (सा)चो, मतियण लुन लुल चरणे राचो।
जी हो 'जिणचंद' जी जी हो, तू जिण सासण सिणगारके।
गिरुओ गच्छपती हो तू तो संवेगी सिरदारके। सेवे सुरपतीजी ।१।
कल्पवृक्ष जिम बापतो रे सरव कला परवीन।
बालक बये धर्मनी दिसा समता रस लवलीन रे।
समता रस लवलीन रे जाणो, मात पिता मन अचरज आणी।
गुरुने विहरावे शुभ वाणी भाव धर्म ओसंघ पणी सुहाणी ।२।
मतिसागर विहरी करी रे 'श्री जेसलमेर' गिरि आवा।
'बीरजी मे देखो करी ओपूज्य प्रभु सुहाया।
श्री पूज्य प्रभु सुहाया रे मया, सेहव चारित्र दे सुखदाई।
'बीरविजय' ओ नाम सवाई, मायणी किया सयल सवाई। ४।

अवसर जांणी आपियो र, सहुए आपणो पाट ।
जीसेम 'जेसलमेर' में र, कीघो अति गहगाट ।
कीघो अति गहगाटो र चंदो, 'श्रीजिणचन्दसूरि' गच्छ चंदो ।
कुमति ना मत दूरे निकन्दो, मेरु तणी परे निंदो । ५ ।
सामाणी अंबू जिसो र, रूपे 'वयरकुमार' ।
शास्त्र भूलमत्र सारिखो र, लब्धे गोयम अवतारो ।
लब्धे 'गोयम अवतारो रे ऐसो दूणको ह कसौ .. ।
सूरके आगे खजुओ जेसो इण आगे सम कुमती तैसो ।६।
'श्रीजिनेश्वर सूरि' मे रे, पाट प्रगट भाण ।
'चाफणा' गोत्र कला निलो गच्छ 'बेगड़' सुलतान ।
गच्छ 'बेगड़' सुलतान रे साचो, ओर कुमति कदाव काचो ।
'महिमसमुद्र गुरु चरणे राचो, कवियण इम गुरुना गुण बांचो ।७।

नं० २ राग गौडी आसवनी

परम संवेगी परगडो रे चावो जग चिहुं खंडो रे ।
चीतार बडा छत्रपती रे नाम जपे नवखंडो र ।
कहो किम वीसर त गुरु गुणपरधानो रे ।
जिनचन्द सूरिजी साधु सिरोमणि जाणो रे ।१।
पंच महाव्रत पालता र करता उग्र विहार ।
भविक जीव प्रतिबोधता रे चूड न कपट लिगारो रे ।का२।
सूधो परम सुभागता रे अविरल वाण वखाण ।
मेघतणी पर गाजतो र भाषा चतुर सुजाणा रे ।का३।
सुध संयम साधता रे प्रवचन वचन प्रमाण ।
कुमति मति कु रंडता रे धरता निज धमध्याना रे ।का४।
शुद्ध प्ररूपक साधुजी रे ऐसा परम जिहाज ।
गुणियोंने आमय टूंता रे स्वरता मद्ध खजो रे । क ।५।

पंडित ना पालक थया रे, दोना तणा आधार ।
वेहने तुरत तेडाविया रे, कायो सु किरयारो रे । क ।६।
हंस तणी पर हालता रे, पंच सुमति प्रतिपाल ।
ते गुरु सों सरपा नहीं रे आखतणी परिकालो रे ।का७।
चन्द्रगच्छ ना चन्द्रमा रे, गच्छ 'खरतर' सिणगार ।
वेगड विरुद धरण थया रे जिनशासन जयकारो रे ।क ।८।
गच्छनायक दीसे भणा रे जिम कुम तारा सरीख ।
तारागण सहु ए मिली रे, थयो किम सूरि सरीखा रे । क । ९ ।
धन 'रूपा दे' मावडी रे धन 'बाफणानो 'रे' वंश ।
धन कुल 'भरठ' मरोल्सनो रे, जिहां थपना गुरुराय हंसो रे ।क ।१०।
सुगुरु 'जिनेश्वर सूरिजी' रे थाप्या जिण निज पाट ।
ठाम ठाम धर्म दीपव्यो रे, वरताव्या गह गाटो रे ।का११।
संवत् सतर ठिरोत्तरे रे मृगु तेरस पोष मास ।
करे अणशण स्वर्गे गया रे, धर जिन ध्यान उल्हासो र । का१२।
'श्री जिनचन्द्र सूरीन्द्र' ना रे गुण गावै नर नार ।
तिण परि रंग वधामणा रे 'महिमसमुद्र जयकारो रे ।का१३।

श्री जिनसमुद्रसूरि गीतम्

राग—तोडी—

आज सफल अवतार । सखीरी ।
श्री 'जिनसमुद्र सूरिश्वर' भेट्यो 'वगड' गच्छ सिणगार । स । १ ।
श्री ओस वंश' 'आमाल मुख सहु श्रावकां सिरदार ।
आदर सहित सुगुरु आप्या तिण श्री 'सांस 'नगर' मझार ।२।
'श्री भीमाल' 'हरराज को नन्दन * जिनचन्द्रसूरि पधार ।
'महिमा हर्षे' कहे थिर प्रतपो जिन शासन जयकार । ३ ।

* आच्य गीतमें माताका नाम जखमादे लिखा है ।

मस्तयोगी ज्ञानसारजी व वाचक मयकीर्तिजी
(मूल चित्र—श्रीजिन कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भंडार-बीकानेर)

पवरपुरि १ प्रवर नगरी
पवरो २२ १८८ प्रवर
पव्वय २७ पर्वत
पविचिय १ पवित्र होकर
पसंसिज्जइ १ प्रशंसा की जाती है
पसाउ (य) ४ १७७ प्रसाद, कृपा
पसायेण ३१८ प्रसादसे
पसिद्ध १ प्रसिद्ध
पहु २७ प्रभु
पहाव १४४ १ प्रभाव
पहिउ २७८ पथिक
पहु १ प्रभु
पहुत्तउ ४ प्रभूत, पहुँचा हुआ
पहुतनी २१४ प्रवर्तिनो पद-विशेष
पहुवइ ४ प्रभवति, समर्थ होता है
पहुविप्पसिद्ध २ पृथिवी प्रसिद्ध
पहुत्तिय ३१९ पहुँचा
पाउयर ११३ प्रकाश होना
पाउब्भंड १०६ प्रकट किया
पांगरइ १४ ८६ ९८ १८८ ३ ३१४ विहार करना
पाडू ११८ पट्ट, सुन्दर वस्त्र
पाडोयार १११ २२४ पटयारक, पटका उद्घारक
पाडइ ३४० गिराता है
पाढय १९२ पाठक
पामरइ ९३ बिगाड़ता है
पाय ३९३ पथिक
पायरा ४१९ सीढ़ा
पांभरी १९९ १९८ ३९९ वस्त्रविशेष
पारका ३११ पराया
पाव १ पाप
पावरोर २ भयानक पाप
पास ३१९ पार्श्वनाथ
पासेस ४१४ पार्श्वनाथ
पिक्खहु ३१९ देखो !
पिक्खहि ३१९ देखे
पिक्खवि ३१७ देखकर
पिम्मय २१ प्रेमयुक्त, प्रेम
पिपेषि ३३ देखना
पिय ४१९ भी पर
पिम्म ३१९ ३११ प्रेम
पिम्मु ३१९ ,,
पिरम ४१९ पुष्प
पीकीया ३१८ पीडे (कोल्हूमें पील दिये)
पुणवि १ पवित्र करता है
पुरणक २८८ वस्त्रान्तोंमेंसेएक
पुणइ १ १ पूर्ण करो
पुरंधिय १९ बहुपरिवार या पुत्र, पति-वाली स्त्रियें
पुरीसादाणी २१४ पुरुषोंमें प्रधान प्रसिद्ध

सलहिय ११ ९६ ११८ १८१ प्रशंसा की जाती है
सव्वसिद्धि २९ सर्वार्थसिद्ध (अनुत्तर विमानो)
सव्वदा १९३ सबके
सवि २०७ सब
सव्व १ सर्व
सव्वरिय ३१ रातमें
ससहर ३९ शशधर चंद्र
सहकर २१ १० सगम
सहसकूट २०४ हजार शिखर वाला मन्दिर
सहसक्कर १९ सूर्य १ किरणवाला
सहिय ९८ ठीक, निश्चय है सखी
सहियर २९३ सखी
सहुमलिया ४४ सब मल हुए
साखण ११३ समुद्रको
साखरी ४१६ समुद्रकी
साचा ४११ सच
साते ११० सातों
सानिज १४ सान्निध्य
साबु १५८ साधुन
सामाइक १११ १८ सामायिक
सामि ११९ स्वामी

साम्हके ११८ सामेका सामने
सावय ४ ३१ श्रावक
सासन ८९ शासन
साहमीनी १९५ स्वधर्मी बन्धुकी
साहम्मिय ३१ स्वधर्मिक
साहिय ४ साधन किया
साहुम्मि १ साम्हो
सिक्खावण १८ पाकको, पालन विशेष
सिज्झइ १ सिद्ध होनेवाला
सिद्धंत १९ सिद्धांत, सिद्ध होना
सिनाण ११३ स्नान
सिरतिलो ५८ सिरमौर
सिरि १२ सिरमें
सिरीष १ श्रीको (स-अम रूपो समीको)
सिव १ शिव, मुक्ति
सिंधुवा १ ९ सिन्धुगय
सीखविय ११४ सिखाया
सीझइ १०९ सिद्ध होता है
सीखि १४ सीख
सीख सीखि २ १४९ शिक्षा
सीझ सीझे १०३ १९० सिद्ध
सुइ ३१९ शुचि
सुकड ३११ सुगन्धित द्रव्य विशेष

विशेष नामोंकी सूची

अ

झ

ठ

ड

ढ

त

ज्ञ

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९१	१	विणचन्द्	जिणचंद
९४	१०	कलाक	कलोक
९६	१	समय माद्	समयप्रमाद्
९६	१	समुहसा	समुहसी
९६	१८	पुष्प	पुष्प
१०४	२	गर्मित्	गर्मित
१०६	१२	११(२)	(४१)
१०८	२१	जमचन्द	जिनचन्द
११	८	विरिमत्	दिर्गित
१११	८	बिन	बित
११२		बिद्ध	बिद्ध
	९	भासा	भाजा
११२	२२	बारद्द	बारद्द
११३	१	कस्मा	कम्मा
११	१३	प्रमु	प्रमु
११९	१	बाबद	बाबद
११	८	रिगमता	रिगमणी
११९	१	गुम्भा	गुम्भी
११	८	धीवर	धीवर
"	१३	उग्पाडा	उग्वाडा
१२१	९	हली	हाथी
१०३	७	प्रधान	प्रधान
१२६	११	बापडो	बापडी
१२७	१९	त्रिम	त्रिम
१२८	१	पथ	पद्म
"	१५	अधुरा	अनु अस
१३	१२	आसु भास	भा मास
			भासा
१३१	१७	साथा	साथां
१३२	८	(मा!)	(मा!)
१३४	१	सोभ्तरद्	सोकातरद्
१३६	२१	इप	स्प
१३८	१४	भा मठ	भाम्पठ
१४२	४	बाइमठ	बाइमठ
१४३		बाबद्	बायद्
१४६	२	सुदर	सुन्दर
१ ७	१८	मुंदर्तो	मुंदरा
१४८	७	पूस	पूसी
१४९	१	त्रिर	चिरं
१५४	१	बिहाका	बिहाणा
१५६	१९	सद्द	सामन सद्द
१५९	१५	कलत	कलाण
		गति	गति
१६१	९	सहा	सहाजी
१६२	६	ता	त
१६३	९	माग	माग
१६४	५	तूंगा	तुंगा
"	६	कलमाइ	कलमाई
१७	१	पंच	पंच
१७१	१२	मिडप	बिलप
		सरिपरा	सरीपरा
"	१३	प्रबंध	प्रबन्ध
१७२	२	सद्वार	सद्वार
१ ५	११	उपगढ	उपगढ
१८	५	बिन	बिच
१८१	२१	काठ	काम

अप्रकाशित विशिष्ट निबन्धादि

सचित्र शब्दार्थ कोष
जैनेतरग्रन्थोंपर जैन टीकाएं
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ (विस्तृत इतिवृत्त)
कविवर अमरु साहर और उनके ग्रन्थ
लोंकामत और उसकी मान्यतायें
बीकानेर नरेश और जैनाचार्य
श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र
बीकानेर जैन लेख संग्रह
प्राचीन तीर्थमाला संग्रह
अभय जैन पुस्तकालयका प्रशस्ति संग्रह
खरतर विरुद प्राप्ति
खरतरगच्छ साहित्य सूची
खरतरगच्छाचार्यादि प्रतिष्ठित लेख सूची
खरतरगच्छकी ८४ नन्दियें
मुगलकालीन जैन सामयिक पत्रोंका इतिहास
जैन पूजा साहित्य कल्पसूत्र साहित्य
सम्यक् दर्शन मनुष्यभवकी दुर्लभता
कविवर लक्ष्मीवल्लभ और उनका साहित्य
अध्यात्मयोगी ज्ञानसारजी और उनका साहित्य
कविवर समयसुन्दर और उनका साहित्य
उपाध्याय क्षमाकल्याणजी
कविवर धर्मवर्द्धन (साहित्य)
कविवर जिनहर्ष (साहित्य)
कविवर रघुपति (साहित्य)
छत्तीसियें ४ स्तवन पद चन्द्रदूत काव्य आदि

श्रीकीर्तिरत्न सूरि सागरचन्द्रसूरि आदि शाखाओंका इतिहास
अनेक भण्डारोंके सूचीपत्र और अलभ्य ग्रन्थोंकी प्रेस कॉपियाँ इत्यादि।

अवश्य पढ़िये । शीघ्र खरीदिये ।।

श्रीअभय जैनग्रन्थमालाकी

सस्ती, सुन्दर और उपयोगी पुस्तकें

१ अभयरत्नसार अप्राप्य

२ पूजा संग्रह—पृष्ठ ४१४ सजिल्दका मूल्य १) मात्र ।

भिन्न भिन्न विद्वान कवियोंके रचित १७ पूजाओंके साथ कविवर समयसुन्दर कृत चौबीसी एवं स्तवनोंका संग्रह । अभी मूल्य घटाकर ॥) कर दिया है । मंगानेकी शीघ्रता करें ।

३ सती मृगावती—ले० भंवरलाल नाहटा ।

प्रातः स्मरणीय सती मृगावतीका सरल और रोचक भाषामें मनोहर चरित्र इस पुस्तकमें बड़ी ही खूबीके साथ अङ्कित है । पृ० ? मूल्य =)

४ विधवा कर्त्तव्य—ले० अगरचन्द नाहटा ।

शास्त्रीय विधवा कुलक का सरल विस्तृत विवेचनात्मक भाषान्तरके साथ विधवा बहिनोंके सभी उपयोगी विषयों और कर्त्तव्योंपर प्रकाश डाला गया है । विधवाओंके मार्गदर्शक ४८ पृष्ठके ग्रन्थका मूल्य =)

५ स्नात्रपूजादिसंग्रह अप्राप्य

६ जिनराज भक्ति आदर्श अप्राप्य

७ युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि—सचित्र पृ० ४९ सचित्र मूल्य १)

यह ग्रन्थ हिन्दी जैन-साहित्यमें अद्वितीय है । किसी भी जैनाचार्यका जीवन चरित्र अब तक इस शैलीसे हिन्दीमें प्रकट नहीं हुआ है । इस ग्रन्थकी प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानोंने मुक्तकण्ठसे की है । सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ रायबहादुर महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचन्द ओझाने इसपर सम्मति

अप्रकाशित विशिष्ट निबन्धादि

सचित्र सम्राट् काव्य
जैनेतरग्रन्थोंपर जैन टीकाएं
सिन्ध प्रान्त और खरतरगच्छ (विस्तृत इतिवृत्त)
कविवर [illegible] नाहर और उनके ग्रन्थ
लोंकामत और उसकी मान्यताएँ
बीकानेर नरेश और जैनाचार्य
श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र
बीकानेर जैन लेख संग्रह
प्राचीन तीर्थमाला संग्रह
अभय जैन पुस्तकालयका प्रशस्ति संग्रह
खरतर विरुद प्राप्ति
खरतरगच्छ साहित्य सूची
खरतरगच्छाचार्यादि प्रतिष्ठित लेख सूची
खरतरगच्छकी ८४ नन्दियें
मुगलकालीन जैन सामयिक पत्रोंका इतिहास
जैन पूजा साहित्य कल्पसूत्र साहित्य
सम्यक् दर्शन मनुष्यभवकी दुर्लभता
कविवर लक्ष्मीवल्लभ और उनका साहित्य
मस्तयोगी ज्ञानसारजी और उनका साहित्य
कविवर समयसुन्दर और उनका साहित्य
उपाध्याय क्षमाकल्याणजी
कविवर धर्मवर्द्धन (साहित्य)
कविवर जिनहर्ष (साहित्य)
कविवर रघुपति (साहित्य)
छत्तीसियें ४ स्तवन व चन्द्रदूत काव्य आदि

श्रीकीर्तिरत्न सूरि सागरचन्द्रसूरि आदि आचार्योंका इतिहास
अनेक भण्डारोंके सूचीपत्र और अनेकों ग्रन्थोंकी प्रेस कॉपियां इत्यादि।